ब्रजभाषा सूर-कोश

निर्देशक

डॉ० दीनदयालु गुप्त, एम.ए. एल.-एल. बी., डी. लिट्.,
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय

vol-9

संपादक

डॉ० प्रेमनारायण टण्डन, पी-एच. डी.
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रकाशक

लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन
हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

30/-

Vol 9

शादी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) आनंदोत्सव। (२) विवाह।
शाद्वल—संज्ञा पुं. [सं.] रेगिस्तानी हरियाली और बस्ती।
शान—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) तड़क-भड़क, ठाठ-बाट। (२) ठसक, ऐंठ, अकड़।
मुहा.—शान दिखाना—ठसक दिखाना।
(३) करामात, चमत्कार। (४) प्रतिष्ठा, मर्यादा।
मुहा.—शान जाना—मान भंग होना। शान घटना—इज्जत में कमी होना। शान मारी जाना—मान कम हो जाना। शान में बट्टा लगना—मान में कमी हो जाना। किसी की शान में (कहना)—किसी (प्रतिष्ठित व्यक्ति) के संबंध में या उसके प्रति (कुछ कहना)।
संज्ञा पुं. [सं. शाण] धार तेज करने का पत्थर।
शानदार—वि. [अ. शान + फ़ा. दार] (१) तड़क-भड़क या ठाटबाट का। (२) भव्य, विशाल। (३) वैभव या ऐश्वर्यपूर्ण। (४) ठसक भरा।
शान-शौकत—संज्ञा स्त्री. [अ. शान + शौकत] (१) तड़क भड़क, ठाठ, सजावट। (२) वैभव, ऐश्वर्य।
शाप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अहित या अनिष्ट-कामना-सूचक शब्द या कथन, कोसना। (२) फटकार, धिक्कार, भर्त्सना। (३) किसी से रुष्ट होकर शपथपूर्वक ऐसी बात कहना जिसका परिणाम अनिष्टकारी हो।
शापग्रस्त—वि. [सं.] जिसे शाप दिया गया हो।
शापन—संज्ञा पुं. [सं. शाप] शाप देने के उद्देश्य से। उ.—दुर्बासा शापन को आए तिनकी कछु न चलाई—सारा. ७७२।
शापना—क्रि. स. [सं. शाप] (१) शाप देना। (२) कोसना, अमंगल-कामना करना।
शापमुक्त—वि. [सं.] जिस पर शाप का प्रभाव शेष न रहा हो, जिसने शाप का परिणाम भोग लिया हो।
शापित—वि. [सं.] जिसे शाप दिया गया हो।
शाबल्य—संज्ञा पुं. [सं.] विभिन्न भावों, वस्तुओं, रंगों आदि का मेल या मिलावट।
शाबाश—अव्य. [फ़ा.] वाह, धन्य (प्रशंसासूचक)।
शाबाशी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] प्रशंसा, साधुवाद।
शाब्दिक—वि. [सं.] शब्द का, शब्द-संबंधी।
संज्ञा पुं. (१) शब्द-शास्त्रज्ञ। (२) वैयाकरण।
शाब्दी—वि. स्त्री. [सं.] (१) शब्द से संबंध रखनेवाली। (२) शब्द पर निर्भर रहनेवाली।
शाम—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] साँझ, संध्या।
मुहा.—शाम फूलना—संध्या की लालिमा फैलना।
संज्ञा पुं. [सं. श्याम] श्रीकृष्ण।
वि. (१) काला, श्याम। (२) नीला।
श्यामकर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] घोड़ा जिसके कान काले या श्याम रंग के हों।
शामत—संज्ञा स्त्री. [अ.] दुर्भाग्य, दुर्दशा।
मुहा.—शामत का घेरा या मारा—जिसकी दुर्दशा होने को हो। शामत सवार होना या सिर पर आना—दुर्दशा का समय आना।
शामियाना—संज्ञा पुं. [फ़ा. शामियानः] बड़ा तंबू।
शामिल—वि. [फ़ा.] मिला हुआ, सम्मिलित।
शायक—संज्ञा पुं [सं.] (१) तीर, बाण। (२) तलवार।
वि. [अ. शायक] (१) शौकीन। (२) इच्छुक।
शायद—अव्य. [फ़ा.] कदाचित्, संभव है।
शायर—संज्ञा पुं. [अ.] कवि।
शायरी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] कविता, काव्य।
शाया—वि. [अ.] (१) प्रकट। (२) प्रकाशित।
शायी—वि. [सं. शायिक] सोने या शयन करनेवाला।
शारंग—संज्ञा पुं. [सं. सारंग] सारंग।
शारंगपाणि, शारंगपाणी, शारंगपानि, शारंगपानी—संज्ञा पुं [सं.] 'शारंग' नामक धनुष हाथ में लेनेवाले, विष्णु या उनके प्रमुख अवतार राम और कृष्ण। उ.—सुत के हेत मर्म नहिं पायो प्रगटे शारँगपानी—३४३५।
शारद—वि. [सं.] शरद्‌काल-संबंधी।
संज्ञा स्त्री. [सं. शारदा] सरस्वती। उ.—शारद का बरनै मति भोरी—२४४३।
शारदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) वीणा-विशेष। (२) सरस्वती, भारती। (३) एक प्राचीन लिपि।
शारदी, शारदीय—वि. [सं.] शरद् काल-संबंधी।
शारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] मैना (चिड़िया)।
शारीरिक—वि. [सं.] शरीर संबंधी।
शार्ङ्ग—संज्ञा पुं. [सं.]. (१) कमान, धनुष। (२) विष्णु या उनके प्रमुख अवतारों, राम और कृष्ण के हाथ

में रहनेवाला धनुष ।

शार्ङ्गधर—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु या उनके प्रमुख अवतार राम और कृष्ण जो 'शार्ङ्ग' नामक धनुष धारण करते कहे गये हैं ।**

शार्ङ्गपाणि—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु या उनके प्रमुख अवतार राम और कृष्ण जिनके हाथ में 'शार्ङ्ग' नामक धनुष रहना माना जाता है ।**

शार्दूल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बाघ ।** (२) **सिंह ।**

वि. **सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम ।**

शार्दूलविक्रीडित—संज्ञा पुं. [सं.] **एक वर्णवृत्त ।**

शाल—संज्ञा पुं. [सं.] **एक वृक्ष ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. साल] (१) **सालने की क्रिया या भाव ।** (२) **पीड़ा, वेदना ।** उ.—सौति शाल उर में अति शाल्यो—२६७३ ।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] **ऊनी या रेशमी चादर, दुशाला ।**

शालक—वि. [हिं. सालना] (१) **सालने या पीड़ा पहुँचाने वाला ।** उ.—जे रिपु तुम पहिले हति हाँडे बहुरि भए मम शालक—३१६५ । (२) **नाश करनेवाला ।** उ.—……अनंत शक्ति प्रभु असुर शालक—१०उ.-३५ ।

वि. [सं.] **मसखरा, हँसोड़ ।**

शालग्राम—संज्ञा पुं. [सं.] **गंडकी नदी से प्राप्त पत्थर की बटिया जिस पर चक्र का चिह्न बना रहता है; यह विष्णु की मूर्ति मानी जाती है ।**

शालत—क्रि. स. [हिं. सालना] **पीड़ा पहुँचाती है ।** उ.—सूर नंद के हृदय सालत सदा—२४६६ ।

शालति—क्रि. स. [हिं. सालना] **पीड़ा पहुँचाती है ।** उ.—अब वै शालति हैं उर महियाँ—२५४२ ।

शालभ—वि. [सं.] **पतिंगों के संबंध का ।**

शालव—संज्ञा पुं. [सं. शाल्व] **सौभ राज्य का राजा जो शिशुपाल का मित्र था और जो उसकी मृत्यु के पश्चात् द्वारका का घेरा डालने पर श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था ।** उ.—(क) शालव दंतबक्र बनारसी को नृपति चढ़े दल साजि मानो रविहिं छाए—१०उ.-२१ । (ख) कीन्हों युद्ध आप शालव सों उन बहु माया कीनी —सारा. ७९२ ।

शाला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **घर, गृह ।** (२) **पाठशाला ।** उ.—लरिका और पढ़त शाला में तिनहिं करत उपदेस —सारा. १११ ।

शालातुरीय—संज्ञा पुं. [सं.] **पाणिनि का एक नाम ।**

शालि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धान जो हेमंत में होता है, जड़हन धान ।** (२) **यज्ञ-विशेष ।**

क्रि. स. [हिं. सालना] **पीड़ा पहुँचाकर, कष्ट देकर ।**

प्र०—रही शालि—**पीड़ा या कष्ट दे रही है ।**

उ.—कत रही उर शालि—२८२६ ।

शालिवाहन—संज्ञा पुं. [सं.] **शक जाति का एक राजा जिसने शक संवत् चलाया था ।**

शालिहोत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घोड़ा, अश्व ।** (२) **अश्व-चिकित्सा-शास्त्र ।** (३) **एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि ।**

शाली—क्रि. अ. [हिं. सालना] **चुभ गयी ।** उ.—फिरि चितवन उर शाली री—८४६ ।

प्रत्य. [सं. शालिन्] **एक प्रत्य जो 'संपन्न' या 'वाला'-जैसा अर्थ देता है ।**

शालीन—वि. [सं.] (१) **विनीत ।** (२) **चतुर, दक्ष ।**

शालीनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नम्रता ।**

शालीय—वि. [सं.] **शाला-संबंधी ।**

शालै—क्रि. स. [हिं. सालना] **पीड़ित करता है ।** उ.—तौ कत कठिन कठोर होत मन मोहिं बहुत दुख शालै —३४९१ ।

शाल्मलि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सेमल का वृक्ष ।** (२) **सात द्वीपों में एक जो ऊख रस के समुद्र से घिरा कहा गया है ।** उ.—सातो द्वीप…… ……। जंबू प्लक्ष क्रौंच, शाक, शालमलि कुश पुष्कर भरपूर—सारा. ३४ ।

शाल्यो, शाल्यौ—क्रि. अ. [हिं. सालना] **पीड़ा पहुँचायी ।** उ.—सौति शाल उर में अति शाल्यो—२६७३ ।

शाल्व—संज्ञा पुं. [सं.] **सौभ देश का राजा जो शिशुपाल का मित्र था और उसके मारे जाने पर द्वारका को घेरने के कारण श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था ।** उ.—सुभट शाल्व करि क्रोध हरिपुरी आयो—१० उ.-५६ ।

शावक—संज्ञा पुं. [सं.] **(पशु-पक्षी का) बच्चा ।**

शाश्वत—वि. [सं.] **सदा बना रहनेवाला, नित्य ।**

शाश्वती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पृथ्वी ।**

शासक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शासन करनेवाला** (२) **राज्य**

का प्रबंधक या व्यवस्थापक।

शासन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आज्ञा, आदेश। (२) वश या अधिकार में रखने की क्रिया या भाव। (३) निग्रह, नियंत्रण। (४) राजकीय प्रबंध (५) दंड।

शासित—वि. [सं.] (१) जिसका या जिस पर शासन किया जाय। (२) जिसे दंड दिया जाय, दंडित।

शास्ता—संज्ञा पुं. [सं. शास्तृ] (१) शासक। (२) राजा। (३) पिता। (४) गुरु, आचार्य।

शास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्राचीन ऋषि-मुनियों के बनाये वे ग्रंथ जिनमें उचित कृत्यों का निर्देश और अनुचित का निषेध किया गया है। (२) विषय-विशेष का विशिष्ट और अगाध ज्ञान।

शास्त्रकार—संज्ञा पुं. [सं.] शास्त्र-रचयिता।

शास्त्रज्ञ—वि. [सं.] शास्त्रों का ज्ञाता या वेत्ता।

शास्त्री—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह जो शास्त्रों का ज्ञाता हो। (२) आधुनिक विश्वविद्यालयों की एक उपाधि।

शास्त्रीय—वि. [सं.] शास्त्र-सम्बन्धी।

शास्त्रोक्त—वि. [सं.] शास्त्रों में कहा हुआ।

शाह—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) बादशाह। (२) मुसलमान फकीरों की उपाधि। (३) धनी, महाजन।

शाहदरा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] महल या किले के नीचे बसी हुई आबादी या बस्ती।

शाही—वि. [फ़ा.] शाहों का, राजसी।

शिंगरफ—संज्ञा पुं. [देश. ?] ईंगुर।

शिंजन—संज्ञा पुं. [सं.] झनकार, झनझनाहट।

शिंजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) करधनी, नूपुर आदि की झनकार। (२) धनुष की डोरी।

शिंजित—वि. [सं.] झनकार करता हुआ।

शिंजिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) करधनी या नूपुर के घुँघरू। (२) धनुष की डोरी।

शिंशपा, शिंशुपा—संज्ञा स्त्री. [सं. शिंशपा] (१) शीशम का पेड़। (२) अशोक का पेड़।

शिकंजवी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शिकंजवीन] फल के रस को ठंढे या गरम पानी में डालकर बनाया गया पेय।

शिकंजा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] दबाने, कसने या पेरने का यंत्र।

शिकन—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] सिकुड़न, सिलवट।

शिकमी—वि. [फ़ा.] दूसरे की ओर से खेती करनेवाला।

शिकरा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक प्रकार का बाज पक्षी।

शिकवा—संज्ञा पुं. [अ.] शिकायत, उलाहना।

शिकस्त—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] हार, पराजय।

शिकश्ता—वि. [फ़ा. शिकस्तः] टूटा हुआ।

शिकायत—संज्ञा स्त्री. [अ. शिक़ायत] (१) बुराई करना। (२) उलाहना, उपालंभ। (३) रोग।

शिकार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) मृगया, अहेर, आखेट। (२) जंतु जिसका आखेट किया गया हो। (३) आहार। (४) वह जिसके फँसने या वश में होने से अपना विशेष लाभ हो।

मुहा०—शिकार आना—ऐसे असामी का आना जिससे लाभ हो। शिकार करना—किसी असामी से खूब लाभ उठाना। सिकार खेलना—किसी असामी को खूब लूटना। किसी का शिकार होना—(१) किसी के द्वारा फाँसा जाना। (२) किसी पर मुग्ध या मोहित होना।

शिकारी—वि. [फ़ा.] शिकार करनेवाला।

शिक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] शिक्षा देनेवाला।

शिक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] शिक्षा देने का कार्य।

शिक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पढ़ने-पढ़ाने की क्रिया। (२) विद्या का ग्रहण या अभ्यास। (३) दक्षता। (४) उपदेश। (५) मन्त्रोच्चारण का विषय जो छह वेदांगों में एक है। (६) शासन, नियंत्रण। (७) बुरा परिणाम।

शिक्षार्थी—संज्ञा पुं. [सं. शिक्षार्थिन्] विद्यार्थी।

शिक्षालय—संज्ञा पुं. [सं.] विद्यालय।

शिक्षिका—वि. स्त्री. [सं.] शिक्षा देनेवाली।

शिक्षित—वि. [सं.] (१) पढ़ा-लिखा। (२) पंडित।

शिखंड—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मोर की पूँछ या पुच्छ। उ.—कुटिल कच भुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखंड। (२) चोटी, शिखा। उ.—शोभित केश बिचित्र भाँति द्युति शिखि शिखंड हरनी—पृ. ३१६ (५४)। (३) काकुल, काकपक्ष।

शिखंडिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मोरनी, मयूरी। (२) द्रुपदराज की कन्या जो बाद में पुरुष हो गयी थी।

शिखंडी—संज्ञा पुं. [सं. शिखंडिन] (१) मोर, मयूर। (२)

मोर या मयूर की पूंछ। (३) शिखा, चोटी। उ.—शिखंडी शीश मुख मुरली बजावत। (४) द्रुपदराज का वह पुत्र जो पहले कन्या-रूप में जन्मा था। महाभारत के युद्ध में भीष्म की मृत्यु का यही कारण बना था और अंत में अश्वत्थामा द्वारा मारा गया था।

शिख—संज्ञा स्त्री. [सं. शिखा] शिखा। उ. फूली फिरति रोहिणी मैया नख-शिख करि सिंगार।

शिखर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सिरा, चोटी। (२) पहाड़ की चोटी। उ.—मारुत सोर करत चातक पिक अरु नग शिखर सुहाई—२८२१। (३) कँगूरा, कलश, गुंबद। (४) एक रत्न जो अनारदाने की तरह लाल और सफेद होता है। उ.—श्रीफल सकुचि रहे दुरि कानन शिखर हियो बिहरान। (५) कुंद की कली।

शिखरन—संज्ञा पुं. [सं. शिखरिणी] दही और चीनी से बना हुआ एक प्रसिद्ध पेय।

शिखरिणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक वर्णवृत्ति।

शिखरा—संज्ञा स्त्री. [सं. शिखर] एक गदा जो विश्वामित्र ने श्रीरामचंद्र को दी थी।

शिखा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चोटी, चुटिया।

यौ. शिखा-सूत्र—चोटी और जनेऊ।

(२) पंखों का गुच्छा, कलगी। (३) आग की लपट। (४) दीप की लौ। (५) नोक, सिरा (६) शिखर।

शिखि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मोर, मयूर। उ.—चीरि फारि करिहौं भगौहौं शिखिनि शिखी लवलेस। (२) अग्नि। (३) तीन की संख्या।

शिखिवाहन—संज्ञा पुं. [सं.] कुमार कार्तिकेय।

शिखी—वि. [सं. शिखिन्] जिसके चोटी हो।

संज्ञा पुं. (१) मोर, मयूर। उ.—कुटिल कच भू तिलक रेखा सीस शिखी शिखंड। (२) मुर्गा। (३) अग्नि। (४) तीन की संख्या। (५) दीपक।

शिगूफा—संज्ञा. पुं. [फ़ा. शिगूफ़ा] (१) कली। (२) फूल। (३) अनोखी या विचित्र बात।

मुहा.—शिगूफा खिलाना—विनोद या झगड़ा कराने के लिए कोई नयी बात छेड़ देना। शिगूफा खिलना—विनोद या झगड़े के लिए कोई नयी बात छिड़ना। शिगूफा छोड़ना—(१) विचित्र बात कहना। (१) विनोद या झगड़े के लिए कोई बात कह देना।

शिति—वि. [सं.] (१) सफेद। (२) काला, नीला।

शितिकंठ—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

शिथिल—वि. [सं.] (१) ढीलाढाला। (२) सुस्त, धीमा। (३) हारा-थका। उ.—देह शिथिल भई उठ्यो न जाई। (४) आलसी। (५) बात पर दृढ़ न रहने वाला। (६) जिसका पालन कड़ाई के साथ न हो। (७) जो सुनायी न दे। (८) जो दबाव में न रहा हो।

शिथिलई—संज्ञा स्त्री. [सं. शिथिल] शिथिलता

शिथिलता—संज्ञा. स्त्री. [सं.] (१) ढिलाई, ढीलापन। (२) थकान, थकावट। (३) आलस्य। (४) नियम के पालन में कड़ाई की कमी। (५) शक्ति की कमी। (६) वाक्य में शब्द-संगठन या अर्थ-संबंध की कमी। (७) तर्क या प्रमाण में कुछ कमी।

शिथिलाई—संज्ञा. स्त्री. [सं. शिथिल] शिथिलता।

शिथिलाना—क्रि. अ. [सं. शिथिल] (१) ढीला पड़ना। (२) थकना, श्रांत होना।

शिथिलाने—क्रि. अ. [हिं. शिथिलाना] थक गये, श्रांत हो गये। उ.—करत सिंगार परस्पर दोऊ अति आलस शिथिलाने—१७२१।

शिथिलित—वि. [सं.] जो शिथिल हो गया हो।

शिथिले—वि. [सं. शिथिल] शिथिल, श्रांत। उ—भए अंग शिथिले—२७१२।

शिनाख्त—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शिनाख़्त] (१) पहचान। (२) गुण या स्वरूप की परख।

शिफर—संज्ञा पुं. [फ़ा. सिवर] ढाल।

संज्ञा पुं. [अ. सिफ़र] शून्य।

शिया—संज्ञा. पुं. [अ. शीया] (१) सहायक। (२) अनुयायी। (३) मुसलमानों का वह संप्रदाय जो हजरत अली को पैगंबर का उत्तराधिकारी मानता है।

शिर—संज्ञा पुं. [सं. शिरस्] (१) मुंड, कपाल। (२) मस्तक। (३) सिरा, चोटी। (४) प्रधान, मुखिया।

शिरकत—संज्ञा स्त्री. [अ. शिरक़त] (१) साझा। (२) कार्य में योग या सहयोग।

शिरत्राण, शिरत्रान—संज्ञा पुं. [सं. शिरस्त्राण] सिर की रक्षा के लिए पहनी जानेवाली लोहे की टोपी।

उ.—टूटत धुजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिरत्राण ।

शिरफूल—संज्ञा पुं. [हिं. शिर + हिं. फूल] **सिर का शीश-फूल नामक आभूषण ।**

शिरमौर—संज्ञा पुं. [हिं. शिर + हिं. मौर] (१) **मुकुट ।** (२) **श्रेष्ठ व्यक्ति ।** (३) **नायक ।**

शिरस्त्राण, शिरस्त्रान—संज्ञा पुं. [सं. शिरस्त्राण] **युद्ध में योद्धाओं द्वारा सर की रक्षा के लिए पहना जाने-वाला लोहे का टोप, कूँड़ ।**

शिरहन—संज्ञा पुं. [हिं. शिर + सं. आधान] (१) **तकिया ।** (२) **(पलँग आदि का) सिरहाना ।**

शिरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **(रक्त की छोटी) नाड़ी ।** (२) **पानी का सोता या स्रोत ।**

शिरीष—संज्ञा पुं. [सं.] **सिरस का पेड़ ।**

शिरोधार्य—वि. [सं. शिरोधार्य्य] **सिर पर धरने योग्य, सादर मान्य ।**

शिरोभूषण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सिर का आभूषण ।** (२) **मुकुट ।** (३) **श्रेष्ठ व्यक्ति ।**

शिरोमणि—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं.] (१) **चूड़ामणि ।** (२) **श्रेष्ठ व्यक्ति ।** (३) **माला में सुमेरु ।**

शिरोरुह—संज्ञा पुं. [सं.] **सिर के बाल ।**

शिला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पत्थर ।** (२) **चट्टान ।** उ.—डारि दियो ताहि शिला पर बालक ज्यों खेल्यो—२५७७ । (३) **न हिलने-डोलनेवाला व्यक्ति (व्यंग्य) ।** (४) **भूमि या खेत में पड़ा हुआ एक-एक दाना बीनने का काम ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. शीला] **राधा की एक सखी का नाम ।** उ.—शिला नाम ग्वालिनि अचानक आइ गहे कन्हाई—२४१९ ।

शिलाजीत—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. शिलाजतु] **काले रंग की एक ओषधि ।**

शिलान्यास—संज्ञा पुं. [सं.] **भवन, मंदिर आदि की नींव का पहला पत्थर रखा जाना ।**

शिलालेख—संज्ञा पुं. [सं.] **पत्थर पर लिखा लेख ।**

शिलावृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ओले बरसना ।**

शिलाहरि—संज्ञा पुं. [सं.] **शालग्राम की मूर्ति ।**

शिलाहारी—संज्ञा पुं. [सं. शिलहारिन्] **शिला या अन्नकण बीन कर जीवन-निर्वाह करनेवाला ।**

शिलीमुख—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भौंरा, भ्रमर ।** उ.—(क) कुँवरि ग्रसित श्रीखंड अहिभ्रम चरण शिलीमुख लाम । (ख) कुंचित अलक शिलीमुख मानो लै मकरंद उड़ाने । (२) **तीर, बाण ।**

शिल्प—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हाथ की कारीगरी, दस्त-कारी ।** (२) **कला-संबंधी व्यवसाय ।**

शिल्पकला—संज्ञा स्त्री. [सं.] **हाथ की कारीगरी ।**

शिल्पकार संज्ञा. पुं. [सं.] **कारीगर, शिल्पी ।**

शिल्पकारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दस्तकारी, कारीगरी ।**

संज्ञा पुं. **कारीगर, शिल्पी ।**

शिल्पी—संज्ञा पुं. [सं. शिल्पिन्] (१) **दस्तकार, कारी-गर ।** (२) **चितेरा, चित्रकार ।**

शिव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मंगल, कल्याण ।** (२) **पानी, जल ।** (३) **महादेव, शंकर, शंभु ।**

शिवता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शिव होने का भाव या धर्म ।** उ.—शिव शिवता इनहीं सों लही ।

शिवदिशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ईशान कोण ।**

शिवनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गणेश ।** (२) **कार्तिकेय ।**

शिवनामी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह चादर जिस पर 'शिव' या 'जय शिव' लिखा हो ।**

शिवनिर्माल्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शिव पर चढ़ायी गयी वस्तु जिसके ग्रहण का निषेध है ।** (२) **त्याज्य या अग्रा-ह्य वस्तु, वस्तु जो ग्रहण न की जाय ।**

शिवपुरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **काशी, वाराणसी ।**

शिवरात्रि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **फाल्गुन बदी चतुर्दशी जब शिव जी के पूजन, व्रत आदि का माहात्म्य है ।**

शिवरिपु—संज्ञा पुं. [सं.] **कामदेव ।** उ.—ता दिन ते उर-भौन भयो सखि शिवरिपु को संचार—२८८८ ।

शिवलिंग—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव की पिंडी जिसकी पूजा की जाती है ।**

शिवलोक—संज्ञा पुं. [सं.] **कैलास ।**

शिववाहन—संज्ञा पुं. [सं.] **बैल, नंदी ।**

शिवशैल—संज्ञा पुं. [सं.] **कैलास ।**

शिवा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पार्वती, गिरिजा ।** उ.—जेहि रस शिव सनकादि मगन भए शंभु रहत दिन

साँधा। सो रस दिये सूर प्रभु तोको शिवा न लहति अराधा। (२) **सियार की मादा, सियारिन।**

शिवालय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शिव का मन्दिर।** (२) **देव-मंदिर।** (३) **मरघट, श्मशान।**

शिवाला—संज्ञा पुं. [सं. शिवालय] (१) **शिव का मंदिर।** (२) **देव-मन्दिर।**

शिवि—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा उशीनर का पुत्र एक राजा जो ययाति का दौहित्र था और जो अपनी दान-शीलता के लिए बहुत प्रसिद्ध है।**

शिविका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **डोली, पालकी।**

शिविर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **डेरा, निवेश।** (२) **सेना का पड़ाव, छावनी।** (३) **किला, कोट, दुर्ग।**

शिशिर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक ऋतु जो माघ-फाल्गुन में होती है।** उ.—परम दीन जनु शिशिर हेम हत अंबुज गत बिनु पात। (२) **जाड़ा, शीत-काल।** (३) **बरफ, पाला, हिम।**

शिशिरांत—संज्ञा पुं. [सं.] **शिशिर के अंत या पश्चात् की ऋतु, वसंत।**

शिशु—संज्ञा पुं. [सं.] **छोटा बच्चा।** उ.—शंख चक्र भुज चारि बिराजत अति प्रताप शिशु भेषा हो।

शिशुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बचपन, बाल्यावस्था।** उ.—अति शिशुता में ताहि सँहारयो—९८६। (२) **शिशु का भाव, धर्म या कार्य।**

शिशुताई—संज्ञा स्त्री. [सं. शिशुता] **शिशु का भाव, धर्म या कार्य।** उ.—जसुमति भाग सुहागिनी हरि को सुत जानै। मुख मुख जोरि बतावई शिशुताई ठानै।

शिशुपन—संज्ञा पुं. [सं. शिशु+हिं. पन] **बचपन।**

शिशुपाल—संज्ञा पुं. [सं.] **चेदि देश का राजा जो रुक्मिणी से विवाह करना चाहता था और जिसे श्रीकृष्ण ने पांडवों के राजसूय यज्ञ में मारा था।** उ.—देस देस के नृपति जुरे सब भीष्म नृपति के धाम। रुक्म कह्यो, शिशुपाल को देहौं नहीं कृष्ण सों काम—सारा. ६२८।

शिष—संज्ञा पुं. [सं. शिष्य] **शिष्य।**

संज्ञा स्त्री. [सं शिक्षा] **सीख, सिखावन।** उ.—आपुन को उपचार करौ कछु तब औरन शिष देहु—३०१३।

संज्ञा स्त्री. [सं. शिखंड या शिखा] **चोटी, शिखा जो मुंडन के समय सिर पर रक्खी जाती है।** उ.—कटि पट पीत पिछौरी बाँधे कागपच्छ शिख शीश।

शिषरी—वि. [सं. शिखर] **जिसमें शिखर हो।**

शिषा—संज्ञा स्त्री. [सं. शिखा] **चोटी।**

शिषि—संज्ञा पुं. [सं. शिष्य] **चेला।**

शिषी—संज्ञा पुं. [सं. शिखी] **मोर, मयूर।**

शिष्ट—वि. [सं.] (१) **शांत।** (२) **सुशील।** (३) **श्रेष्ठ।** (४) **सज्जन, सभ्य।** (५) **शालीन।**

शिष्टता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सज्जनता, सभ्यता।** (२) **शालीनता।** (३) **उत्तमता, श्रेष्ठता।**

शिष्टाचार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सभ्य आचरण।** (२) **विनय, नम्रता।** (३) **दिखावटी सभ्य व्यवहार।** (४) **आव-भगत, स्वागत-सत्कार।**

शिष्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विद्यार्थी, अंतेवासी।** उ.—तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत। (२) **चेला, शागिर्द।** (३) **दीक्षा या मंत्र लेनेवाला।**

शिष्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शिष्य होने का भाव या धर्म।**

शिष्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **विद्यार्थिनी।** (२) **चेली।**

शीकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ओस, तुषार।** (२) **जलकण।** (३) **वर्षा की छोटी-छोटी बूँदें, फुहार।**

शीघ्र—क्रि. वि. [सं.] **चटपट, तुरंत।**

शीघ्रगामी—वि. [सं. शीघ्रगामिन्] **तेज चलनेवाला।**

शीघ्रता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **तेजी, फुरती।**

शीत—वि. [सं.] (१) **ठंढा** (२) **शिथिल।**

संज्ञा पुं. (१) **जाड़ा।** (२) **तुषार, पाला।**

शीतकर—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

शीतकाल—संज्ञा पुं. [सं.] **हेमंत और शिशिर ऋतु।**

शीतल—वि. [सं.] (१) **ठंढा।** (२) **शांत।**

शीतलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **ठंढापन।** (२) **जड़ता।**

शीतलताई—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शीतलता।** (१) **ठंढापन, सर्दी।** (२) **जड़ता, स्थिरता।**

शीतला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **एक देवी।** (२) **चेचक।**

शीरा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **शर्बत।** (२) **चाशनी।**

शीर्ण—वि. [सं.] (१) **टूटा-फूटा।** (२) **गिरा हुआ।** (३) **फटा-पुराना।** (४) **मुरझाया हुआ।** (५) **दुबला-पतला।**

शीर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सिर। (२) माथा। (३) सिरा।

शीर्षक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सिर। (२) माथा। (३) सिरा, चोटी। (४) विषय-परिचायक शब्द या उपवाक्य जो लेख या प्रबंध के आरंभ में लिखा जाय।

शील—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आचरण, चरित्र। (२) स्वभाव, प्रकृति। (३) उत्तम स्वभाव या प्रकृति। (४) कोमल हृदय। (५) संकोच, ध्यान।

मुहा०—शील तोड़ना—बेमुरौव्वती दिखाना। आँखों में शील न होना—लज्जा, संकोच का भाव न होना, बेमुरौव्वत होना।

वि. प्रवृत्ति या स्वभाववाला।

शीलवान, शीलवान्—वि. [सं. शीलवत्] (१) अच्छे आचरण या चरित्रवाला। (२) अच्छे स्वभाववाला।

शीलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'शील' का भाव।

शीला—संज्ञा स्त्री. [सं.] राधा की एक सखी का नाम। उ.—(क) कहि राधा किन हार चुरायो।.........। सुषमा शीला अवधा नंदा वृन्दा यमुना सारि—१५८०। (ख) वै निशि बसे महल शीला के—१९३२। (ग) शीला नाम ग्वालिनी तेहि गहे कृष्न धपि धाई हो—२४४९।

शीश—संज्ञा पुं. [सं. शीर्ष] सिर।

मुहा०—शीश धनै—शोक या पछतावे से सिर पीटना। शीश धुनै—शोक या पछतावे से सिर पीटता है। उ.—शीश धुनै दोऊ कर मीड़ै अंतर साँच परचो—१० उ.-६८। शीश नीचे नवाना—लाज या संकोच से सिर झुकाना। शीश नीच्यो क्यों नावत—लाज या संकोच से सिर क्यों झुकाता है? उ.—सूर शीश नीच्यो क्यों नावत, अब काहे नहिं बोलत—३१२१। शीश पड़ना—भाग या हिस्से में आना, स्वयं परिणाम भुगतना। शीश परचो—भाग में आया, परिणाम भुगतना पड़ा। उ.—जानि-बूझि मैं यह कृत कीन्हों सो मेरे ही शीश परचो—१६६८।

शीशम—संज्ञा पुं. [फ़ा.] एक प्रसिद्ध पेड़।

शीशमहल—संज्ञा पुं. [फ़ा. शीशा+अ. महल] वह स्थान या महल जहाँ सब ओर शीशे जड़े हों।

शीशा—संज्ञा पुं. [फ़ा. शीशः] (१) काँच। (२) दर्पण।

शीशी—संज्ञा स्त्री. [हिं. शीशा] काँच का पात्र-विशेष।

शुंग—संज्ञा पुं. [सं.] एक क्षत्रिय वंश जो मौर्यों के पश्चात मगध साम्राज्य का स्वामी बना।

शुंड—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हाथी की सूड़। (२) हाथी की कनपटी से बहनेवाला मद।

शुंडा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सूड़। (२) मद्यपान का स्थान। (३) शराब। (४) वेश्या।

शुंडादंड—संज्ञा पुं. [सं.] हाथी की सूड़।

शुंडाल—संज्ञा पुं. [सं.] हाथी।

शुंडि—संज्ञा पुं. [सं. शुंड] हाथी की सूड़। उ.—वाम कर गहि शुंडि डारिहौं अमरपुर हाँक दै तुरत गज को हँकारे—२५९०।

शुंडिन, शुंडी—संज्ञा पुं. [सं. शुंडिन] हाथी। उ.—भुजा भुज धरत मनो द्विरद शुंडिन लरत उर उरनि भिरे दोउ जुरे मन ते—१७००।

शुंभ—संज्ञा पुं. [सं.] एक असुर जो प्रहलाद का पौत्र और निशुंभ का भाई था; यह दुर्गा द्वारा मारा गया था।

शुक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तोता। (२) रावण का एक दूत। (३) शुकदेव जी।

शुकदेव—संज्ञा पुं. [सं.] कृष्णद्वैपायन के पुत्र जिनका राजा परीक्षित को दिया हुआ मोक्ष-धर्म का उपदेश आज 'श्रीमद्भागवत्' के रूप में उपलब्ध है।

शुक-नलिका—संज्ञा पुं. [सं.] वह नली या नलनी जो तोते को पकड़ने के लिए इस प्रकार बनायी जाती है कि उसके बैठते ही घूम जाती है और तोता उलटकर नीचे आ जाता है एवं उड़ने की शक्ति भुला देने के कारण पकड़ लिया जाता है।

शुकराना—संज्ञा पुं. [अ. शुक्र] (१) कृतज्ञता। (२) धन्यवाद के रूप में दिया जानेवाला धन।

शुकवाह—संज्ञा पुं. [सं.] कामदेव जिसका वाहन तोता माना गया है।

शुकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] मादा तोता, तोती, सुग्गी।

शुक्त—वि. [सं.] (१) खट्टा। (२) अप्रिय।

शुक्ति, शुक्तिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] सीप, सीपी।

शुक्तिज—संज्ञा पुं. [सं.] मोती, मुक्ता।

शुक्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक चमकीला ग्रह। (२) एक ऋषि

जो दैत्यों के गुरु थे। (२) बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच का दिन। (३) वीर्य। (४) बल, पौरुष।

शुक्रगुजार—वि. [अ. शुक्र+फा. गुज़ार] कृतज्ञ।

शुक्रवार—संज्ञा पुं. [सं.] बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच का दिन या वार।

शुक्राचार्य—संज्ञा पुं. [सं. शुक्राचार्य्य] एक ऋषि जो महर्षि भृगु के पुत्र और दैत्यों के गुरु थे। उनकी पुत्री देवयानी राजा ययाति को ब्याही थी। उन्होंने देवगुरु बृहस्पति-पुत्र कच को संजीवनी विद्या सिखायी थी।

शुक्रिया—संज्ञा पुं. [फ़ा.] धन्यवाद।

शुक्ल—वि. [सं.] सफेद, उजला, धवल।

संज्ञा पुं. (१) ब्राह्मणों की एक पदवी। (२) उजला पाख या पक्ष।

शुक्ल पक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का पक्ष जिसमें प्रतिदिन चंद्रकला के बढ़ते रहने से रात उजेली होती है।

शुक्लाभिसारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह परकीया नायिका जो शुक्ल पक्ष या चाँदनी रात में प्रियतम से मिलने संकेतस्थल पर जाती है।

शुचि—वि. [सं.] (१) शुद्ध, पवित्र। उ.—माली मिल्यो माल शुचि लैकै—२६४३, (२) स्वच्छ, निर्मल। (३) निष्पाप, निर्दोष। (४) स्वच्छ हृदयवाला।

शुचिता—संज्ञा स्त्री [सं.] पवित्रता, निर्मलता।

शुद्ध—वि. [सं.] (१) पवित्र। (२) ठीक, सही। (३) दोष-रहित, निर्दोष। उ.—पुष्य नक्षत्र नौमि जु परम दिन लगन शुद्ध शुक्रवार—सारा. १६०। (४) जिसमें किसी प्रकार की मिलावट न हो, खालिस।

शुद्धता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पवित्रता। (२) ठीक होने का भाव। (३) निर्दोषता।

शुद्धांत—संज्ञा पुं. [सं.] रनिवास, अन्तःपुर।

शुद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) शुद्ध होने का कार्य। (२) सफाई, स्वच्छता। उ.—....नारि आतुरी गई वन तीर तनु शुद्धि हेती—२०५६। (३) वह कृत्य जो अशुभ व्यक्ति को शुद्ध करने के लिए किया जाता है।

शुद्धोदन—संज्ञा पुं. [सं.] एक शाक्य राजा जो गौतम बुद्ध के पिता थे।

शुबहा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) संदेह। (२) भ्रम।

शुभंकर—वि. [सं.] कल्याण करनेवाला।

शुभ—वि. [सं.] (१) अच्छा। (२) कल्याणकारी।

संज्ञा पुं. मंगल, कल्याण।

शुभचिंतक—वि. [सं.] कल्याण चाहनेवाला।

शुभ्र—वि. [सं.] सफेद, उजला, श्वेत।

शुमार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) गिनती, गणना (२) हिसाब।

शुरू—संज्ञा पुं. [अ. शुरुअ] आरंभ।

शुल्क—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कर। (२) दहेज, दायजा। (३) किराया। (४) मूल्य। (५) फीस। (६) पत्र-पत्रिका का (वार्षिक) चंदा।

शुश्रूषा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सेवा, परिचर्या।

शुष्क—वि. [सं.] (१) सूखा। (२) जलहीन। (३) नीरस। (४) जिसमें मन न लगे। (५) निरर्थक। (६) मोह-ममता आदि से रहित, निर्मम। (७) अरसिक।

शुष्कता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सूखापन। (२) जल-हीनता। (३) नीरसता। (४) रूखापन। (५) निर्ममता। (६) अरसिकता।

शुष्क हृदय—वि. [सं.] अरसिक, अभावुक।

शूकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सुअर, वाराह। (२) विष्णु का तीसरा अवतार जो वाराह का था। उ.—आई छींक नाक ते प्रगटे सूकर अति लघु रूप—सारा. ४०।

शूकर क्षेत्र—संज्ञा पुं. [सं.] एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के निकट है और जहाँ भगवान ने वाराह अवतार लेकर हिरण्यकेशी को मारा था; आजकल यह स्थान 'सोरों' नाम से प्रसिद्ध है।

शूकरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] सुअरी, वाराही।

शूची—संज्ञा स्त्री. [सं. सूची] सुई।

शूद्र—संज्ञा पुं. [सं.] चार वर्णों में अन्तिम।

शूद्रद्युति—संज्ञा पुं. [सं.] नीला रंग।

शूद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] शूद्र वर्ण की स्त्री।

शूद्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] शूद्र वर्ण की स्त्री।

शून्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) खाली स्थान। (२) आकाश। (३) एकांत स्थान। (४) बिंदी, सिफर। (५) कुछ न होना, अभाव। (६) ईश्वर।

वि. (१) खाली, रिक्त। (२) निराकार। (३) जो

कुछ न हो। (४) विहीन, रहित।

शून्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] शून्य होने का भाव या धर्म।

शूप—संज्ञा पुं. [सं. सूर्प] सूप, फटकनी।

शूर—वि. [सं.] बहादुर, वीर। उ.—वादत बड़े शूर की नाईं अबहिं लेत हौं प्राण तुम्हारो—२५९०।

शूरता, शूरताइ, शूरताई—संज्ञा स्त्री [सं.शूरता] वीरता।

शूरमा—वि.[सं. शूर] वीर। उ.—सूरदास सिर देत शूरमा सोइ जानै व्यवहार—२९०५।

शूरसेन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मथुरा का राजा जो वसुदेव का पिता और श्रीकृष्ण का पितामह था। (२) मथुरा और उसका निकटवर्ती प्रदेश जहाँ राजा शूरसेन का राज्य था।

शूरा—वि. [सं. शूर] बहादुर, वीर।

संज्ञा पुं. [हिं. सूर्य] सूर्य, भानु, रवि।

शूर्पकर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हाथी। (२) गणेश।

शूर्पणखा, शूर्पनखा—संज्ञा स्त्री. [सं. शूर्पणखा] रावण की बहन जिसके नाक-कान लक्ष्मण ने काटे थे।

शूल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक प्राचीन-अस्त्र। (२) सूली। (३) त्रिशूल। (४) काँटा। (५) तेज दर्द। (६) टीस, पीड़ा, कसक, दुख। उ.—(क) तुम लछिमन निज पुरहिं सिधारो। बिछुरन भेंट देहु लघु बंधू जियत न जैहै शूल (सूल) तुम्हारो—९-३६। (ख) मन तोसों कोटिक बार कही। समुझ न चरन गहत गोविंद के उर अघ शूल(सूल) सही—१-३४४। (ग) अब काहे सोचत जल मोचत समौ गए ते शूल नई—२५३७। (घ) को जानै तन छूटि जाइगो शूल रहै जिय साधो—२५५८। (७) छड़, सलाख, शलाका। (८) झंडा, पताका।

शूलधर, शूलधारी—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, शंकर।

शूलना—क्रि. अ. [सं शूल] (१) शूल के समान गड़ना। (२) कष्ट या दुख देना।

शूलपाणि, शूलपानि—संज्ञा पुं. [सं. शूलपाणि] हाथ में शूल धारण करनेवाले, महादेव।

शूलिक—वि. [सं.] सूली या फाँसी देनेवाला।

शूली—संज्ञा पुं. [सं. शूलिन्] (१) शिव। (२) एक नरक।

संज्ञा स्त्री. [सं. शूल] पीड़ा, कष्ट।

शृंखल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) करधनी, मेखला। (२) जंजीर, साँकल। (३) हथकड़ी-बेड़ी।

शृंखलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] क्रमबद्ध होने का भाव।

शृंखला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सिलसिला, क्रम। (२) जंजीर, साँकल। (३) करधनी, मेखला। (४) कतार, श्रेणी। (५) एक काव्यालंकार।

शृंखलाबद्ध—वि. [सं.] (१) जो सिलसिल या क्रम से हो। (२) जो जंजीर से बँधा हो।

शृंखलित—वि. [सं.] (१) क्रमबद्ध। (२) पिरोया हुआ।

शृंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पर्वत का शिखर, चोटी। (२) (पशु के) सींग। उ.—भक्ति बिन बैल बिराने ह्वैहौ। पाँउ चारि शिर शृंग (सृंग) गुंग मुख तँब कैसे गुन गैहौ—१-३३१। (३) कँगूरा। (४) सिंगी बाजा उ.—कंस ताल करताल बजावत शृंग (सृंग) मधुर मुँहचंग।

शृंगवेरपुर—संज्ञा पुं.[सं.] एक प्राचीन नगर जहाँ रामायण-काल में निषादराज गुह की राजधानी थी।

शृंगार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) नौ रसों में एक जो रसराज, कहा जाता है और जिसका स्थायी भाव रति, आलंबन बिभाव नायक-नायिका, उद्दीपन सखा-सखी, वन-बाग, चंद्र, हाव-भाव आदि हैं। यह रस दो प्रकार का होता है—संयोग और वियोग। (२) स्त्रियों की सजावट; शृंगार १६ हैं—उबटन, स्नान, वस्त्र धारण, सँवारना, काजल लगाना, माँग भरना, महावर लगाना, तिलक लगाना, चिबुक और कपोल पर तिल बनाना, मेंहदी रचाना, सुगंधित लेप लगाना, आभूषण पहनना, पुष्पमाल धारण करना, पान खाना और मिस्सी लगाना। (३) किसी चीज की सजावट। (४) भक्ति का वह रूप जिसमें भक्त अपने को पत्नी और इष्टदेव को पति मानता है। (५) वह जिससे किसी की शोभा बढ़े। उ.—यशुमति कोख सराहि बलैया लेन लगीं ब्रजनार। ऐसो सुत तेरे गृह प्रगटयो या ब्रज को शृंगार।

शृंगारत—क्रि. स. [हिं. शृंगारना] शृंगार करते हैं। उ.—मोहन मोहिनी अंग शृंगारत—पृ. ३८८ (८०)।

शृंगारना—क्रि. स. [सं. शृंगार] शृंगार करना, सजाना।

शृंगारमंडल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) व्रज का एक स्थान जहाँ श्रीकृष्ण द्वारा राधिका का शृंगार किया जाना प्रसिद्ध

है। (२) प्रेमी-प्रेमिका का मिलन या क्रीड़ास्थल।
शृंगारहाट—संज्ञा स्त्री. [सं. शृंगार+हिं. हाट] वह बाजार जहाँ वेश्यालय हों, चकला।
शृंगारिक—वि. [सं.] शृंगार-संबंधी।
शृंगारित—वि. [सं.] जिसका शृंगार हुआ हो।
शृंगारिया—वि. [सं. शृंगार+हिं. इया] (१) जो देवताओं का शृंगार करे। (२) बहुरूपिया।
शृंगारी—वि. [सं. शृंगार] शृंगार-संबंधी।
शृंगारे—क्रि. स. बहु. [हिं. शृंगारना] सजाये-सँवारे। उ.—कहुँ गजराज बाजि शृंगारे, तापर चढ़े जु आप—सारा ६७७।
शृंगि—वि. [सं. शृंगिन्] जिसके सींग हों।
शृंगी—संज्ञा पुं. [सं. शृंगिन्] (१) पहाड़, पर्वत। (२) एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे और जिनके शाप से तक्षक ने राजा परीक्षित को डसा था। (३) सींगवाला पशु। (४) सींग का बना बाजा। (५) शिव, महादेव। (६) एक प्राचीन देश।
शृंगेरी—संज्ञा पुं. [सं.] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध मठ जिसके अधीश्वर 'शंकराचार्य' कहलाते हैं।
शृग, शृगाल—संज्ञा पुं. [सं. शृगाल] गीदड़।
वि. भीरु, कायर।
शेख—संज्ञा पुं. [सं. शेष] शेष।
संज्ञा पुं. [अ. शेख] मुसलमानों का एक वर्ग।
शेखचिल्ली—संज्ञा पुं. [अ. शेख+हिं. चिल्ली] बड़ी-बड़ी बातें गढ़ने या हाँकनेवाला।
शेखर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सिर, माथा। (२) मुकुट, किरीट। (३) पर्वत की चोटी, शिखर। (४) सर्वश्रेष्ठ-व्यक्ति।
शेखावत—संज्ञा स्त्री. [सं. शेष] एक क्षत्रिय जाति।
शेखी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शेखी] (१) घमंड, गर्व। (२) ऐंठ, अकड़। (३) डींग, गर्व की बात।
मुहा०—शेखी झड़ना, दूर होना या निकलना—घमंड चूर हो जाना। शेखी बघारना, मारना या हाँकना—डींग मारना, गर्वभरी बातें करना।
शेखीबाज—वि. [फ़ा शेखी+बाज़] (१) घमंडी, अभिमानी। (२) डींग मारनेवाला।
शेफालि, शेफालिका, शेफाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] निर्गुंडी (पौधा)।
शेर—संज्ञा पुं. [फ़ा] (१) बाघ, सिंह।
मुहा०—शेर होना—उद्दंड हो जाना।
(२) बहुत वीर और साहसी पुरुष।
संज्ञा पुं. [अ.] (उर्दू) कविता के दो चरण।
शेरदहाँ—वि. [फ़ा.] शेर के मुँहवाला।
संज्ञा पुं. पुराने ढंग की एक बंदूक।
शेरपंजा—संज्ञा पुं. [फ़ा. शेर+हिं. पंजा] बघनहा।
शेरबच्चा—संज्ञा पुं. [फ़ा. शेर+हिं. बच्चा] (१) शेर का बच्चा। (२) साहसी मनुष्य। (३) एक तरह की बंदूक।
शेरबबर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] सिंह, केसरी।
शेवाल—संज्ञा पुं. [सं.] सेवार, सेवाल।
शेष—संज्ञ. पुं. [सं.] (१) बची हुई वस्तु, भाग या संख्या। (२) अंत, समाप्ति। (३) फल, परिणाम। (४) नाश, मरण। (५) सहस्र फनों का सर्पराज जिसके फनों पर पृथ्वी टिकी है, अनंत। (६) लक्ष्मण जो 'शेष' का अवतार कहे जाते हैं। (७) बलराम जो 'शेष' का अवतार कहे जाते हैं।
वि. (१) बचा हुआ। (२) समाप्त। उ.—बातें करत शेष निसि आई ऊषा गए असनान—सारा.।
(३) दूसरे, अन्य, अतिरिक्त।
शेषधर—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।
शेषनाग—संज्ञा पुं. [सं.] शेष जिसके सहस्र फनों पर पृथ्वी टिकी मानी जाती है।
शेषशायी—संज्ञा पुं. [सं.] विष्णु जो शेषनाग पर शयन करनेवाले माने जाते हैं।
शेषांश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बचा हुआ या शेष अंश। (२) अंतिम भाग।
शेषांचल—संज्ञा पुं. [सं.] दक्षिण भारत का एक पर्वत।
शैक्षिक—वि. [सं.] शिक्षा-संबंधी।
शैतान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) असत् या पथ-भ्रष्ट करनेवाला (दुष्ट) देवता।
मुहा०—शैतान का बच्चा—बहुत दुष्ट या नीच आदमी। शैतान की आँत—बहुत लंबी चीज।

(२) भूत, प्रेत । (३) दुष्ट या क्रूर पुरुष । (४) नटखट, शरारती । (५) झगड़ा, टंटा ।
शैतानी—संज्ञा स्त्री. [अ. शैतान] पाजीपन ।
शैथिल्य—संज्ञा पुं. [सं.] शिथिलता ।
शैल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पहाड़, पर्वत । उ.—(क) दीन्हों डारि शैल तें भू पर, पुनि जल भीतर डारयो । (ख) मुष्टिक अरु चाणूर शैल सम सुनियत हैं अति भारे—२५६९ । (२) चट्टान, शिला ।
शैलकन्या, शैलकुमारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] पार्वती ।
शैलगंगा - संज्ञा स्त्री. [सं.] गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा सब तीर्थों का आवाहन किया जाना प्रसिद्ध है ।
शैलजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] पार्वती ।
शैलतटी—संज्ञा स्त्री. [सं.] पहाड़ की तराई ।
शैलधर, शैलधरन—संज्ञा पुं. [सं. शैलधर] गोवर्द्धनधारी श्रीकृष्ण । उ.—सूरदास प्रभु शैलधरन बिनु कहा सबै अब तोते—२८३३ ।
शैलनंदिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] पार्वती ।
शैलपति - संज्ञा पुं. [सं.] (१) हिमालय । (२) शिव ।
शैलरंध्र—संज्ञा पुं. [सं.] गुहा, गुफा ।
शैलराज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हिमालय। (२) शिव ।
शैलसुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] पार्वती ।
शैली – संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) ढब, ढंग, रीति । (२) पद्धति, प्रणाली, परिपाटी । (३) प्रथा, चलन, रिवाज । (४) वाक्य-रचना की विशिष्ट रीति ।
शैलूष—संज्ञा पुं. [सं.] नाटक खेलनेवाला अभिनेता ।
शैलेंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] हिमालय ।
शैव—वि. [सं.] शिव-संबंधी ।
संज्ञा पुं. शिव का उपासक ।
शैवलिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] नदी ।
शैवाल—संज्ञा स्त्री [सं.] सेवार, सिवार ।
शैव्य—वि. [सं.] शिव-संबंधी ।
शैव्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] सत्यवादी हरिश्चन्द्र की रानी ।
शैशव—वि. [सं.] (१) शिशु-संबंधी । (२) बाल्यावस्था या शिशु-अवस्था-संबंधी ।
संज्ञा पुं. (१) बचपन । (२) बच्चों सा व्यवहार ।
शोक—संज्ञा पुं. [सं.] प्रियजन के अभाव या पीड़ा आदि से उत्पन्न दुख; (नौ रसों के नौ स्थायी भावों में एक है शोक जो करुण रस का मूल है; इसे मृत्यु का पुत्र कहा गया है) । उ.—मदन गोपाल देखियत हैं सब अब दुख शोक बिसारी – २५६६ ।
शोककारक—वि [सं.] शोक उत्पन्न करनेवाला ।
शोकाकुल—वि. [सं.] शोक से व्याकुल ।
शोकार्त—वि. [सं. शोकार्त्त] शोक से व्याकुल ।
शोख—वि. [फ़ा. शोख़] (१) ढीठ । (२) नटखट । (३) चंचल । (४) चटकीला (रंग) ।
शोखी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शोख़ी] (१) ढिठाई । (२) चंचलता । (३) नटखटी । (४) चटकीलापन ।
शोच—संज्ञा पुं. [सं. शोचन] (१) दुख । (२) चिंता ।
शोचनीय—वि. [सं.] (१) जिसकी दशा देखकर दुख हो । (२) बहुत हीन या बुरा ।
शोण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लाली, अरुणता । (२) आग, अग्नि । (३) सेंदुर । (४) एक नद ।
शोणित—वि. [सं.] लाल रंग का ।
संज्ञा पुं. खून, रक्त, रुधिर ।
शोथ—संज्ञा पुं. [सं.] सूजन, वरम ।
शोध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शुद्धि, संस्कार । (२) ठीक किया जाना । (३) जाँच-पड़ताल, परीक्षा । (४) खोज-खबर, ढूँढ़ । उ.—(क) जा दिन ते मधुबन हम आए, शोध न तुम ही लीनो हो—२९३२ । (ख) सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी बहुरो शोध न लीनो—२९६५ । (ग) जेइ जेइ पथिक हुते ब्रजपुर के बहुरि न शोध करे—२९८२ ।
शोधक—वि. [सं.] (१) शुद्धि करनेवाला । (२) सुधार करनेवाला । (३) ढूँढ़ने-खोजनेवाला ।
शोधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शुद्ध करना । (२) सुधारना । (३) धातु का संस्कार । (४) जाँच, छानबीन, परीक्षा । (५) खोजना, ढूँढ़ना । (६) प्रायश्चित । (७) दंड ।
शोधना– क्रि. स. [सं. शोधन] (१) शुद्ध या स्वच्छ करना । (२) सुधारना, संस्कार करना । (३) धातु का संस्कार करना । (४) ढूँढ़ना, खोजना ।
शोधवाना– क्रि.स. [हिं. शोधना] शोधने को प्रवृत्त करना ।

शोधि—क्रि. स. [हिं. शोधना] **खोजकर, ढूँढ़कर**। उ.—(क) ग्रहबल, लग्न, नक्षत्र, शोधि कीनी बेद धुनी। (ख) सब शोधि रहे, न शोध पायो—१० उ.-२४।

शोधु—संज्ञा पुं. [सं. शोध] **खोज, पता**। उ.—राख्यो रूप चराइ निरंतर सो हरि शोधु लह्यो—३१४०।

शोधैया—वि. [हिं. शोधना + ऐयां] **शोधनेवाला**।

शोभ—वि. [सं.] **सुंदर, शोभायुक्त**।

संज्ञा स्त्री. [सं. शोभा] **शोभा**।

शोभन—वि. [सं.] **सुंदर, शोभायुक्त**। (२) **सुहावना**। (३) **उत्तम, श्रेष्ठ**। (४) **शुभ**।

संज्ञा पुं. (१) **कमल**। (२) **आभूषण**। (३) **मंगल, कल्याण**। (४) **सौंदर्य**। (५) **सेंदुर**।

शोभना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सुंदरी नारी**।

क्रि. अ. [सं.] **सोहना, शोभित होना**।

शोभनीय—वि. [सं.] **सुंदर**।

शोभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **चमक, कांति**। (२) **छवि, सुंदरता**। उ.—कछुक विलाय वदन की शोभा अरुण कोटि गति पावै—२५४९। (३) **सजावट**।

शोभात—क्रि. अ. [हिं. शोभना] **शोभित होता या सुंदर लगता है**। उ.—गत पतंग राका शशि विय सँग घटा सघन शोभात—२१८५।

शोभायमान—वि. [सं.] **सुंदर**।

शोभावत—क्रि.अ. [हिं शोभावना] **सुंदर लगता है**। उ.—कुंडल छवि रवि किरन हूँ तें द्युति मुकुट इंद्रधनु ते शोभावत—८६९।

शोभावना—क्रि. अ. [हिं शोभना] **सुंदर लगना**।

शोभित—वि. [सं.] (१) **सुंदर, शोभायुक्त**। (२) **सजा हुआ**। (३) **विराजता हुआ**।

शोर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **गुल-गपाड़ा, हल्ला, कोलाहल**। उ.—(क) सूर नारि नर देखन धाए घर घर शोर अकूत—२४९२। (ख) नगर शोर अकनत सुनत अति रुचि उपजावत—२५६०। (ग) हलधर संग छाक भरि काँवरि करत कुलाहल सोर—सारा. ४७१। (२) **आवाज, पुकार, गुहार**। उ.—महरि पुत्र कहि शोर लगायो तरु ज्यों धरनि लुटाइ—२५३३। (३) **धूम, प्रसिद्धि**। उ.—आय द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनपुर जाने।

शोरबा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **तरकारी का रसा या झोल**।

शोरा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **एक तरह का क्षार**।

शोरापुश्त—वि. [फ़ा.] **झगड़ालू, उद्दंड**।

शोला—संज्ञा पुं. [अ. शोअलऽ] **आग की लपट या ज्वाला**।

शोशा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **नोक**। (२) **अनोखी बात**। (३) **झगड़े की बात**। (४) **व्यंग्य**।

शोषक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सुखाने या सोखनेवाला**। (२) **चूसनेवाला**। (३) **घुलानेवाला**। (४) **नाशक**।

शोषण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सुखाना**। (२) **सोख लेना**। (३) **चूसना**। (४) **घुलाना**। (५) **नाश करना**। (६) **कामदेव के पाँच बाणों में एक**।

शोषित—वि. [सं.] (१) **सोखा या सुखाया हुआ**। (२) **चसा हुआ**। (३) **पीड़ित**।

शोहदा—वि. [अ.] **गुंडा, बदमाश, लंपट**।

शोहरत—संज्ञा स्त्री [अ.] (१) **प्रसिद्धि**। (२) **धूम**।

शोहरा—संज्ञा पुं. [अ. शोहरत] (१) **प्रसिद्धि**। (२) **धूम**।

शौक—संज्ञा पुं. [अ. शौक़] (१) **तीव्र चाह या लालसा**।

मुहा.—शौक करना—**भोग करना, आनंद लेना**। शौक चर्राना या पैदा होना—**बहुत चाह या लालसा होना (व्यंग्य)**। शौक पूरा करना या मिटाना—**चाह पूरी करना**। शौक फरमाना—**भोग करना, आनंद लना**। शौक से—**सहर्ष, आनंद से**।

(२) **लालसा** (३) **चस्का**। (४) **झुकाव**।

शौकत—संज्ञा स्त्री. [अ. शौक़त] **ठाठ-बाट, शान**।

शौकिया—क्रि. वि. [अ. शौक़िया] **शौक पूरा करने को**।

शौकीन—वि. [अ. शौक़] (१) **शौक या चाव रखनेवाला**। (२) **सदा बना-ठना रहनेवाला**।

शौकीनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. शौकीन] **शौकीन होने का भाव या काम, रँगीलापन, छैलापन**।

शौच—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शुद्धता, पवित्रता**। (२) **शुद्धता के लिए किये गये दैनिक कर्म**।

शौध—वि. [सं. शुद्ध] **निर्मल, पवित्र**।

शौरसेन—संज्ञा पुं. [सं.] **शूरसेन का राज्य जिसका विस्तार आधुनिक व्रजमंडल के लगभग था**।

शौरसेनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **शौरसेन प्रदेश की प्राचीन**

प्राकृत भाषा। (२) एक प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो मध्यप्रदेश में प्रचलित थी।

शौर्य—संज्ञा पुं. [सं. शौर्य्य] वीरता, शूरता।

शौहर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] स्त्री का स्वामी, पति।

श्मशान—संज्ञा पुं. [सं.] मसान, मरघट।

श्मशानपति—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

श्मश्रु—संज्ञा पुं. [सं.] दाढ़ी-मूँछ।

श्याम—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण का एक नाम।
वि. (१) काला, साँवला। (२) नीला।

श्यामकर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काला हो।

श्याम टीका—संज्ञा पुं. [सं.] दिठौना।

श्यामता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) श्याम होने का गुण या भाव। (२) काला या साँवलापन। उ.—सूर प्रभु श्याम की श्यामता मेघ की यहै जिय सोच कछु नहिं सोहाई—१६२६।

श्यामल—वि. [सं.] काला, साँवला।

श्यामलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] काला या साँवलापन।

श्यामला—वि. [सं. श्याम] काला, साँवला।
संज्ञा पुं. श्रीकृष्ण।

श्यामसुंदर—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण का एक नाम।

श्यामांग—वि. [सं.] काले या साँवले रंगवाला।

श्यामा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) श्रीकृष्ण की प्रिया राधा। (२) राधा की एक सखी का नाम। उ.— (क) इंदा बिंदा राधिका श्यामा कामा नारि—११०२। (ख) कहि राधा किन हार चुरायो ...... । श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमदा नारि—१५८०। (३) काले रंग की गाय। (४) रात, रात्रि। (५)। एक पक्षी।
वि. काले या श्याम वर्णवाली।

श्याल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साला। (२) बहनोई।
संज्ञा पुं. [सं. शृगाल] सियार, गीदड़। उ.—रोवैं वृषभ तुरग अरु नाग। स्याल (स्यार) दिवस, निसि बोलैं काग—१-२८६।

श्येन—संज्ञा पुं. [सं.] बाज या शिकरा पक्षी।

श्रद्धांजलि—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रद्धा + अंजलि] (१) अंजुलि में फूल लेकर श्रद्धा से चढ़ाना। (२) श्रद्धा-भाव-सूचक कार्य, कृति या आयोजन।

श्रद्धा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बड़ों के प्रति आदर या पूज्य भाव। (२) भक्ति, आस्था।

श्रद्धालु—वि. [सं.] श्रद्धा रखनेवाला।

श्रद्धेय—वि. [सं.] श्रद्धा करने के योग्य, श्रद्धा-पात्र।

श्रम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मेहनत, परिश्रम, उद्यम। उ.—दूरि तीर्थन श्रम करि जाहिं। (२) थकावट। उ.—आज कहा उद्यम करि आए। कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम (स्रम) पाए—४-१२। (३) एक संचारी भाव। (४) क्लेश, दुख। (५) दौड़-धूप। (६) प्रयास।

श्रमकण—संज्ञा पुं. [सं.] पसीने की बूँद।

श्रमजल—संज्ञा पुं. [सं.] पसीना, स्वेद। उ.—कुमकुम आड़ श्रवत श्रमजल मिलि मधु पीवत छबि छींट चली री।

श्रमजित—वि. [सं. श्रम + हिं जीतना] श्रम को जीत लेनेवाला, कभी न थकनेवाला।

श्रमजीवी—वि. [सं. श्रमजीविन्] शारीरिक परिश्रम करके जीविका अर्जन करनेवाला।

श्रमण—संज्ञा पुं. [सं.] बौद्ध संन्यासी।

श्रमबिंदु—संज्ञा पुं. [सं.] पसीने की बूँद।

श्रमसीकर—संज्ञा पुं. [सं.] पसीने की बूँद। उ. कुंडल मकर कपोलनि झलकत श्रमसीकर के दाग।

श्रमिक—संज्ञा पुं. [सं.] मजदूर।

श्रमित—वि. [सं. श्रम] थका हुआ, श्रांत। उ.—चारों भ्रांतनि श्रमित जानिकै जननी तब पौढ़ाए—सारा. १९३।

श्रमी—वि. [सं. श्रमिक] (१) परिश्रमी। (२) श्रमजीवी।

श्रवण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कान, कर्ण। (२) देव-चरित्र सुनना। उ.—श्रवण कीर्तन सुमिरन करै। (३) नौ प्रकार की भक्तियों में एक। उ.—श्रवण कीर्तन स्मरण पद-रत अर्चन वंदन दास—सारा. ११६। (४) राजा मेघध्वज के एक पुत्र का नाम। उ.— ता संगति नव सुत तिन जाए। श्रवणादिक मिलि हरि-गुन गाए। (५) सत्ताइस नक्षत्रों में बाइसवाँ। (६) मातृ-पितृ-भक्त पुत्र।

श्रवत—कि. अ. [सं. स्रव] बहता है। उ.—राति दिवस रस श्रवत सुधा में कामधेनु दरसाई।

श्रवन—संज्ञा पुं. [सं. श्रवण] (१) कान, कर्ण। (२) देव-चरित्र सुनना। (३) नौ प्रकार की भक्तियों में एक।

(४) राजा मेचध्वज का एक पुत्र। (५) एक नक्षत्र।

श्रवन द्वादसी—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रवण + द्वादशी] भादों के शुक्ल पक्ष की द्वादशी जिस दिन वामनावतार होना माना जाता है। उ.—भादौं श्रवन द्वादसी शुभ दिन धरो बिप्र हरि-रूप—सारा. ३३१।

श्रवना—क्रि. अ. [सं. स्राव] बहना, रसना।

क्रि. स. बहाना, गिराना।

श्रवित—वि. [सं. स्राव] बहा या गिरा हुआ।

श्रव्य—वि. [सं.] जो सुना जा सके, सुनने योग्य।

श्रव्य काव्य—संज्ञा पुं. [सं.] काव्य जो केवल सुना जा सके और अभिनय-योग्य न हो।

श्रांत—वि. [सं.] (१) थका हुआ। (२) दुखी। (३) शांत। (४) सुख-भोग से तृप्त।

श्रांति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) श्रम। (२) थकावट। (३) दुख, खेद। (४) विश्राम।

श्राद्ध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) श्रद्धापूर्वक किया जानेवाला कार्य। (२) वह कृत्य जो पितरों के लिए किया जाय। उ.—कतहूँ श्राद्ध करत पितरन को तर्पण करि बहु भाँति—सारा. ६७३। (३) आश्विन कृष्ण पक्ष जिसमें पितरों की तृप्ति-हेतु पिंडदान, तर्पण आदि करके ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है, पितृपक्ष।

श्राद्धपच्छ—संज्ञा पुं. [सं.] आश्विन कृष्ण पक्ष जब पितरों को पिंडदान, तर्पण आदि करके ब्राह्मण को भोजन कराया जाता और दक्षिणा दी जाती है।

श्राप—संज्ञा पुं. [सं. शाप] शाप।

श्रावक, श्रावग—संज्ञा पुं. [सं. श्रावक] जैन या बौद्ध संन्यासी। उ.—अजहूँ श्रावग ऐसो करै, ताही को मारग अनुसरै।

वि. सुननेवाला, श्रोता।

श्रावगी—संज्ञा पुं. [सं. श्रावक] जैन धर्मानुयायी।

श्रावण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) असाढ़ और भादों के बीच का महीना। (२) शब्द।

श्रावणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] श्रावण मास की पूर्णिमा जिस दिन 'रक्षाबंधन' या 'सलूनों' का त्योहार होता है।

श्रावना—क्रि. स. [सं. स्रवना] गिराना, बहाना।

श्रावस्ती—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नगरी।

श्रिय—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रिया] मंगल, कल्याण।

संज्ञा स्त्री. [सं. श्री] शोभा।

श्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) विष्णु-पत्नी कमला, लक्ष्मी। उ.—तजि बैकुंठ गरुड़ तजि श्री तजि निकट दास के आयो—१-१०। (२) सरस्वती। (३) धन-सम्पत्ति। (४) ऐश्वर्य, विभूति। (५) कीर्ति। (६) प्रभा, शोभा, कांति। (७) वृद्धि। (८) सिद्धि। (९) 'बेंदी' नामक आभूषण। (१०) आदरसूचक शब्द। उ.—(क) श्री नृसिंह बपु धरयो असुर हति—१-१७। (ख) श्रीकंत सिधारो मधुसूदन पै सुनियत हैं वै मीत तुम्हारे—१०उ.-६०।

संज्ञा पुं. (१) एक वैष्णव-संप्रदाय। (२) एक राग।

वि. (१) सुंदर। (२) श्रेष्ठ। (३) शुभ।

श्रीकंठ—संज्ञा पुं. [सं.] शिव, महादेव।

श्रीकंत, श्रीकांत—संज्ञा पुं. [सं. श्रीकांत] विष्णु।

श्रीखंड, श्रीखंडा—संज्ञा पुं. [सं. श्रीखंड] (१) चंदन-विशेष, हरिचंदन। उ.—तनु श्रीखंड मेघ उज्ज्वल अति, देखि महाबल भाँति। (२) शिखरन।

श्रीदामा—संज्ञा पुं. [सं. श्रीदामन्] श्रीकृष्ण का एक ग्वाल सखा जिसे 'सुदामा' भी कहा जाता है। उ.—खेलत स्याम ग्वालनि संग। सुबल हलधर अरु श्रीदामा करत नाना रंग—१०-२१३।

श्रीधर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विष्णु का एक नाम। उ.—धनि जसुमति जिन श्रीधर जाए—३८४। (२) कंस का अनुचर एक निर्दयी ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण को मारने आया था और जिसकी जीभ मरोड़कर श्रीकृष्ण ने उसे अबोला कर दिया था। उ.—श्रीधर बाँभन करम कसाई, कह्यो कंस सौं बचन सुनाई। प्रभु, मैं तुम्हरो आज्ञाकारी, नंद-सुवन की आवौं मारी।.........जबही बाँभन हरि ढिग आयौ। हाथ पकरि हरि ताहि गिरायौ। गुदी चाँपि लै जीभ मरोरी—१०-७७।

श्रीधाम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लक्ष्मी का निवास-स्थान, बैकुंठ। (२) लाल कमल, पद्म।

श्रीनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विष्णु का एक नाम। (२) श्रीकृष्ण। उ.—आइ निकट श्रीनाथ निहारे, परी तिलक पर दीठि। सीतल भई चक्र की ज्वाला, हरि

हँसि दीन्ही पीठ—१-२७४।

श्रीनिकेत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लक्ष्मी का निवास-स्थान, बैकुंठ।** उ.—श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान। (२) **लाल कमल, पद्म।**

श्रीनिकेतन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लक्ष्मी का निवास-स्थान, बैकुंठ** (२) **लाल कमल।** (३) **विष्णु।**

श्रीनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु का एक नाम।**

श्रीनिवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लक्ष्मी का निवास-स्थान, बैकुंठ।** (२) **लाल कमल।** (३) **विष्णु।**

श्रीपंचमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **माघ शुक्ल पंचमीया वसंत पंचमी जब सरस्वती पूजन होता है।**

श्रीपत, श्रीपति—संज्ञा पुं. [सं. श्रीपति] (१) **विष्णु।** उ.—जाके सखा श्यामसुंदर से श्रीपति सकल सुखन के दाता। (२) **रामचंद्र।** उ.—बारबार श्रीपति कहैं धीवर नहिं मानै—९-४२। (३) **श्रीकृष्ण।** उ.—तौ हम कछु न बसाइ पार्थ, जौ श्रीपति तोहिं जितावैं—१-२७५।

श्रीपद—वि. [सं.] **ऐश्वर्यदाता।**

श्रीपाद—वि. [सं.] **पूज्य, श्रेष्ठ।**

श्रीप्रदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **राधा का एक नाम।**

श्रीफल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बेल** (फल)। उ.—श्रीफल सकुचि रहे दुरि कानन—१८९७। (२) **नारियल।** उ.—श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी—१०-२११। (३) **आँवला।**

श्रीबंधु संज्ञा पुं. [सं.] **अमृत, चन्द्र आदि वे चौदह रत्न जो समुद्र-मंथन से लक्ष्मी के साथ निकले थे।**

श्रीभान—संज्ञा पुं. [स.] **श्रीकृष्ण का, सत्यभामा के गर्भ से जन्मा, एक पुत्र।**

श्रीमंतः—संज्ञा पुं. [सं. श्री+मंत] **श्रीमान् का बहु वचन।**

श्रीमंत—संज्ञा पुं. [सं. सीमंत] (१) **एक शिरोभूषण।** उ. शीश सचिक्कन केश ही बिच श्रीमंत सँवारि—२०६५। (२) **स्त्री के सिर के बीच की माँग।** उ.—सरस सुमना जात शीश कर सों करति श्रीमंत अलक पुनि पुनि सँवारै—२१५६।

वि. **श्रीमान्, श्रीसंपन्न्।**

श्रीमत्—वि. [सं.] (१) **धनी।** (२) **श्रीसंपन्न।**

श्रीमती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **(सौभाग्यवती) स्त्री के लिए आदरसूचक शब्द।**

श्रीमान, श्रीमान्—संज्ञा पुं. [सं. श्रीमान्] **किसी पुरुष के लिए आदरसूचक शब्द, श्रीयुत।** उ.—जय जय जय श्रीमान महावपु जय जय जय जगत अधार।

वि. (१) **धनी।** (२) **श्रीसंपन्न।**

श्रीमाल—संज्ञा स्त्री. [सं. श्री+हिं. माला] **गले का एक आभूषण, कंठश्री।** उ.—चिबुक तर कंठ श्रीमाल मोतीन छवि।

श्रीमुख—संज्ञा पुं. [सं.] **सुंदर मुख (आदरसूचक)।** उ.—सूरज्दास दास की महिमा श्रीपति श्रीमुख गाई—९-७।

श्रीयुक्त, श्रीयुत—वि. [सं. श्रीयुक्त] (१) **शोभायुक्त।** (२) **धन-संपन्न।** (३) **श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए एक आदरसूचक विशेषण।**

श्रीरंग—संज्ञा पुं. [सं.] **लक्ष्मीपति, विष्णु।** उ.—काके होंहिं जो नहिं गोकुल के सूरज प्रभु श्रीरंग—३३२७।

श्रीरमण, श्रीरमन, श्रीरवन—संज्ञा पुं. [सं. श्रीरमण] **लक्ष्मीपति विष्णु या उनके अवतार।**

श्रीराग—संज्ञा पुं. [सं.] **छह रागों में एक।**

श्रीरूपा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सीता जी।** (२) **राधा।**

श्रीवंत—वि. [श्रं. श्रीमत्] **ऐश्वर्यसंपन्न।**

श्रीवत्स—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष्णु।** (२) **विष्णु के वक्षस्थल पर बना भृगु का चरण-चिह्न।**

श्रीश—संज्ञा पुं. [सं.] **लक्ष्मी के स्वामी विष्णु।**

श्रीहत—वि. [सं.] **शोभाहीन, निस्तेज।**

श्रुत—वि. [सं.] (१) **सुना हुआ** (२) **प्रसिद्ध।**

श्रुतकीर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **राजा जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री जो शत्रुघ्न को ब्याही थी।**

श्रुतदेव—संज्ञा पुं. [सं.] **एक मुनि।** उ.—तहाँ बसत श्रुतदेव महामुनि सुनि दरसन को धायो—सारा. १९९।

श्रुतदेवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सरस्वती।**

श्रुति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सुनना।** (२) **कान, श्रवण।** (३) **सुनी हुई बात।** (४) **शब्द, ध्वनि।** (५) **किंवदंती।** (६) **वेद।** उ.—(क) जीवनि-आस प्रबल श्रुति लेखी—१-२२४। (ख) जाके श्वाँस उसाँस लेत में प्रगट भए श्रुति चार—२६२९। (७) **चार की संख्या।** (८) **अनुप्रास का एक भेद।**

श्रुतिकटु—वि. [सं.] कानों को कठोर और कर्कश लगने वाला (वर्ण या शब्द)।
श्रुतिपथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) श्रवणेंद्रिय, कान । (२) वेद-विहित मार्ग, सन्मार्ग।
श्रुतिमुख—संज्ञा पुं. [सं] (चार मुखवाले) ब्रह्मा।
श्रुतिवेध—संज्ञा पुं. [सं.] कनछेदन (संस्कार)।
श्रुतिहारी—वि. [सं.] सुनने में प्रिय।
श्रुत्य—वि. [सं.] (१) सुनने योग्य। (२) प्रसिद्ध।
श्रुत्यनुप्रास—संज्ञा पुं. [सं.] अनुप्रास का एक भेद।
श्रेणि, श्रेणी—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रेणि] (१) कतार, पाँती, पंक्ति। (२) सिलसिला, क्रम, शृंखला। (३) दल, समूह। (४) सेना, सैन्य। (५) मंडली।
श्रेणीबद्ध—वि. [सं.] पंक्ति में स्थित।
श्रेय—वि. [सं. श्रेयस्] (१) श्रेष्ठ। (२) शुभ, मंगलकारी। (३) यश या कीर्तिदायक।
संज्ञा पुं. (१) श्रेष्ठता। (२) मंगल, कल्याण। (३) यश, कीर्ति। (४) धर्म, पुण्य।
श्रेयस्कर—वि. [सं.] कल्याण करनेवाला।
श्रेष्ठ—वि. [सं.] (१) बहुत अच्छा। (२) मुख्य, प्रधान। (३) पूज्य। (४) ज्येष्ठ। (५) कल्याण-भाजन।
श्रेष्ठता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) उत्तमता (२) बड़प्पन।
श्रेष्ठी—संज्ञा पुं. [सं.] महाजन, सेठ।
श्रोण—संज्ञा पुं. [सं. शोण] शोण नद।
श्रोणि—संज्ञा स्त्री. [सं.] कमर, कटि।
श्रोणित—संज्ञा पुं. [सं. शोणित] रक्त, रुधिर।
श्रोणि सूत्र—संज्ञा पुं. [सं.] करधनी, मेखला।
श्रोणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] कमर, कटि।
श्रोत—संज्ञा पुं. [सं. श्रोतस्] कान, श्रवण।
श्रोता—वि. [सं. श्रोतृ] (१) सुननेवाला। (२) कथा, व्याख्यान आदि सुननेवाला।
श्रोत्रिय, श्रोत्री—वि. [सं. श्रोत्रिय] वेद-वेदांग का ज्ञाता।
श्रोन—संज्ञा पुं. [सं. शोण] रक्त, रुधिर।
श्रोनित—संज्ञा पुं. [सं. शोणित] रक्त, रुधिर।
श्रौन—संज्ञा पुं. [सं. श्रवण] कान।
श्लथ—वि. [सं.] अशक्त, शिथिल।
श्लाघन—संज्ञा पुं. [सं.] अपनी प्रशंसा करना।
श्लाघनीय—वि. [सं.] प्रशंसनीय।
श्लाघा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्रशंसा। (२) स्तुति, बड़ाई। (३) चापलूसी। (४) इच्छा, कामना।
श्लाघ्य—वि. [सं.] सराहनीय, प्रशंसनीय।
श्लिष्ट—वि. [सं.] (१) मिला या जुड़ा हुआ। (२) आलिंगित। (३) जिसमे श्लेष हो, श्लेषयुक्त।
श्लील—वि. [सं.] (१) उत्तम। (२) शुभ।
श्लेष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मिलना, जुड़ना। (२) संयोग। (३) आलिंगन। (४) एक काव्यालंकार।
श्लेष्मा—संज्ञा पुं. [सं. श्लेष्मन्] बलगम, कफ।
श्लोक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शब्द, ध्वनि। (२) स्तुति, प्रशंसा। (३) कीर्ति, यश। (४) संस्कृत का एक प्रसिद्ध छंद। (५) संस्कृत का कोई पद्य।
श्वपच—संज्ञा पुं. [सं.] चांडाल, डोम।
श्वश्रु—संज्ञा स्त्री. [सं.] सास।
श्वसन—संज्ञा पुं. [सं.] साँस लेना।
श्वसुर—संज्ञा पुं. [सं.] ससुर।
श्वान—संज्ञा पुं. [सं.] कुत्ता। उ.—सोये श्वान (स्वान), पहरुआ सोये—१०-३।
श्वापद—संज्ञा पुं. [सं.] हिंसक पशु।
श्वास—संज्ञा पुं. [सं.] साँस।
मुहा०—श्वास रहते—जीते जी। श्वास छूटना—प्राण निकलना, मृत्यु होना।
श्वासा—संज्ञा स्त्री. [सं. श्वास] (१) साँस। उ.—श्वासा तासु भए श्रुति चार। (२) प्राणवायु, प्राण।
श्वासोच्छ्वास—संज्ञा पुं. [सं.] वेग से साँस खींचना और निकालना।
श्वेत—वि. [सं.] सफेद, धवल, निर्मल, उज्ज्वल। उ.—श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदय कियो निशि राका—२५६६।
श्वेत काक—संज्ञा पुं. [सं.] सफेद कौआ अर्थात् (जो बात असंभव हो)।
श्वेत गज—संज्ञा पुं [सं.] ऐरावत हाथी। उ.—अप्सरा पारजातक धनुष अश्व गज श्वेत ए पाँच सुरपतिहिं दीन्हें—८-८।
श्वेतता—संज्ञा स्त्री. [सं.] सफेदी, उज्ज्वलता।

हँसि दीन्ही पीठ—१-२७४।

श्रीनिकेत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लक्ष्मी का निवास-स्थान, बैकुंठ**। उ.—श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान। (२) **लाल कमल, पद्म**।

श्रीनिकेतन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लक्ष्मी का निवास-स्थान, बैकुंठ** (२) **लाल कमल**। (३) **विष्णु**।

श्रीनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु का एक नाम**।

श्रीनिवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लक्ष्मी का निवास-स्थान, बैकुंठ**। (२) **लाल कमल**। (३) **विष्णु**।

श्रीपंचमी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **माघ शुक्ल पंचमीया वसंत पंचमी जब सरस्वती पूजन होता है**।

श्रीपत, श्रीपति—संज्ञा पुं. [सं. श्रीपति] (१) **विष्णु**। उ.—जाके सखा श्यामसुंदर से श्रीपति सकल सुखन के दाता। (२) **रामचंद्र**। उ.—बारबार श्रीपति कहैं धीवर नहिं मानै—९-४२। (३) **श्रीकृष्ण**। उ.—तौ हम कछु न बसाइ पार्थ, जौ श्रीपति तोहिं जितावैं—१-२७५।

श्रीपद—वि. [सं.] **ऐश्वर्यदाता**।

श्रीपाद—वि. [सं.] **पूज्य, श्रेष्ठ**।

श्रीप्रदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **राधा का एक नाम**।

श्रीफल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बेल (फल)**। उ.—श्रीफल सकुचि रहे दुरि कानन—१८९७। (२) **नारियल**। उ.—श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी—१०-२११। (३) **आँवला**।

श्रीबंधु संज्ञा पुं. [सं.] **अमृत, चन्द्र आदि वे चौदह रत्न जो समुद्र-मंथन से लक्ष्मी के साथ निकले थे**।

श्रीभान—संज्ञा पुं. [स.] **श्रीकृष्ण का, सत्यभामा के गर्भ से जन्मा, एक पुत्र**।

श्रीमंतः—संज्ञा पुं. [सं. श्री+मंत] **श्रीमान् का बहु वचन**।

श्रीमंत—संज्ञा पुं. [सं. सीमंत] (१) **एक शिरोभूषण**। उ. शीश सचिक्कन केश ही बिच श्रीमंत सँवारि—२०६५। (२) **स्त्री के सिर के बीच की माँग**। उ.—सरस सुमना जात शीश कर सों करति श्रीमंत अलक पुनि पुनि सँवारै—२१५६।

वि. **श्रीमान्, श्रीसंपन्न्**।

श्रीमत्—वि. [सं.] (१) **धनी**। (२) **श्रीसंपन्न**।

श्रीमती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **(सौभाग्यवती) स्त्री के लिए आदरसूचक शब्द**।

श्रीमान, श्रीमान्—संज्ञा पुं. [सं. श्रीमान्] **किसी पुरुष के लिए आदरसूचक शब्द, श्रीयुत**। उ.—जय जय जय श्रीमान महावपु जय जय जय जगत अधार।

वि. (१) **धनी**। (२) **श्रीसंपन्न**।

श्रीमाल—संज्ञा स्त्री. [सं. श्री+हिं. माला] **गले का एक आभूषण, कंठश्री**। उ.—चिबुक तर कंठ श्रीमाल मोतीन छवि।

श्रीमुख—संज्ञा पुं. [सं.] **सुंदर मुख (आदरसूचक)**। उ.—सूरजदास दास की महिमा श्रीपति श्रीमुख गाई—९-७।

श्रीयुक्त, श्रीयुत—वि. [सं. श्रीयुक्त] (१) **शोभायुक्त**। (२) **धन-संपन्न**। (३) **श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए एक आदरसूचक विशेषण**।

श्रीरंग—संज्ञा पुं. [सं.] **लक्ष्मीपति, विष्णु**। उ.—काके होंहि जो नहिं गोकुल के सूरज प्रभु श्रीरंग—३३२७।

श्रीरमण, श्रीरमन, श्रीरवन—संज्ञा पुं. [सं. श्रीरमण] **लक्ष्मीपति विष्णु या उनके अवतार**।

श्रीराग—संज्ञा पुं. [सं.] **छह रागों में एक**।

श्रीरूपा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सीता जी**। (२) **राधा**।

श्रीवंत—वि. [श्रं. श्रीमत्] **ऐश्वर्यसंपन्न**।

श्रीवत्स—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष्णु**। (२) **विष्णु के वक्षस्थल पर बना भृगु का चरण-चिह्न**।

श्रीश—संज्ञा पुं. [सं.] **लक्ष्मी के स्वामी विष्णु**।

श्रीहत—वि. [सं.] **शोभाहीन, निस्तेज**।

श्रुत—वि. [सं.] (१) **सुना हुआ** (२) **प्रसिद्ध**।

श्रुतकीर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **राजा जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री जो शत्रुघ्न को ब्याही थी**।

श्रुतदेव—संज्ञा पुं. [सं.] **एक मुनि**। उ.—तहाँ बसत श्रुतदेव महामुनि सुनि दरसन को धायो—सारा. १९९।

श्रुतदेवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सरस्वती**।

श्रुति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सुनना**। (२) **कान, श्रवण**। (३) **सुनी हुई बात**। (४) **शब्द, ध्वनि**। (५) **किंवदंती**। (६) **वेद**। उ.—(क) जीवनि-आस प्रबल श्रुति लेखी—१-२२४। (ख) जाके श्वाँस उसाँस लेत में प्रगट भए श्रुति चार—२६२९। (७) **चार की संख्या**। (८) **अनुप्रास का एक भेद**।

श्वेतभानु—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा।

श्वेतांबर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सफेद वस्त्र पहननेवाला। (२) जैनियों के दो प्रधान संप्रदायों में एक।

श्वेतांशु—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा।

ष

ष—देवनागरी वर्णमाला का इकतीसवाँ वर्ण जो मूर्द्धा से उच्चरित होने के कारण 'मूर्द्धन्य' कहलाता है। प्राचीन काव्य-भाषा में इसका उच्चारण कभी 'ख' और कभी 'श' के समान होता है।

षंड—संज्ञा पुं. [सं.] नामर्द, नपुंसक।

षंडामर्क—संज्ञा पुं. [सं.] शुक्राचार्य के पुत्र का नाम जो प्रहलाद का शिक्षा-गुरु था। उ.—षंडामर्क जो पूछन लाग्यो तब यह उत्तर दीन—सारा. ११२।

षट, षट्—वि. [सं.] (गिनती में) छह।
संज्ञा पुं. छह की संख्या।

षट्कोण—वि. [सं.] जिसमें छह कोण हों।

षटचक्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कुंडलिनी के ऊपर पड़नेवाले छह चक्र। (२) कुचक्र।

षटचरण—संज्ञा पुं. [सं.] भौंरा, भ्रमर।

षटताल—संज्ञा पुं. [सं.] मृदंग की एक ताल।

षटतिला—संज्ञा स्त्री. [सं.] माघ कृष्ण एकादशी जब तिल खाने और दान करने का माहात्म्य है।

षटदर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] भारतीय आर्यों के छह दर्शन या शास्त्र; यथा—सांख्य, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, योग और वेदांत।

षटदश—वि. [सं. षट्+दश] सोलह। उ.—षट्दश सहस कन्या असुर बंदि में नींद अरु भूख अहनिशि बिसारी—१० उ.-३१।

षटपद—वि. [सं.] छह पैरवाला।
संज्ञा पुं. भौंरा, भ्रमर। उ.—सूरदास पूरो दै षट्पद कहत फिरत हो सोई—३०२२।

षटपदी—वि. स्त्री. [सं.] छह पैरवाली।
संज्ञा स्त्री. भौंरी, भ्रमरी।

षटरस—संज्ञा पुं. [सं.] छह प्रकार के स्वाद या रस—मधुर लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल। उ.—बहु ब्यंजन बहु भाँति रसोई, षटरस के परकार—३९४।
वि. छह प्रकार के स्वादवाल। उ.—षटरस ब्यंजन छाँड़ि रसोई साग बिदुर घर खाए—१-२४४।

षटराग—संज्ञा पुं. [सं. षट्+राग] (१) संगीत के छह राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। (२) बखेड़ा, जंजाल, झंझट।

षटवांग—संज्ञा पुं. [सं.] एक राजर्षि जिन्होंने इंद्र की सहायता की थी और जो केवल दो घड़ी की साधना से मुक्त हो गये थे। उ.—(क) नृप षट वांग पू[illegible] इक भयौ, सु तौ द्वै घरी मैं तरि गयौ— १-३४२। (ख) ज्यौं षट्वांग तरयौ गुन गाइ। नृप षट्वांग भयौ भुव माहिं।....इंद्रपुरी षट्वांग सिधाए—१-[illegible]४३।

षडानन—वि. [सं.] जिसके छह मुख हों।
संज्ञा पुं. स्वामिकार्तिक।

षड्ज—संज्ञा पुं. [सं.] संगीत के सात स्वरों में चौथा।

षड्दर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] न्याय आदि छह दर्शन।

षड्यंत्र—संज्ञा पुं. [सं.] जाल, कुचक्र।

षड्रस—संज्ञा पुं. [सं.] छह प्रकार के स्वाद या रस—नमकीन, तीता, कड़ुवा, कसैला और खट्टा।

षड्रिपु—संज्ञा पुं. [सं.] काम, क्रोध आदि छह दोष जो प्राणी के शत्रु हैं।

षष्टि—वि. [सं.] साठ।

षष्ठ—वि. [सं.] छठा।

षष्ठी—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) किसी पक्ष का छठा दिन। (२) संबंधकारक (व्याकरण)। (३) बालक के जन्म का छठा दिन या उस दिन का उत्सव।

षाड़व—संज्ञा पुं. [सं.] वे राग जिसमें केवल छह स्वर, स रे ग म प और ध लगते हैं, निषाद वर्जित है।

षाण्मासिक—वि. [सं.] छमाही।

षोडश—वि. [सं. षोडशन्] (१) सोलह। (२) सोलहवाँ।
संज्ञा पुं. सोलह की संख्या।

षोडश शृंगार—संज्ञा पुं. [सं.] स्त्री का पूर्ण शृंगार जिसके सोलह अंग हैं।

षोडश संस्कार—संज्ञा पुं. [सं.] सोलह संस्कार—गर्भाधान,

पुंसवन, सीमंतोन्नयन, , नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, यज्ञोपवीत, केशांत, समावर्तन और विवाह।

षोडशी—वि. [सं.] (१) सोलह से संबंधित, सोलहवीं। (२) सोलह वर्ष की (युवती)।

संज्ञा स्त्री. सोलह वर्ष की युवती।

षोडशोपचार—संज्ञा पुं. [सं.] पूजा के सोलह अंग—आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध (चंदन), पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और बंदना।

षोड़स—वि. [सं. षोडश] सोलह। उ.—षोड़स जुक्ति, जुवति चित षोड़स, षोड़स बरस निहारे—१-६०।

स

स—देवनागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।

सं—अव्य [सं. सम्] (१) एक अव्यय जो शब्द के आदि में जुड़कर शोभा, समानता, निरंतरता, औचित्य आदि सूचित करता है। (२) से।

सँइतना—क्रि. स. [सं. संचय] (१) जोड़ना, इकट्ठा करना। (२) सहेजना, सँभालना।

सँउपना—क्रि. स. [हिं. सौंपना] देना, अर्पित करना।

संक—संज्ञा स्त्री. [सं. शंक] (१) डर, भय। उ.—(क) अजहुँ नाहिं संक धरत बानर मति-भंगा—९-९७। (ख) होइ सनमुख भिरौं, संक नहिं मन धरौं—९-१२९। (२) संकोच। उ.—इक अभरन लेहिं उतारि, देत न संक करैं—१०-२४। (३) संदेह। (४) अनिष्टाशंका।

संकट—संज्ञा पुं. [सं. सम + कृत, प्रा. संकट] (१) विपत्ति, दुख, कष्ट। उ.—(क) काके हित श्रीपति ह्याँ ऐहैं, संकट रच्छा करिहैं—१-२९। (ख) सूर तुम्हारी आसा निबहै, संकट मैं तुम साथैं—१-११२। (ग) संकट परैं जो सरन पुकारौं, तौ छत्री न कहाऊँ—९-१३२। (२) भीड़, समूह। (३) जल या थल के दो बड़े भागों को जोड़नेवाला पतला भाग। (४) दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता, दर्रा।

संकटा—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक प्रसिद्ध देवी।

संकना, संकनो—क्रि. अ. [सं. शंका] (१) डरना, भयभीत होना। (२) शंका या संदेह करना।

सँकर—संज्ञा स्त्री. [सं. शृंखला] जंजीर।

संज्ञा पुं. [हिं. संकर] संकर।

वि. [हिं. सँकरा] तंग, सँकरा।

संकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दो चीजों का मिलना। (२) वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्णों या जातियों के स्त्री-पुरुष से हुई हो, दोगला। (२) साहित्य में दो या अधिक अलंकारों की साथ-साथ प्रयुक्त होने की स्थिति-विशेष।

वि. (१) दो या अधिक के योग से बना हुआ। (२) जो भिन्न वर्णों या जातियों के स्त्री-पुरुष से उत्पन्न हो, दोगला।

संज्ञा पुं. [सं. शंकर] शिव, महादेव। उ.—(क) सनक संकर ध्यान धारत—१-३०८। (ख) संकर पारबती उपदेसत—२-३।

संकर घरनी—संज्ञा स्त्री. [सं. शंकर + गृहिणी] पार्वती।

संकरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मिश्रित होने का भाव या धर्म, मिलावट। (२) दोगलापन।

सँकरा—वि. [सं. संकीर्ण] कम चौड़ा, पतला।

संज्ञा पुं. कष्ट, दुख, विपत्ति।

संज्ञा स्त्री. [सं. शृंखला] साँकल, जंजीर।

सँकराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सँकरा] विपत्ति, दुख। उ.—श्री रघुबीर मोसौं जन जाकै, ताहि कहा सँकराई—९-१४६।

सँकराना, सँकरानो—क्रि. स. [हिं. सँकरा] (१) सँकरा या संकुचित करना। (२) बंद करना।

क्रि. अ. (१) सँकरा होना (२) बंद होना, मुँदना।

संकरी—वि. [हिं. संकर] दोगला।

संज्ञा स्त्री. [सं. शंकरी] पार्वती।

संकर्षण, संकर्षन—संज्ञा पुं. [सं. संकर्षण] (१) खींचना। (२) हल जोतना। (३) श्रीकृष्ण के भाई बलराम जिनका आयुध हल था। उ.—(क) कालिनाग के फन पर निरतत संकर्षन को बीर—५७५। (ख) सूर प्रभु आकरषि ताते संकर्षण है नाम—३४८२। (४)

एक वैष्णव संप्रदाय जिसके प्रवर्तक निंबार्क थे।

संकल—संज्ञा स्त्री. [सं. शृंखला] **जंजीर, साँकल।**

संकलन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एकत्र या संग्रह करना।** (२) **संग्रह।** (३) **जोड़, योग।** (४) **ग्रंथों या पत्र-पत्रिकाओं से प्रसंग या प्रबंध-विशेष चुनने की क्रिया।** (५) **वह ग्रंथ जो इस प्रकार चुनकर तैयार किया गया हो।**

संकलप—संज्ञा पुं. [सं. संकल्प] (१) **पक्का विचार, दृढ़ निश्चय।** (२) **दान, पुण्य आदि के पूर्व मंत्रोच्चारण से अपना विचार व्यक्त करना।** (३) **वह मंत्र जिससे ऐसा विचार व्यक्त किया जाय।**

संकलपना, संकलपनो—क्रि. स. [सं. संकल्प] (१) **पक्का विचार या दृढ़ निश्चय करना।** (२) **मंत्र-विशेष पढ़कर दान देना या धर्म-कार्य करने का निश्चय करना।**

क्रि. अ. **इरादा या विचार होना।**

संज्ञा स्त्री. (१) **संकल्प करने की क्रिया** (२) **इच्छा, कामना, अभिलाषा।**

संकला—संज्ञा स्त्री. [सं. शृंखला] **साँकल, जंजीर।**

संकलित—वि. [सं.] (१) **चुना हुआ, संगृहीत।** (२) **इकट्ठा या एकत्र किया हुआ।** (३) **जोड़ा हुआ, योजित।**

संकल्प—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पक्का विचार, दृढ़ निश्चय।** उ.—(क) करि संकल्प अन्न-जल त्याग्यौ—१-३४१। (ख) गए कटि नीर लौं नित्य संकल्प करि करत स्नान इक भाव देख्यो—२५५४। (२) **दान, पुण्य आदि के पूर्व मन्त्रोच्चारण द्वारा अपना विचार व्यक्त करना।** उ.—जब नृप भुव संकल्प कियो है, लागे देह पसारन—सारा. ३३९। (३) **वह मंत्र जिसके द्वारा ऐसा विचार व्यक्त किया जाय।**

संकल्पना, संकल्पनो—क्रि. स. [सं. संकल्प] (१) **पक्का विचार या दृढ़ निश्चय करना।** (२) **मंत्र पढ़कर दान, पुण्य आदि का निश्चय व्यक्त करना।**

क्रि. अ. (१) **इरादा या विचार होना।** (२) **दृढ़ निश्चय होना।**

संज्ञा स्त्री. (१) **संकल्प करने की क्रिया।** (२) **इच्छा, कामना, अभिलाषा।**

संकल्पित—वि. [सं. संकल्प] **संकल्प किया हुआ।** उ.—मापी देह हमारी द्विजवर सो संकल्पित कीन्हों—सारा. ३४१।

संका—संज्ञा स्त्री. [सं. शंका] (१) **डर, भय, संकोच।** उ.—(क) पहुँचे जाइ महर-मंदिर मैं, मनहिं न संका कीनी—१०-४। (ख) जब दधि-सुत हरि हाथ लियौ। खगपति-अरि डर, असुरनि संका, बासर-पति आनंद कियौ—१०-१४३। (ग) जनि संका जिय करौ लाल मेरे, काहे कौ भरमावहु—१०-१७९। (घ) भजी निसंक आइ तुम मोकौं गुरुजन की संका नहिं मानी—पृ. ३४३ (२०)। (२) **संदेह, आशंका।**

संकाइ—क्रि. अ. [हिं संकाना] **भयभीत होकर।** उ.—तब संडामर्का संकाइ, कह्यौ असुर-पति सौं यौं जाइ—७-२।

संकाना, संकानो—क्रि. अ. [सं. शंक] (१) **डरना, भयभीत होना।** (२) **शंकित होना।**

क्रि. स. (१) **डराना, भयभीत करना।** (२)। **आशंकित करना।**

संकार—संज्ञा पुं. [सं. संकेत] **इशारा, संकेत।**

संकारना, संकारनो—क्रि. स. [हिं. संकेत] **इशारा या संकेत करना।**

संकाश—वि. [सं.] (१) **मिलता-जुलता, समान, सदृश।** (२) **पास, निकट, समीप।**

संकीर्ण—वि. [सं.] (१) **तंग, सँकरा, संकुचित।** (२) **छोटा, क्षुद्र।** (३) **नीच, तुच्छ।** (४) **जो उदार न हो, अनुदार।** (५) **मिला हुआ, मिश्रित।**

संज्ञा पुं. **मिश्रित या संकर राग।**

संकीर्णता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सँकरापन।** (२) **छोटापन।** (३) **नीचता।** (४ **अनुदारता।**

संकीर्तन—संज्ञा पुं. [सं. संकीर्त्तन] (१) **कीर्ति का भली भाँति वर्णन करना।** (२) **देवता आदि की उचित रीति से की गयी वंदना, भजन आदि।**

संकु—संज्ञा [पुं. शंकु] (१) **नुकीली वस्तु।** (२) **मेख।** (३) **भाला, बरछा।** (४) **एक बाजा।**

संकुचन—संज्ञा पुं. [सं.] **सिकुड़ना।**

संकुचित—वि. [सं.] (१) **लज्जा या संकोचयुक्त।** (२) **सिमटा, मुँदा या सिकुड़ा हुआ।** उ.—(क) जनु रवि-गत संकुचित कमल-जुग निसि अलि उड़न न पावै—

१०-६५ । (ख) कुमुद्ध-बृंद संकुचित भए—**१०-२०२ । (३) तंग, सँकरा, संकीर्ण । (४) अनुदार । (५) अच्छे विचार न ग्रहण करनेवाला ।**

संकुल—वि. [सं.] (१) **घना । (२) भरा हुआ, परिपूर्ण । (३) मिला हुआ, युक्त ।**

संज्ञा पुं. (१) लड़ाई, युद्ध । (२) **झुंड, समूह, भीड़ । (३) परस्पर विरोधी वाक्य ।**

संकुलित—वि. [सं.] (१) **घना । (२) भरा हुआ, परिपूर्ण । (३) एकत्र । (४) सिकुड़ा हुआ ।**

सँकेत—संज्ञा पुं. [सं. संकष्ट] **कष्ट, संकट ।**

संकेत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इशारा, इंगित । (२) स्थान जहाँ प्रेमी-प्रेमिका मिलना निश्चित करें । (३) निशान, चिह्न । (४) पते की बात । (५) घटना आदि का सूचक संक्षिप्त उल्लेख ।**

संकेतना, संकेतनो—क्रि. स. [सं. संकीर्ण] **संकट या कष्ट में डालना ।**

क्रि. स. [सं. संकेत] **संकेत करना ।**

संकेत विघट्टना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह नायिका जो संकेतस्थल के नष्ट होने से दुखी हो ।**

सकेतित—वि. [सं.] **जिसके संबंध म संकेत किया जाय ।**

सँकेलना, सँकेलनो—क्रि. स. [हिं. सकेलना] (१) **समेटना, एकत्र करना । (२) सहेजना, सँभालना ।**

सँकोच, संकोच—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **खिचाव, तनाव । (२) कुछ-कुछ लज्जा ।** उ.—मेरो अलकलड़ैतो मोहन ह्वैहै करत सँकोच—२७०७ । (३) **डर, भय ।** उ.—जारौं लंक, छेदि दस मस्तक सुर-संकोच निवारौं—९-१३२ । (४) **आगा-पीछा, हिचकिचाहट । (५) बहुत सी बात को थोड़े में कहना । (६) एक काव्यालंकार ।**

संकोचन—संज्ञा पुं. [सं.] **सिकुड़ने की क्रिया ।**

संकोचना, संकोचनो—क्रि. स. [सं. संकोच] (१) **संकुचित करना । (२) संकोच करना ।**

संकोचित—वि. [सं.] (१) **जिसमें संकोच हो । (२) जो खिला या विकसित न हो । (३) लज्जित ।**

संज्ञा पुं. **तलवार चलाने का एक ढंग ।**

संकोची—वि. [सं.] (१) **सिकुड़नेवाला । (२) लज्जा या संकोच करनेवाला ।**

सँकोचै, संकोचै—क्रि. अ. [हिं. संकोचना] **संकोच न करे ।** उ.—सूरदास जौ बिधि न सँकोचै, तौ बैकुंठ न जाउँ—९-१६५ ।

संकोपना, संकोपनो—क्रि. अ. [सं. संकोप] **क्रुद्ध या अप्रसन्न होना ।**

संक्यो, संक्यौ—क्रि. अ. [हिं. संकना] **आशंकित या भयभीत हो गया ।** उ.—कंप्यौ गिरि अरु सेष संक्यौ, उदधि चल्यौ अकुलाइ—१०-१६६ ।

संक्रंदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इंद्र । (२) क्रंदन ।**

संक्रमण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चलना, गमन । (२) घूमना-फिरना । (३) अतिक्रमण । (४) एक अवस्था से दूसरी में पहुँचना । (५) एक के हाथ से दूसरे हाथ या अन्य के अधिकार में पहुँचना ।**

संक्रमिक—वि. [सं.] **जो अंतरित या हस्तांतरित हुआ हो ।**

संक्रांत—वि. [सं.] (१) **प्राप्त । (२) बीता हुआ ।**

संक्रांति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सूर्य का एक राशि से दूसरी में प्रवेश । (२) एक राशि से दूसरी में सूर्य के प्रवेश का समय । (३) वह दिन जब सूर्य एक राशि से दूसरी में प्रवेश करता है । हिन्दुओं में यह दिन एक पर्व माना जाता है ।**

संक्रामक—वि. [सं.] **जो (रोग) छूत या संसर्ग से फैले ।**

संक्रामण—संज्ञा पुं. [सं.] **अंतरित या हस्तांतरित करने की क्रिया या भाव ।**

संक्रामित—वि. [सं.] **जिसका संक्रामण हो ।**

संक्रोन—संज्ञा स्त्री. [सं. संक्रांति] **संक्रांति ।**

संक्षिप्त—वि. [सं.] (१) **जो संक्षेप में कहा या लिखा जाय । (२) थोड़ा, अल्प ।**

संक्षेप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **थोड़े में कहना या लिखना । (२) विस्तार से कही या लिखी गयी बात का सार ।**

संक्षेपण—संज्ञा पुं. [सं.] **संक्षिप्त रूप या सार प्रस्तुत करने की क्रिया ।**

संक्षेपन—अव्य. [सं. संक्षेपण] **संक्षिप्त या सार रूप में ।** उ.—वर्णन कियो प्रथम संक्षेपन अबहूँ वर्ण न पाये—सारा. ५३१ ।

संक्षेपतः—अव्य. [सं.] **थोड़े या संक्षेप में ।**

संख—संज्ञा पुं. [सं. शंख] (१) **बड़ा घोंघा, कंबु, कंबोज ।**

उ.—संख कुलाहल सुनियन लागे—९-१२५। (२) एक लाख करोड़ की संख्या। उ.—केतिक संख जुगै जुग बीते मानव असुर अहार—९-३२। (३) शंखासुर जो देवताओं को जीतकर वेद चुरा ले गया था जिनके उद्धार के लिए भगवान को मत्स्यावतार धारण करना पड़ा था। उ.—चतुरमुख कह्यौ, संख असुर स्नुति तौ गयौ—८-१६। (४) सागर-मंथन से निकले चौदह रत्नों में एक जो विष्णु को मिला था। उ.—संख कौस्तुभ मनि लई पुनि आपु हरि—८-८।

संखचूड़—संज्ञा पुं. [सं. शंखचूड़] कंस का अनुचर एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। उ.—संखचूड़, मुष्टिक, प्रलंब अरु तृनावर्त संहारे—१-२७।

संखधर—संज्ञा पुं. [सं. शंखधर] शंख धारण करनेवाले विष्णु या उनके अवतार राम और कृष्ण। उ.—संख-चक्र-धर, गदा-पद्म-धर—५७२।

संखासुर—संज्ञा पुं. [सं. शंखासुर] एक दैत्य जो देवताओं को हराकर, वेदों को चुरा ले गया था जिनके उद्धार के लिए विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था। उ.—(क) बहुरि संखासुरहिं मारि वेदाऽनि दिए—८-१६। (ख) चारि बेद लै गयौ सँखासुर, जल मैं रह्यौ लुकाई। मीन रूप धरिकै जब मार्‌यौ—१०-२२१।

संखिया—संज्ञा पुं. [सं. शृंगिका] एक प्रसिद्ध विष।

संख्यक—वि. [सं.] संख्यायुक्त।

संख्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) एक, दो, तीन आदि गिनती। (२) अदद, अंक।

सँग, संग—संज्ञा पुं. [सं. सङ्ग] (१) मिलना, मिलन। (२) साथ रहना, सहवास, संसर्ग। उ.—(क) बिपति परी तब सब सँग छाड़ै, कोउ न आवै नेरे—१-७९। (ख) साधु-संग मोकौं प्रभु दीजै—७-२।

मुहा०—संग लगना—साथ रहना। संग लगे फिरना—साथ-साथ रहना, पीछे पीछे फिरना, पीछे लगे रहना। सदा रहति सँग लागी – सदा साथ रहती है। उ.—घर की नारि बहुत हित जासौं रहति सदा सँग लागी—१-७९। संग लगाना—साथ-साथ रखना।

(३) सांसारिक विषयों के प्रति अनुराग या आसक्ति। (४) नदियों का संगम।

क्रि. वि. साथ, सहित।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] पत्थर, पाषाण।

संगठन—संज्ञा पुं. [सं. संघटन] (१) मेल, मिलाप, संयोग। (२) रचना, बनावट। (३) बिखरी हुई शक्तियों, लोगों आदि को एकत्रित करने या मिलाने की व्यवस्था। (४) वह संस्था जो ऐसी व्यवस्था करे।

संगठित—वि. [हिं. संगठन] जिसका संघटन हुआ हो।

संगत—वि. [सं.] (१) जो किसी वर्ग या जाति का होने के कारण उनके साथ रक्खा जा सके। (२) पूर्वापर प्रसंग की दृष्टि से ठीक बैठने या मेल खानेवाला (विचार या कार्य), प्रसंगानुकूल।

संज्ञा स्त्री. (१) संग रहना, साथ, संगति। (२) संबंध, संसर्ग। (३) उदासी साधुओं का मठ। (४) संगीत में वाद्य बजाकर किया जानेवाला किसी कलाकार का साथ।

संगतरा—संज्ञा पुं. [फ़ा. संगतरः] संतरा (फल)।

संगतराश—वि. [फ़ा.] पत्थर काटने-गढ़नेवाला।

संगति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) संगत होने की क्रिया या भाव। (२) मिलने की क्रिया, मेल, मिलाप। (३) संग, साथ। उ.—(क) ज्यौं जन-संगति होति नाव मैं, रहति न परसैं पार—१-८४। (ख) सूरदास साधुनि की संगति बड़े भाग्य जो पाऊँ—१-३४०। (ग) साधु-संग प्रभु, मोकौं दीजै, तिहिं संगति निज भक्ति करीजै—७-२। (४) संबंध, संसर्ग। (५) पूर्वापर प्रसंग की दृष्टि से ठीक बैठना या मेल खाना, प्रसंगानुकूलता। (६) सभा, समाज।

संगतिया—संज्ञा पुं. [हिं. संगत] (१) साथी, संगी। (२) गवैये के साथ बजानेवाला।

संगती—संज्ञा पुं. [हिं. संगत] (१) संगी, साथी। (२) गवैये के साथ बजानेवाला।

संगदिल—वि. [फ़ा.] निर्दयी, निष्ठुर।

संगदिली—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] निर्दयता, कठोरता।

संगम—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मेल, मिलाप, संयोग। (२) दो नदियों के मिलने का स्थान। (३) साथ, संग। (४) संभोग, समागम। उ.—धनि त्रिय तुमको जो सुखदानी संगम जागत रैनि बिहानी—१९६७। (ख)

सघन निकुंज सुरति-संगम मिलि मोहन कंठ लगायो—सारा. ७१८। (५) **दो या अधिक ग्रह, नक्षत्र या अन्य वस्तुओं के मिलने का भाव या स्थान।** उ.—बुध-रोहिनी-अष्टमी संगम बसुदेव निकट बुलायौ—१०-४।

संगमरमर, संगममर्मर—संज्ञा पुं. [फ़ा. सर्ग+अ. मर्मर] **एक चिकना सफेद पत्थर।**

संगमूसा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **एक चिकना काला पत्थर।**

संगर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **युद्ध, संग्राम।** (२) **विपत्ति।** (३) **नियम।** (४) **जहर, विष।**

संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **सेना की रक्षा के लिए बनायी गयी खाई, धुस या दीवार।** (२) **मोरचा।**

संगराम—संज्ञा पुं. [सं. संग्राम] **युद्ध।**

संगा—क्रि. वि. [हिं. संग] **साथ, सहित।** उ.—(क) सूरदास मानो चली सुरसरी श्रीगोपाल सागर सुख संगा—१९०५। (ख) तात मात निज नारि ल हरि जी सब संगा—१० उ.-१०५।

सँगाती—संज्ञा पुं. [हिं. संग] **संगी, साथी, मित्र।** उ.—सूरदास प्रभु ग्वाल-सँगाती जानी जाति जनावति—१९७६।

संगिनि, संगिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. संगी] (१) **साथ रहनेवाली, सखी, सहेली।** (१) **पत्नी, भार्या।**

संगी—संज्ञा पुं. [हिं. संग] (१) **साथ रहनेवाला, साथी।** उ.—(क) नाथ अनाथनि ही के संगी—१-२१। (ख) संगी गए संग सब तजकै—१६४७। (२) **मित्र, सखा, बंधु।** उ.—आए माई स्याम के संगी—२९९७।

संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह का रेशमी कपड़ा।**

वि. [फ़ा. संग=पत्थर] **पत्थर का।**

संगीत—संज्ञा पुं. [सं.] **वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना, तीनों हों; ताल, स्वर, लय आदि के नियमानुसार पद्य का उच्चारण, गाना।** उ.—उघट्यौ सफल संगीत रीति-भव अंगनि अंग बनायौ—१-२०५।

संगीतज्ञ—वि. [सं.] (१) **संगीत का ज्ञाता।** (५) **गवैया।**

संगीन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **वह बरछी जो बंदूक के सिरे पर लगी रहती है।**

वि. (१) **जो पत्थर का बना हो।** (२) **मोटा या भारी।** (३) **टिकाऊ, मजबूत।** (४) **विकट, भीषण।**

संगृहीत—वि. [सं.] **संग्रह या एकत्र किया हुआ, संकलित।**

संगृहीता—वि. [सं. संगृहीतृ] **संग्रह करनेवाला।**

संग्या—संज्ञा स्त्री. [सं. संज्ञा] (१) **चेतनाशक्ति।** (२) **वह विकारी शब्द जो व्यक्ति, वस्तु या भाव का बोधक हो।**

संग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एकत्र करना, संचय।** उ.—कहा काँच संग्रह के कीने, हरि जो अमोल मनी—८९४। (२) **वह ग्रंथ जिसमें विषय या रीति-विशेष की रचनाएँ संगृहीत हों।** (३) **स्थान जहाँ विशेष प्रकार की वस्तुएँ एकत्र की जायँ।** (४) **ग्रहण करने की क्रिया।**

संग्रहणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक प्रसिद्ध रोग।**

संग्रहणीय—वि. [सं. संग्राह्य] **संग्रह-योग्य।**

संग्रहना, संग्रहनो—क्रि. स. [सं. संग्रहण] **संग्रह करना।**

संग्रहालय—संज्ञा पुं. [सं.] **स्थान जहाँ विशेष प्रकार की वस्तुओं का संग्रह हो।**

संग्रही—वि. [सं. संग्रहिन्] **संग्रह करनेवाला।**

संग्राम—संज्ञा पुं. [सं.] **लड़ाई, युद्ध।** उ.—करत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुम माल करवार—२९०५।

संग्राहक—वि. [सं.] **संग्रह करनेवाला।**

संग्राह्य—वि. [सं.] **संग्रह करने योग्य।**

संघ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समूह, समुदाय।** (२) **सभा, समिति, समाज।** (३) **वह संघटन जिसे नियमानुसार एक व्यक्ति के रूप में शासन का अधिकार हो।** (४) **प्रतिनिधियों द्वारा प्रजातंत्रीय शासन।** (५) **ऐसे राज्यों का समूह जो कुछ बातों में स्वतंत्र हों और कुछ में केंद्रिय शासन के अधीन हों।** (६) **बौद्धों की संघटित संस्था।**

संघचारी—वि. [सं. संघचारिन्] **झुंड बनाकर रहने-विचरनेवाले (पशु)।**

संघट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **राशि, ढेर।** (२) **लड़ाई, युद्ध।** (३) **मुठभेड़।** (४) **मिलन, संयोग।**

संघटन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मेल, मिलाप, मिलन, संयोग।** (२) **रचना, बनावट।** (३) **बिखरी हुई शक्तियों को एकत्र करना।** (४) **वह संस्था जो बिखरी हुई शक्तियों को एकत्र करने के लिए बने।**

संघटित—वि. [सं.] **जिसका संघटन हुआ हो।**

संघट्ट, संघट्टन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मिलन, मिलाप, संयोग।** (२) **रचना, बनावट।**
संघर—संज्ञा पुं. [सं. संगर] (१) **युद्ध।** (२) **विपत्ति।**
संघरना, सँघरनो—क्रि. स. [सं. संहार] **संहार करना।**
सँघराना, सँघरानो—क्रि. स. [देश.] (उदासीन) **गाय-भैसों को दूध दुहने के लिए परचाना या फुसलाना।**
संघर्ष, संघर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रगड़, घिस्सा।** (२) **होड़, स्पर्धा।** (३) **रघड़ना, घिसना।** (४) **दो दलों का विरोध जिसमें एक, दूसरे को दबाने का प्रयत्न करे।** (५) **वह प्रयत्न या प्रयास जो विषम परिस्थिति से अपने को निकालकर आगे बढ़ने के लिए किया जाय।**
संघर्षी—वि. [सं.] **संघर्ष करनेवाला।**
संघ-स्थविर—संज्ञा पुं. [सं.] **बौद्ध संघाराम का प्रधान।**
संघाता—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जमाव, झुंड, समूह।** (२) **विशेष कार्य से बना संघ या समूह।** (३) **निवास स्थान।** (४) **संग, साथ।** (५) **चोट, आघात।** (६) **मार डालना, वध।** (७) **इक्कीस नरकों में एक।** (८) **शरीर।**

वि. (१) **घना, सघन।** (२) **नष्ट।** उ.—तुमरे कुल कौं बेर न लागै होत भस्म संघात—९-७७।

संघातक—वि. [सं.] (१) **प्राण लेनेवाला।** (२) **नष्ट या नाश करनेवाला।**
सँघाती, संघाती—संज्ञा पुं. [सं. संघ] (१) **साथ रहने-वाला, साथी, सहचर।** उ.—(क) सदा सँघाती आपनो (रे) जिय कौ जीवन-प्रान—१-३२५। (ख) सदा सँघाती श्री जदुराइ—७-२। (ग) बिछुरे री मेरे बाल-सँघाती—२८८२। (२) **मित्र।** उ.—जानति हौं तुम मानति नाहीं तुमहूँ श्याम-संघाती—२९८१।

वि. [सं. संघात] **प्राणनाशक।**

संघार—संज्ञा पुं. [सं. संहार] (१) **वध।** (२) **नाश।**
संघारना, संघारनो—क्रि. स. [हिं. संहारना] (१) **मार डालना, वध करना।** (२) **नाश करना।**
संघाराम—संज्ञा पुं. [सं.] **बौद्ध श्रमणों का मठ, बिहार।**
संघारि—क्रि. स. [हिं. संघारना] **मार कर।**

प्र.—संघारि डारौं—**मार डालूँ।** उ.—सूर प्रभु सहित संघारि डारौं—५९०।

सँघेरना, सँघेरनो—क्रि. स. [हिं. संग+करना] **पशु के दो पैर बाँधना जिससे वह दूर या तेज न जा सके।**
संघेला—संज्ञा पुं. [सं. संग] (१) **सहचर।** (२) **मित्र।**
संघोष—संज्ञा पुं. [सं.] **जोर का शब्द, घोष।**
संच—संज्ञा पुं. [सं. संचय] (१) **संग्रह, संचय।** (२) **रक्षा, देख-भाल।**
संचक—वि. [सं. संचय] **इकट्ठा करनेवाला।**
संचति—क्रि. स. [हिं. संचना] **इकट्ठा या संग्रह करती है।** उ.—ज्यौं मधुमाखी सँचति निरंतर, बन की ओट लई—१-५०।
संचना, संचनो—क्रि. स. [सं. संचयन] (१) **इकट्ठा या संग्रह करना।** (२) **रक्षा या देखभाल करना।**
संचय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ढेर, राशि, समूह।** (२) **एकत्र या संग्रह करने की क्रिया।**
संचयन—संज्ञा पुं. [सं.] **संग्रह करने की क्रिया।**
संचयी—वि. [सं. संचयिन्] (१) **इकट्ठा या संग्रह करने वाला।** (२) **कंजूस, कृपण।**
संचर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चलना।** (२) **मार्ग।**
संचरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चलना, गमन।** (२) **फैलना, प्रसरण।** (३) **काँपना।**
संचरना, संचरनो—क्रि. अ. [सं. संचरण] (१) **घूमना-फिरना, चलना।** (२) **फैलना, प्रसरित होना।** (३) **प्रचलित या व्यवहृत होना।**

क्रि. स. [सं. संचारण] (१) **चलाना, घुमाना।** (२) **फैलाना।** (३) **प्रचलित करना।**

क्रि. स. [सं. संचय] **इकट्ठा या एकत्र करना।**

संचरित—वि. [सं.] **जिसमें या जिसका संचार हुआ हो।**
संचरै—क्रि. स. [हिं. संचरना] **इकट्ठा, एकत्र या संग्रह करती है, उपस्थित या प्रस्तुत करती है।** उ.—रसना द्विज दलि दुखित होत बहु, तउ रिसि कहा करै। छमि सब छोभ जु छाँड़ि, छवौ रस लै समीप सँचरै—१-११७।
संचान—संज्ञा पुं. [सं.] **बाज, शिकरा, श्येन (पक्षी)।**
सँचार, संचार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चलना, गमन।** (२) **फैलने विशेषतः भीतर फैलने, या विस्तृत होने कीक्रिया, प्रवेश।** उ.—(क) अर्जुन तब सरपिंजर कियौ, पवन सँचार रहन नहिं दियो—ना. ४३०९। (ख) ता दिनतैं

उर-भौन भयो सखि सिव-रिपु को संचार—२८८८। (३) चलाने की क्रिया। (४) ग्रह का एक राशि से दूसरी में जाना।

संचारक—वि. [सं.] (१) चलानेवाला। (२) फैलानेवाला। (३) प्रचार करनेवाला।

संचारना, संचारनो—क्रि. स. [सं. संचारण] (१) फैलाना। (२) प्रचार करना। (३) (अस्त्र-शस्त्र) चलाना। (४) जन्म देना, उत्पन्न करना।

संचारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] कुटनी, दूती।

वि. (१) चलानेवाली। (२) फैलानेवाली। (३) प्रचार करनेवाली।

संचारित—वि. [सं.] जिसका संचार किया गया हो।

संचारी—संज्ञा. पुं. [सं. संचारिन्] (१) वायु, हवा। (२) संगीत में पहला या स्थाई पद या उसका कुछ अंश पुनः भिन्न रीति से कहने की क्रिया या भाव। (३) काव्य के ३३ संचारी भाव।

वि. संचरण करनेवाला, गतिशील।

क्रि. स. [हिं. संचारना] फैलायी, संचारित की। उ.—बन बरुही चातक रटै द्रुम द्युति सघन संचारी—२२९६।

संचारी भाव—संज्ञा पुं. [सं.] सहित्य में वे भाव जो रस के उपयोगी होकर, मुख्य भाव की पुष्टि करते और स्थायी भाव की तरह स्थिर न रहकर, अत्यन्त चंचलता पूर्वक सब रसों में संचरित होते रहते हैं। इनको 'व्यभिचारी भाव' भी कहते हैं। इनकी संख्या ३३ है—अपस्मार (मूर्च्छा), अमर्ष (क्रोध या असहनशीलता), अलसता या आलस्य, अवहित्था (मनोभाव का दुराव-छिपाव), असूया या अनसूया (ईर्ष्या), आवेग, उग्रता, उन्माद, औत्सुक्य या उत्सुकता, गर्व, ग्लानि, चपलता, चिंता, जड़ता, दीनता या दैन्य, धृति, निद्रा, निर्वेद (निराशा-जन्य खिन्नता या विरक्ति), मति, मद, मरण, मोह, लज्जा या व्रीड़ा, वितर्क, विबोध(जागना, जागरण), विषाद, व्याधि, शंका, श्रम, संत्रास (अहित-आशंका-जनित चिंता या भय), स्मृति, स्वप्न और हर्ष।

संचारयो, संचारयौ—क्रि. स. [हिं. संचारना] एकत्र किया। उ.—ईंधन दौरि दौरि संचारयो—१० उ.-५२।

संचालक—वि. [सं.] (१) चलाने या गति देनेवाला, परिचालक। (२) अपने निरीक्षण-निर्देशन में कार्य-विशेष चलाने या करानेवाला।

संचालन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चलाने की क्रिया, परि-चालन। (२) वह प्रबंध या व्यवस्था जिससे कार्य होता रहे। (३) देख-रेख, नियंत्रण, निर्देशन।

संचालित—वि. [सं.] जिसका संचालन किया गया हो या किया जा रहा हो।

संचि—क्रि. स. [हिं. संचना] एकत्र या संग्रह करके। उ.-याहू साँज संचि नहिं राखी, अपनी धरनि धरी—१-१३०।

संचित—वि. [सं.] (१) एकत्र या संग्रह किया हुआ। (२) ढेर लगाया हुआ।

सँचिबो, सँचिबौ—संज्ञा पुं. [हिं. संचना] एकत्र या संग्रह करने का भाव। उ.—सतगुरु कह्यौ, कहौं तोसौं हौं, राम-नाम-धन सँचिबौ।

संचु—संज्ञा पुं. [हिं. सचु] (१) सुख। (२) हर्ष।

सँचै—क्रि. स. [हिं. संचना] एकत्र या संचय करे। उ.—सुमति सुरूप सँचै स्रद्धा-विधि—२-१२।

सँच्यो, सँच्यौ—क्रि. स. [हिं. संचना] उ.—एकत्र या संचय किया। उ.—(क) देखत आनि सँच्यौ उर अंतर दै पलकनि कौ तारौ री—१०-१३५। (ख) सुख संच्यो स्रवन दुआर—३२४३।

संजम—संज्ञा पुं. [सं. संयम] इंद्रिय-निग्रह। उ.—(क) गनिका किए कौन ब्रत संजम सुक-हित नाम पढ़ावै—१-१२२। (ख) नौमी नेम भली बिधि करै। दसमी कौं संजम बिस्तरै—९-५।

संजमी—वि. [सं. संयमी] (१) संयम से रहनेवाला। (२) इंद्रियनिग्रही।

संजय—संज्ञा पुं. [सं.] धृतराष्ट्र का एक मन्त्री जिसने दिव्य-दृष्टि-संपन्न होने के कारण हस्तिनापुर में बैठे-बैठे उनको कुरुक्षेत्र के महाभारत-युद्ध का यथार्थ विवरण सुनाया था।

संजात—वि. [सं.] (१) उत्पन्न (२) प्राप्त।

संजाफ—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. संजाफ़] झालर, गोट।

संज्ञा पुं. घोड़ा जो आधा लाल और आधा हरा या सफेद हो।

संजाफी—वि. [फ़ा. संजाफ़ी] **गोट या झालरदार।**
संजाब—संज्ञा पुं. [फ़ा. संजाफ़] **संजाफ घोड़ा।**
संजीदगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. संजीदगी] **गंभीरता।**
संजीदा—वि. [फ़ा. संजीदा] **(१) गंभीर। (२) बुद्धिमान।**
संजीवनि, संजीवनी—वि. स्त्री. [सं. संजीवनी] **जीवन, प्राण या शक्ति-दायिनी।**
संज्ञा स्त्री. **एक कल्पित औषधि जिसके सेवन से मृतक भी जी उठता माना गया है।** उ.—(क) दौनागिरि पर आहि सँजीवन बैद सुषेन बताई—९-१४९। (ख) श्री रघुनाथ सँजीवनि कारन मोकौं इहाँ पठायौ—९-१५५।
संजुक्त—वि. [सं. संयुक्त] **(१) जुड़ा हुआ। (२) मिला हुआ। (३) संबद्ध। (४) साथ, सहित।**
संजुग—संज्ञा पुं. [सं. संयुत] **युद्ध, संग्राम।**
संजुत—वि. [सं. संयुक्त] **साथ, सहित।** उ.—(क) ललित कन-संजुत कपोलनि लसत कज्जल अंक—२५३। (ख) कटि किंकिनि चंद्रमनि-संजुत—६२५।
सँजोइ—क्रि. स. [हिं. सँजोना] **सजाकर, सँजोकर।** उ.—चौक चंदन लीपि कै धरि आरती सँजोइ—१२-२६।
क्रि. वि. [सं. संयोग] **संग या साथ में।**
सँजोइल—वि. [हिं. सँजोना] **(१) सजा-सजाया, सुसज्जित। (२) एकत्र या संग्रह करनेवाला।**
सँजोऊ—वि. [हिं. सँजोना] **(१) सजाने या सुसज्जित करनेवाला। (२) एकत्र या संग्रह करनेवाला।**
संज्ञा पुं. **(१) तैयारी। (२) सामान, सामग्री।**
संजोग—संज्ञा पुं. [सं. संयोग] **(१) संयोग।** उ.—(क) रवि-ससि राहु संजोग बिना ज्यों लीजतु है मन मानि—२-३८। (ख) तड़ित-घन संजोग मानौ—६२७। (२) **संबंध, लगाव, चेतना।** उ.—उहाँ जाइ कुरुपति बल-जोग, दियो छाँड़ि तन कौं संजोग—१-२८४। (३) **इत्तिफाक, अकस्मात घटित होना।** उ.—नीकैं पहुँचे आइ तुम, भलौ बन्यौ संजोग—४३७।
यौ०—बिधि-संयोग—**विधाता की देन या व्यवस्था (से)।** उ.—(क) बिधि-संयोग टारत नाहिं टरैं—९-७७। (ख) तीनि पुत्र भए बिधि-संजोग—९-१७४।
संजोगिनि, संजोगिनी—वि. [सं. संयोगिनी] **जो (स्त्री) पति या प्रेमी के साथ हो।**
संजोगी—वि. [सं. संयोगिन्] **(१) मिले हुए, संयुक्त। (२) जो प्रिया या प्रेमिका के साथ हो।**
सँजोना, सँजोनो—क्रि. स. [सं. सज्जा] **सजाना, सज्जित या अलंकृत करना।**
क्रि. स. [सं. संचय] **इकट्ठा करना।**
सँजोवन—संज्ञा पुं. [हिं सँजोना] **सजाने की क्रिया।**
सँजोवना—क्रि. स. [सं. सज्जा. हिं. सँजौना] **सज्जित या अलंकृत करना।**
क्रि. स. [सं. संचय, हिं. संजोना] **इकट्ठा, एकत्र या संग्रह करना।**
सँजोवल, सँजोवस—वि. [हिं. सँजोना] **(१) सुसज्जित, अलंकृत। (२) सेना-सहित। (३) सजग, सावधान।**
सँजोवा—संज्ञा पुं. [हिं. सँजोना] **(१) सजावट, शृंगार। (२) जमाव, जमघट।**
संज्ञक—वि. [सं.] **नाम या संज्ञा वाला।**
संज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **(१) चेतनाशक्ति। (२) बुद्धि। (३) ज्ञान। (४) नाम। (५) वह विकारी शब्द जो किसी वस्तु, व्यक्ति या भाव का बोधक हो। (६) संकेत। (७) सात तत्वों में एक।** उ.—पृथिवी अप तेज वायु नभ संज्ञा शब्द परस अरु गंध—सारा. ८। (८) **सूर्य की पत्नी जो विश्वकर्मा की पुत्री और यम-यमुना की माता थी।**
संज्ञाहीन—वि. [सं.] **बेहोश, अचेत।**
सँझला—वि. [प्रा० संझा] **संध्या-संबंधी।**
सँझबत्ती—संज्ञा स्त्री. [प्रा. संझा+हिं. बत्ती] **(१) संझा को जलने या जलाया जानेवाला दीपक। (२) संझा को गाया जाने वाला गीत।**
संझा—संज्ञा स्त्री. [सं. संध्या, प्रा. संझा] **शाम, संध्या।**
संझावलि—संज्ञा स्त्री. [हिं. संझा] **राधा की सखी एक गोपी का नाम।** उ.—कज्जल लै आई संझावलि—२३१२।
सँझिया, सँझैया—संज्ञा पुं. [हिं. संझा] **शाम का भोजन।**
सँझोखा—संज्ञा पुं. [हिं. संझा] **शाम का समय।**
सँठिया, संटी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **पतला बेंत या डंडी।** उ.—(क) माता सँटिया हैक लगाए—३९१। (ख)

सैठिया लै मारन जब लागी—८६१ ।

संठ—संज्ञा स्त्री. [सं. शांत] **शांति, निस्तब्धता ।**

वि. [सं. शठ] (१) **धूर्त ।** (२) **नीच ।** उ.—सुनि अरे संठ दसकंठ—९-१२९ ।

संड—वि. [हिं. संडा] **मोटा-ताजा ।**

संडमुसंड—वि. [हिं. संडा + मुसंडा (अनु.)] **मोटा-ताजा, हट्टा-कट्टा (व्यंग्य) ।**

संडसा—संज्ञा पुं. [सं. संदंश] **लोहे का एक औजार ।**

संडसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सँडसा] **छोटा सँड़सा ।**

संडा—वि. [सं. शंड] **मोटा-ताजा ।**

संडामर्क, संडामर्का—संज्ञा पुं. [सं शंडामर्क] **प्रह्लाद के शिक्षा-गुरु ।** उ.—पाँच बरस की भई जब आइ, संडामर्कहि लियौ बुलाइ ।........ । संडामर्क रहे पचि हारि, राजनीति कहि बारंबार । ....तब संडामर्का संकाइ, कह्यौ असुर-पति सौं यों जाइ—७-२ ।

संडा-मुसंडा—वि.[हिं.संडा + मुसंडा (अनु.)] **मोटा-ताजा, हट्टा-कट्टा (व्यंग्य) ।**

संडास—संज्ञा पुं. [देश.] **कुएँ-जैसा बना गहरा पाखाना, शौचकूप ।**

संत—वि. [सं. सत्] (१) **संन्यासी, महात्मा, त्यागी ।** उ.—(क) उद्धव संत सराह्यो—सारा. ५५८ । (ख) सूर स्याम कारन यह पठवत ह्वै आवैंगे संत—२९२१ । (२) **हरि-भक्त ।**

संज्ञा पुं. (१) **संन्यासी, महात्मा ।** उ.—सादर संत देखि मन मानौ प्रेखें प्राण हरै—२८०८ । (२) **हरि-भक्त ।** उ.—भक्त सात्विकी सेवैं संत, लखै तिन्हैं मूरति भगवंत—३-१३ ।

संतत—अव्य. [सं.] (१) **सदा, सर्वदा ।** उ.—(क) संतत निकट रहत हौ । (ख) संतत सुभ चाहत—१-७७ । (२) **लगातार, निरंतर ।**

संतति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बाल-बच्चे, संतान ।**

संतपन—संज्ञा. पुं. [सं.] **साधुता, महात्मापन ।**

संतप्त—वि. [सं.] (१) **खूब जला या तपा हुआ ।** (२) **बहुत दुखी या पीड़ित ।**

संतरण—संज्ञा पुं. [सं.] **अच्छी तरह तैरने या तैरकर पार होने की क्रिया ।**

वि. **तारने या पार उतारनेवाला ।**

संतरा—संज्ञा पुं. [पुर्त. संगतरा या फ़ा. संगतरः] **एक प्रसिद्ध फल जो मीठा होता है ।**

संतान—संज्ञा पुं., स्त्री. [सं.] (१) **बाल-बच्चे, संतति ।** उ.—सुत-संतान-स्वजन-बनिता-रति घन समान उनई —१-५० । (२) **कुल, वंश ।**

संताप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आँच, जलन, ताप ।** (२) **मानसिक कष्ट या दुख ।** उ.—(क) आनँद-मगन राम-गुन गावै, दुख-संताप की काटि तनी—१-२९ । (ख) प्रगट पाप संताप सूर अब कापर हठै गहौं३-२ । (ग) बिछुरनकौ संताप हमारौ तुम दरसन दै काट्यौ—९-८७ । (३) **शत्रु ।**

संतापन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जलाना ।** (२) **दुख या कष्ट देना ।** (३) **कामदेव का एक बाण जो विरही को संतप्त करता है ।**

वि. (१) **जलानेवाला ।** (२) **दुखदायी ।**

संतापना, संतापनो—क्रि. स. [सं. संताप] (१) **जलाना, दग्ध करना ।** (२) **दुख या कष्ट देना ।**

संतापित—वि. [सं.] (१) **जला हुआ, दग्ध ।** (२) **दुखी ।**

संतापी—वि. [सं. संतापिन्] (१) **जलाने या दग्ध करनेवाला ।** (२) **दुख या कष्ट देनेवाला ।** उ.—घातक, कुटिल, चबाई, कपटी महा कुटिल संतापी—१-१४० ।

संतापै—क्रि. स. [हिं. संतापना] **दुख या कष्ट पहुँचाता है ।** उ.—(क) अरु पुनि लोभ सदा संतापै । (ख) हरि-माया सब जग संतापै—३-१३ । (ग) सुख-दुख तनिकौ तिहिं न सँतापै —३-१३ ।

संति, संती—अव्य. [सं. संति ?] **बदले या स्थान में ।**

संतुलन—संज्ञा पुं.[सं.] (१) **तौल या भार बराबर होना या करना ।** (२) **दो पक्षों का बल बराबर होना या करना ।**

संतुष्ट—वि. [सं.] (१) **जिसे संतोष हो गया हो ।** (२) **जो सहमत हो गया हो ।**

संतोख, संतोष—संज्ञा पुं. [सं. संतोष] (१) **हर स्थिति में प्रसन्न रहना और अधिक की कामना न करना ।** उ.—सील-संतोष सखा दोउ मेरे तिन्हैं बिगोवति भारी—१-१७३ । (२) **जी भर जाना, तृप्ति ।** उ.—(क) बहुतै काल भोग मैं किए, पै संतोष न आयो हिए—९-२ ।

(ख) बहुत काल या भाँति बितायौ, पै रिषि-मन संतोष न आयौ—९-८। (३) **हर्ष, सुख, आनंद।**

संतोषना, संतोषनो—क्रि. स. [सं. संतोष] (१) **तृप्त करना। (२) प्रसन्न या सुखी करना।**

क्रि. अ. (१) **तृप्त होना। (२) प्रसन्न होना।**

संतोषि—क्रि. स. [हिं. संतोषना] **संतोष देकर, संतुष्ट करके।** उ.—तिन्हैं संतोषि कह्यौ, देहु माँगै हमैं, बिष्नु की भक्ति सब चित्त धारौ—४-११।

संतोषित—वि. [हिं. संतोष] **संतुष्ट।**

संतोषी—वि. [सं. संतोषिन्] **जो सदा संतोष रखता हो।**

संतोख्यो, संतोख्यौ—क्रि. स. [हिं. संतोषना] **संतोष दिया।** उ.—धनुभंजन जज्ञ हेत बोले इनहिं और डर नहीं सबन कहि संतोख्यौ—२५०३।

संत्रास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भय।** (२) **अहित की आशंका से उत्पन्न चिंता या भय जिसको 'त्रास' भी कहते हैं और जो एक संचारी भाव है।**

संथा—संज्ञा पुं. [सं. संहिता ?] **एक बार में पढ़ा या पढ़ाया हुआ पाठ या अंश।**

संदंश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सँडसी।** (२) **चिमटी।**

संद—संज्ञा पुं. [सं. संधि] **छेद, बिल, दरार।**

संज्ञा पुं. [सं. चंद्र] **चंद्र, चंद्रमा।**

संज्ञा पुं. [देश.] **दबाव।**

संदहिं—संज्ञा पुं. सवि. [देश. संद] **दबाव से।** उ.—मनौ सुरग्रह ते सुर-रिपु कन्या सौतै आवति ढुरि संदहि।

संदर्भ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रचना, बनावट।** (२) **प्रबंध, निबंध।** (३) **वह आकर ग्रंथ जिसमें अनेक प्रकार की विशिष्ट बातें लिखी हों।** (४) **संबंधित प्रसंग या वर्णित विषय।**

संदर्शन—संज्ञा पुं. [सं.] **भली-भाँति देखना।**

संदल—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **चंदन, श्रीखंड।**

संदली—वि. [फ़ा. संदल] (१) **चंदन का (बना हुआ), चंदन से संबंधित।** (२) **चंदन जैसे हल्के पीले रंग का।**

संज्ञा पुं. (१) **एक तरह का हल्का पीला रंग।** (२) **एक तरह का हाथी।** (३) **एक तरह का घोड़ा।**

संदि—संज्ञा स्त्री. [सं. संधि] **मेल, संधि।**

संदिग्ध—वि. [सं.] (१) **जिसमें संदेह या संशय हो।** (२) **जिस पर शक या संदेह हो।**

संज्ञा पुं. **एक प्रकार का व्यंग्य।**

संदिग्धता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **संदिग्ध होने का भाव।**

संदिग्धत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **संदिग्ध होने का भाव।** (२) **एक काव्य-दोष जो अर्थ के अस्पष्ट होने या तत्संबंधी संदेह बने रहने पर माना जाता है।**

संदिष्ट—वि. [सं.] **कहा हुआ, कथित।**

संदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पलँग, शैया।**

संदीपक—वि. [सं.] **उद्दीपनकारी, उद्दीपक।**

संदीपन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उद्दीप्त करने की क्रिया, उद्दीपन।** (२) **श्रीकृष्ण के गुरु जिनको श्रीकृष्ण ने गुरु-दक्षिणा में मृतक पुत्र ला दिये थे।** उ.—संदीपन सुत तुम प्रभु दीने विद्या-पाठ करयो—१-१३३। (३) **कामदेव के पाँच बाणों में एक।**

वि. **उद्दीपन करनेवाला।**

संदूक—संज्ञा पुं. [अ. संदूक़] **लकड़ी, टीन या लोहे का बना पिटारा, पेटी, बकस।** उ.—(क) संदूकनि भरि धरे ते न खोलै री—१५४९। (ख) कज्जल कुलुफ मेलि मंदिर मैं पलक संदूक पर अटके—पृ. ३२९(८८)।

संदूकची, संदूकड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. संदूक+ची, ड़ी] **लकड़ी, टीन या लोहे की छोटी पेटी।**

संदूर—संज्ञा पुं. [हिं. सिंदूर] **सिंदूर।**

संदेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समाचार, संवाद।** (२) **उद्देश्य-विशेष से कही या कहलायी गयी बात।** (३) **एक प्रकार की बँगला मिठाई।**

संदेशहर—संज्ञा पुं. [सं. संदेश+हर] **संदेश पहुँचाने-वाला, दूत, बसीठ।**

संदेस, संदेसा—संज्ञा पुं. [सं. संदेश] **किसी के द्वारा कहा या कहलाया गया समाचार या संदेश।** उ.—(क) तब दारुक संदेस सुनायौ—१-१८४ (ख) हाथ मुद्रिका प्रभु दई संदेस सुनायौ—९-७२।

संदेशी, संदेसी—संज्ञा वि. [सं. संदेशिन्] **संदेश पहुँचाने-वाला, दूत, बसीठ।**

सँदेसो, संदेसो, संदेसौ—संज्ञा पुं. [सं. संदेश] **किसी के द्वारा कहलाया गया समाचार।** उ.—(क) कहियौ नन्द सँदेसौ इतनौ जब हम वै इक थान—९-८३। (ख)

कहौं सँदेसौ पति कौ—९-८४। (ग) सँदेसौ देवकी सौं कहियौ—ना. ३७९३।

संदेह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शक, संशय, शंका।** उ.—(क) रघुपति, मन संदेह न कीजै—९-१४८। (ख) सूरदास प्रभु अंतर्यामी भक्त संदेह हरचौ—२५५२। (२) **एक अर्थालंकार।**

संदेहात्मक—वि. [सं.] (१) **जिसके प्रति संदेह हो।** (२) **जिसके कारण संदेह हो।**

संदेहास्पद—वि. [सं. संदेह+आस्पद] (१) **जिसमें संदेह हो।** (२) **जिसके कारण संदेह हो।**

संदेहैं—संज्ञा पुं. सवि [सं. संदेह] **संशय को** उ.—तेरे सब संदेहैं देहौं—३.१३।

संदोल—संज्ञा पुं. [सं.] **'कर्णफूल' नाम का गहना।**

संदोह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूध दुहना।** (२) **वस्तु का पूर्ण रूप।** (३) **झुंड, समूह।** (४) **ढेर, राशि।**

संध—संज्ञा स्त्री. [सं. संधि] **जोड़, संधि।** उ.—जरासंध की संधि जोरचो हुतौ, भीम ता संध को चीर डारचो—१० उ०-५१।

संधना, संधनो—क्रि. अ. [सं. संधि] **जुड़ना।**

संधान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धनुष पर बाण चढ़ाकर निशाना लगाने की क्रिया, लक्ष-वेध।** उ.—(क) सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी कर छूट्यौ संधान—१-९७। (ख) दिति दुर्बल अति अदिति हृष्टचित, देखि सूर संधान—९-२०। (ग) तबै सूर संधान सफल हौ रिपु कौ सीस उतारौं—९-१३७। (घ) भाल-तिलक भ्रुव चाप आप लै सोइ संधान संधानत—पृ. ३३६ (६१)। (२) **खोजने-ढूँढ़ने का व्यापार।** (३) **मिलाना, योजन।** (४) **जमा-खर्च करना।** (५) **मेल या जोड़-तोड़ बैठाना।** (६) **संधि।** (७) **काँजी।** (८) **अचार।** (९) **मदिरा।**

संधानत—क्रि. स. [हिं. संधानना] **निशाना लगाता या लक्ष्य साधता है।** उ.—भाल तिलक भ्रुव चाप आप लै सोइ संधान संधानत—पृ. ३३६ (६१)।

संधानति—क्रि. स. [हिं संधानना] **निशाना लगाती या लक्ष्य साधती है।** उ.—सूर सुंदरी आपु ही कहा तू शर संधानति—२२५१।

संधानना, संधाननो—क्रि. स. [सं. संधान+ना, नो] (१) **धनुष पर बाण चढ़ाकर निशाना लगाना या लक्ष्य पर तीर छोड़ना।** (२) **प्रयोग करने के लिए किसी अस्त्र को ठीक करना।** (३) **जोड़ना।**

संधाना—संज्ञा पुं. [सं. संधानिका] **अचार।**

सँधाने—क्रि. स. [हिं. संधानना] **धनुष पर तीर चढ़ाकर निशाना लगाया या लक्ष्य पर तीर छोड़े।** उ.—(क) मनु मदन धनु-सर सँधाने देखि घन-कोदंड—१-३०७। (ख) काम-बाण पाँचौं संधाने—१० उ.-१०५।

संज्ञा पुं. [हिं. संधान] **अचार।** उ.—अंब आदि दै सबै सँधाने। सब चाखे गोबर्धन राने—३९६।

सँधानौं—संज्ञा पुं. [हिं. संधान] **अचार।** उ.—तुमकौं भावत पुरी सँधानौ—१०-२११।

संधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दो चीजों का मेल, संयोग।** उ.—जैसे खरी कपूर दोउ यक समय यह भई ऐसी संधि—२९१२। (२) **दो चीजों के मिलने का जोड़।** (३) **दो राजाओं या राज्यों के बीच होनेवाला मैत्री-संबंध।** (४) **सुलह, मित्रता।** (५) **शरीर में दो हड्डियों के मिलने का जोड़ या गाँठ।** (६) **व्याकरण में दो अक्षरों के मेल से होनेवाला विकार।** (७) **नाटक में प्रयोजन-विशेष के साधक कथांशों का अन्य से होनेवाला संबंध जो पाँच प्रकार का होता है—मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श या अवमर्श और निर्वहण।** (८) **सेंध, छेद।** (९) **एक काल, युग या अवस्था के अंत और दूसरे के आरंभ के बीच का समय।** उ.—बैस-संधि सुख तजी सूर हरि गए मधुपुरी माँहीं—३२४४। (१०) **(दो चीजों के बीच की) खाली जगह, अवकाश।** उ.—धरनि आकास भयौ परिपूरन नैंकु नहीं कहुँ संधि बचायौ—५९१। (११) **भेद, रहस्य।**

संधि-थली—संज्ञा स्त्री, [सं. संधि+स्थल] **संधि के निकट का खाली स्थान।** उ.—मनहुँ बिबर ते उरग रिंग्यो तकि गिरि के संधि थली—२०७१।

संधि राग—संज्ञा पुं. [सं.] **सिंदूर, सेंदुर।**

संधि-विच्छेद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समझौता तोड़ना या टूटना।** (२) **व्याकरण में किसी पद की संधि तोड़कर शब्द अलग करना।**

संध्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **शाम, सायंकाल।** उ.—(क) संध्या समय निकट नहिं आयो, ताके ढूँढ़न कौं उठि धायौ—५-३। (ख) संध्या समय होन आयौ—७-६। (२) **भारतीय आर्यों की एक उपासना जो प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल को होती है** (३) **सीमा।**

संन्यस्त—वि. [सं. संन्यास] (१) **जिसने संन्यास लिया हो।** (२) **काम में अत्यधिक संलग्न।**

संन्यास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में अंतिम जिसमें सब कार्य निष्काम भाव से किये जाते हैं।** (२) **क्षेत्र अथवा सीमा-विशेष में ही रहकर कार्य करने का व्रत या निश्चय।**

संन्यासी—संज्ञा पुं. [सं. संन्यासिन्] **संन्यास-आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।**

संपजना—क्रि. अ. [सं. सम+उपजना] (१) **उगना, पैदा होना।** (२) **प्रकाशित होना।**

संपत, संपति, संपत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. संपत्ति] (१) **धन-दौलत, जायदाद।** उ.—(क) तैसैं धन-दारा सुख-संपति बिछुरत लगै न बार—१-८४। (ख) सूरदास मोहन दरसन बिनु सुख-संपति सपना—२५४७। (२) **ऐश्वर्य, वैभव।** (३) **कोई बहुमूल्य लाभ या प्राप्ति, परम निधि।** उ.—(क) सत संजम-तीरथ-ब्रत कीन्हैं, तब यह संपति पाई—१०-१६ (ख) जे पद-कमल संभु की संपति—५६८। (४) **लक्ष्मी जिसकी उत्पत्ति समुद्र से मानी गयी है।** उ.—कहौ तौ लंकु उखारि डारि देउँ जहाँ पिता संपति को—९-८४।

संपद, संपदा—संज्ञा स्त्री. [सं. संपद्] (१) **वैभव, ऐश्वर्य।** उ.—देखि ब्रज की संपदा कौं फूलै सूरजदास—१०-२६। (२) **धन, पूँजी।** उ.—ऐसी विधि हरि पूजै सदा। हरि-हित लावै सब संपदा—९-५। (३) **सिद्धि।** (४) **सौभाग्य।** उ.—सूरदास संपदा-आपदा जिनि कोऊ पतिआइ—१-२६५।

संपन्न—वि. [सं.] (१) **पूण या सिद्ध किया हुआ।** (२) **सहित, युक्त।** उ.—सत्य-सील-सपन्न सुमूरति—१-६९। (३) **धन-धान्य से पूर्ण।** (४) **धनी।**

संपर्क—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लगाव, संसर्ग, संबंध।** (२) **मेल, संयोग।** (३) **स्पर्श।**

संपा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बिजली, विद्युत।**

संपात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक साथ गिरना।** (२) **संगम, समागम।** (३) **संगम-स्थान।** (४) **वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी रेखा से मिले या उसको काटे।**

संपाति, संपाती—संज्ञा पुं. [सं. संपाति] **एक गीध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का बड़ा भाई था। सीता की खोज में गये हुए बानर-दल को संपाती ने ही उनका पता बताया था।** उ.—आए तीर समुद्र के, कछ सोधि न पायौ। सूर सँपाती तहँ मिल्यौ, यह बचन सुनायौ—९-७२।

संपादक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **काम पूरा या संपन्न करने वाला।** (२) **किसी पत्र-पत्रिका या पुस्तक के क्रम, पाठ आदि को व्यवस्थित करनेवाला।**

संपादकत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **संपादन करने का भाव।**

संपादकीय—वि. [सं.] (१) **संपादक-संबंधी।** (२) **संपादक का लिखा हुआ।**

संपादन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **काम पूरा करना।** (२) **पत्र-पत्रिका या पुस्तक का क्रम, पाठ आदि व्यवस्थित करना।**

संपादित—वि. [सं.] (१) **पूर्ण किया हुआ।** (२) **जिसका क्रम, पाठ आदि व्यवस्थित किया गया हो।**

संपीड़न—संज्ञा पुं. [सं. सम्पीडन] (१) **खूब दबाना, मलना या निचोड़ना।** (२) **बहुत पीड़ा या दुख।**

संपुट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कटोरे या दोने के आकार की कोई वस्तु।** उ.—जलज संपुट सुभग छबि भरि लेत उर जनु धरनि—१०-१०९। (२) **पत्ते का बना दोना।** (३) **डिब्बा, पिटारी।** (४) **अंजुली।** (५) **फूल का कोश।** (६) **मुँहबंद पात्र।**

सँपुटी—संज्ञा स्त्री. [सं. संपुट] **कटोरी, प्याली।**

सँपूरन—वि. [सं संपूर्ण] (१) **पूर्ण, संपूर्ण।** उ.—अष्टम मास सँपूरन होइ—३-१३। (२) **सफल, सिद्ध।** उ.—भयो पूरब फल सँपूरन लह्यौ सुत दैतारी—२६२७। (३) **समाप्त।** उ.—एक भोजन करि सँपूरन गई वैसेहि त्यागि—पृ. ३३९ (८४)।

संपूर्ण—वि. [सं.] (१) **खूब भरा हुआ।** (२) **सब,**

सारा। (३) खतम, समाप्त।

संज्ञा पुं. वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों।

संपूर्णत:—क्रि. वि. [सं.] पूर्ण रूप से।

संपूर्णतया—क्रि. वि. [सं.] भली भाँति।

संपूर्णता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पूरा या सम्पूर्ण होने का भाव। (२) अंत, समाप्ति।

संपृक्त—वि. [सं.] (१) संसर्ग या संबंध में आया हुआ, संबद्ध। (२) मिला हुआ।

सँपेरा—संज्ञा पुं. [हिं. साँप] साँप पालने और उसका तमाशा दिखानेवाला मदारी।

संपै—संज्ञा स्त्री. [सं. संपत्ति] धन-संपत्ति।

सँपोला—संज्ञा पुं. [हिं. साँप+ओला] साँप का बच्चा।

सँपोलिया—संज्ञा पुं. [हिं. सँपोला+इया] साँप का बहुत छोटा बच्चा।

संपोषण—संज्ञा पुं. [सं.] भली भाँति पालन-पोषण करने की क्रिया या भाव।

संप्रज्ञात—संज्ञा पुं. [सं.] वह समाधि जिसमें विषयों के बोध से सर्वथा निवृत्त न होने के कारण आत्मा को अपने स्वरूप का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं होता।

संप्रति - अव्य. [सं.] इस समय, आजकल, अभी।

संप्रद—वि. [सं.] देनेवाला, दाता।

संप्रदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) (दान आदि) देने की क्रिया या भाव। (२) शिष्य को मंत्र या दीक्षा देना। (३) (व्याकरण में) वह कारक जिसमें कोई शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है।

संप्रदाय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कोई विशेष धर्म-संबंधी मत। (२) किसी सिद्धांत या मत के अनुयायियों का वर्ग या समूह।(३) मार्ग, पथ। (४) परिपाटी।

संप्राप्त—वि. [सं.] (१) आया या पहुँचा हुआ, उपस्थित। (२) पाया हुआ। (३) जो हुआ हो, घटित।

संप्रेक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] देखनेवाला, दर्शक।

संप्रेक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] जाँच या निरीक्षण करना।

संबंध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साथ-साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। (२) वास्ता, लगाव, संपर्क। (३) रिश्ता, नाता। (४) बहुत मेल-जोल। (५) विवाह या उसका निश्चय। (६) (व्याकरण में) एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे का लगाव या संबंध सूचित होता है।

संबंधातिशयोक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'अतिशयोक्ति' अलंकार का एक भेद।

संबंधित—वि. [सं. संबंध] संबंध-युक्त।

संबंधी—वि. [सं. संबंधिन्] (१) लगाव या संपर्क रखने वाला। (२) सिलसिले या प्रसंग का, विषयक।

संज्ञा पुं. रिश्तेदार, नातेदार।

संबत—संज्ञा पुं. [सं. संवत्] साल, वर्ष, संवत्सर। उ.—(क) द्वापर सहस एक की भई। कलियुग सत संबत रहि गई—१-२३० (ख) सत संबत मानुष की आइ। आधी तो सोवत ही जाइ—७-८।

संबद्ध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जिससे संबंध हो। (२) बँधा या जुड़ा हुआ। (३) संयुक्त, सहित।

संबर—संज्ञा पुं. [सं. शंबर] (१) एक दैत्य जो कामदेव का शत्रु था। (२) एक शस्त्र। (३) युद्ध।

संबल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) राह का भोजन। (२) वह साधन जिसके भरोसे पर कोई काम किया जाय। (३) सहारा, आश्रय।

संबाद—संज्ञा पुं. [सं. संवाद] वार्तालाप, संवाद। उ.—कपिलदेव बहुरौ यौं कह्यौ। हमैं-तुम्हैं संबाद जु भयौ—३-१३।

संबुद्ध—वि. [सं.] जिसे ज्ञान हो गया हो।

संज्ञा पुं. (१) गौतम बुद्ध। (२) (जैनियों के) जिन देव।

संबोधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जगाना (२) पुकारना। (३) समझाना-बुझाना। (४) जताना, विदित कराना। (५) धीरज या सांत्वना देना। (६) (व्याकरण में) वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारना या बुलाना सूचित हो। (७) (नाटक में) आकाश-भाषित।

संबोधना, संबोधनो—क्रि. स. [सं. संबोधन] समझाना-बुझाना, प्रबोधना।

संबोधित—वि. [सं.] जिसे पुकारा जाय।

संभर—वि. [सं.] भरण-पोषण करनेवाला।

संभरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पालन-पोषण की व्यवस्था या साधन। (२) योजना।

सँभरना, सँभरनो, सँभलना, सँभलनो—क्रि. अ. [हिं. सँभलना] (१) **बोझ आदि का थामा या रोका जा सकना।** (२) **सहारे या आधार पर ठहर सकना।** (३) **सचेत या सावधान होना।** (४) **गिरने, चोट खाने या हानि होने से बचना।** (५) **बुरी दशा या स्थिति से बचे रहना।** (६) **निर्वाह हो सकना।** (७) **स्वास्थ्य-लाभ करना।**

संभव—संज्ञा पुं. [सं. सम्भव] (१) **उत्पत्ति।** (२) **संयोग, समागम।** (३) **हेतु, कारण।**

वि. (१) **उत्पन्न।** (२) **हो सकने योग्य।**

संभवत:—अव्य [सं.] **संभव है कि।**

संभवत—क्रि. अ. [हिं. संभवना] **संभव होता या हो सकता है, सधता है।** उ.—धर्म-स्थापन-हेतु पुनि धारचो नर अवतार। ताको पुत्र-कलत्र सों नहिं संभवत पियार—१० उ.-४७।

संभवतया—अव्य. [सं.] **संभव है कि।**

संभवना, संभवनो—क्रि. स. [हिं. संभव+ना] **पैदा या उत्पन्न करना।**

क्रि. अ. (१) **पैदा या उत्पन्न होना।** (२) **हो सकना।**

संभवनीय—वि. [सं.] **जो हो सकता हो।**

सँभार—संज्ञा पुं. [हिं. सँभालना] (१) **होश-हवास, ध्यान, (तन-बदन की) सुध।** उ.—(क) व्याकुल भई गोपालहिं बिछुरे गयो गुन ज्ञान सँभार—३२१५। (ख) भोजन-भूषन की सुधि नाहीं, तनु की नहीं सँभार—पृ. ३३९। (८३)। (ग) मैमत भए जीव-जल-थल के तनु की सुधि न सँभार—पृ. ३४७। (५२)। (२) **निगरानी, देखरेख।** उ.—सूरदास प्रभु अपने ब्रज की काहे न करत सँभार—२८२०। (३) **पालन-पोषण।**

यौ. सार-सँभार—**पालन-पोषण, देखभाल।**

(४) **वश में रखने का भाव, रोक, निरोध।**

क्रि. अ. **सावधानी के साथ, सचेत होकर।** उ.—प्रबल सत्रु आहै यह मार। यातैं संतौ, चलौ सँभार—१-२२९।

संभार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इकट्ठा या एकत्र करना, संचय।** (२) **तैयारी, साज-सामान।** (३) **भांडार, आगार।** (४) **सजावट।** (५) **धन-सम्पत्ति।** (६) **पालन-पोषण।** (७) **देख-रेख, रखवाली।** (८) **प्रबंध।**

सँभारत—क्रि. स. [हिं. सँभालना] (१) **सचेत या सावधान होता है।** उ.—कर्म सुख-हित करत, होत दुःख नित, तऊ नर मूढ़ नाहीं सँभारत—८-१६। (२) **रक्षा करता या बचाता है, देखरेख रखता है।** उ.—क्यौं न सँभारत ताहि—१-३२५।

सँभारति—क्रि. स. [हिं सँभालना] **रोक या पकड़ में रखती है, सँभालती है।** उ.—अंचल नहीं सँभारति—२५६२।

सँभारना, सँभारनो—क्रि. स. [सं. संभार] (१) **याद या स्मरण करना।** (२) **सँभालना।**

संभारहि—क्रि. स. [हिं. संभालना] **सचेत या सावधान हो जाना।** उ.—तातैं कहत सँभारहि रे नर, काहे कौं इतरात—२-२२।

सँभारि—क्रि. स. [हिं. सँभारना] (१) **स्मरण द्वारा संचित करके।** उ.—(क) चतुरानन बल सँभारि मेघनाद आयो—९-९६। (ख) पूरब प्रीति सँभारि हमारे तुमको कहन पठायौ—३०६३। (२) **नष्ट होने, खोने या बिगड़ने से बचाओ।** उ.—पाछैं भई सु भई सूर जन अजहुँ समुझि सँभारि—२-३१।

प्र. सकै सँभारि—**बचा सकता या रक्षा कर सकता है।** उ.—घालति छुरी प्रेम की बानी, सूर-दास को सकै सँभारि—११६४।

(३) **सँभल जा, सावधान हो जा।** उ.—कह्यौ असुर, सुरपति सँभारि। लै करि बज्र मोहिं पर-डारि—६-५। (४) **रोककर, काबू या नियंत्रण में रखकर।**

मुहा०—सकी सँभारि—**सम्हाल सकी।** उ.—कठिन वचन सुनि स्रवन जानकी, सकी न वचन सँभारि—९-७९। मुख सँभारि—**वाणी पर नियंत्रण रखकर।** उ.—ये सब ढीठ गरब गोरस कैं, मुख सँभारि बोलतिं नहिं बात—१०-३०८।

क्रि. वि. **सँभालकर, सावधानी के साथ।** उ.—और सँभारि मनोरथ धरै—१० उ.-१०५।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सँभार] **होश-हवास, चेत, तन-**

बदन की सुध । उ.—(क) काम-अंध कछु रहि न सँभारि । दुर्बासा रिषि कौं पग मारि – ६-७ । (ख) अंग अभरन उलटि साजे, रही कछू न सँभारि—पृ. ३३० (९३) ।

संभारी—वि. [सं. सम्भारिन्] **भरा हुआ, पूर्ण** ।

क्रि. स. [हिं. सँभारना] **चेते या ध्यान किया** ।

मुहा.—सुधि सँभारी—**चैतना या ध्यान ठीक रखा** । उ.—जमुना जू थकित भई, नहीं सुधि सँभारी—६४९ ।

सँभारे—क्रि. वि. [हिं. सँभालना] **सावधानी के साथ** । उ. –बंधू, करियौ राज सँभारे—९-५४ ।

क्रि. स. **याद या स्मरण किया** । उ.—(क) जे पद-पदुम तात-रिस त्रासत मन-क्रम-बच प्रहलाद सँभारे—१-९४ । (ख) तब तैं गोविंद क्यौं न सँभारे—१-३३४ ।

सँभारै—क्रि. स. [हिं. सँभालना] **रक्षा, देखभाल या रखवाली करे** । उ.—(क) ऐसे बल बिन कौन सँभारै—१०५८ । (ख) बिबस भई तनु न सँभारै री—११८४ । (२) **रोके, वश या काबू में रखे, सावधान रहे** । उ.—बिरही कहाँ लौ आपु सँभारै—३१८९ ।

सँभारौ—क्रि. स. [हिं. सँभालना] (१) **याद या स्मरण किया** । उ.—राग-द्वेष बिधि अबिधि असुचि सुचि जिहिं प्रभु जहाँ सँभारौ । कियौ न कबहुँ बिलंब कृपा निधि, सादर सोच निवारौ—१-१५७ । (२) **स्मरण या याद करके एकत्र करो** । उ.—द्विरद कौ दंत उपटाय तुम लेत हौ, उहै बल आजु काहे न सँभारौ—२६०२ । **रोक, पकड़ या काबू में रखो** ।

मुहा०—बात करि मुख सँभारौ—**वाणी पर नियंत्रण रख कर बात करो** । उ.—बारन हौं करौं बारन सहित फटकिहौं, बावरे, बात कहि मुख सँभारौ—२६९० ।

(३) **आक्रमण के लिए ग्रहण किया** । उ.—दुरबासा कौं चक्र सँभारौ—१-७२ । (४) **सचेत या सावधान होकर अपनी रक्षा का प्रबंध करो** । उ.—जग्य माहिं तुम पसु जे मारे । ते सब ठाढ़े सस्त्रनि धारे । जोहत हैं वे पंथ तिहारौ । अब तुम अपनौ आप सँभारौ—४-१२ ।

सँभारयो, सँभारयौ—क्रि. स. [हिं. सँभालना] (१) **(प्रहार करने को) लिया, उठाया, थामा** । उ.—जब जब भीर परी संतनि कौं चक्र सुदरसन तहा सँभारयौ—१-१४ । (२) **स्मरण या याद किया** । उ.—अंध-अचेत-मूढ़मति बौरे ! सो प्रभु क्यौं न सँभारयौ—१-३३६ ।

मुहा०—बैर सँभारयौ—**पिछले बैर का स्मरण करके बदला लेने को प्रवृत्त हुआ** । उ.– गरजि गरजि घन बरसन लागे, मानो सुरपति निज बैर सँभारयौ —२८३२ ।

(३) **रक्षा की, बचाया** । उ.—काल तहीं तिहिं पकरि सँभारयो । सखा प्रानपति तउ न सँभारयौ—४-१२ । (४) **भार ऊपर लिया, भार उठाये रहा** । उ.—धरनि सीस धरि सेस गरब धरयौ, इहिं भर अधिक सँभारयौ—५६७ ।

सँभाल—संज्ञा स्त्री. [सं. सम्भार] (१) **रक्षा** (२) **भरण-पोषण** । (३) **देखरेख** । (४) **प्रबंध, व्यवस्था** । (५) **होश-हवास, चेत, तन-बदन की सुध** ।

सँभालना, सँभालनो—क्रि. स. [सं. संभार] (१) **भार ऊपर ले सकना या रखे रहना** । (२) **रोक, पकड़ या काबू में रखना** । (३) **हटने, गिरने या खिसकने से रोकना, थामना** । (४) **सहारा देना** । (५) **रक्षा करना** । (६) **बुरी दशा होने से बचाना** । (७) **पालन-पोषण करना** । (८) **देखरेख करना** । (९) **प्रबंध या व्यवस्था करना** । (१०) **निर्वाह करना** । (११) **रोग, व्याधि आदि की रोक-थाम करना** । (१२) **सहेजना** । (१३) **मनोवेग को रोकना** ।

सँभाला—संज्ञा पुं. [हिं. सँभलना] **मरने के पहले सहसा चेतना-सी आ जाना** ।

मुहा०—सँभाला लेना—**मरने के पहले रोगी का सचेत होना या सँभल जाना** ।

संभावना—संज्ञा स्त्री. [सं. सम्भावना] (१) **अनुमान, कल्पना** । (२) **हो सकना, मुमकिन होना** । (३) **एक काव्यालंकार** । (४) **क्रिया, कार्य** ।

संभावित – वि. [सं. सम्भावित] (१) **जो हो सकता हो** । (२) **ध्यान या कल्पना के योग्य** । (३) **सम्मान का**

ध्यान रखनेवाला, स्वाभिमानी।

संभाव्य—वि. [सं. सम्भाव्य] (१) जो हो सकता हो। (२) अनुमान या कल्पना के योग्य।

संभाषण, संभाषन—संज्ञा पुं. [सं. सम्भाषण] बातचीत, कथोपकथन। उ.—नैन सैन संभाषन कीन्हौ, प्यारी की उर तपनि मिटाई—७०१।

संभाषी—वि. [सं. सम्भाषिन्] बात करनेवाला।

संभीत—वि. [सं. सम्भीत] डरा हुआ, भयभीत।

संभु—संज्ञा पुं. [सं. शम्भु] शिव, महादेव। उ.—(क) संभु की सपथ, सुनि कुकपि, कायर, कृपन, स्वास, आकास बनचर उड़ाउँ—९-१२९। (ख) जे पद कमल संभु की संपति—५६८।

संभु-भूषण, संभु-भूषन—संज्ञा पुं. [सं. शम्भु-भूषण] चंद्रमा। उ.—मनहुँ सोभित अभ्र-अंतर संभु-भुषन बेष—६३५।

संभूत—वि. [सं. सम्भूत] (१) उत्पन्न। (२) एक साथ उत्पन्न होनेवाले। (३) युक्त, सहित।

संभूय—अव्य. [सं. सम्भूय] एक साथ, साझे में।

संभृत—वि. [सं. सम्भृत] (१) एकत्र। (२) पोषित।

संभेद—संज्ञा पुं. [सं. सम्भेद] (१) मिले हुए प्राणियों, पदार्थों आदि का वियोग या अलगाव। (२) विरोध कराने की नीति। (३) किस्म, प्रकार।

संभोग—संज्ञा पुं. [सं. सम्भोग] (१) वस्तु आदि का सुख-पूर्वक उपयोग या व्यवहार। (२) रतिक्रीड़ा। (३) संयोग शृंगार। (४) भोग-विलास की सामग्री या साधन। उ.—जदपि कनकमय रची द्वारका सखी सकल संभोग—१० उ.-१०२।

संभोगी—वि. [हिं. संभोग] संभोग करनेवाला।

संभोग्य—वि. [सं. सम्भोग्य] (१) जिसका सुख भोगा जाय। (२) व्यवहार या उपयोग के उपयुक्त।

संभ्रम—संज्ञा पुं. [सं. सम्भ्रम] (१) उतावली, आतुरता। (२) भ्रम में पड़ने की घबराहट या व्याकुलता। (३) दौड़धूप, प्रयत्न। (४) उत्कंठा। (५) आदर, मान।

क्रि. वि. उतावली या आतुर होकर। उ.—सूर सुनत संभ्रम उठि दौरत, प्रेम-मगन, तन दसा बिसारे—१-२४०।

संभ्रमना, संभ्रमनो—क्रि. अ. [सं. सम्भ्रम] (१) उतावली या आतुरता होना (२) भ्रम में पड़ने की घबराहट या व्याकुलता होना। (३) उत्कंठा होना।

संभ्रम्यो, संभ्रम्यौ—क्रि. अ. [सं. सम्भ्रम] भ्रम में पड़ने से घबराहट या व्याकुलता हुई। उ.—जगत पितामह संभ्रम्यौ, गयौ लोक फिरि आइ—४९२।

संभ्रांत—वि. [सं. सम्भ्रान्त] (१) भ्रम में पड़ने से घबराया हुआ या व्याकुल। (२) सम्मानित, प्रतिष्ठित।

संभ्राजना, संभ्राजनो—क्रि. अ. [सं. सम्भ्राज] पूर्णतया सुशोभित होना।

संमत—वि. [सं. सम्मत] मान्य, सम्मति-युक्त। उ.—यह प्रसिद्ध सबहीं को संमत, बड़ौ बड़ाई पावै—१-१९२।

संयंता—संज्ञा पुं. [सं. संयंतृ] संयमी, निग्रही।

संयत—वि. [सं.] (१) बँधा हुआ, बद्ध। (२) पकड़ या दबाव में रखा हुआ। (३) व्यवस्थित, नियमबद्ध। (४) निग्रही, संयमी। (५) सीमा या मर्यादा के भीतर रहनेवाला।

संयम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रोक, दाब (२) निग्रह, चित्त-वृत्ति-निरोध का कार्य। (३) बुरी या हानिकारक बातों से बचने का भाव या कार्य। (४) बाँधना, बंधन। (५) सीमा या औचित्य के भीतर होना या रहना। (६) योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।

संयमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दाब, रोक। (२) चित्त-वृत्ति-निरोध, निग्रह। (३) बाँधना, कसना। (४) खींचना, तानना। (५) यमपुर।

संयमनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] यमपुरी।

संयमित—वि. [सं.] (१) रोक या दाब में रखा हुआ। (२) दमन किया हुआ। (३) बँधा या कसा हुआ। (४) संयम या निग्रह के द्वारा रोका हुआ।

संयमी—वि. [सं. संयमिन्] (१) मनोभावों को वश में रखनेवाला, आत्मनिग्रही। ( ) बुरी या हानिकारक बातों से बचनेवाला।

संयुक्त—वि. [सं.] (१) जुड़ा, सटा या लगा हुआ। (२) मिला हुआ। (३) साथ रहकर या मिलकर काम करनेवाला। (४) साथ, सहित। (५) पूर्ण, समन्वित।

संयुग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मेल, मिलाप। (२) भिड़ंत। (३) लड़ाई, युद्ध।

संयुत—वि. [सं.] (१) जुड़ा, बँधा या लगा हुआ। (२) साथ, सहित, संबद्ध। उ.—मनो मर्कत कनक संयुत खच्यो काम सँवारि—१५६४।

संयूत—वि. [सं.] साथ, सहित, संयुक्त। उ.—जहाँ आदि निजलोक महानिधि रमा सहस संयूत—सारा. १४।

संयोग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मिलावट, मिश्रण। (२) मिलाप, संभोग, समागम (शृंगार)। (३) लगाव, संबंध। उ.— (क) तदपि मनहिं बसत बंसीवट ललिता के संयोग—१० उ.-१०२। (४) सहवास, रति-क्रीड़ा। (५) मतैक्य। (६) जोड़, योग। (७) दो या कई बातों का सहसा एक साथ हो जाना, इत्तफाक। उ.—सबै संयोग जुरे हैं सजनी हठि करि घोष उजारचो—२८३२।

मुहा.—संयोग से—बिना पूर्व निश्चय या किसी योजना के, अकस्मात।

(८) अवसर। उ.—आवत जात डगर नहिं पावत गोबर्द्धन पूजा संयोग—९१९।

संयोग श्रृंगार—संज्ञा पुं. [सं.] श्रृंगार रस का वह विभाग जिसमें प्रेमियों के मिलन या संयोग आदि का वर्णन हो।

संयोगी—वि. [सं. संयोगिन्] (१) मिला हुआ। (२) मिलने या मिलानेवाला। (३) जो प्रिया या प्रेमिका के साथ हो। उ.—अधर सुधा-रस सुकृत पान दै, कान्ह भए अति भोगी।.........तासों रहत सँयोगी—सारा ५६७।

संयोजक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जोड़ने या मिलानेवाला। (२) व्याकरण में दो शब्दों, उपवाक्यों या वाक्यों के बीच में आकर उन्हें जोड़नेवाला शब्द। (३) समिति का वह सदस्य जिसे बैठक बुलाने और उसकी अध्यक्षता करने का अधिकार दिया जाय।

संयोजन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जोड़ने या मिलाने की क्रिया। (२) आयोजन, व्यवस्था।

संयोजित—वि. [सं.] जोड़ा या मिलाया हुआ।

संयोज्य—वि. [सं.] (१) जोड़ने या मिलाने योग्य। (२) जो जोड़ा या मिलाया जाने को हो।

संयोना—क्रि. स. [हिं सँजोना] सजाना।

संरक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देखरेख या रक्षा करने वाला। (२) पालन-पोषण करने और आश्रय में रखने वाला। (३) अभिभावक।

संरक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हानि, विपत्ति आदि से रक्षा करना। (२) आश्रय या देखरेख में रखकर पालन-पोषण या संवर्द्धन करना। (३) देखरेख, निगरानी। (४) अधिकार।

संरक्षित—वि. [सं.] (१) सँभालकर रखा या बचाया हुआ। (२) देखरेख या संरक्षा में लिया हुआ।

संलक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] लखना, पहचानना।

संलक्षित—वि. [सं.] (१) लखा या पहचाना हुआ। (२) लक्षणों से जाना हुआ।

संलक्ष्य—वि. [सं.] जो देखने में आ सके।

संलक्ष्य-क्रम-व्यंग्य—संज्ञा पुं. [सं.] वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ के उपरांत व्यंग्यार्थ-बोध का क्रम लक्षित हो।

संलग्न—वि. [सं.] (१) लगा या सटा हुआ। (२) जुड़ा हुआ, संबद्ध। (३) जो अन्त में जुड़ा या लगा हो।

संलाप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बातचीत, वार्तालाप। (२) आप ही कुछ बोलना या बड़बड़ाना जो पूर्व राग की दस दशाओं के अंतर्गत एक दशा है। (३) नाटक का वह संवाद जिसमें क्षोभ या आवेग न होकर धीरता हो।

संलापक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संलाप करनेवाला। (२) नाटक का वह संवाद जिसमें धीरता हो। (३) एक प्रकार का उपरूपक।

संवत, संवत्—संज्ञा पुं. [सं. संवत्] (१) साल, वर्ष। उ—सत संवत आयु कुल होई—१० उ.-१०३। (२) चालू वर्ष-गणना का कोई वर्ष। (३) महाराज विक्रमादित्य के समय से प्रचलित वर्ष-गणना का कोई वर्ष।

संवत्सर—संज्ञा पुं. [सं.] साल, वर्ष। उ.—सरस संवत्सर लीला गावै जुगल चरन चित लावै—सारा. ११०७।

सँवर—संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] (१) स्मरण। (२)

हाल, समाचार, वृत्तान्त ।

संवर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रोक, परिहार । (२) निग्रह । (३) चुनना, पसंद करना । (४) कन्या का वर या पति चुनना ।

संज्ञा पुं. [सं. संबल] (१) मार्ग का भोजन । (२) सहारा, साधन ।

संवरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रोकना, दूर करना । (२) छिपाना, गोपन करना । (३) विचार, इच्छा या चित्तवृत्ति को रोकना या दबाना । (४) अंत या समाप्त करना । (५) चुनना, पसंद करना । (६) कन्या का वर या पति चुनना ।

सँवरना, सँवरनो—क्रि. अ. [हिं. सँवारना का अक.] (१) बनना, ठीक होना । (२) सजना, अलंकृत होना ।

क्रि. स. [हिं. सुमिरन] याद या स्मरण करना ।

सँवरा, सँवरिया—वि. [हिं. साँवला] श्याम ।

संवर्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रलय काल के सात मेघों में एक । (२) इंद्र का अनुचर एक मेघ जिससे बहुत जल बरसता है ।

संवर्त्तन—संज्ञा पुं. [सं.] फेरा देना, लपेटना ।

संवर्द्धक—वि. [सं.] बढ़ानेवाला ।

संवर्द्धन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बढ़ना, वृद्धि होना । (२) पालना-पोसना । (३) बढ़ाना ।

संवहन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ढोना । (२) दिखाना ।

संवाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बातचीत । (२) समाचार, वृत्तांत । (३) कथा-प्रसंग ।

संवादी—वि. [सं. संवादिन्] (१) बातचीत करनेवाला । (२) अनुकूल या मेल में होनेवाला ।

संज्ञा पुं. संगीत में वह स्वर जो वादी के साथ मिलकर उसकी मधुरता बढ़ाता हो ।

सँवार—संज्ञा स्त्री. [सं. संवाद] समाचार ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सँवारना] सजाने या सँवारने की क्रिया या भाव ।

क्रि. स. सजाकर, सज्जित करके । उ.—जैसे कोऊ गेह सँवार—१० उ.-१२९ ।

संवार—संज्ञा पुं. [सं.] शब्दोच्चारण का वह प्रयत्न जिसमें कंठ सिकुड़ता है ।

संवारण—संज्ञा पुं. [सं.] रोकना, निषेध करना ।

सँवारत—क्रि. स. [हिं. सँवारना] (१) रचते, सजाते या अलंकृत करते हैं । उ.—गोबर्धन पर बेनु बजावत, फूलन भेष सँवारत—सारा. ४७२ (२) शस्त्रादि तेज करते हैं । उ.—कहुँ कर लैकै सस्त्र सँवारत—सारा. ६६६ ।

सँवारति—क्रि. स. [हिं. सँवारना] सजाती या अलंकृत करती है । उ.—जसुमति राधा कुँवरि सँवारति—७०४ ।

सँवारन—संज्ञा पुं. [हिं. सँवारना] (काम) बनाने या सँभालने वाले । उ.—कृपानिधान दानि दामोदर सदा सँवारन काज—१-१०९ ।

सँवारना, सँवारनो—क्रि. स. [सं. सँवर्णन] (१) ठीक करना । (२) सजाना, अलंकृत करना । (३) क्रमबद्ध या व्यवस्थित करना । (४) सुचारु रूप से काम करना ।

संवारना—क्रि. अ. [सं. संवारण] रोकना, मना करना ।

सँवारि—क्रि. स. [हिं. सँवारना] (१) (अस्त्र-शस्त्र) तेज करके । उ.—राख्यौ सुफल सँवारि सान दै कैसे निफल करौं बा बानहिं ९-९५ । (२) सजाकर, अलंकृत करके । उ.—(क) भवन सँवारि नारि रस लोभ्यौ—१-२१६ । (ख) गाइ बच्छ सँवारि लाए—१०-१६ । (३) बनाकर, रचकर । उ.—(क) कंठ कठुला नील मनि अंभोजमाल सँवारि—१०-१६९ । (ख) सीस सचिक्कन केस हो बिच सीमंत सँवारि—२०६५ । (४) व्यंजन आदि ठीक से बनाकर । उ.—यह सुनतहिं मन हर्ष बढ़ायो कियो पकवान सँवारि—९९२ ।

सँवारी—क्रि. स. [हिं. सँवारना] (१) बुरी दशा का सुधार कर लो । उ.—पतित उधारन बिरद जानिकै बिगरी लेहु सँवारी—१-११८ । (२) (व्यंजन आदि) सावधानी से बनाकर । उ.—तुरत करौ सब भोग सँवारी—१००७ । (३) रची या बनायी हुई ।

मुहा. दई सँवारी—बिधाता की गढ़ी हुई (व्यंग्य) । उ.—जुबती हैं सब दई सँवारी घर बनहूँ में रहति भरी—१६१७ ।

सँवारे—क्रि. स. [हिं सँवारना] (१) बना दिये, सुधार दिये, ठीक कर दिये । उ.—(क) सबके काज सँवारे—

१-२५। (ख) जिन हमरे सब काज सँवारे—१-२८६। (२) पकाये, पका कर तैयार किये। उ.—अरु खुरमा सरस सँवारे—१०-१८३।

सँवारै—क्रि. स. [हिं. सँवारना] (१) रचती या बनाती हैं। उ.—मुडली पटिया पारि सँवारै ३०२६। (२) सजाती है। उ.—ललिता रुचिकरि धाय आपने सुमन सुगंधनि सेज सँवारै—१९३०।

सँवारौ—क्रि. स. [हिं सँवारना] (१) बनाओ, निर्मित करो। उ.—(क) हाड़नि कौ तुम बज्र सँवारौ—६-५। (ख) तब ब्रह्मा यह बचन उचारौ। मय माया-मय कोट सँवारौ - ७-७। (२) सुधारो।

मुहा. परलोक सँवारौ—ऐसी वेद-विधि से क्रिया-कर्म करो जिससे उनकी गति सुधर जाय। उ.—राजा कौ परलोक सँवारौ—९-५०।

सँवारयो, सँवारयौ—क्रि.स. [हिं. सँवारना] (१) सजाया। उ.—झूठ-साँच करि माया जोरी रचि-पचि भवन सँवारयौ—१-३३६। (२) (सुस्वाद) बनाया। उ.—सुरस निमोननि स्वाद सँवारयौ—२३२१। (३) (काम) बना दिया। उ.—सूरदास प्रभु की यह लीला ब्रज कौ काज सँवारयौ—४३३।

संवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साथ-साथ रहना। (२) सार्वजनिक निवासस्थान। (३) घर, मकान।

संवाहक—वि.*[सं.] ढोनेवाला।

संवाही वि. [सं.] ढोनेवाला।

संविद—वि. [सं.] चेतन, चेतनायुक्त।

संविद्—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चेतना। (२) बोध, समझ। (३) अनुभूति। (४) वृत्तांत। (५) नाम, संज्ञा।

संविदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] समझौता, ठेका।

संविधान—संज्ञा पुं [सं.] (१) व्यवस्था। (२) रचना। (३) शासन का विधान। (४) रीति, विधि।

संवृत—वि. [सं.] (१) ढका या बंद किया हुआ। (२) दबाया या दमन किया हुआ (३) रक्षित।

संवृद्ध—वि. [सं.] (१) बढ़ा हुआ। (२) उन्नत।

संवृद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बढ़ती। (२) समृद्धि।

संवेग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पूर्ण तेजी या वेग। (२) घबराहट। (३) भय। (४) अतिरेक।

संवेद—संज्ञा पुं. [सं.] बोध, ज्ञान।

संवेदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विशेष चेतना या अनुभूति होना, सुख-दुख आदि का अनुभव करना। (२) जताना, बोध कराना (३) बोध, ज्ञान।

संवेदना—संज्ञा स्त्री. [सं. संवेदना] (१) मन का बोध या अनुभव। (२) किसी का कष्ट देखकर मन में होने वाला दुख, सहानुभूति।

संवेद्य—वि. [सं.] (१) बोध या अनुभव करने योग्य। (२) बताने या जताने योग्य।

यौ.—स्वसंवेद्य जो स्वयं ही अनुभव किया जा सके, दूसरे को बताया न जा सके।

संशय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संदेह। (२) आशंका।

संशयात्मक—वि. [सं.] जिसमें संदेह हो।

संशयात्मा—वि. [सं.] जिसके मन में संदेह या अविश्वास बना रहे या शेष हो।

संशयालु—वि. [सं.] संदेह करनेवाला।

संशयी—वि. [सं. संशयिन्] जो प्रायः संशय या संदेह करता हो, शक्की।

संशुद्ध—वि. [सं.] शुद्ध किया हुआ।

संशोधक—वि. [सं.] (१) ठीक या शोधन करनेवाला। (२) बुरी दशा सुधारनेवाला।

संशोधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शुद्ध करना। (२) ठीक करना, दोष दूर करना। (३) प्रस्ताव आदि में घटाने-बढ़ाने का सुझाव।

संशोधित—वि. [सं.] (१) शुद्ध किया हुआ। (२) ठीक किया या सुधारा हुआ।

संश्रय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मेल, संयोग। (२) लगाव, संबंध। (३) सहारा, आश्रय।

संश्रित—वि. [सं.] (१) जुड़ा या मिला हुआ। (२) शरण में आया हुआ। (३) आश्रित।

संश्लिष्ट—वि. [सं.] (१) मिला या सटा हुआ। (२) मिश्रित, सम्मिलित। (३) आलिंगित।

संश्लेषण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सटाना, मिलाना। (२) कार्य-कारण आदि का मिलान या विचार करना, 'विश्लेषण' का विपरीतार्थक।

संस, संसइ—संज्ञा पुं. [सं. संशय] संशय, आशंका।

उ.—करुना करी छाँड़ि पग दीन्हौ, जानि सुरनि मन संस—१०-६४। (ख) सूरस्याम के मुख यह सुनि तब मन मन कीन्हौ संस—११२७।

संसक्त—वि. [सं.] (१) सटा या लगा हुआ। (२) संबद्ध। (३) लीन, लिप्त। (४) प्रवृत्त, अनुरक्त।

संसक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मिलान, सटान। (२) जोड़, संबद्धता। (३) लीनता (४) प्रवृत्ति, अनुरक्ति।

संसद्—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सभा, मंडली। (२) राजसभा। (३) प्रजा के प्रतिनिधियों की राजसभा।

संसय—संज्ञा पुं. [सं. संशय] संदेह, संशय। उ.—यह वर दै हरि कियौ उपाइ। नारद मन संसय उपजाइ—१-२२६। (ख) तेरे हृदै न संसय राखौं—२-३७।

संसरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चलना, गमन करना। (२) संसार, जगत। (३) सड़क, मार्ग।

संसर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लगाव, संबंध। (२) मिलाप, संयोग। (२) साथ, संगति। (४) सहवास, समागम।

संसर्ग दोष—संज्ञा पुं. [सं.] संगत का दोष।

संसर्गी—वि. [सं. संसर्गिन्] लगाव रखनेवाला।

संसा—संज्ञा पुं. [सं. संशय] संदेह, संशय।

संसार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दुनिया, जगत, सृष्टि। उ.—(क) हरि बिन अपनौ को संसार—१-८४। (ख) यह संसार विषय-बिष-सागर, रहत सदा सब घेरे—१-८५। (२) इहलोक, मर्त्यलोक। (३) माया-जाल। (४) घर-गृहस्थी।

संसार-तिलक—संज्ञा पुं. [सं.] एक तरह का चावल।

संसार-भावन—संज्ञा पुं. [सं.] संसार को दुखमय जानना।

संसारी—वि. [सं. संसारिन्] (१) लौकिक, सांसारिक। (२) संसार की माया में फँसा हुआ। उ.—(क) हरि हौं महा अधम संसारी-१-२७३। (ख) भजन-रहित बूड़त संसारी—१-२१९। (३) बार-बार जन्मनेवाला। (४) लोक-व्यवहार में कुशल।

संसिक्त—वि. [सं.] (१) जो खूब भीगा हुआ हो। (२) जो खूब सींचा हुआ हो।

संसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सँड़सी] सँड़सी।

संसृति—संज्ञा स्त्री [सं. संसार, जगत।

संसृष्ट—वि. [सं.] (१) मिश्रित, संश्लिष्ट। (२) संबद्ध। (३) अंतर्गत, सम्मिलित। (४) संगृहीत।

संसृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मिलावट, मिश्रण। (२) संबंध, लगाव। (३) रचना, संयोजन। (४) संग्रह। (५) साहित्य में दो या अधिक अलंकारों का इस प्रकार आना कि सब स्वतंत्र हों, एक दूसरे के आश्रित नहीं।

संसै—संज्ञा पुं. [सं. संशय] संदेह, आशंका।

संसौ—संज्ञा पुं. [सं. श्वास] (१) साँस, श्वास। (२) प्राण, जीवन-शक्ति।

संज्ञा पुं. [सं. संशय] संदेह, आशंका।

संस्करण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शुद्ध या सुधार करना। (२) सुंदर या परिष्कृत करना। (३) विहित संस्कार करना। (४) पत्र-पत्रिका या पुस्तक की एक बार की छपाई, आवृत्ति।

संस्कर्ता—संज्ञा पुं. [सं.] संस्कार करनेवाला।

संस्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सुधार, शुद्धि। (२) परिष्कार। (३) स्वभाव का शोधन। (४) शिक्षा, उपदेश, संगत, वातावरण आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। (५) पूर्व जन्म का प्रभाव जो अनश्वर आत्मा के साथ लगे रहने से नये जन्म में भी स्वभाव का अंग बन जाता है। (५) परंपरा से चला आनेवाला कृत्य जिसका विधान अवसर-विशेष के लिए हो। (७) हिंदुओं में शुद्ध और उन्नत करनेवाले वे कृत्य जिनकी संख्या किसी ने बारह और किसी ने सोलह बतायी है गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन, मुंडन या केशांत, यज्ञोपवीत या समावर्त्तन और विवाह। (८) मृतक का क्रिया-कर्म।

संस्कारक—वि. [सं.] (१) शुद्ध या परिष्कृत करनेवाला। (२) संस्कार करनेवाला।

संस्कारी—वि. [सं. संस्कारिन्] (१) संस्कार करनेवाला। (२) जो अच्छे गुणों या संस्कारों से युक्त हो।

संस्कृत—वि. [सं.] (१) शुद्ध किया हुआ, जिसका संस्कार हुआ हो। (२) परिमार्जित, परिष्कृत। (३) सुधारा या ठीक किया हुआ। (४) सजाया-सँवारा हुआ। (५) जिसका उपनयन या समावर्त्तन संस्कार हुआ हो।

संज्ञा स्त्री. भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक

भाषा, देववाणी।

संस्कृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सफाई, शुद्धि। (२) सुधार, संस्कार, परिष्कार। (३) व्यक्ति, जाति अथवा राष्ट्र आदि के जीवन-व्यापार की वे बातें जिनसे उसके आचार-विचार, कला-कौशल, बौद्धिक विकास, सभ्यता आदि का परिचय मिल सके।

संस्तवन—संज्ञा पुं [सं.] (१) स्तुति या प्रशंसा करना। (२) कीर्ति या यश बखानना।

संस्तुत—वि. [सं.] (१) परिचित, ज्ञात। (२) जिसकी सिफारिश या प्रशंसा की गयी हो।

संस्तुति - संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सिफारिश। (२) प्रशंसा।

संस्था संज्ञा पुं. [सं.] (१) ठहरने की क्रिया या भाव, स्थिति। (२) व्यवस्था, रूढ़ि, मर्यादा। (३) जत्था, गिरोह, समूह। (४) कोई संघटित समाज, मंडल या वर्ग। (५) जीवन के क्षेत्र-विशेष से संबंध रखनेवाला परंपरागत विधान या नियम।

संस्थान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ठहरने की क्रिया या भाव, ठहराव, स्थिति। (२) बैठाना, स्थापन। (३) जीवन, अस्तित्व। (४) ठहरने का स्थान। (५) बस्ती, जनपद। (६) सार्वजनिक स्थान जहाँ सर्वसाधारण एकत्र हो सके। (७) प्रबंध, व्यवस्था। (८) साहित्य, कला, विज्ञान आदि की उन्नति के लिए स्थापित संस्था, मंडल या वर्ग।

संस्थापक—वि. [सं] (१) भवन आदि स्थापित करनेवाला (२) नयी बात चलानेवाला, प्रवर्तक। (३) संस्था आदि स्थापित करनेवाला। (४) रूप या आकार देनेवाला।

संस्थापन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भवन आदि उठाना या निर्मित करना। (२) स्थित या प्रतिष्ठित करना। (३) नयी बात चलाना। (४) रूप या आकार देना। (५) संस्था या मंडल आदि स्थापित करना।

संस्थापित—वि. [सं.] (१) भवन आदि उठाया हुआ या निर्मित। (२) स्थित किया हुआ, प्रतिष्ठित। (३) चलाया हुआ, प्रवर्तित। (४) (संस्था मंडल आदि) स्थापित।

संस्पर्श—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भली भाँति स्पर्श का भाव। (२) गहरा लगाव, घनिष्ठ संबंध।

संस्पर्शी—वि. [सं. संस्पर्शिन्] स्पर्श करनेवाला।

संस्पृष्ट—वि. [सं.] (१) सटा या लगा हुआ। (२) परस्पर जुड़ा हुआ या संबद्ध।

संस्मरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) भली भाँति स्मरण। (२) भली भाँति सुमिरना या नाम लेना। (३) किसी व्यक्ति के स्वभाव आदि पर प्रकाश डालनेवाली स्मरणीय घटनाएँ या उनका उल्लेख।

संस्मरणीय—वि. [सं.] (१) भली भाँति स्मरण करने योग्य। (२) नाम जपने या सुमिरने योग्य। (३) जिसकी याद सदा बनी रहे। (४) जिसके संस्मरण उल्लेखनीय हों। (५) जिसका स्मरण मात्र रह गया हो, अतीत।

संस्मारक—वि. [सं.] याद दिलाने या स्मरण करानेवाला।

संहंता—वि. [सं. संहंतृ] वध करनेवाला।

संहत—वि. [सं.] (१) खूब जुड़ा या सटा हुआ, संबद्ध। (२) सहित, संयुक्त। (२) कड़ा, सख्त। (४) गठा हुआ, घना। (५) एकत्र। (६) घायल, आहत।

संज्ञा पुं. नृत्य की एक मुद्रा।

संहति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मेल, मिलान। (२) इकट्ठा होने का भाव। (३) राशि। (४) झुंड, समूह। (५) गठन, घनत्व। (६) जोड़, संधि।

संहर - संज्ञा पुं. [सं. संहार] नाश, वध।

संहरण संज्ञा पुं. [सं.] (१) संग्रह या एकत्र करना। (२) (केश का) एक साथ बाँधना या गूँथना। (३) नाश, संहार या ध्वंस करना।

संहरना, संहरनो—क्रि. स. [सं. संहार] नाश या वध करना।

क्रि अ. नाश या वध होना।

संहरि क्रि. स. [हिं. सिंहरना] मरवाकर। उ.—नातरु कुटुँब सकल संहरि कै कौन काज अब जीजै — १-२६९।

संहरी—क्रि. स. [हिं. संहरना] वध कर दिया। उ.—जब नृप ओर दृष्टि तिहिं करी। चक्र सुदरसन सो संहरी—९-५।

संहरैं—क्रि. स. [हिं. संहारना] वध या नाश करते हैं। उ.—(क) ताकी सक्ति पाइ हम करैं। प्रतिपालैं

बहुरौ संहरैं-४-३। (ख) ऐसे असुर किते संहरैं-७-२।

संहरै—क्रि. स. [हिं संहरना] **मारता या वध करता है।** उ.—मंत्री कहै, अखेट सो करै। बिषय-भोग जीवन संहरै—४-१२।

संहर्ता—संज्ञा पुं. [सं. संहर्तृ] (१) **इकट्ठा या एकत्र करनेवाला।** (२) **नाश या वध करनेवाला।**

संहर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उमंग से रोओं का खड़ा होना, पुलक।** (२) **स्पर्धा, होड़।** (३) **ईर्ष्या।** (४) **संघर्ष।**

संहात—संज्ञा पुं. [सं.] **समूह, जमावड़ा।**

संहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बटोरना, समेटना, इकट्ठा करना।** (२) **संग्रह, संचय।** (३) **(केश) बाँधना या गूँथना।** (४) **छोड़ा हुआ वाण अपनी ओर लौटाना।** (५) **अंत, समाप्ति।** (६) **नाश, ध्वंस।** उ.—अब सबकौ संहार होत है—५९५। (७) **(युद्ध आदि में) मार डालना** (८) **(अस्त्र आदि को) व्यर्थ करना।**

क्रि. स. [हिं. संहारना] **वध कर दो, मार डालो।** उ.—परसुराम सौं यौं कही, माँ कौं बेगि सँहार—९-१४।

संहारक—वि. [सं.] (१) **मार डालनेवाला।** (२) **नाश या ध्वंस करनेवाला।**

संहारकर्ता—वि. [सं.] (१) **मार डालनेवाला।** (२) **नाश या ध्वंस करनेवाला।**

संहारकारी—वि. [सं. संहारकारिन्] (१) **नाश या ध्वंस करनेवाला।** (२) **वध करनेवाला।**

संहारकाल—संज्ञा पुं. [सं.] **संसार के समस्त प्राणियों के नाश का समय, प्रलयकाल।**

सँहारत, संहारत—क्रि. स. [हिं. संहारना] **नाश या ध्वंस करता है।** उ.—(क) पालत, सृजत, सँहारत, सैंतत अंड अनेक अवधि पल आधे—९-५२। (ख) जग सिरजत पालत संहारत पुनि क्यौं बहुरि करयो—१० उ.-१३१।

सँहारन, सहारन—वि. [हिं. संहारना] **मारने या वध करनेवाले।** उ.—(क) असुर-सँहारन भक्तनि-तारन पावन-पतित कहावत बाने—३८०। (ख) अघा बका संहारन ऐई—२५८१।

संज्ञा पुं. **वध या नाश करने (के लिए)।** उ.—असुर सँहारन आए—२५८१।

संहारना, संहारनो—क्रि. स. [सं. संहार] (१) **मार डालना, वध करना।** (२) **नाश या ध्वंस करना।**

संहारि—क्रि. स. [हिं. संहारना] **वध करके, मारकर।** उ.—(क) असुर-कुलहिं संहारि धरनि कौ भार उतारौं—४३१। (ख) अघा-बका संहारि—५८९। (ग) योधा सुभट संहारि—२६२५।

संहारिक—वि. [सं.] **मार डालनेवाला।** (२) **नाश या ध्वंस कर देनेवाला।**

संहारी—क्रि. स. [हिं. सँहारना] **मार डाली।** उ.—सुन्यौ कंस पूतना सँहारी, सोच भयौ ताके जिय भारी—१०-५८।

सँहारे, संहारे—क्रि. स. बहु. [हिं. संहारना] **मार डाले।** उ.—(क) ये बालक तैं बृथा सँहारे—१-१८९। (ख) सुनि पुकार निसिचर बहु आए, कूदि सबन संहारे—सारा. १८४।

संहारेउ—क्रि. स. [हिं. संहारना] **मार डाला।** उ.—सहस कवच इक असुर सँहारेउ—सारा. ६८।

संहारै—क्रि. स. [हिं संहारना] **मारे, मारता है।** उ.—जीव नाना संहारै—४-१२।

सँहारो, संहारो—क्रि. स. [हिं. संहारना] **वध करो।** उ.—दसकंधर कौं बेगि संहारो—सारा. २५९।

संहारौं—क्रि. स. [हिं. संहारना] **मार डालूँ, वध कर दूँ।** उ.—बेगि संहारौं सकल घोष-सिसु—१०-४९।

संहारौ—क्रि. स. [हिं. संहारना] **मार डाला।** उ.—चोंच फारि बका संहारौ—४२७।

संहार्य—वि. [सं. संहार्य्य] (१) **संग्रह योग्य।** (२) **निवारण या परिहार के योग्य।**

संहार्‍यो, संहार्‍यो—क्रि. स. [हिं. संहारना] **मार डाला, वध किया।** उ.—सकटा तृत इनहिं संहार्‍यो—२५८१।

संहित—वि. [सं.] (१) **एकत्र किया हुआ।** (२) **जुड़ा या लगा हुआ, संबद्ध।** (३) **सम्मिलित।** (४) **सहित, संयुक्त।** (५) **विधि या नियम की संहिता के रूप में प्रस्तुत किया हुआ।**

संहिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **मेल, मिलावट।** (२) **(व्याकरण मे) संधि।** (३) **वह ग्रंथ जिसका पाठ**

प्राचीन काल से गृहीत चला आता हो । (४) विधि-नियम आदि का संग्रह । (५) वेदों का मंत्र-भाग । उ.—तातैं हरि करि ब्यासऽवतार । करी संहिता बेद बिचार—१-२३० ।

संहृत—वि. [सं.] (१) एकत्र किया हुआ, संगृहीत । (२ नष्ट, ध्वस्त । (३) समाप्त । (४) (अस्त्र आदि) रोका हुआ, निवारित ।

संहृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) समेटने की क्रिया । (२) संग्रह । (३) नाश, ध्वंस । (४) अंत, समाप्ति । (५) रोक, परिहार । (६) प्रलय । (७) छीनना, हरण ।

स—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संगीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर । (२) पिंगल में 'सगण' का सूचक अक्षर या उसका संक्षिप्त रूप ।

उप. एक उपसर्ग जो शब्दारंभ में जुड़कर 'सह' (जैसे सजीव, सपरिवार), 'स्व' या 'एक ही' (जैसे सगोत्र), 'सु' (जैसे सपूत) आदि अर्थ सूचित करता है ।

सइ—अव्य. [सं. सह] से, साथ ।

अव्य. [प्रा० सुंतो] एक कारक-चिह्न जो करण और अपादान में लगता है, से, द्वारा ।

सइना—संज्ञा स्त्री. [सं. सेना] फौज, सेना ।

सइयो—संज्ञा स्त्री. [सं. सखी] सहेली, सजनी ।

सइबर, सइवर संज्ञा पुं. [सं. शैवल] सेवार, शैवाल । उ.—चिकुर सइबर निकरि अरुझति सकति नहिं निरुवारि—२०२८ ।

सउँ—अव्य. [हिं. सों] करण या अपादान कारक का चिह्न, से, द्वारा ।

सउजा—संज्ञा पुं. [सं. शावक] शिकार ।

सउत—संज्ञा स्त्री. [हिं. सौत] सपत्नी ।

सउतेला—वि. [हिं. सौतेला] विमाता से उत्पन्न ।

सक—संज्ञा पुं. [सं. शक] 'शक' जाति ।

संज्ञा पुं. [अ. शक] संदेह, शंका ।

संज्ञा स्त्री. [सं. शक्ति] शक्ति ।

सकट—संज्ञा पुं. [सं. शकट] गाड़ी, छकड़ा । उ.—(क) सकट कौ रूप धरि असुर लीन्हौ—१०-६२ । (ख) सहस सकट भरि कमल चलाए—५८३ ।

सकटा—संज्ञा पुं. [सं. शकट] (१) गाड़ी, छकड़ा । उ.—सब गोपिनि मिलि सकटा साजे—४०२ । (२) शकटासुर जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था । उ.—नैंकु फटक्यो लात, सबद भयौ आघात, गिरयौ भहरात, सकटा सँहारयौ—१०-६२ ।

सकटासुर—संज्ञा पुं. [सं. शकट + असुर] कंस का अनुचर एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था । उ.—प्रथम पूतना मारि काग सकटासुर पेख्यौ—५८९ ।

सकटैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. संकटा] सकटासुर ने । उ.—मुहाँचुहीं सेनापति कीन्हीं, सकटैं गर्व बढ़ायौ—१०-६१ ।

सकत—संज्ञा स्त्री. [सं. शक्ति] (१) बल । (२) संपत्ति ।

क्रि. अ. [हिं. सकना] सकता है ।

प्र०—राखि सकत—रख सकता है । उ.—देखि साहस सकुच मानत राखि सकत न ईस—१-१०६ । सकत दिखाइ—(दूसरे को) दिखा सकता है । उ.—चाँपी पूँछ लुकावत अपनी, जुवतिनि कौं नहिं सकत दिखाइ—५५५ ।

सकता—संज्ञा स्त्री [सं. शक्ति] बल, सामर्थ्य ।

सकति—संज्ञा स्त्री. [सं. शक्ति] बल, सामयी ।

क्रि. अ. [हिं. सकना] सकती हैं । उ.—(क) बुद्धि रचति तरि सकति न सोधा, प्रेम बिबस ब्रजनारि—६३६ । (ख) चिकुर सइबर निकरि अरुझति सकति नहिं निरुवारि—२०२८ ।

सकती—संज्ञा स्त्री. [सं शक्ति] (१) 'शक्ति' अस्त्र । (२) बल ।

सकना, सकनो—क्रि. अ. [सं. शक् या शक्य] कुछ करने में समर्थ या योग्य होना ।

क्रि. अ. [सं. शंका] डरना, शंकित होना ।

सकपकाना, सकपकानो, सकबकाना, सकबकानो—क्रि. अ. [अनु. सकपक, सकबक] (१) अचरज करना । (२) आगा-पीछा करना, हिचकना । (३) लज्जित होना । (४) ऐसी चेष्टा करना जिससे प्रेम, लज्जा, शंका आदि भाव सम्मिलित रूप से व्यंजित हों ।

सकरना, सकरनो—क्रि. अ. [सं. स्वीकरण] (१) मंजूर या स्वीकृति होना ।(२) माना जाना ।

सकरुण—वि. [सं.] जिसमें दया हो ।

सकर्मक—वि. [सं.] **वह 'क्रिया' शब्द, वाक्य में जिसका 'कर्म' भी वर्तमान हो।**

सकर्मक क्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह 'क्रिया' शब्द जिसका कार्य 'कर्म' पर समाप्त हो।**

सकल—वि. [सं.] **सब, समस्त।** उ.—(क) बाँधे सिंधु सकल सैना मिलि—९-११०। (ख) मीड़त हाथ सकल गोकुल जन—२५३६।

संज्ञा पुं. (१) **समस्त वस्तु, संबंध आदि।** उ.—सकल तजि, भजि मन चरन मुरारि—२-३१। (२) **निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति।**

सकलकल—वि. [सं.] **सोलहों कलाओं से युक्त।**

सकलात—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **ओढ़ने की रजाई, दुलाई।** (२) **सौगात, उपहार।** (३) **मखमल (कपड़ा)।**

सकलाती—वि. [हिं. सकलात] (१) **उपहार-रूप में देने योग्य।** (२) **अच्छा, बढ़िया, उत्तम।**

सकलौ—वि. [सं. सकल] **सारा, समस्त।** उ.—बिनसि जात तेज-तप सकलौ—६-५।

सकसकात—क्रि. अ. [हिं. सकसकाना] **डर से काँपता है।** उ.—सकसकात तन भीजि पसीना—७४८।

सकसकाना, सकसकानो—क्रि. अ. [अनु.] **बहुत डर कर काँपने लगना।**

सकसकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सकसकाना] **बहुत डर से होने वाली कँपकँपी।** उ.—आए हौ सुरति किए ठाठ करख लिये सकसकी धकधकी हिए—२००६।

सकसना, सकसनो, सकसाना, सकसानो—क्रि. अ. [अनु.] (१) **डरना, भयभीत होना।** (२) **अड़ना, अटकना।** (३) **फँसना।**

सका—संज्ञा पुं. [अ. सक़्क़ा] **भिश्ती।**

सकाए—क्रि. अ. [हिं. सकाना] **डरे, भयभीत हुए।** उ.—प्रबल बल जानि मन में सकाए—१६०८।

सकात—क्रि. अ. [हिं. सकाना] (१) **संदेह या शंका करते हैं।** उ.—देखि सैन ब्रज लोग सकात—१०६७। (२) **डरता है।** उ.—मुक्ता मनौ चुगत जुग खंजन ......। मानौ सूर सकात सरासन उड़िबे कौं अकुलात—३६६। (३) **(भय से) संकोच करता या हिचकता है।** उ.—इहै बड़ौ दुख गाँव-बास को चीन्हे कोउ न सकात—१०८७।

क्रि. अ. [हिं. सकना] **सकता है।** उ.—बोलत है बतियाँ तुतरौहीं चलि चरननि न सकात—१०-२९४।

सकान—क्रि. अ. [हिं. सकाना] **डरा, भयभीत हुआ।** उ.—अति ही कोमल अजान सुनत नृपति जिय सकान तनु बिनु जनु भयौ प्रान मल्लनि पै आए—२६००।

सकाना—क्रि. अ. [सं. शंका] (१) **संदेह या शंका करना।** (२) **डरना, भयभीत होना।** (३) **डर या भय से संकोच करना या हिचकना।** (४) **दुखी होना।**

सकाने—क्रि. अ. [हिं. सकाना] **डरे, भयभीत हुए।** उ.—(क) बालक बृच्छ धेनु सबै मन अतिहिं सकाने—४३१। (ख) गये अकुलाइ धाइ मो देखत नेकहुँ नहीं सकाने—पृ. ३२२ (१५)।

सकानै—क्रि. वि. [हिं. सकाना] **डरकर, भयभीत होकर।** उ.—मानौ मन्मथ फंद त्रास ते फिरत कुरंग सकानै—२०५३।

सकानो, सकानौ—क्रि. अ. [सं. शंका] **संदेह या शंका करना।** (२) **डरना, भयभीत होना।** (३) **डर या भय से संकोच करना या हिचकना।** (४) **दुखी होना।**

सकान्यो, सकान्यौ—क्रि. अ. [हिं. सकाना] **डर या भय से काँपने लगा।** उ.—थरथराइ चानूर सकान्यो—२६०६।

सकाम—वि. [सं.] (१) **जिसे किसी बात की कामना या इच्छा हो।** (२) **जिसकी कामना या इच्छा पूरी हो गयी हो।** (३) **जिसमें कामवासना हो।** (४) **जो किसी स्वार्थ या फल की इच्छा से काम करे।** (५) **प्रेम करनेवाला।**

सकामा—वि. [सं.] **जिस (स्त्री) में काम-वासना हो।**

सकामी—वि. [सं. सकामिन्] (१) **जिसमें कामना या इच्छा हो।** (२) **जिसमें काम-वासना हो, विषयी।** (३) **फल के लोभ से कार्य करनेवाला।** उ.—भक्त सकामी दूजो होइ, क्रम-क्रम करिकै उधरै सोइ—३-१३।

सकार—संज्ञा पु. [सं.] (१) **'स' अक्षर।** (२) **'स' वर्ण जैसी ध्वनि।**

क्रि. वि. [सं. सकाल] **सबेरे, प्रातःकाल।** उ.—

किया। उ.—जहाँ गयौ तहँ भलौ न भावत सब कोऊ सकुचानो—१-१०२ ।

सकुची—क्रि. अ. [हिं. सकुचना] **मुँदी या संपुटित हो गयी।** उ.—कुमुदिनि सकुची—१०-२३३ ।

सकुचीला, सकुचौहाँ—वि. [हिं संकोच] **संकोच करनेवाला, लजानेवाला, संकोची ।**

सकुचैं—क्रि. अ. [हिं. सकुचना] **संकोच या ख्याल करें।** उ.—ब्रज की ढीठी गुवारि, हाट की बेचनहारि, सकुचैं न देत गारि झगरत हूँ—१०-२९५ ।

सकुचैए—क्रि. अ. [हिं. सकुचना] **लज्जा या संकोच कीजिए।** उ.—गुरु-पितु-गृह बिनु बोलेहु जैए। है यह नीति नाहिं सकुचैए—४-५ ।

सकुच्यो, सकुच्यौ—क्रि. अ. [हिं. सकुचना] **लज्जित या संकुचित हुआ।** उ....सुफलकसुत मन हीं मन सकुच्यो करौं कहा अब काजा—१० उ.-२७ ।

सकुन—संज्ञा पुं. [सं. शकुंत] **चिड़िया, पक्षी ।**

संज्ञा पुं. [सं. शकुन] **शुभ लक्षण ।**

सकुनि, सकुनी—संज्ञा स्त्री. [सं. शकुंत] **पखेरु, पक्षी ।**

संज्ञा पुं. [सं. शकुनि] **गांधारी का भाई जो कौरवों का मामा था और जिसके कपट से पांडवों की जुए में हार हुई थी।** उ.—भीषम द्रोन करन अस्थामा सकुनि सहित काहू न सरी—१-२४९ ।

सकुपना, सकुपनो—क्रि. अ. [हिं. कोपना] **क्रोध या रोष करना ।**

सकुल्य—वि. [सं.] **एक ही कुल या गोत्र का ।**

सकूनत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **रहने की जगह ।**

सके—क्रि. अ. [हिं. सकना] **(काम करने में) समर्थ हुए ।**

प्र.—रहि न सके—(अपने को) रोकने में समर्थ न हुए। उ.—रहि न सके नरसिंह रूप धरि, गहि कर असुर पछार्‌यौ—१-१०९ ।

सकेत—संज्ञा पुं. [सं. संकेत] (१) **इशारा, संकेत ।** (२) **प्रेमी-प्रेमिका-मिलन का निर्दिष्ट स्थान ।**

वि. [सं. संकीर्ण] **सँकरा, संकुचित ।**

संज्ञा पुं. **दुख, कष्ट, विपत्ति ।**

सकेतना, सकेतनो—क्रि. अ. [हिं. संकेत] **सिकुड़ना, सिमटना, मुँदना, संकुचित होना ।**

सकेती—संज्ञा स्त्री. [हिं. सकेत] **कष्ट, विपत्ति ।**

सकेरना, सकेरनो—क्रि. स. [हिं. समेटना] **समेटना ।**

सकेरा—संज्ञा पुं. [सं. सकाल] **शीघ्रता ।**

सकेल—क्रि. स. [हिं. सकेलना] **इकट्ठा करके ।**

सकेलत—क्रि. स. [हिं. सकेलना] **दबाता है।** उ.—बिदरि चले घन प्रलय जानिकै, दिगपति दिग दंतीनि सकेलत—१०-६३ ।

सकेलना, सकेलनो—क्रि. स. [संकलन] (१) **इकट्ठा या एकत्र करना।** (२) **कसना।** (३) **दबाना ।**

सकेला—संज्ञा स्त्री. [अ. सैक़ल] **एक तरह की तलवार ।**

सकेलि—क्रि. स. [हिं. सकेलना] **एकत्र करके।** उ.—...र सकल सकेलि घर के—१० उ.-५२ ।

सकेले—क्रि. स. [हिं. सकेलना] **इकट्ठा या जमा किये।** उ.—जो बनिता सुत-जूथ सकेले हय-गय बिभव घनेरौ—१-२६६ ।

सकै—क्रि. अ. [हिं. सकना] **(कुछ करने में) समर्थ हो।** उ.—(क) खाइ न सकै—९-३९ । (ख) ऐसी को सकै करि बिनु मुरारी—८-१७ ।

सकोच—संज्ञा पुं. [सं. संकोच] (१) **सिकुड़ने की क्रिया।** (२) **लज्जा।** (३) **हिचकिचाहट ।**

सकोचति—क्रि. स. [हिं. सकोचना] **सिकोड़ती है ।**

सकोचना, सकोचनो—क्रि. स. [हिं. सकोचना] (१) **सिकोड़ना।** (२) **लजाना।** (३) **हिचकिचाना ।**

सकोड़ना—क्रि. स. [हिं. सिकोड़ना] (१) **समेटना।** (२) **संकुचित करना।** (३) **तंग या सकरा करना ।**

सकोपना, सकोपनो—क्रि. अ. [हिं. कोपना] **गुस्सा, कोप या क्रोध करना ।**

सकोपित—वि. [सं. स+कुपित] **नाराज, क्रुद्ध ।**

सकोरना, सकोरनो—क्रि. स. [हिं. सिकोड़ना] (१) **समेटना।** (२) **संकुचित करना।** (३) **तंग या सँकरा करना ।**

सकोरा—संज्ञा पुं. [हिं. कसोरा] **मिट्टी की चौड़ी कटोरी की तरह का एक पात्र ।**

सकोरत—क्रि. स. [हिं. सकोड़ना] **संकुचित करता है।** उ.—कैसें बदन सकोरत है—१३१२ ।

सकोरति—क्रि. स. [हिं. सकोड़ना] **संकुचित करती है।**

उ.—भौंह सकोरति—१२३३ ।

सकोरि—क्रि. स. [हिं. सकोड़ना] **संकुचित करके** । उ. —बदन सकोरि भौंह मोरत है—८५६ ।

सकोरै—क्रि. स. [हिं. सकोड़ना] **संकुचित करती या सिकोड़ती है** । उ.—कबहुँ भ्रू निरखि रिस करि सकोरै —पृ. ३१६ (५८) ।

सकोरयो, सकोरयौ—क्रि. स. [हिं. सकोड़ना] **संकुचित किया** । उ.—(क) सूरदास प्रभु अंग सकोरयो ब्याकुल देख्यो ब्याल—५५६ । (ख) बार-बार तुम भौंह सकोरयो—११५० ।

सक्करपारा—संज्ञा पुं. [हिं. शक्कर+पाग] **शक्कर में पगा हुआ मैदे का बना एक पकवान** । उ.—सक्करपारे सद पागे—१०१८३ ।

सकौ—क्रि. अ. [हिं. सकना] **(कुछ करने में) समर्थ हो** । उ.—नाथ, सकौ तौ मोहिं उधारौ—१-१३१ ।

सक्करी—संज्ञा स्त्री. [सं. शर्करी] **'शर्करी' नामक छंद** ।

सक्का—संज्ञा पुं. [फ़ा. सक्का] **भिश्ती, मशकवाला** ।

सक्त—वि. [सं.] **(१) आसक्त (२) संलग्न** ।

सक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. शक्ति] **बल, शक्ति** । उ.—ताकी सक्ति पाइ हम करैं, प्रतिपालैं बहुरौ संहरैं—४-३ ।

सक्तु—संज्ञा पुं. [सं. शक्तु] **सत्तू** ।

सक्यो, सक्यौ—क्रि. अ. [हिं. सकना] **(कुछ करने में) समर्थ हुआ** । उ.—(क) बातैं दूनी देह धरी, असुर न सक्यौ सम्हारि—४३१ । (ख) सरिता-जल चल न सक्यौ—६२३ ।

सक्र—संज्ञा पुं. [सं. शक्र] **(१) इंद्र । (२) मेघ** ।

सक्रघन—संज्ञा पुं. [सं. शक्रघन] **इंद्रास्त्र, वज्र** ।

सक्र-सरोबर—संज्ञा पुं. [सं. शक्र-सरोवर] **'इंद्रकुंड' नामक स्थान जो व्रज में है** ।

सक्रारि—संज्ञा पुं. [सं. शक्रारि] **इंद्र का शत्रु मेघनाद** ।

सक्रिय—वि. [सं.] **(१) जिसमें क्रिया या क्रियाशीलता भी हो । (२) जो क्रिया-रूप में हो । (३) जिसमें कुछ करके दिखाया जाय** ।

सक्रियता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'सक्रिय' या क्रियाशील होने का भाव** ।

सक्षम—वि. [सं.] **(१) जिसमें क्षमता हो । (२) जो कुछ करने में समर्थ हो** ।

सखनि—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. सखा+नि] **सखाओं को** । उ.—ये बसिष्ठ कुल-पूज्य हमारे पालागन कहि सखनि सिखावत—९-१६७ ।

सखर—वि. [हिं. स+खर] **(१) तेज धारवाला, पैना (२) तेज, उग्र । (३) प्रबल** ।

सखरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. निखरी से अनु.] **कच्ची रसोई** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. शिखर] **पहाड़ी** ।

सखा—संज्ञा पुं. [सं. सखिन्] **(१) सदा साथ रहनेवाला, संगी** । उ.—धूम बढ़यौ लोचन खस्यौ सखा न सूझयौ संग—१-३२५ । **(२) दोस्त, मित्र** । उ.—सखा बिप्र दारिद्र हरयो—१-२६ । **(३) साहित्य में 'नायक' का सहचर जो सुख-दुख में उसके साथ रहता है और जिससे वह मन की सब बात कहता है । ये 'सखा' चार प्रकार के होते हैं—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक** ।

सखाई—संज्ञा पुं. [हिं. सखा] **संगी, साथी, सहचर** । उ.—मधुकर, तुम हौ स्याम सखाई—३३४४ ।

सखार—वि. [सं. स+हिं. खार (क्षार)] **(१) खारा । (२) क्षारयुक्त** ।

सखिनि—संज्ञा स्त्री. सवि. [सं. सखी] **सखियों को** । उ. आछौ दिन सुनि महरि जसोदा सखिनि बोलि सुध गान करयौ—१०-८८ ।

सखियनि—संज्ञा स्त्री. सवि. [सं. सखी] **सखियों ने** । उ. ऐपन की सी पूतरी सब सखियनि कियौ सिंगार –१०-४० ।

सखी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **(१) सहेली, सहचरी** । उ.—हरषी सखी सहेलरी (हो) अनँद भयौ सुभ-जोग-१०-४० । **(२) मित्र (स्त्री) । (३) साहित्य में नायिका की सहचरी जिससे वह हृदय की भी बात कहती हो । इसके चार कार्य हैं—मंडन, शिक्षा, उपालंभ और परिहास । (४) एक छंद** ।

वि. [अ. सखी] **दाता, दानी** ।

सखीभाव—संज्ञा पुं. [सं.] **वैष्णव भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त स्वयं को इष्ट या आराध्यदेव की पत्नी या सखी मानकर उसकी सेवा-उपासना करता है** ।

सखीसंप्रदाय—संज्ञा पुं. [सं.] **वैष्णव भक्तों का वह**

संप्रदाय जिसमें सखीभाव की सेवा, उपासना या आराधना की जाती हो।

सखुन—संज्ञा पुं. [फ़ा. सख़ुन] (१) बातचीत, वार्तालाप। (१) कौल, वचन।

मुहा.— सखुन देना—वचन देना। सखुन डालना —(१) कुछ चाहना या याचना करना। (२) कोई बात या प्रश्न पूछना।

(३) कथन, उक्ति। (४) कविता, काव्य।

सखुनतकिया—संज्ञा पुं. [फ़ा.सख़ुन + तकिया] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबान पर ऐसा चढ़ जाता है कि बात करते समय बार-बार कहा जाता है, तकियाकलाम।

सख्त—वि. [फ़ा. सख्त] (१) कड़ा, कठोर। (२) कठिन। (३) कड़ा या कठोर बर्ताव या व्यवहार करनेवाला।

सख्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) 'सखा' होने का भाव, सखापन। (२) दोस्ती, मित्रता। (३) भक्ति का वह रूप जिसम इष्टदेव को सखा मानकर सेवा-उपासना की जाय। उ.—बंदन दासपनौ से करै, भक्तनि सख्य-भाव अनुसरै—९-५।

सख्यता—संज्ञा स्त्री. [सं. संख्य] सख्य-भाव।

सगण—संज्ञा पुं. [सं.] छंदशास्त्र में वह गण जिसमें प्रथम दो वर्ण लघु और अंतिम दीर्घ (।।ऽ) हो।

सगत, सगति, सगती—संज्ञा स्त्री. [सं. शक्ति] (१) बल, सामर्थ्य। (२) शिव-शक्ति, पार्वती।

सगदा—संज्ञा पुं. [देश.] एक मादक द्रव्य।

सगन—संज्ञा पुं. [सं. सगण] सगण।

संज्ञा पुं. [सं. शकुन] सगुन।

सगनौती—संज्ञा स्त्री. [सं. शकुन] (१) शगुन विचारने की क्रिया या भाव। (२) मंगलपाठ।

सगपहती—संज्ञा स्त्री. [हिं. साग + पहती = दाल] साग मिलाकर बनायी गयी दाल।

सगबग—वि. [अनु.] (१) तरबतर, लथपथ। (२) द्रवित। (३) भरा हुआ, परिपूर्ण।

क्रि. वि. चटपट, शीघ्र, तुरंत।

सगबगाना, सगबगानो—क्रि. अ. [हिं. सगबग] (१) तरबतर या लथपथ होना। (२) शंकित या भयभीत होना। (३) चकित होना।

क्रि. स. (१) तरबतर या लथपथ करना। (२) शंकित या भयभीत करना। (३) चकित करना।

सगर—संज्ञा पुं. [सं.] अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा जिनके साठ हजार पुत्रों को कपिल मुनि ने भस्म कर दिया था। राजा भगीरथ और श्री रामचन्द्र उन्हीं के वंशज थ। उ.—नातो मानि सगर सागर सौं कुस-साथरी परयौ—९-१२२।

वि. [हिं. सगरा] सब।

सगरा—वि. [सं. सकल] सब, समस्त, सकल।

संज्ञा पुं. [सं. सागर] (१) बड़ा जलाशय। (२) समुद्र, सागर, सिंधु।

सगरी—वि. [हिं. सगरा] सब, सारी। उ.—(क) उरहन लै आवति हैं सगरी—१०-३१६। (ख) सूर स्याम जहँ तहाँ खिझावत जो मनभावत, दूरि करौं लंगर सगरी—१०४५। (ग) हौं जानति हौं फौज मदन की लूटि लई सगरी—२१०६।

सगरो, सगरौ—वि. [हिं. सगरा] सारा का सारा, सब का सब। उ.—(क) दूध, दही, माखन लै डारि देत सगरौ—१०-३३६। (ख) अनबोहली तनक नहिं दैहौं, ऐसेहिं छीनि लेहु बरु सगरौ—पृ. ३३५ (३१)।

सगर्भ—वि. [सं.] सहोदर (भाई)।

सगर्भा—वि. [सं.] (१) गर्भवती। (२) सहोदरा।

सगल वि. [सं. सकल] सब, सारा।

सगलगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सगा + लगना] (१) बहुत सगापन या आत्मीयता दिखाने की क्रिया या भाव। (२) खुशामद, चापलूसी।

सगला, सगलो—वि. [सं. सकल] सब, कुल, सारा।

सगा—वि. [सं. स्वक्] (१) एक माता से उत्पन्न, सहोदर। (२) निकट संबंध का।

सगाइ, सगाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सगा + आई (प्रत्य.)] (१) सगे होने का भाव, सगापन, आत्मीयता। (२) पारिवारिक या आत्मीयता का संबंध, नाता, रिश्ता। उ.—(क)त्रियनि कह्यौ, जग झूठ सगाई—८९६। (ख) सूर स्याम वह गई सगाई वा मुरली के संग—२७२९। (ग) दिवस चारि करि प्रीति सगाई रस लै अनत गए

—२९९३। (घ) सूर जहाँ लगि स्याम गात हैं तिनसे कत कीजिए सगाई—३०५३। (ङ) सूरदास प्रभु रँगे प्रेम रँग जारौं जोग सगाई—३१०९। (च) उनसौं हमसौं कौन सगाई—३२०८। (३) **एक या समान वर्ग का होने का भाव या उसकी अवस्था।** (४) **मँगनी, विवाह का निश्चय।** उ.—तासौं तेरी भई सगाई—१० उ.—३२। (५) **विधवा या परित्यक्त के साथ पुरुष का वह संबंध जो कुछ जातियों में विवाह के समान ही माना जाता है।**

सगापन—संज्ञा पुं. [हिं. सगा+पन] **सगा या आत्मीय होने का भाव।**

सगारत—संज्ञा स्त्री. [हिं. सगा+आरत (प्रत्य.)] **सगा या आत्मीय होने का भाव।**

सगी—वि. स्त्री. [हिं. सगा] **निकट संबंधवाली, आत्मीयता का परिचय देनेवाली।** उ.—वह मूरति, वह सुख दिखरावै सोई सूर सगी—२७९०।

सगुण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ब्रह्म का वह रूप जो सत्, रज और तम गुणों से युक्त होने के कारण साकार माना जाता है।** (२) **वह भक्ति-संप्रदाय जिसमें ब्रह्म को 'सगुण' मानकर उसके अवतारों की पूजा-उपासना होती है। सूरदास, तुलसीदास आदि भक्त इसी वर्ग के थे।**

सगुणता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सगुण होने का भाव।**

सगुणी—वि. [सं. सगुण] **सगुण।**

सगुन—संज्ञा पुं. [सं. सगुण] **सगुण।** उ.—सोइ सगुन ह्वै नंद की दाँवरी बँधावै—१-४।

संज्ञा पुं. [सं. शकुन] **शकुन।** उ.—(क) इतनौ कहत नैन उर फरके सगुन जनायौ अंग—९-८३। (ख) निकसत सगुन भले नहिं पाए—३७०।

सगुनई—संज्ञा स्त्री. [सं. सगुण+अई (प्रत्य.)] **सगुण होने का भाव, सगुणता।** उ.—सूर सगुनई जात मधुपुरी निर्गुन नाम भए—३०९०।

सगुनता—संज्ञा स्त्री. [सं. सगुणता] **सगुण होने का भाव, सगुणता।**

सगुनाई—संज्ञा स्त्री. [सं. सगुण+आई (प्रत्य.)] **सगुण होने का भाव, सगुणता।** उ.—बिछुरत तनु नाम ज्यों हठि तिहिं छिन गई नहीं सगुनाई—२७८४।

सगुनाना, सगुनानो—क्रि. स. [हिं. सगुन+आना (प्रत्य.)] (१) **सगुन या शकुन बतलाना।** (२) **सगुन या शकुन देखना या निकालना।**

सगुनावै—क्रि. स. [हिं. सगुन+आना (प्रत्य.)] **शकुन बताता है।** उ.—भौंरा इक चहुँ दिसि ते उड़ि-उड़ि करन लागि कछु गावै। उत्तम भाषा ऊँचे चढ़ि चढ़ि अंग अंग सगुनावै—२९४६।

सगुनिया—वि. [हिं. सगुन+इया (प्रत्य.)] **शकुन विचारने और बतलानेवाला।**

सगुनौती—संज्ञा स्त्री. [हिं. सगुन+औती (प्रत्य)] (१) **भावी शुभाशुभ या शकुन विचारने की क्रिया।** उ.—बैठी जननि करति सगुनौती। लछिमन राम मिलैं अब मोकौं दोउ अमोलक मोती—९-१६४। (२) **मंगलपाठ, मंगलाचरण।**

सगुरा—वि. [हिं. स+गुरु] (१) **जिसने गुरु से दीक्षा ली हो।** (२) **जिसने गुरु से कार्य-विशेष की सम्यक् शिक्षा पायी हो।**

सगे—वि. बहु. [हिं. सगा] **निकट या घनिष्ठ संबंध या आत्मीयता रखनेवाले।** उ.—जानति नहीं, कहूँ नहिं देखे, मिलि गई मनहुँ सगे—१३१८।

सगोती, सगोत्र, सगोत्रिय—संज्ञा पुं. [सं. सगोत्र] (१) **एक गोत्र के लोग।** (२) **नाते-रिश्तेदार, भाई-बंधु।**

सगौ—वि. [हिं. सगा] **प्रेम या आत्मीयता का संबंध रखनेवाला।** उ.—तौ लगि यह संसार सगौ है जौ लगि लेहि न नाम—१-७६।

सगौती—संज्ञा स्त्री. [देश.] **खाने का मांस।**

सग्गा—वि. [हिं. सगा] **घनिष्ठ संबंधी।**

सघन—वि. [सं.] (१) **घना, गँझा हुआ, अविरल।** उ.—(क) सघन बृन्दाबन अगम अति जाइ कहुँ न भुलाइ—६१०। (ख) चरति धेनु अपनैं अपनैं रँग, अतिहिं सघन बन चारौ—६११। (२) **घनघोर, अटूट, अविरल।** उ.—(क) सघन गुंजत बैठि उन पर भौंरहूँ बिरमाहिं—१-३३८। (ख) गत पतंग राका ससि बिय सँग, घटा सघन सोभात—२१८५। (ग) निसि अँधेरी, बीजु चमकै सघन बरषै मेह—१०-५। (३) **ठोस।**

सघनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सघन होने का भाव।**

सच—वि. [सं. सत्य] (१) जैसा हो वैसा (कहा या लिखा हुआ)। (२) यथार्थ, वास्तविक। (३) सही, ठीक।

सचन—संज्ञा पुं. [सं.] सेवा करने की क्रिया या भाव।

सचना, सचनो—क्रि. स. [सं. संचयन] (१) इकट्ठा या एकत्र करना। (२) पूरा या संपादित करना। (३) बनाना, निर्माण करना। (४) बचाना, रक्षा करना।

क्रि. अ. [हिं. सजना] सजना।

क्रि. स. सजाना, सज्जित करना।

सचमुच—अव्य. [हिं. सच+मुच (अनु.)] (१) वास्तव में, यथार्थ रूप में। (२) अवश्य, निश्चय, निस्संदेह।

सचरना, सचरनो—क्रि. अ. [सं. संचरण] (१) (किसी बात का) फैलना या संचरित होना। (२) (किसी वस्तु या प्रथा का) प्रचलित या व्यवहृत होना। (३) प्रवेश या संचार करना।

सचराचर—संज्ञा पुं. [सं.] संसार के चर-अचर या स्थावर-जंगम, सभी पदार्थ और प्राणी।

सचरे—क्रि. अ. [हिं. सचरना] प्रविष्ट हुए, संचार किया। उ.—(क) जा दिन तैं सचरे गोपिनि मैं, ताही दिन तैं करत लँगरैया—७३५। (ख) कुटिल अलक भ्रुव चारु नैन मिलि सचरे स्रवन समीप सुमीति—२२२३।

सचल—वि. [सं.] (१) जो अचल न हो, चलता हुआ, गतिशील, जंगम। (२) चंचल।

सचाई—संज्ञा स्त्री. [सं. सत्य, प्रा. सच्च] (१) सच्चापन, सत्यता। (२) यथार्थता।

सचान—संज्ञा पुं. [सं. संचान] बाज पक्षी, श्येन। उ.—हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम डरिया पारधि साधे बान। ताकैं डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान—१-९७।

सचारना, सचारनो—क्रि. स. [हिं. सचारना] (१) (किसी बात को) फैलाना या संचरित करना। (२) (किसी वस्तु या प्रथा को) प्रचलित या व्यवहृत करना। (३) प्रवेश या संचार कराना।

सचावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सच+आवट (प्रत्य.)] सच्चाई, सच्चापन, सत्यता।

सचिंत—वि. [सं.] जिसे चिंता हो, चिंतित।

सचि—क्रि. स. [हिं. सचना] एकत्र या संग्रह करके, बचाकर। उ.—हम शर घात ब्रजनाथ सुधानिधि राखे बहुत जतन करि सचि सचि—२९०२।

सचिक्कण, सचिक्कन—वि. [सं. सचिक्कण] बहुत चिकना या स्निग्ध। उ.—सीस सचिक्कन केस हो बिच सीमंत सँवारि—२०६५।

सचित्—वि. [सं.] ज्ञान या चेतनायुक्त।

सचित्त—वि. [सं.] जिसका ध्यान एक ही ओर हो।

सचिरे—क्रि. अ. [हिं. सचरना] प्रविष्ट हुए। उ.—अंगन सर सचिरे—३१७९।

सचिव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मित्र। (२) वजीर, मंत्री। उ.—कहौ तौ सचिव-सबंधु सकल अरि एकहिं एक पछारौं—९-१०८।

सची—संज्ञा स्त्री. [सं. शची] इंद्र-पत्नी, इंद्राणी। उ.—सची नृपति सौं यह कहि भाषी। नृप सुनिकै हिरदै मैं राखी—६-७।

क्रि. स. [हिं. सचना] सजायी, सज्जित की। उ.—जो कछु सकल लोक की सोभा लै द्वारका सची री—१० उ.-८६।

सची-सुत—संज्ञा पुं. [सं. शची+सुत] जयंत।

सचु—संज्ञा पुं. [देश.] (१) सुख, आनन्द। उ.—(क) सहज भजै नँदलाल कौं सो सब सचु पावै—२-९। (ख) जौ लै मीन दूध मैं डारै बिनु जल नहिं सचु पावै—२-१०। (ग) कब वह मुख बहुरौ देखौंगी कब वैसो सचु पैहौं—२५१०। (घ) कानन भवन रैनि अरु बासर कहूँ न सचु लहिए—२८९२। (२) खुशी, प्रसन्नता। (३) संतोष।

सचुपाना—क्रि. अ. [हिं. चुपाना] चुप या मौन होना।

क्रि. स. चुप या मौन करना या कराना।

सचेत—वि. [सं. सचेतन] (१) चेतनायुक्त। उ.—ऐरावत अमृत कै प्याए, भयौ सचेत इंद्र तब धाए—६-५। (२) समझदार। (३) सजग, सावधान।

सचेतन—वि. [सं.] (१) जिसमें ज्ञान या चेतना हो। (२) जो जड़ न हो, चेतन। (३) समझदार, चतुर। (४) सजग, सावधान।

सचेती—संज्ञा स्त्री. [हिं. सचेत] (१) सचेत होने का भाव। (२) सजगता, सावधानी।

सचेष्ट—वि. [सं.] (१) जिसमें चेष्टा हो। (२) जो चेष्टा

कर रहा हो।

सचै—क्रि. स. [हिं. सचन] **जमा करता है, संग्रह या संचय करता है।** उ.—जाकी जहाँ प्रतीति सूर सो सर्वस तहाँ सचै री—२२७०।

सचैन—क्रि. वि. [हिं. स+चैन] **सुख के साथ, सानंद।** उ.—सूरदास प्रभु सब बिधि नागर पीवत हौं रस परम सचैन—२०८७।

सचैयत—संज्ञा स्त्री. [हिं. सच्च+ऐयत (प्रत्य.)] **सच्चाई, सच्चापन, सत्यता।**

सच्चरित, सच्चरित्र—वि. [सं.] **अच्छे चाल-चलनवाला, सदाचारी।**

संज्ञा पुं. **अच्छा चालचलन, सदाचार।**

सच्चर्या—संज्ञा स्त्री. [सं. सच्चर्य्या] **सदाचार।**

सच्चा—वि. [सं. सत्य] (१) **सच बोलनेवाला।** (२) **यथार्थ, वास्तविक।** (३) **जो झूठा या बनावटी न हो।** (४) **जैसा चाहिए उतना और वैसा।**

सच्चाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सच्चा+आई (प्रत्य.)] **सच्चापन, सत्यता।**

सच्चापन—संज्ञा पुं. [हिं. सच्चा+पन] **सत्य होने का भाव, सच्चाई, सत्यता।**

सच्चाहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सच्चा+हट (प्रत्य.)] **सच्चा होने का भाव, सत्यता।**

सच्चिकन—वि. [सं. सचिक्कण] **बहुत चिकना।**

सच्चित्—संज्ञा पुं. [सं.] **(सत्-चित् से युक्त) ब्रह्म।**

सच्चिदानन्द—संज्ञा पुं. [सं.] **(सत्, चित् और आनंद से युक्त) ब्रह्म।**

सच्चिन्मय—वि. [सं.] **सत् और चैतन्यस्वरूप।**

सच्छंद—वि. [सं. स्वच्छंद] **पूर्ण स्वतंत्र।**

सच्छत—वि. [सं. सक्षत] **घायल।**

सच्छास्त्र—संज्ञा पुं. [सं. सद्+शास्त्र] **अच्छा या उत्तम शास्त्र।**

सच्छी—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. साक्षी] **गवाह, साखी।**

सच्यो, सच्यौ—क्रि. स. [हिं. सचना] **एकत्र या संचित था या किया।** उ.—(क) सोधि-सकल गुन काछि दिखायौ अंतर हो जो सच्यौ—१-१७४। (ख) यह मुख अबलौं कहाँ सच्यौ—पृ. ३५० (६७)। (ग) हरि-मुख-कमल सच्यो रस सजनी अति आनंद पियूष पिये—२०३५।

सछोलि—क्रि. स. [हिं. छोलना] **छीलकर।** उ.—टेंटी टेंट सछोलि कियो पुनि—२३२१।

सज—संज्ञा स्त्री. [हिं. सजावट] (१) **सजने की क्रिया या भाव।** (२) **बनावट, गढ़न।** (३) **शोभा।** (४) **सुन्दरता।**

सजग—वि. [सं. सज्ञान] **सचेत, सावधान।** उ.—कुबलिया मल्ल मुष्टिक चानूर सों होई तुम सजग कहि सबनि ऐंठयौ—२५६३।

सजगता—संज्ञा स्त्री. [हिं. सजग] (१) **सजग रहने या होने की क्रिया या भाव।** (२) **सावधानी, सतर्कता।**

सजदार—वि. [हिं. सज+फ़ा. दार] **सुन्दर, सजीला।**

सजधज—संज्ञा स्त्री. [हिं. सज+धज (अनु.)] **बनाव-सिंगार, सजावट।**

सजन—संज्ञा पुं. [सं. सत्+जन] (१) **भला या सज्जन व्यक्ति।** (२) **पति।** (३) **स्वजन, घनिष्ठ संबंध वाले प्रिय व्यक्ति।** उ.—(क) धरी इक सजन कुटुँब मिलि बैठे रुदन बिलाप कराहीं—१-३१९। (ख) सजन-कुटुँब परिजन बढ़े सुत-दारा-धन-धाम—१-३२५। (ग) सजन प्रीतम नाम लै लै दै परस्पर गारि—१०-२६। (४) **प्रियतम, उपपति।**

वि. [सं.] **जिसमें लोग हों, जन सहित।**

सजना—क्रि. अ. [सं. सज्जा] (१) **सज्जित या अलंकृत होना, शृंगार होना, सजाया जाना।** (२) **भला लगना, शोभा देना, शोभित होना।**

क्रि. स. **सजाना, सुसज्जित करना।**

सजनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सजन] **सखी, सहेली।** उ.—(क) अब लौं कानि करी मैं सजनी बहुतै मूँड़ चढ़ायौ—पृ. ३२२ (१३)। (ख) मदन गोपाल देखत ही सजनी सब दुख सोक बिसारे—२५६९।

सजल—वि. [सं.] (१) **जिसमें पानी हो, जल से पूर्ण या युक्त।** उ.—सजल देह, कागद तें कोमल किहिं बिधि राखै प्रान—१-३०४। (२) **आँसू भरे या अश्रुपूर्ण (नयन)।** उ.—त्रास तैं अति चपल गोलक सजल सोभित छोर—३५८।

सजला—वि. [हिं. मँझला से अनु.] **चार सहोदरों में तीसरा**

जो दूसरे से छोटा परन्तु अन्तिम से बड़ा हो ।

वि. [सं. सजल] **जल से भरी हुई ।**

सजवना, सजवनो—क्रि. स. [हिं॰ सजाना] (१) **अलंकृत करना ।** (२) **यथाक्रम रखना ।**

सजवल—संज्ञा पुं. [हिं. सजना] (१) **सजावट ।** (२) **सुन्दरता ।** (३) **तैयारी, उपक्रम ।** (४) **ठाटबाट ।**

सजवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सजना + वाई (प्रत्य.)] **सजवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।**

सजवाना, सजवानो—क्रि. स. [हिं. सजाना का प्रे.] **सुसज्जित करवाना ।**

सजा, सजाइ, सजाई—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सज़ा, हिं. सजा] (१) **अपराध का दंड ।**

प्र०—करौं सजाई—**दंड दूँगा ।** उ.—मेरी बलि औरहिं लै सौंपत, इनकी करौं सजाई—९१६ ।

(२) **कारागार में बंद रखने का दंड ।**

सजाइ—क्रि. स. [हिं. सजाना] **सजाकर ।** उ.—बहुत धरे जल-माँझ सजाइ—५८२ ।

सजाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सजाना + आई] **सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।**

सजागर—वि. [सं.] (१) **जो सोता न हो, जागता हुआ ।** (२) **सजग, सतर्क, सावधान ।**

सजात—वि. [सं.] (१) **जो साथ ही जन्मा हो ।** (२) **जो एक ही स्थान पर जन्मे, पले और रहते हों ।**

सजाति, सजातीय—वि. [सं.] (१) **एक ही जाति या वर्ग के (लोग या पदार्थ) ।** (२) **एक ही आकार-प्रकार या आकृति-प्रकृति के (लोग या पदार्थ) ।**

सजान—वि. [सं. सज्ञान] (१) **जानकार, ज्ञाता ।** (२) **होशियार, चतुर ।**

सजाना, सजानो—क्रि. स. [सं. सज्जा] (१) **यथाक्रम या यथास्थान रखना ।** (२) **सँवारना, शृंगार करना, अलंकृत करना ।** (३) **तैयार करना ।**

सजाय—संज्ञा स्त्री. [हिं. सजा] **दंड ।**

सजायौ—क्रि. स. [हिं. सजाना] **सजाकर या सँवारकर तैयार किया या रखा ।** उ.—सदं माखन घृत दही सजायौ—१०१९० ।

सजाव—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का दही ।**

संज्ञा पुं., स्त्री. [हिं. सजाना] **सजावट, बनाव ।**

सजावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सजाना] (१) **सज्जित या सज हुए होने का भाव या धर्म ।** (२) **शोभा ।** (३) **तैयारी, उपक्रम ।** (४) **ठाट ।**

सजावना, सजावनो—संज्ञा पुं. [हिं. सजाना] (१) **सजाने या अलंकृत करने की क्रिया ।** उ.—स्फटिक सिंहासन मध्य राजत हाटक सहित सजावनो—२२८० । (२) **तैयार या सुसज्जित करने की क्रिया ।**

क्रि. स. [हिं. सजाना] **सजाना ।**

सजावहु—क्रि. स. [हिं. सजाना] **तैयार करो ।** उ.—बल समेत तन कुसल सूर प्रभु हरि आये आरती सजावहु—१० उ. २३ ।

सजि—क्रि. अ. [हिं. सजाना] (१) **अस्त्रशस्त्र से सज्जित या प्रस्तुत होकर ।** उ.- ब्रज पर सजि पावस दल आयौ—२८१९ । (२) **धारण करके ।** उ.—धन तन दिव्य कवच सजि—९-१५८ । (३) **अलंकृत होकर ।** उ.—अंग सुभग सजि ह्वै मधु मूरति—१०-४९ । (४) **सजाकर, तैयार करके ।** उ.—अगम सिंधु जतननि सजि नौका हठि क्रम भार भरत—१-५५ ।

सजियो—क्रि. स. [हिं. सजाना] **(सप्रेम या सरुचि) रखी या डाली जाय ।** उ.—नाहिंन मीन जीवत जल बाहर गो घृत मैं सजियो—३१४७ ।

सजी—क्रि. अ. [हिं. सजना] (१) **(अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होकर) प्रस्तुत हुई ।** उ.—जानि कठिन कलिकाल कुटिल नृप संग सजी अघ-सैनी—९-११ । (२) **संबद्ध की, सुशोभित की ।** उ.—मुरली अधर सजी बलबीर—६५८ ।

सजीब—वि. [सं. सजीव] (१) **जिसमें प्राण हो ।** (२) **ओजयुक्त, ओजस्वी ।**

सजीला—[हिं. सजना + ईला] (१) **सजधज से रहनेवाला, छैल-छबीला ।** (२) **सुन्दर, सुडौल ।**

सजीव—वि. [सं.] (१) **जिसमें प्राण या जीवन हो ।** (२) **जिसमें ओज या तेज हो ।** (३) **जो बहुत तेज या फुर्तीला हो ।**

संज्ञा पुं. **प्राणी, जीवधारी ।**

सजीवता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सजीव होने का भाव ।**

सजीवन, सजीवनि, सजीवनी—संज्ञा स्त्री. [सं. संजीवन, हिं. संजीवनी] (१) **संजीवनी नामक बूटी जो मरे हुए को भी जिलानेवाली कही जाती है।** उ.—सूरदास मनु जरी सजीवनि श्री रघुनाथ पठाई—९-८०। (२) **वह व्यक्ति या पदार्थ जो संजीवनी के समान प्राण या जीवनदाता हो।** उ.—कोउ कोउ उबरयौ साधु-संग जिन स्याम-सजीवनि पायौ—२-३२।

सजीवनमूर, सजीवनमूरी, सजीवनमूल, सजीवनमूली, सजीवनिमूर, सजीवनिमूरी, सजीवनिमूल, सजीवनिमूली—संज्ञा स्त्री. [हिं. संजीवनी+मूल] (१) **संजीवनी नामक बूटी जो मृतकों को भी जिलानेवाली मानी जाती है।** (२) **अत्यंत प्रिय व्यक्ति या वस्तु।**

संजीवनी मंत्र—संज्ञा पुं. [सं. संजीवन+मंत्र] (१) **वह (कल्पित) मंत्र जो मृतक को भी जिला लेनेवाला माना जाता है।** (२) **वह मंत्र जिससे कोई कार्य सुगमता से हो जाय।**

सजुग—वि. [हिं. सजग] **सचेत, सतर्क।**

सजूरी—संज्ञा स्त्री. [देश. या अनु. खजूरी] **एक तरह की मिठाई।** उ.—(क) माधुरि अति सरस सजूरी। (ख) घेवर मालपुआ मोतिलाड़ू सधर सजूरी सरस सँवारी—१०-२२७।

सजैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. सजा] **अपराध का दंड।**

प्र.—करौं सजैया—**अपराध का दंड दूँ।** उ.—आवन तौ घर देहु स्याम को जैसी करौं सजैया—८६२।

सजोना, सजोनो—क्रि. स. [हिं. सजाना] (१) **सज्जित करना।** (२) **सामान इकट्ठा करना।**

सजोयल—वि. [हिं. सँजोना या सजाना] **सजी हुई, क्रमबद्ध।** उ.—स्याम घटा गज असन बाजि रथ चित बगपाँति सजोयल—२८१९।

सज्ज—संज्ञा पुं. [हिं. साज] (१) **सजावट।** (२) **ठाटबाट।** (३) **सामग्री।**

सज्जन—वि. [सं. सत्+जन] (१) **शरीफ, भला।** (२) **अच्छे वंश या कुल का।**

सज्जनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **भलमंसी, सौजन्य।**

सज्जनताई—संज्ञा स्त्री. [सं. सज्जनता] **भलमंसी।**

सज्जा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सजाने की क्रिया या भाव, सजावट।** (२) **वेश-भूषा।** (३) **कार्य-विशेष से संबंधित साधन या उपकरण।** (४) **उन साधनों या उपकरणों को व्यवस्थित करना।**

संज्ञा स्त्री. [सं. शय्या] (१) **चारपाई, पलँग, शैया।** उ.—आपुन पौढ़ि अधर सज्जा पर कर-पल्लव पलुटावति—६५५।

वि. [हिं. सारा] **पूरा, साबुत।**

सज्जित—वि. [सं.] (१) **सजा हुआ, अलंकृत।** (२) **आवश्यक साधनों से युक्त।**

सज्जी—संज्ञा स्त्री. [सं. सर्जिका] **एक तरह का क्षार।**

वि. स्त्री [हिं. सज्जा] **पूरी, साबुत।**

सज्जे—वि. बहु. [हिं. सज्जा=पूरा] **पूरे, साबुत।**

सज्ञान—वि. [सं.] (१) **ज्ञानवान।** (२) **चतुर, सयाना।** (३) **विवेकयुक्त, बुद्धिमान।**

सज्या—संज्ञा स्त्री. [सं. सज्जा] (१) **सजधज, सजावट।** (२) **वेश-भूषा।**

संज्ञा स्त्री. [सं. शय्या] **पलँग, शैया।** उ.—भीषम-सर-सज्या पर परयौ—१-१७६।

सट—संज्ञा पुं. [सं.] **जटा।**

सटक—संज्ञा स्त्री. [अनु. सट] (१) **सटकने की क्रिया।** (२) **धीरे से या चुपचाप चल देना।** (३) **पतली छड़ी।** (४) **हुक्का पीने की लचीली नली ना नैचा।**

सटकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सटकना] **सटकने या चुपचाप चंपत होने की क्रिया।**

सटकना, सटकनो—क्रि. अ. [अनु. सट] **धीरे से खिसक जाना या चंपत हो जाना।**

क्रि. स. **अन्न की बालों से अनाज निकालने के लिए उन्हें कूटना-पीटना।**

सटकाना, सटकानो—क्रि. स. [हिं. सटकना] (१) **छड़ी या कोड़े से 'सट' शब्द करते हुए मारना।** (२) **'सट-सट' करते हुए हुक्का पीना।**

सटकार—संज्ञा स्त्री. [अनु. सट] (१) **सटकने, झटकने या फटकारने की क्रिया या भाव।** (२) **पशुओं को हाँकने की क्रिया।** उ.—सारथी पाय रुख दये सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई—१० उ.-१५६।

सटकारना, सटकारनो—क्रि. स. [हिं. सटकार] (१)

पतली छड़ी या कोड़े से 'सटसट' शब्द करते हुए मारना। (२) झटकारना। (३) पशुओं को हाँकना।
सटकारा—वि. [अनु.] चिकने और लंबे (बाल)।
सटकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सटकार] पतली-लंबी छड़ी।
सटकि—क्रि. अ. [हिं. सटकना] धीरे से चंपत होकर, चुपचाप खिसककर।

प्र०—गयौ सटकि—चुपचाप या धीरे से खिसक गया। उ.—असुर यह घात तकि गयौ रन ते सटकि —१० उ.-३५।

सटक्का—संज्ञा पुं. [अनु. सट] दौड़, झपट।

मुहा.—सटक्का मारना—दौड़ या झपट कर चले जाना।

सटना, सटनो—क्रि. अ. [सं. स+स्था] (१) दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना या लगना कि दोनों पार्श्व या तल एक दूसरे से लग जायँ। (२) चिपकना। (३) साथ होना, मिलना।
सटपट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) इधर-उधर की या व्यर्थ की बातें या काम। (२) शील, संकोच। (३) दुबिधा, असमंजस। (४) डर, भय। (५) सटपटाने की क्रिया, घबराहट, चकपकाहट।
सटपटाना, सटपटानो—क्रि. अ. [अनु.] (१) 'सटपट' की ध्वनि होना। (२) घबराना।
सटर-पटर—वि. [अनु. सटपट] छोटा-मोटा, तुच्छ या व्यर्थ का (काम)।

संज्ञा स्त्री. (१) झंझट या उलझन का काम। (२) तुच्छ या व्यर्थ का काम।

सटसट—क्रि. वि. [अनु.] (१) 'सट' शब्द के साथ, सटासट। (२) शीघ्र, तुरंत।
सटा—संज्ञा स्त्री. [सं. सट या हिं. जटा] (१) घोड़े या शेर की गरदन के बाल, अयाल, केसर। (२) जटा। (३) चोटी, शिखा।
सटाक—संज्ञा पुं. [अनु.] 'सट' शब्द।
सटान—संज्ञा स्त्री. [हिं. सटना] (१) सटने की क्रिया या भाव। (२) सटने या मिलने का जोड़।
सटाना, सटानो—क्रि. स. [हिं. सटना] (१) दो चीजों को इतने समीप करना कि उनका तल या पार्श्व परस्पर मिल जाय। (२) मिलाना, जोड़ना, चिपकाना।
सटाय—वि. [देश.] घटिया, खराब।
सटाल—संज्ञा पुं. [सं.] सिंह, केसरी।
सटियल - वि. [हिं. सड़ियल (अनु.)] घटिया, खराब।
सटिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. सटाना] (१) गुप्त रूप से कुचक्र या षड्यंत्र रचकर किसी को अपनी ओर मिलाने की क्रिया। उ.—उनहूँ जाइ सौंह दै बूझी, मैं करि पठयौ सटिया—१-१९२। (२) एक तरह की चूड़ी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. साँटी] पतली छड़ी।

सटीक—वि. [सं.] जिसमें (मूल के साथ) टीका-व्याख्या भी हो।

वि. [हिं. ठीक] जैसा चाहिए ठीक वैसा ही।

सट्टा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) इकरारनामा। (२) खरीद-बिक्री का वह प्रकार जो केवल तेजी-मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ के लिए होता है।

संज्ञा पुं. [हिं. हाट या सट्टी] हाट, बाजार।

सट्टा-बट्टा—संज्ञा पुं. [हिं. सटना+अनु. बट्टा] (१) हेलमेल (२) अनुचित संबंध। (३) चालबाजी।

मुहा.—सट्टा-बट्टा लड़ाना—कार्य-सिद्धि के लिए अनुचित चाल चलना।

सट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. हट्टी] हाट, बाजार।

मुहा.—सट्टी मचाना—हाट-बाजार जैसा शोर करना। सट्टी लगाना—बहुत सी चीजें इधर-उधर बिखरा या फैला देना।

सठ – वि. [सं. शठ] (१) मूर्ख, बुद्धिहीन। उ.—(क) इते मान यह सूर महासठ हरि-नग बदलि विषय-बिष आनत—१-११४। (ख) रे सठ, बिन गोबिंद सुख नाहीं —१-३२३। (२) दुष्ट।
सठई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सठ] (१) दुष्टता। (२) मूर्खता।
सठता—संज्ञा स्त्री. [हिं. सठ] (१) मूर्खता। (२) शठता।
सठमति—वि. [सं. शठ+मति] (१) मूर्ख। (२) दुष्ट।
सठियाना, सठियानो—क्रि. अ. [हिं. साठ+इयाना (प्रत्य)] (१) साठ वर्ष का होना। (२) बुड्ढा होना। (३) बूढ़ा हो जाने से विवेक का कम हो जाना, बूढ़ा होकर बुद्धि खो-बैठना।
सड़क—संज्ञा स्त्री. [अ. शरक़] चौड़ा मार्ग, राजपथ।

सड़न—संज्ञा स्त्री. [हिं. सड़ना] सड़ने (विकार और दुर्गंध आने) की क्रिया या भाव।

सड़ना – क्रि. अ. [हिं. सड़न] (१) किसी पदार्थ में विकार और दुर्गंध आने लगना। (२) पानी मिले पदार्थ में खमीर उठना या आना। (३) बुरी, गिरी हुई या हीन दशा में रहना।

सड़सठ—संज्ञा पुं. [हिं. सड़ (=सात) + साठ] वह संख्या जो साठ से सात अधिक हो।

सड़ाना—क्रि. स. [हिं. सड़ना] (१) किसी पदार्थ में विकार और दुर्गंध आने तक डाल रखना। (२) पानी मिले पदार्थ में खमीर उठाना। (३) बुरी या हीन दशा में डाल रखना।

सड़ायँध— संज्ञा स्त्री. [हिं. सड़न+गंध] किसी चीज के सड़ने पर उसमें से आनेवाली दुर्गंध।

सड़ाव—संज्ञा. पुं. [हिं. सड़ना] सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़ – क्रि. वि. [अनु. सड़] (१) 'सड़सड़' शब्द के साथ। (२) बहुत जल्दी-जल्दी।

सड़ियल—वि. [हिं. सड़ना + इयल (प्रत्य.)] (१) सड़ा-गला। (२) रद्दी, खराब। (३) तुच्छ, निकम्मा।

सत—वि. [सं. सत्] (१) सत्य। उ.—(क) भीषम परतिज्ञा सत भाषी—५६९। (ख) आध पैंड़ बसुधा दै राजा, नातरु चलि सत हारी—८-१४। (२) साधु, सज्जन। (३) नित्य, स्थायी। (४) शुद्ध, पवित्र। (५) श्रेष्ठ, उत्तम।

संज्ञा पुं. (१) सत्यतापूर्ण धर्म या आचरण। उ.—(क) सतजुग सत त्रेता तप कीजै द्वापर पूजा चारि—२-२। (ख) सत-संजम तीरथ-ब्रत कीन्हैं—१०-१६।

मुहा.—सत पर चढ़ना – पति के मृत शरीर के साथ पत्नी का सती होना। सत पर रहना (से न हटना)—पतिव्रता रहना। सत न टरई—सदा पातिव्रत-धर्म का आचरण करेगी, सती रहेगी, उसका पातिव्रत धर्म दृढ़ और अटल रहेगा। उ.— श्री रघुनाथ-प्रताप पतिब्रत सीता सत न टरई —९-७८।

(२) भक्ति का एक रूप। उ.—माता, भक्ति चारि परकार। सत रज तम गुन सुदधा सार—३-१३।

संज्ञा पुं. [सं. सत्व] (१) प्रकृति के तीन गुणों में एक जो सबसे उत्तम है और जिसके लक्षण ज्ञान, शांति, शुद्धता आदि हैं। (२) मूल तत्व, सार भाग। (३) जीवनी शक्ति।

वि. [सं. शत] सौ। उ.— (क) सत-सत अघ प्रति रोमनि —१-१९२। (ख) धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प जिएँ—१०-९९।

वि. [हिं. सात] (१) 'सात' का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों के आरंभ में प्रयुक्त होता है। (२) सात, जो संख्या में सात हो।

सतएँ—अव्य. [हिं. सात] (जन्मकुंडली के) सातवें घर या स्थान में। उ.—ऊँच नीच जुवती बहु करिहैं सतएँ राहु परे हैं—१०-८६

सतकार—संज्ञा पुं. [सं. सत्कार] आदर-सम्मान।

सतकारना, सतकारनो—क्रि. स. [सं. सत्कार+ना] आदर-सत्कार करना।

सतगुरु—संज्ञा पुं. [सं. सत् + गुरु] (१) सच्चा और उत्तम गुरु या दीक्षक। उ. – (क) सतगुरु कौ उपदेस हृदय धरि जिनि भ्रम सकल निवारचौ—१-३३६। (ख) सब्दहिं सब्द भयौ उजियारौ, सतगुरु भेद बतायौ —४-१३। (ग) सतगुरु-कृपा-प्रसाद कछुक तातैं कहि आवै —४९२। (घ) माथे नहीं महावत सतगुरु अंकुस ध्यान कर टूटो—३४०१। (२) परमात्मा।

सतजुग—संज्ञा पुं. [सं. सत्ययुग] चार युगों में पहला जिसे 'कृत युग' भी कहते हैं। पुण्य और सत्यता की अधिकता के कारण यह युग सर्व-श्रेष्ठ माना जाता है। उ.—(क) सतजुग लाख बरस की आइ—१-२३०। (ख) सतजुग सत त्रेता तप कीजै द्वापर पूजा चारि—२-२।

सतत—अव्य. [सं.] सदा, निरंतर। उ.—नैन चकोर सतत दरसन ससिकर अरचन अभिराम—२-१२।

सततगति—संज्ञा पुं. [सं.] हवा, वायु।

सतदल—संज्ञा पुं. [सं. शतदल (सौ दलवाला)] कमल। उ.—कनकबेलि सतदल सर मंडित हृद तर लता लवंग —३३२७।

सतनजा—संज्ञा पुं. [हिं. सात + अनाज] वह मिश्रण जिसमें सात तरह के अनाज हों।

सतपतिया—वि. [हिं. सात+पति] (१) जिसके सात पति हों। (२) व्यभिचारिणी।
सतपदी—संज्ञा स्त्री. [सं. सप्तपदी] भाँवर, भँवरी।
सतपात—संज्ञा पुं. [सं. शतपत्र] कमल।
सतफेरा—संज्ञा पुं. [हिं. सात+फेरा] भाँवर, भँवरी।
सतभाई—क्रि. वि. [सं. सद्भाव] सच्चे या अच्छे भाव से। उ.—जूठनि की कछु संक नै मानी बिदा किए सत भाई—१-१३।
सतभाएँ—क्रि. वि. [सं. सद्भाव] (१) अच्छे भाव से। (२) सच्चाई के साथ, सत्यतापूर्वक।
सतभामा—संज्ञा स्त्री. [सं. सत्यभामा] सत्यभामा जो श्रीकृष्ण की एक पटरानी थी। उ.—सतभामा करि सोक पिता को जदुपति पास सिधाई—१० उ.-२७।
सतभाय, सतभाव—संज्ञा पुं. [सं. सद्भाव] (१) अच्छा भाव। (२) सीधापन। (३) सच्चापन, सच्चाई। उ.—हँसत कहत कीधौं सतभाव—१२४०।

क्रि वि. (१) अच्छे भाव से। (२) सच्चाई के साथ।
सतभौंरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सात+भँवरी] भाँवर, भँवरी।
सतम—वि. [सं. शत] सौवाँ। उ.—रिषिनि कह्यौ, तुव सतम जज्ञ आरंभ लखि इंद्र कौ राज-हित कँप्यौ हीयौ—४-११।
सतमख—वि. [सं. शत+मख] सौ यज्ञ करनेवाला।

संज्ञा पुं. देवराज इन्द्र।
सतमासा—वि. [हिं. सात+मास] सातवें महीने जन्मनेवाला (शिशु)।

संज्ञा पुं. वह रसम जो शिशु के गर्भ में आने पर सातवें महीने की जाती है।
सतयुग—संज्ञा पुं. [सं. सत्ययुग] चार युगों में पहला जो 'कृतयुग' भी कहलाता है। पुण्य और सत्य की अधिकता के कारण यह युग अन्य तीनों युगों से श्रेष्ठ समझा जाता है।
सतरंग, सतरंगा वि. [हिं. सात+रंग] जिसमें सात रंग हों, सात रंगवाला।

संज्ञा पुं. इन्द्रधनुष।
सतरंज—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शतरंज] एक प्रसिद्ध खेल।
सतर—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) लकीर, रेखा। (२) कतार, पंक्ति, अवली।

वि. (१) टेढ़ा, वक्र। (२) कुपित, क्रुद्ध। उ.—(क) हमसौं सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाइ—५३७। (ख) कहा हमारौ मन यह राखैं अरु हमहीं पर सतर गई—१२६७। (ग) सतर होति काहे को माई—पृ. ३२३ (२७)।

क्रि. वि. [सं. सत्वर] जल्दी से।
सतरह—संज्ञा पुं. [हिं. सत्तरह] (१) वह संख्या जो दस से सात अधिक हो। (२) सत्तरह की संख्या जो अष्टांग योग और नवधा भक्ति की सूचक मानी जाती है। अथवा पासे के खेल का वह दाँव जिसमें दो छक्के और एक पंजा साथ-साथ पड़ते हैं। उ.—राखि सतरह सुनि अठारह चोर पाँचों मारि—१-३०९।
सतराइ—क्रि. अ. [हिं. सतराना] क्रोध करके, कुपित होकर। उ.—लाज नहीं तुम आवई बोलत जब सतराइ—११३३।
सतराई—संज्ञा स्त्री. [सं. शत्रु+आई] दुश्मनी, शत्रुता। उ.—कोउ कहै होई करम दुखदाता। सो तौ मैं न कीन्ह सतराई।
सतरात—क्रि. अ. [हिं. सतराना] कोप या क्रोध करता है। उ.—(क) काहे को सतरात, बात मैं साँची भाषत—१०१८। (ख) आदि-बुन्यादि सबै हम जानति काहे को सतरात—११२४। (ग) सुनहु सखी सतरात इते पर हम पर भौहैं तानत—पृ. ३२८ (७७)।
सतराति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. सतराना] कोप या क्रोध करती हो (हूँ)। उ.—(क) धन तुम लिए फिरति हौ, दान देत सतराति—१०३६। (ख) नित ही, नित बूझति ये मोसों मैं इन पर सतराति—१६१३। (ग) बहियाँ गहत सतराति कौन पर—२०४७।
सतराना, सतरानो—क्रि. अ. [हिं. सतर] (१) कुढ़ना, चिढ़ना। (२) कोप या क्रोध करना।
सतरानी—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. सतराना] कुपित या क्रुद्ध हुई। उ.—जाइ करौ ह्वाँ बोध सबनि कौ मोपर कत सतरानी—१८८३।
सतराने—क्रि. अ. [हिं. सतराना] कुपित या क्रुद्ध हुए। उ.—तुमहिं उलटि हम पर सतराने—११३६।

सतराहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सतराना+हट] (१) **चिढ़, कुढ़न। (२) गुस्सा, कोप, क्रोध।**
सतरौहाँ—वि. [हिं. सतराना] (१) **क्रुद्ध, कुपित। (२) कोप या क्रोध-सूचक।**
सतर्क—वि. [सं.] (१) **तर्कयुक्त। (२) सचेत।**
सतर्कता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सावधानी।**
सतर्पना, सतर्पनो—क्रि. स. [सं. सतर्पण] **भली-भाँति तुष्ट या तृप्त करना।**
सतलज—संज्ञा स्त्री. [सं. शतद्रु] **शतुद्र नदी जो पंजाब की पाँच प्रसिद्ध नदियों में एक है।**
सतलड़ा—वि. [हिं. सात+लड़] **जिसमें सात लड़ें हों।**
संज्ञा पुं. **हार जिसमें सात लड़ें हों।**
सतलड़ी—वि. स्त्री. [हिं. सात+लड़ी] **जिसमें सात लड़ियाँ हों।**
संज्ञा स्त्री. **सात लड़ियों की माला।**
सतवंती, सतवती—वि. स्त्री. [हिं. सत्य+वंती] **सती, पतिव्रता।**
सतसंग—संज्ञा पुं. [सं. सत्संग] **भली संगत, साधु-सज्जनों का साथ।** उ.—सुनि सतसंग होत जिय आलस, बिषयिनि सँग बिसरामी—१-१४८।
सतसंगति—संज्ञा स्त्री. [सं. सत+हिं. संगत] **भली संगत, साधु-सज्जनों का साथ, सत्संग।** उ.—अजहूँ मूढ़ करौ सतसंगति, संतनि मैं कछु पैहै—१-८६।
सतसंगी—वि. [सं. सत्संगी] **सत्संग करनेवाला।**
सतसई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सात+सं. शती] (१) **एक ही तरह की सात सौ चीजों का समूह। (२) वह ग्रंथ जिसमें सात सौ छंदों (विशेषतया दोहों) का संग्रह हो।**
सतसठ—वि. [हिं. सात+साठ] **सड़सठ।**
सत-सार—संज्ञा पुं. [सं. सत्य+सार] (१) **सार-तत्व। (२) प्राण या जीवन शक्ति।** उ.—निसा निमेष कपाट लगे बिनु ससि मूषत सत-सार—२८८८।
सतह—संज्ञा स्त्री. [अ.] **वस्तु का ऊपरी तल।**
सतहत्तर—संज्ञा पुं. [सं. सप्तसप्तति, पा. सत्तसत्तति, प्रा. सत्तहत्तरि] **सत्तर से सात अधिक की संख्या।**
सतहरा—वि. [सं. सत्व+हिं. हारना] **जिसने सत्य (हार-कर) छोड़ दिया हो।**

सतांग—संज्ञा पुं. [सं. शतांग] **रथ, यान।**
सताए—क्रि. स. [हिं. सताना] **पीड़ित किया (किये)।** उ.—(क) राज-धर्म सुनि इहै सूर जिहिं प्रजा न जाहिं सताए—३३-६३। (ख) सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना मदन की ताप सताए—३३८३।
सतानंद—संज्ञा पुं. [सं.] **राजा जनक के पुरोहित जो गौतम ऋषि के पुत्र थे।**
सताना, सतानो—क्रि. स. [सं. संतापन, प्रा. संतावन] **तंग करना, कष्ट या दुख देना।**
सतायो, सतायौ—क्रि. स. [हिं. सताना] **पीड़ित किया, दुख दिया।** उ.—(क) दुरबासा अँबरीष सतायौ—, ३८। (ख) कह्यौ सुरनि, तुम रिषिहिं सतायौ, तातैं कर रहि गयौ उचायौ—९-३। (ग) इन नैननि मोहिं बहुत सतायौ पृ. ३२२ (१३)।
सतावत—क्रि. स. [हिं. सतावना] **कष्ट देता या पीड़ित करता है, दुख देता है।** उ.—ऊधौ, इतने मोहिं सतावत—३०-७६।
सतावति—क्रि. स. [हिं. सतावना] **कष्ट देती है।** उ.—प्रभु तुव माया मोहिं सतावति—१-२२६।
सतावना, सतावनो—क्रि. स. [हिं. सताना] **तंग करना, दुख या संताप देना।**
सतावै—क्रि. स. [हिं. सतावना] **दुख या संताप देता है।** उ.—नाहिनैं नाथ जिय सोच धन-धरनि को, मरन सैं अधिक यह दुख सतावै—१० उ.-५०।
सति—संज्ञा पुं. [सं. सत्य] **सत्य।**
सतिभाइ—क्रि. वि. [सं. सत्य+भाव] **सद्भाव से।** उ.—पवनपुत्र बोल्यौ सतिभाइ—९-१५५।
सतिभाउ, सतिभाऊ—क्रि. वि. [सं. सत्य+भाव] **सद्भावना के साथ।** उ.—की तू कहति बात हँसि मोसों की बूझति सतिभाऊ—१२६०।
सतिभाएँ, सतिभायें—क्रि. वि. [सं. सत्य+भाव] **सद्भावना से।** उ.—(क) पूछे समाचार सतिभाएँ—१-२८४। (ख) सुख सजनी सतिभायें सँवारी—१० उ.—३९।
सती—वि. स्त्री. [सं.] (१)**पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष का पतिभाव से ध्यान न करनेवाली, पतिव्रता,**

साध्वी। उ.—सूरदास स्वामी सौं बिमुख ह्वै सती कैसैं भोग—१-३२१। (२) पति के शव के साथ अथवा उसके मरने पर किसी भी अन्य प्रकार से प्राण त्याग देनेवाली (स्त्री)।

संज्ञा स्त्री. (१) दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिवजी को ब्याही थी। उ.—(क) सती दच्छ की पुत्री भई। दच्छ सो महादेव कौं दई—४-५।

वि. पुं. [सं. सत+ई] सच्चा, सत्यनिष्ठ। उ.—जती सती तापस आराधैं—१-२६३।

सतीचौरा—संज्ञा पुं. [सं. सती+चौरा] वह चबूतरा या वेदी जो किसी पतिव्रता के सती होने के स्थान पर, उसकी स्मृति में, बनाया जाता है।

सतीत्व—संज्ञा पुं. [सं.] सती होने का भाव, पातिव्रत।

सतीपन—संज्ञा पुं. [सं. सती.+पन (प्रत्य.)] सतीत्व, पातिव्रत धर्म।

सतुआ—संज्ञा पुं. [हिं. सत्तू] सत्तू।

सतून—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुतून] खंभा, स्तंभ।

सतूना—संज्ञा पुं. [हिं. सतून] बाज की वह झपट जिसमें वह शिकार के ठीक ऊपर से एक बारगी उस पर टूट पड़ता है।

सतृष्ण—वि. [सं.] जिसमें तृष्णा हो।

सतोखना, सतोखनो—क्रि. स. [सं. सतोषण] (१) प्रसन्न या संतुष्ट करना। (२) धैर्य या सांत्वना देना।

सतोगुण—संज्ञा पुं. [सं. सत्वगुण] प्रकृति के तीन गुणों में सर्वोत्तम जो सत्कार्यों की ओर प्रवृत्त करता है।

सतोगुणी—वि. [हिं. सतोगुण] जो सत्वगुण से युक्त हो, सात्विक।

सतौसर—वि. [सं. सप्तसृक] सतलड़ा।

सत्—संज्ञा पुं. [सं.] सत्यतापूर्ण धर्म।

वि. [सं. शत] सौ।

संज्ञा पुं. [सं. सत्व] (१) किसी पदार्थ का मूल तत्व, सार भाग। (२) जीवनी शक्ति।

सत्कर्ता—वि. [सं. सत्कर्तृ] (१) अच्छा कार्य या सत्कर्म करनेवाला। (२) सत्कार करनेवाला।

सत्कर्म—संज्ञा पुं. [सं. सत्कर्मन्] (१) अच्छा काम। (२) पुण्य, धर्मकाय। (३) अच्छा संस्कार।

सत्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आनेवाले का आदर-सम्मान। उ.—सूरदास सत्कार किएँ तैं ना कछु घटै तुम्हारौ—१-२१५। (२) धन आदि भेंट देकर किया जानेवाला आदर-सम्मान। (३) आतिथ्य।

सत्कारक—वि. [सं.] सत्कार करनेवाला।

सत्कार्य—संज्ञा पुं. [सं. सत्कार्य्य] उत्तम कार्य।

सत्कार्य्य—वि. [सं.] (१) सत्कार करने योग्य। (२) जिसका सत्कार करना हो। (३) जिस (मृतक) का क्रिया-कर्म करना हो।

संज्ञा पुं. उत्तम कार्य।

सत्कार्य्यवाद—संज्ञा पुं. [सं.] वह दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार इस जगत की उत्पत्ति किसी मूल सत्ता से मानी जाती है।

सत्कीर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. सत्कीर्त्ति] उत्तम कीर्ति।

सत्कुल—संज्ञा पुं. [सं.] उत्तम कुल।

सत्कृत—वि. [सं.] (१) उत्तम रीति से किया हुआ। (२) जिसका आदर-सत्कार किया गया हो।

संज्ञा पुं. (१) आदर-सत्कार। (२) सत्कर्म।

सत्कृति—वि. [सं.] सत्कर्मी।

संज्ञा स्त्री. उत्तम कार्य या कृति।

सत्क्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) आदर-सत्कार। (२) आतिथ्य। (३) तैयारी। (४) सत्कर्म।

सत्त—संज्ञा पुं. [सं. सत्व] (१) किसी पदार्थ का सार भाग या तत्व। (२) जीवनी शक्ति। (३) जीव, प्राणी। (४) मनुष्य। (५) काम की चीज, तत्व।

संज्ञा पुं. [सं. सत्य] (१) सत्य। उ.—धर्म-सत्त मेरे पितु माता—१-१७३। (२) सतीत्व, पातिव्रत।

वि. [हिं. सात] सात (संख्या)।

सत्तर—संज्ञा पुं. [सं. सप्तति, प्रा. सत्तरि] साठ और दस की संख्या।

सत्तरह—संज्ञा पुं. [सं. सप्तदश, प्रा. सत्तरह] (१) दस और सात की संख्या। (२) पासे के खेल का वह दाँव जिसमें दो छक्के और एक पंजा साथ-साथ पड़ते हैं। या अष्टांग योग और नवधा भक्ति का योग-सूचक अंक। उ.—राखि सत्तरह (सतरह) सुनि अठारह चोर पाँचों मारि—१-३०९।

सत्ता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) विद्यमान होने का भाव या उसकी अवस्था,अस्तित्व । (२) शक्ति, सामर्थ्य । (३) अधिकार, प्रभुत्व ।

मुहा.—सत्ता चलाना या जताना—शक्ति या अधिकार दिखाना या सिद्ध करना ।

संज्ञा पुं. [हिं. सात] ताश का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों ।

सत्ताईस—संज्ञा पुं. [सं. सप्तविंशति, प्रा. सत्ताईसा] बीस और सात की संख्या ।

सत्ताधारी—वि. [सं.] जिसके हाथ में शक्ति, सामर्थ्य या अधिकार हो, अधिकारी ।

सत्तानबे—संज्ञा पुं. [सं. सप्तनवति, प्रा. सत्तनवइ] नब्बे और सात की संख्या ।

सत्तावन—संज्ञा पुं. [सं. सप्तपंचाशत प्रा. सत्तावन्ना] पचास और सात की संख्या ।

सत्ताशास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] वह दर्शन जिसमें पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो ।

सत्तासी—वि. [सं. सप्ताशीति, प्रा. सत्तासी] अस्सी और सात की संख्या ।

सत्तू—संज्ञा पुं. [सं. सक्तुक्त, प्रा. सत्तुअ] भुने हुए जौ, चने, लावा आदि का चूर्ण ।

मुहा.—सत्तू बाँधकर पीछे पड़ना — (१) पूरी तैयारी के साथ किसी काम को करने में लगना । (२) सब काम-धंधा छोड़ कर किसी के विरुद्ध प्रयत्न करना ।

सत्पथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) उत्तम मार्ग । (२) उत्तम आचार-व्यवहार, सदाचार । (३) श्रेष्ठ सिद्धांत ।

सत्पात्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति । (२) (कन्या के योग्य) उत्तम वर । (३) दान आदि ग्रहण करने के योग्य उत्तम, सदाचारी और धर्मनिष्ठ व्यक्ति ।

सत्पुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] सदाचारी और सज्जन व्यक्ति ।

सत्यंकार—संज्ञा पुं [सं.] (१) वादा पूरा करना । (२) वादा निश्चित करने के लिए अग्रिम दिया जानेवाला धन, अग्रिम ।

सत्य—वि. [सं.] (१) जिसके ठीक या यथार्थ होने में किसी प्रकार का संदेह न हो । उ.—ज्यों कोउ दुख-सुख सपनैं जोइ, सत्य मानिलै ताकौं सोइ—३-१३ । (२) जैसा हो या होना चाहिए वैसा । (३) असल, यथार्थ, वास्तविक । उ.—कौन सत्य कछु मर्म न पावत—१० उ.-५ ।

संज्ञा पुं. (१) ठीक बात, यथार्थ या वास्तविक तत्व । (२) उचित या धर्म की बात । उ.—सत्य-सील सपन्न सुमूरति सुर-नर-मुनि भक्तनि भावै—१-६९ । (३) पारमार्थिक सत्ता जो सदा ज्यों की त्यों रहे । (४) ऊपर के सात लोकों में सबसे ऊपरी । (५) चार युगों में प्रथम जिसमें पुण्य और सदाचार की अधिकता रहना माना जाता है । (६) प्रतिज्ञा, शपथ ।

सत्यकाम—वि. [सं.] उत्तम, सत्य और सद् बातों की कामना रखनेवाला या प्रेमी ।

सत्यत:—अव्य. [सं.] वास्तव में, यथार्थत: ।

सत्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सत्य या यथार्थ होने का भाव । (२) नित्यता ।

सत्यधन—वि. [सं.] जिसे सत्य सर्वप्रिय हो ।

सत्यनारायण—संज्ञा पुं. [सं.] विष्णु का एक नाम या रूप जिसकी कथा प्राय: पूर्णिमा को कही-सुनी जाती है ।

सत्यपुरुष—संज्ञा. पुं. [सं.] ईश्वर, परमात्मा ।

सत्यप्रतिज्ञ—वि. [सं.] वचन का सच्चा ।

सत्यव्रत—वि. [सं. सत्यव्रत] जिसने सदा सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या निश्चय किया हो ।

संज्ञा पुं. एक राजा जिसने 'प्रलय' देखने की कामना या अभिलाषा की थी । उ.—सत्यव्रत कह्यौ, परलै दिखायौ—८-१६ ।

सत्ययुग—संज्ञा पुं. [सं.] चार युगों में पहला जिसे 'कृतयुग' भी कहते हैं और जो पुण्य, धर्म तथा सदाचार के कारण अन्य तीनों युगों से श्रेष्ठ समझा जाता है ।

सत्ययुगी—वि. [सं. सत्ययुग] (१) सत्ययुग-संबंधी । (२) बहुत प्राचीन । (३) सज्जन, धर्मात्मा ।

सत्यलोक—संज्ञा पुं. [सं.] ऊपर के सात लोकों में सबसे ऊपरी जहाँ ब्रह्मा का निवास कहा गया है । उ.—सत्यलोक जनलोक, तप लोक और महर निज लोक—सारा. २२ ।

सत्यवती—वि. स्त्री. [सं.] (१) सच बोलनवाली । (२)

सत्य-धर्म का पालन करनेवाली।

संज्ञा स्त्री. (१) 'मत्स्यगंधा' नामक धीवर-कन्या जिसके गर्भ से कुमारी अवस्था में ही पराशर ऋषि के संयोग से कृष्णद्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी। उ.—सत्यवती मच्छोदरि नारी।''' '''। तहाँ परासर रिषि चलि आए। बिबस होइ तिहिं कैं मद छाए। रिषि कह्यौ ताहि, दान-रति देहि।''''''''। सत्यवती सराप-भय मानि, रिषि कौ बचन कियौ परमान।''''''''। व्यासदेव ताके सुत भए—१-२२९।

सत्यवादी—वि. [सं. सत्यवादिन्] (१) सच बोलनेवाला। (२) वचन या धर्म पर दृढ़ रहनेवाला।

सत्यवान, सत्यवान्—वि. [सं. सत्यवत्] (१) सच बोलने वाला। (२) प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला।

संज्ञा पुं. शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जो अल्पायु था; परन्तु जिसकी पत्नी ने अपने पातिव्रत्य के बल से जिसे मृत्योपरांत पुनः जिला लिया था।

सत्यव्रत—वि. [सं.] सत्य बोलने का निश्चयी।

संज्ञा पुं. (१) सत्य बोलने का प्रण, नियम या निश्चय। (२) एक सूर्यवंशी राजा जिसके तप से प्रसन्न होकर परब्रह्म ने उसे दर्शन दिया था। उ.—सत्यव्रत राजा रविवंसी पहिलैं भए मनु बंस। कीनौ तप बहु भाँति परम रुचि प्रगट भए हरि-अंस—सारा.९१।

सत्यसंध—वि. [सं.] सत्यप्रतिज्ञ।

संज्ञा पुं. श्रीरामचंद्र का एक नाम।

सत्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सच्चाई, सत्यता। (२) व्यास की माता सरस्वती। (३) सीता का एक नाम।

सत्याग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] किसी न्यायपूर्ण बात के लिए शांतिपूर्वक आग्रह करना।

सत्याग्रही—वि. [सं.] किसी न्यायपूर्ण बात के लिए शांतिपूर्वक आग्रह करनेवाला।

सत्यानाश, सत्यानास—संज्ञा पुं. [सं. सत्ता + नाश] मटियामेट, ध्वंस, सर्वनाश।

सत्यानाशी, सत्यानासी—वि. [हिं. सत्यानाश] सर्वनाश करनेवाला।

सत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) यज्ञ। (२) घर, गृह। (३) वह स्थान जहाँ दीनों को भोजन दिया जाता हो, छेत्र, सदावर्त। (४) वह काल या समय जिसमें एक कार्य निरंतर समान गति से चलता रहे।

सत्रह—वि. [हिं. सत्तारह] दस और सात की संख्या का।

उ.—सत्रह सौ भोजन तहँ आए—३९६।

सत्राइ, सत्राई—संज्ञा स्त्री. [सं. शत्रुता] दुश्मनी, शत्रुता। उ.—(क) कोउ कहै सत्रु होइ दुखदाई। सो तौ मैं न कीन्ह सत्राई—१-२९०। (ख) मम सत्राई हिरदैं आन, करिहै वह तेरौ अपमान।''''''। सिव कह्यौ मेरैं नहिं सत्राई—४-५। (ग) उनकैं मन नाहीं सत्राई—९-५।

सत्राजित—संज्ञा पुं. [सं.] एक यादव जिसने सूर्य की तपस्या करके स्यमंतक मणि प्राप्त की थी और उसके खो जाने पर श्रीकृष्ण को चोरी लगाई थी। जब श्रीकृष्ण ने जांबवान से युद्ध करके उसकी मणि ला दी तब उसने अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह श्रीकृष्ण के साथ कर दिया था।

सत्रु—संज्ञा पुं. [सं. शत्रु] दुश्मन, शत्रु। उ.—(क) सुर-अरु असुर कस्यप के पुत्र। भ्रात बिमात आपु मैं सत्रु—३-९। (ख) सैल-सिला-द्रुम बरषि ब्योम चढ़ि सत्रु-समूह सँहारौं—९-१०८। (ग) छठएँ सुक्र तुला के सनि जुत सत्रु रहन नहिं पैहैं—१०-८६।

सत्रुघन—संज्ञा पुं. [सं शत्रुघ्न] श्रीराम के सबसे छोटे भाई। उ.—नाहीं भरत-सत्रुघन सुंदर जिनसौं चित्त लगायौ—९-१४६।

सत्रुता—संज्ञा स्त्री. [सं. शत्रुता] दुश्मनी, शत्रुता। उ.—पृथु कह्यौ, नाथ, मेरैं न कछु सत्रुता अरु न कछु कामना, भक्ति दीजै—४-११।

सत्रुहन—संज्ञा पुं. [सं. शत्रुघ्न] श्रीराम के सबसे छोटे भाई। उ.—लछिमन भरत सत्रुहन सुन्दर राजिव-लोचन राम—९-२०।

सत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) होने का भाव, अस्तित्व। (२) सार, तत्व। (३) आत्मतत्व, चैतन्य। (४) प्राण, जीवनी शक्ति। (५) प्रकृति के तीन गुणों में एक जिसके फलस्वरूप अच्छे कर्मों की ओर ही प्रवृत्ति रहती है। (६) जीवधारी, प्राणी। (७) शक्ति, सामर्थ्य।

सत्वगुण—संज्ञा पुं. [सं.] वह गुण या प्रकृति जो अच्छे

कर्मों की ओर ही प्रवृत्त करे।

सत्वगुणी—वि. [सं.] जो अच्छे कर्मों की ओर ही प्रवृत्त रहे, उत्तम प्रकृतिवाला।

सत्वर—क्रि. वि. [सं.] शीघ्र, तुरंत। उ.—सत्वर सूर सहाय करै को रही छिनक की बात—३१६५।

सत्संग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साधु-सज्जनों के साथ उठना-बैठना, भली संगत। (२) वह समाज जिसमें धर्मोपदेश आदि होते हों।

सत्संगति—संज्ञा स्त्री. [सं. सत्संग] अच्छी संगत।

सत्संगी—वि. [हिं. सत्संग] (१) अच्छी संगत में रहनेवाला। (२) धर्म-कर्म के आयोजक समाजों में भाग लेनेवाला।

सत्समागम—संज्ञा. पुं. [सं.] भलों का साथ।

सथर—संज्ञा स्त्री. [सं. स्थल] भूमि, पृथ्वी।

सथिया—संज्ञा पुं. [सं. स्वस्तिक, प्रा. सत्थिअ] स्वस्तिक चिह्न (卐) जो मंगल-सूचक और सिद्धिदायक माना जाने के कारण विशेष अवसरों पर कलश, दीवार आदि पर बनाया जाता है। उ.—(क) द्वार सथिया देति स्यामा सात सींक बनाइ—१०-२६। (ख) कौरनि सथिया चीतति नवनिधि—१०-३२। (२) देवताओं आदि के पद-तल का चिह्न-विशेष। (३) भारतीय ढंग का अस्त्र-चिकित्सक।

सद—अव्य. [सं. सद्य] तुरन्त, तत्काल। उ. करहु कृपा अपने जन पर सद—१८२।

वि. (१) ताजा। उ.—(क) सद दधि-माखन द्यौं आनी—१०-१८३। (ख) माखन-रोटी सद दही जेंवत रुचि उपजाय—४३१। (२) हाल का, नया, नवीन।

वि. [सं. सद्] अच्छा, बढ़िया, उत्तम।

संज्ञा स्त्री. [सं. सत्व] आदत, टेव, प्रकृति।

संज्ञा पुं. [सं. सदस्] (१) मंडली, सभा, समिति। (२) छोटा मंडप।

सदई—अव्य. [हिं. सदा] सदैव, सर्वदा।

सदका—संज्ञा पुं. [अ. सदक:] (१) खैरात, दान। (२) वह वस्तु जो किसी के सिर पर से उतार कर रास्ते या चौराहे पर रखी जाय, उतारा, उतारन। (३) वह वस्तु जो किसी की कल्याण या मंगल-कामना से, उसके सर पर से उतारकर किसी को दी जाय, निछावर। उ.—सूरदास प्रभु अपने सदका घरहिं जान हम दीजै—१०५३।

सदके—वि. [हिं. सदका] निछावर किया हुआ।

मुहा.—सदके जाऊँ बलि जाऊँ, निछावर होऊँ।

सदगति—संज्ञा स्त्री. [सं. सद्‌गति] मरने के बाद उत्तम लोक में जाना। उ.—आज्ञा होइ करौं अब सोइ। जातैं मेरी सदगति होइ—१-३४१।

वि. [सं. सद्+गति] सदा चलता रहनेवाला।

संज्ञा पुं. (१) हवा, वायु। (२) सूर्य।

सदचारी—वि. [हिं. सदाचारी] उत्तम आचरणवाला।

वि. ठीक और सत्य।

सदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) घर, मकान। उ.—(क) बरनौं कहा सदन की सोभा बैकुंठहुँ तैं राजै री—१०-१३९। (ख) गह्यौ स्याम-कर कर अपने सों लिए सदन को आई—२५८७। (२) आलय, स्थान। उ.—सुनि स्रवन दसबदन, सदन-अभिमान, कै नैन की सैन अंगद बुलायौ—९-१२९। (३) वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार करने या नियम, विधान आदि बनाने के लिए सदस्यों या प्रतिनिधियों की बैठक हो। (४) ऐसी बैठक में भाग लेनेवालों का समूह। (५) एक कसाई का नाम जो प्रसिद्ध हरि-भक्त था।

वि. [सं. सद्यस्] (१) ताजा। (२) नया।

सदना—संज्ञा पुं. [देश.] एक कसाई का नाम जो प्रसिद्ध हरि-भक्त था।

क्रि. अ. [सं. सदन=थिराना] छेद से रस-रसकर चूना या टपकना।

सदमा—संज्ञा पुं. [अ. सद्‌म:] मानसिक आघात।

सदय वि. [सं.] दयालु, दयायुक्त।

सदर—वि. [अ. सद्र] खास, प्रधान, मुख्य।

संज्ञा पुं. (१) केंद्रस्थल। (२) सभापति।

सदर्थना, सदर्थनो—क्रि. स. [सं. समर्थन] समर्थन करना।

सदसद्विवेक—संज्ञा पुं. [सं.] भले-बुरे का ज्ञान।

सदसि—संज्ञा स्त्री. [सं. सदस्य] सदस्य या सभ्यों के बैठन का स्थान, सभा, समाज।

सदस्य—संज्ञा पुं. [सं.] मेंबर, सभासद।

सदस्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सदस्य का भाव या पद।**

सदा—अव्य. [सं.] (१) **हमेशा, नित्य, सदैव।** उ.—(क) सुमिरन कथा सदा सुखदायक—१-८३। (ख) यह संसार बिषय-बिष-सागर रहत सदा सब घेरे—१-८५। (२) **निरंतर।**

संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **गूँज।** (२) **आवाज, ध्वनि।** (३) **पुकार।**

सदाई—अव्य. [हिं. सदा] **नित्य ही सदैव।** उ.—(क) बिलसत मदन सदाई—६२६। (ख) प्रभु-पतिव्रत तुम करौ सदाई—८९६।

सदाकत—संज्ञा स्त्री. [अ. सदाक़त] **सच्चाई।**

सदाचरण—संज्ञा पुं. [सं.] **अच्छा चाल-चलन।**

सदाचार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अच्छा आचरण।** (२) **शिष्ट या सज्जनोचित व्यवहार।**

सदाचारिता—संज्ञा स्त्री. [हिं. सदाचारी] **'सदाचारी' होने का भाव, शिष्टता।**

सदाचारी—वि. [हिं. सदाचार] **उत्तम आचरणवाला।**

सदाफर, सदाफल—वि. [सं. सदाफल] **जो (वृक्ष) सदा फूलता-फलता हो।**

संज्ञा पुं. (१) **एक तरह का नीबू।** (२) **गूलर।** (३) **नारियल।** (४) **बेल।**

सदाबरत—संज्ञा पुं. [सं. सदावर्त] **वह स्थान जहाँ दीन-अनाथों को नित्य भोजन बटता हो।**

सदाबहार—वि. [हिं. सदा + फ़ा. बहार] **सदा हरा-भरा रहनेवाला (वृक्ष)।**

सदारत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **सभापतित्व।**

सदावर्त—संज्ञा पुं. [सं. सदाव्रत] (१) **वह स्थान जहाँ दीन-हीनों को नित्य भोजन बटता हो।** (२) **वह दान जो नित्य दिया जाय।**

सदाशय—वि. [सं.] **जिसके भाव उच्च और उदार हों, सज्जन, शिष्ट, उदार।**

सदाशयता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'सदाशय' होने का भाव, सज्जनता, उदारता।**

सदाशिव, सदासिव—संज्ञा पुं. [सं. सदाशिव] **शिव, महादेव।** उ.—पाइ सुधि मोहिनी की, सदासिव चले जाइ भगवान सों कहि सुनाई—८-१०।

वि. **सदा कल्याण करनेवाला।**

सदासुहागिन, सदासुहागिनि, सदासुहागिनी—वि. स्त्री. [हिं. सदा + सुहागिनि] **जो (स्त्री) कभी पतिहीन या विधवा न हो।**

संज्ञा पुं. **वेश्या (परिहास)।**

सदी—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **शताब्दी।** (२) **सैंकड़ा।**

सदुपदेश, सदुपदेस—संज्ञा पुं. [सं. सदुपदेश] (१) **उत्तम शिक्षा।** (२) **अच्छी सलाह।**

सदुपयोग—संज्ञा पुं. [सं. सद् + उपयोग] **अच्छी तरह या अच्छे काम में उपयोग करना।**

सदूर—संज्ञा पुं. [सं. शार्दूल] **शेर, सिंह।**

सदृश, सदृस—वि. [सं. सदृश] (१) **समान रूप-रंग का, अनुरूप।** उ.—तड़ित बसन घनस्याम सदृस तन—१-६९। (२) **बराबर, तुल्य।**

सदृशता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अनुरूपता** (२) **तुल्यता।**

सदेह, सदेहियाँ—क्रि. वि. [सं. सदेह] (१) **बिना शरीर का त्याग किये, सशरीर।** (२) **(मानव) देह या शरीर धारण करके, प्रत्यक्ष या मूर्तिमान होकर।** उ.—मानौं चारि हंस सरवर तैं बैठे आइ सदेहियाँ—१-१९।

सदैव—अव्य. [सं.] **हमेशा, सर्वदा।**

सदोष—वि. [सं.] (१) **जिसमें दोष हो।** (२) **जिसने अपराध किया हो, दोषी।**

सद्गति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **उत्तम अवस्था।** (२) **मरने के बाद अच्छे लोक की प्राप्ति।**

सद्गुण—संज्ञा पुं. [सं.] **उत्तम गुण।**

सद्गुणी—वि. [हिं. सद्गुण] **अच्छे गुणवाला।**

सद्गुरु—संज्ञा पुं. [सं.] **उत्तम शिक्षक या आचार्य।** (२) **वह धर्मोपदेशक या मंत्रदाता जो शिष्य को भव-बंधन से मुक्त कराने में समर्थ हो।** (३) **परमात्मा।**

सद्ग्रंथ—संज्ञा पुं. [सं. सत् + ग्रंथ] (१) **उत्तम शिक्षा से युक्त ग्रंथ।** (२) **वह धर्म-ग्रंथ जिसके मनन और आचरण से भव-बंधन से मुक्त होने की प्रेरणा और सिद्धि मिले।**

सद्द—संज्ञा पुं. [सं. शब्द, प्रा. सद्द] **शब्द, ध्वनि।**

अव्य. [सं. सद्य] **तुरंत, तत्काल।**

वि. (१) **तुरंत का बना, ताजा।** (२) **हाल का,**

नया, नवीन ।

सद्धर्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) श्रेष्ठ या उत्तम धर्म । (२) (भगवान बुद्ध का) बौद्ध धर्म ।

सद्भाव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रेम, हित और शुभचिंतना का भाव । (२) (किसी कार्य के करने में) सच्चा और निष्कपट भाव । (३) मेलजोल, मैत्री ।

सद्भावना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) शुभ या उत्तम भाव । (२) प्रेम, हित या मंगल का भाव ।

सद्म—संज्ञा पुं. [सं. सद्मन्] (१) घर, गृह (२) युद्ध ।

सद्य, सद्यः—अव्य. [सं. सद्य] (१) आज ही । (२) अभी, इसी समय । (३) तुरंत, शीघ्र ।

वि. अभी का, ताजा । उ.—माखन रोटी सद्य जम्यौ दधि—१०-२१२ ।

सद्रूप—वि. [सं.] (१) अच्छे रूपवाला, सुंदर । (२) उत्तम आचरणवाला । उ.—साधु-सील सद्रूप पुरुष को अपजस बहु उच्चरतौ—१-२०३ ।

सद्रूपता—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) 'सद्रूप' होने का भाव, सुंदरता । (२) सदाचार ।

सद्वृत्त—वि. [सं.] सदाचारी ।

सद्वृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] सदाचार ।

सद्व्रत—संज्ञा पुं. [सं.] उत्तम व्रत या निश्चय ।

वि. (१) जिसने उत्तम व्रत या निश्चय किया हो । (२) सदाचारी ।

सद्व्रती—वि. [सं.] (१) उत्तम व्रत या निश्चय करनेवाला । (२) सदाचारी ।

सधना—क्रि. अ. [हिं. साधना] (१) काम पूरा होना । (२) मतलब निकलना । (३) अभ्यस्त होना । (४) गौं पर चढ़ना, प्रयोजन-सिद्धि के उपयुक्त या अनुकूल होना । (५) निशाना या लक्ष्य ठीक होना । (६) हो सकना ।

सधर—संज्ञा पुं. [सं.] ऊपर का होंठ ।

सधर्मी—वि. [सं. सधर्मिन्] (१) समान गुण या विशेषतावाला । (२) तुल्य ।

सधवा—वि. [हिं. विधवा का अनु.] जिसका पति जीवित हो, सुहाग या सौभाग्यवती (स्त्री) ।

सधाना—क्रि. स. [हिं, साधना] (१) साधने का कार्य दूसरे से कराना । (२) सिद्ध या संपन्न करना । (३) पशु-पक्षियों को कार्य-विशेष के लिए शिक्षित करना या सिखलाना ।

सधुक्कड़ी—वि. [हिं. साधु + उक्कड़ (प्रत्य.)] साधुओं की, साधुओं जैसी ।

संज्ञा स्त्री. 'साधु' होने का भाव, साधुता ।

सधायो, सधायौ—क्रि. स. [हिं. सधाना] साधने को प्रवृत किया । उ.—राधा, मौनव्रत किन सधायो—१२६८ ।

सधावन—संज्ञा पुं. [हिं. सधाना] सधाने या साधने की क्रिया या भाव । उ.—पवन सधावन भवन छोड़ावन नवल रसाल गोपाल पठायो—२९९९ ।

सधूम—क्रि. वि. [सं.] धुएँ, कोहरे या भाप सहित ।

सधे—वि. [हिं. सधना] खूब सिखा-सिखाया, अच्छी तरह सधा हुआ । उ.—कबहुँक सधे अस्व चढ़ि आपुन नाना भाँति नचावत—सारा. १९० ।

सध्यो, सध्यौ—क्रि. स. [हिं. सधना] (कार्य) पूरा या संपादित हुआ । उ.—सध्यौ नहिं धर्म सुचि सील तप व्रत कछू कहा मुख लै तुम्हैं बिनै करिए—१-११० ।

सनक—संज्ञा पुं. [अनु. सनसन] सन्नाटा, नीरवता ।

सनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] ब्रह्मा के चार मानसपुत्रों में एक जो कपिल मुनि के पूर्व सांख्य मत के प्रवर्तक थे । उ.—ब्रह्मा ब्रह्मरूप उर धारि । मन सौं प्रगट किए सुत चारि । सनक सनंदन सनतकुमार । बहुरि सनातन नामं ये चार - ३-६ ।

सन—संज्ञा पुं. [सं. शण] एक पौधा जिसके रेशों से रस्सी और टाट बनते हैं । उ.—सन और सूत चीर-पाटंबर लै लंगूर बँधाए—९-९८ ।

प्रत्य. [सं. संग] साथ ।

अव्य. [प्रा. संतो] 'से' विभक्ति का पुराना रूप । उ.—(क) बरबस सरम करत हठ हम सन—१६८७ । (ख) जो कछु भयो तो कहिहौं तुम सन—२७९२ । (ग) यह रजायसु होत मो सन कहत बदरी जान—१० उ.–१०४ ।

संज्ञा स्त्री, [अनु.] वेग से चलने या निकलने का शब्द ।

वि. [हिं. सन्न] (१) स्तब्ध । (२) मौन ।

मुहा.—जी सन होना—**घबरा जाना।**

सनई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सन] **'सन' की जाति का एक पौधा।**

सनक—संज्ञा स्त्री. [सं. शंक = खटका] **पागलों की सी धुन, झक या प्रवृत्ति।**

मुहा.—सनक चढ़ना (सवार होना)—**पागल-जैसी धुन या झक होना या चढ़ना।**

संज्ञा पुं. [सं.] **ब्रह्मा के चार मानसपुत्रों में एक।** उ.—ब्रह्मा ब्रह्मरूप चित धारि। मन सौं प्रगट किए सुत चारि। सनक सनंदन सनतकुमार। बहुरि सनातन नाम ये चार—३-६।

सनकना, सनकनौ—क्रि. अ. [हिं. सनक] **(१) पागल होना। (२) पागलों की सनक-जैसा आचरण करना।**

क्रि. अ. [सं. शंक] **शंकित होना, आभास या संकेत पाकर चौकन्ना होना।**

क्रि. अ. [अनु. सनसन] **वेग से किसी ओर जाना या फेंका जाना।**

सनकाना, सनकानौ—क्रि. स. [हिं. सनकना] **(१) किसी को सनकने को प्रवृत्त करना। (२) किसी को आभास या संकेत करके सचेत या चौकन्ना करना।**

सनकारना, सनकारनौ—क्रि. स. [हिं. सैन + करना] **(१) इशारा या संकेत करना। (२) सचेत या सावधान करना। (३) इशारे या संकेत से बुलाना। (४) किसी काम के लिए इशारा करना।**

सनकियाना—क्रि. अ. [हिं. सनकाना] **पागल या झक्की हो जाना, पगलाना।**

क्रि. स. [हिं. सनकना] **किसी को सनकने में प्रवृत्त करना, किसी को पागल कर देना या बनाना।**

क्रि. स. [हिं. सैन] **इशारा या संकेत करना।**

सनकर्षन—संज्ञा पुं. [सं. संकर्षण] **श्रीकृष्ण के भाई बलराम का एक नाम।** उ.—जननी मधि सनमुख संकर्षन खैंचत कान्ह खस्यौ सिर-चीर—१०-१६१।

सनत, सनत्—संज्ञा पुं. [सं. सनत्] **ब्रह्मा।**

सनतकुमार, सनत्कुमार—संज्ञा पुं. [सं. सनत्कुमार] **ब्रह्मा के चार मानसपुत्रों में एक।** उ.—ब्रह्मा ब्रह्मरूप चित धारि। मन सौं प्रगट किए सुत चारि। सनक सनंदन सनतकुमार। बहुरि सनातन नाम ये चार—३-६।

सनतसुजात, सनत्सुजात—संज्ञा पुं. [सं. सनत्सुजात] **ब्रह्मा के सात मानसपुत्रों में एक।**

सनद—संज्ञा स्त्री. [अ.] **(१) प्रमाण। (२) प्रमाणपत्र।**

सनना, सननौ—क्रि. अ. [हिं. सानना] **(१) लेई जैसा गीला होकर मिलना। (२) लेई-जैसी गीली वस्तु लगना, उससे मिलना या ओतप्रोत होना। (३) लीन या लिप्त होना।**

सनबंध—संज्ञा पुं. [सं. संबंध] **(१) रिश्ता। (२) लगाव।**

सनम—संज्ञा पुं. [अ.] **प्रियतम।**

सनमान—संज्ञा पुं. [सं. सम्मान] **आदर-सत्कार।** उ.—पुनि सनमान रिषिन सब कीन्हौ—१-३४१।

सनमानना, सनमाननौ—क्रि. स. [सं. सम्मान] **आदर-सत्कार करना।**

सनमुख—अव्य. [सं. सम्मुख] **आगे, सामने, समक्ष।** उ.—(क) धरि न सकत पग पछमनौ सर सनमुख उर लाग—१-३२५। (ख) सनमुख होइ सूर के स्वामी भक्तनि कृपा-निधान—९-१३४।

सनसनाना, सनसनानौ—क्रि. अ. [अनु. सनसन] **'सनसन' शब्द करते हुए बहना या चलना।**

सनसनाहट—संज्ञा पुं. [अनु. सनसन] **(१) सनसन करते हुए चलने या बहने का शब्द, उसकी क्रिया या भाव। (२) सनसनी।**

सनसनी—संज्ञा स्त्री. [अनु. सनसन] **(१) शरीर के संवेदन सूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन जिसमें कोई अंग कुछ देर को जड़-सा होकर 'सनसन' करता जान पड़ता है, झनझनाहट, झुनझुनी। (२) अत्यंत भय या आश्चर्यपूर्ण स्तब्धता, उत्तेजना या क्षोभ। (३) सन्नाटा, नीरवता।**

सना—प्रत्य. [सं. संग] **करणकारकीय चिह्न, से, साथ।**

सनाढ्य—संज्ञा पुं. [सं. सन = दक्षिणा + आढ्य] **ब्राह्मणों का एक वर्ग।**

सनातन—संज्ञा पुं. [सं.] **(१) अत्यंत प्राचीन काल। (२) बहुत प्राचीन समय से चला आता हुआ व्यवहार, क्रम या परंपरा। (३) ब्रह्मा के चार मानसपुत्रों में एक।** उ.—ब्रह्मा ब्रह्म रूप उर धारि। मन सौं प्रगट किए

सुत चारि। सनक सनंदन सनत कुमार। बहुरि सनातन नाम ये चार—३-६।

वि. (१) **अत्यंत प्राचीन, अनादि काल का**। (२) **बहुत समय से चला आनेवाला, परंपरागत**। (३) **सदा रहनेवाला, नित्य, शाश्वत**। उ.—(क) आदि सनातन हरि अविनासी। सदा निरंतर घट-घट बासी—१०-३। (ख) सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोउ लीन्हौ री—१०-९८।

सनातन धर्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्राचीन धर्म**। (२) **परंपरागत धर्म**। (३) **वर्तमान हिंदू धर्म जो परंपरागत है और जिसमें पुराण, बहुदेवोपासना, मूर्तिपूजन, तीर्थ-व्रत आदि माननीय हैं**।

सनातन पुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु भगवान**।

सनातनी—संज्ञा पुं. [सं. सनातन] (१) **प्राचीन या परंपरागत धर्म में विश्वास रखनेवाला**। (२) **वर्तमान हिंदू धर्म का अनुयायी**।

वि. (१) **अत्यंत प्राचीन**। (२) परम्परागत।

सनाथ—वि. [सं.] (१) **जिसका कोई रक्षक या स्वामी हो**। उ.—सूरदास प्रभु कंस-निकंदन देवकि करनि सनाथ—२५३४। (२) **अभीष्ट-प्राप्ति से जिसका अस्तित्व सार्थक या सफल हो गया हो**। उ.—भए सखि नैन सनाथ हमारे—२५६९।

सनाथा—वि. स्त्री. [सं. सनाथ] **जिसका कोई रक्षक या स्वामी हो**। उ.—निदरि मारयो असुर पूतना आदि ते धरनि पावन करी भई सनाथा—२६१८।

सनान—संज्ञा पुं. [सं. स्नान] **नहाना, स्नान**। उ.—तीरथ कोटि सनान करैं फल जैसौ दरसन पावत—२-१७।

सनाल—संज्ञा पुं. [हिं. स+नाल] **नाल-सहित**। उ.—मनु जुग जलज सुमेर सृंग तें जाइ मिले सम ससिहिं सनाल—३४५३।

सनाह—संज्ञा पुं. [सं. सन्नाह] **बख्तर, कवच**। उ.—(क) बहुत सनाह समर सर बेधे—१-२७८। (ख) मारै मार करत भट दादुर पहिरे बहु बरन सनाह—२८२६।

सनि—संज्ञा पुं. [सं. शनि.] **सौर जगत का सातवाँ ग्रह जो फलित ज्योतिष में अशुभ और कष्टदायक माना जाता है; परन्तु कुछ ग्रहों से मिलकर अत्यंत सुख और लाभदायक भी हो जाता है**। उ.—(क) छठएँ सुक्र तुला के सनि जुत सत्रु रहन नहिं पैहैं—१०-८६। (ख) मानौं गुरु सनि कुज आगैं करि ससिहिं मिलन तम के गन आए—१०-१०४।

अव्य. [हिं. सन] **'से' विभक्ति का एक प्राचीन विकृत रूप**।

सनित—वि. [हिं. सनना] **सना या मिला हुआ, मिश्रित**।

सनीचर—संज्ञा पुं [सं. शनैश्चर] **सौर जगत का सातवाँ ग्रह जो फलित ज्योतिष में प्रायः कष्टदायक, परंतु विशेष स्थिति में सुखदायक भी माना जाता है**। उ.—कर्म-भवन के ईस सनीचर स्याम बरन तन ह्वैहैं—१०-८६।

सनीचरी—संज्ञा पुं [हिं. सनीचर] **शनि की दशा जिसमें दुख, व्याधि आदि की अधिकता रहती है**।

मुहा. मीन की सनीचरी **मीन राशि पर शनि की स्थिति की वह दशा जिसके फलस्वरूप राजा, प्रजा, सबका सर्वनाश होना माना जाता है**।

सनेस, सनेसा—संज्ञा पुं. [सं. संदेश] **संदेश**।

सनेह—संज्ञा पुं. [सं. स्नेह] (१) **वात्सल्य, स्नेह**। उ.—ता दिन सूर सहर सब चकित सबर सनेह तज्यौ पितु-मात—९-३८। (२) **प्रेम, प्रणय**। उ.—(क) सुनि सनेह कुरंग कौ स्रवननि राच्यौ राग—१-३२५। (३) **श्रद्धा, भक्ति**। उ.—करि हरि सौं सनेह मन साँचौ—१-८३। (४) **प्रेम या आत्मीयता के संबंध**। उ.—(क) बिछुरत हंस बिरह के सूलनि, झूठे सबै सनेह—८०१। (ख) बिछुरति सहति बिरह के सूलनि, झूठे सबै सनेह—८९७।

सनेहिया—संज्ञा पुं [सं. स्नेही] (१) **मित्र** (२) **प्रियतम**।

सनेही—वि. [सं. स्नेह] **स्नेह या प्रेम करनेवाला**। उ.—सूधी प्रीति न जसुदा जानै स्याम सनेही ग्वैयाँ—३७१।

संज्ञा पुं. (१) **मित्र**। (२) **प्रियतम**।

सनेहौ—संज्ञा पुं. [सं. स्नेह] **प्रेम और आत्मीयता का संबंध भी**। उ.—सबनि सनेहौ छाँड़ियौ—१-२९८।

सनै सनै—अव्य. [सं. शनैः शनैः] **धीरे-धीरे**। उ.—

मेरी भक्ति चतुर्विधि करै । सनै सनै त सब निस्तरै ।
·······सनै सनै बिधिलोकहिं जाइ—३-१३ ।

सनौ—अव्य. [सं. संग] **मिला हुआ, युक्त ।**

सन्—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **वर्ष** । (२) **संवत** ।

सन्न—वि. [हिं. सुन्न या अनु.] (१) **संज्ञा-शून्य, जड़, निश्चेष्ट** । (२) **भौचक्क, स्तब्ध** (३) **भय से मौन** ।

मुहा.—सन्न मारना **एकबारगी चुप हो जाना** ।

सन्नद्—वि. [सं.] (१) **बँधा, कसा या जकड़ा हुआ** । (२) **कवच आदि धारण करके तैयार** । (३) **उद्यत, प्रस्तुत** । (४) **काम में जुटा हुआ** ।

सन्नाटा—संज्ञा पुं. [हिं. सुन्न+आटा (प्रत्य.)] (१) **किसी प्रकार का शब्द न होने की अवस्था, नीरवता** । (२) **निर्जनता** । (३) **अत्यंत भय या आश्चर्य से निश्चेष्टता या स्तब्धता** ।

मुहा.—सन्नाटा छाना (सन्नाटे में आना)—**(सबका) स्तब्ध रह जाना** ।

(४) **खामोशी, चुप्पी, मौन** ।

मुहा.—सन्नाटा खींचना (मारना)—**उपस्थित जनों का बिलकुल चुप हो जाना** । सन्नाटा छाना—**(सबका) शांत या मौन हो जाना** ।

(५) **किसी तरह की चहल-पहल न होना, उदासी** ।

मुहा.—सन्नाटा बीतना—**उदासी में समय कटना** ।

वि. (१) **जहाँ किसी प्रकार का शब्द न हो, नीरव** । (२) **जहाँ कोई न हो, निर्जन** ।

संज्ञा पुं. [अनु. सनसन] (१) **जोर से हवा के चलने का शब्द** । (२) **तेज चलती हवा को चीर कर गति से बढ़ने का शब्द** ।

मुहा.—सन्नाटे के साथ या से—**बड़ी तेजी से** ।

सन्नाह—संज्ञा पुं. [सं.] **बख्तर, कवच** । उ.—पीत पट डारि कंचुकी मोचित करनि कवच सन्नाह ए छुटत तन ते—१७०० ।

सन्निकट—अव्य [सं.] **पास, समीप, निकट** ।

सन्निकर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **संबंध** । (२) **निकटता** ।

सन्निधान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समीपता, निकटता** । (२) **वह स्थान जहाँ धन एकत्र किया जाय** । (३) **स्थापित करने या रखने की क्रिया या भाव** ।

सन्निधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **समीपता, निकटता** ।

सन्निपात—संज्ञा पुं. [सं.] **एक प्रसिद्ध रोग** ।

सन्निविष्ट—वि. [सं.] (१) **किसी के अन्तर्गत आया, मिलाया या समाया हुआ** । (२) **स्थापित, प्रतिष्ठित** ।

सन्निवेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **साथ बैठने या स्थित होने का भाव** । (२) **जमाकर या सजाकर रखने का भाव** । (३) **अटना या समाना** । (४) **इकट्ठा या एकत्र होना** । (५) **समाज, समूह** । (६) **स्थापना** । (७) **बनावट** ।

सन्निवेशन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मिलाना, सम्मिलित करना** । (२) **जमाकर या सजाकर रखना** । (३) **स्थापित या प्रतिष्ठित करना** । (४) **व्यवस्था** ।

सन्निहित—वि. [सं.] (१) **निकट या समीप की** । (२) **रखा या धरा हुआ** । (३) **टिकाया हुआ** ।

सन्मान—संज्ञा पुं. [सं. सम्मान] **आदर-सत्कार** । उ.—करि सन्मान कह्यौ या भाइ—१-२८४ ।

सन्मानना, सन्माननो—क्रि. स. [हिं. सनमानना] **आदर-सत्कार करना** ।

सन्माने—क्रि. स. [हिं. सनमानना] **आदर-सत्कार किया** । उ.—आये जान नृपति सन्माने कीन्हीं अति मनुहार—सारा. २३१ ।

सन्मुख—अव्य. [सं. सम्मुख] **सामने, समक्ष** । उ.—(क) सहि सन्मुख तउ सीत-उष्न कौं सोई सुफल करै—१११७ । (ख) स्याम त्रिया सन्मुख नहिं जोवत—१९९६ ।

सन्यास—संज्ञा पुं. [सं. संन्यास] (१) **छोड़ना त्याग** । (२) **वैराग्य, विरक्ति** । (३) **चौथा आश्रम** ।

सन्यासी—वि. [सं. संन्यासी] (१) **त्यागी** । (२) **विरक्त** । (३) **जो चतुर्थ आश्रमी हो** ।

सपंक, सपंका—वि. [सं. स+पंक] (१) **कीचड़ से भरा हुआ** । (२) **जिसे पार करना कठिन हो, बीहड़** ।

सपच्छ—वि. [सं.] (१) **जो अपने पक्ष में हो** । (२) **पोषक, समर्थक** ।

संज्ञा पुं. **मित्र, सहायक** ।

वि. [सं. स+पक्ष=पंख] **जिसके पंख हों** ।

सपच्छी—वि. [सं. सपक्ष] (१) **जो अपने पक्ष का हो** । (२) **पोषक, समर्थक** ।

सपच—संज्ञा पुं. [सं. श्वपच] **चांडाल ।**

सपचना, सपचनो—क्रि. अ. [हिं. सपुचना] (१) **पूरा होना ।** (२) **बढ़ना ।** (३) (**आग**) **सुलगना ।**

सपत्न—वि. [सं.] **बैरी, विरोधी, शत्रु ।**

सपत्नी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक पति की दूसरी पत्नी, सौत ।**

सपत्नीक—वि. [सं.] **पत्नी के साथ ।**

सपथ—संज्ञा पुं. [सं. शपथ] **कसम, सौगंध ।** उ.—(क) इती न करौं, सपथ तौ हरि की, छत्रिय गतिहिं न पाऊँ—१-२७० । (ख) सूर सपथ मोहिं इनहिं दिननि मैं लैं जु आइहौं कृपानिधानहिं—९-९५ । (ग) संभु कीं सपथ, सुनि कुकपि कायर कृपन स्वास आकास बनचर उड़ाऊँ—९-१२८ ।

सपदि—क्रि. वि. [हिं. स+पद=पैर] **जल्दी-जल्दी, तुरंत, शीघ्र (चलकर) ।**

सपनंतर—वि. [सं. स्वप्न+अंतर] **स्वप्न में देखी हुई, स्वप्न-काल की ।** उ.—जो मैं कहत रह्यौ भयौ सोई सपनंतर की प्रगट बताई—९३२ ।

सपन, सपना—संज्ञा पुं. [सं. स्वप्न] **निद्रावस्था में मानसिक दृष्टि से दिखायी देनेवाला दृश्य ।** उ.—(क) जग-प्रभुत्व प्रभु देख्यौ जोइ । सपन-तुल्य छनभंगुर होइ—७-२ । (ख) दरसन कियौ आइ हरि जी को कहत सपन की साँची—१० उ.-११२ ।

मुहा.—सपना हो जाना (होना)—**इतना दुर्लभ हो जाना कि देखने को भी न मिले ।** सपना देखना—**किसी अलभ्य पदार्थ को पाने की आशा करना (व्यंग्य) ।**

सपनाना—क्रि. स. [हिं. सपना+आना] **स्वप्न दिखलाना ।**

क्रि. अ. **स्वप्न देखना ।**

सपनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सपना] **सपना देखने की स्थिति या अवस्था ।**

सपनैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. सपना] **सपने में ।** उ—(क) ज्यौं कोउ दुख-सुख सपनैं जोइ । सत्य मानि लै ताकौं सोइ—३-१३ । (ख) सूर स्याम सपनैं नहिं दरसत, मुनिजन ध्यान लगावत—४६८ ।

सपनौ—संज्ञा पुं. [हिं. सपना] **सपना, स्वप्न ।** उ.—जीवन-जन्म अल्प सपनौ सौं समुझि देखि मन माहीं—१-३१९ ।

सपरना, सपरनो—क्रि. अ. [सं. संपादन, प्रा. संपाडन] (१) **काम का पूरा होना या निबटना ।** (२) **काम का हो सकना ।**

मुहा.—सपर जाना—**मर जाना ।**

(३) **तैयार होना, तैयारी करना ।**

सपराना, सपरानो—क्रि. स. [हिं. सपरना] (१) **काम पूरा करना या निबटाना ।** (२) **काम को पूरा कर पाना या कर सकना ।**

सपरिकर—क्रि. वि. [सं.] **अनुचरों और ठाट-बाट के साथ ।**

सपरिच्छद—क्रि. वि. [सं.] **तैयारी या ठाट-बाट-सहित ।**

सपर्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पूजा-उपासना, आराधना ।**

सपाट—वि [सं. स+पट्ट] (१) **बराबर, समतल ।**

मुहा.—पारि सपाट—**तोड़-फोड़कर बराबर करके ।** उ.—बड़ौ माट घर धरयौ जुगनि कौ, टूक-टूक कियौ सबनि पकरि । पारि सपाट चले, तब पाए—१०-३१८ ।

(२) **जिसकी सतह पर उभार या खुरदुरापन न हो, चिकना ।** (३) **जो क्षितिज की ओर दूर तक सीधा चला गया हो ।**

सपाटा—संज्ञा पुं. [सं. सर्पण=सरकना] (१)**चलने, दौड़ने या उड़ने का वेग, झोंका ।** (२) **झपट, झपट्टा ।**

यौ.—सैर-सपाटा—**मन-बहलाव के लिए किसी रमणीक स्थान में घूमना-फिरना ।**

सपाद—वि. [सं.] (१) **चरण-सहित ।** (२) **जिसमें एक पूरे अंश के साथ चौथाई और मिला हो, सवाया ।**

यौ.—सपाद लक्ष—**सवा लाख ।**

सपिंड—वि. [सं.] **जो एक ही कुल के हों और एक ही पितरों को पिंडदान करते हों ।**

सपिंडी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मृतकों के श्राद्ध की एक क्रिया जिसके द्वारा वह अन्य पितरों में मिलाया या सम्मिलित किया जाता है ।**

सपुचना—क्रि. अ. [सं. संपूर्ण] (१) **पूरा होना, पूर्णता तक पहुँचना ।** (२) **बढ़ना ।** (३) **आग सुलगना ।**

सपुलक—वि. [सं.] **पुलक या हर्ष के साथ ।**

सपूत—वि. [सं. सुपुत्र, प्रा. सपुत्त, सउत्त] **योग्य और कर्तव्यनिष्ठ (पुत्र) ।** उ.—(क)लरिका छिरकि मही सौं

देखै, उपज्यौ पूत सपूत महरि कैं—१०३१८ ।(ख) पूत सपूत भयौ कुल मेरैं अब मै जानी बात—१०-३२९ ।

संज्ञा पुं. गुणवान और आज्ञाकारी पुत्र ।

सपूती—संज्ञा स्त्री. [हिं. सपूत] (१) सपूत होने का भाव । (२) योग्य और कर्तव्यनिष्ठ पुत्र उत्पन्न करने वाली माता । उ.—लछिमन जनि हौं भई सपूती राम-काज जौ आवैं—९-१५२ ।

सपूतौ—वि. [हिं. सपूत] योग्य और कर्तव्यनिष्ठ (पुत्र) । उ.—कहा बहुत जो भए सपूतौ एकै बंसा—४३१ ।

संज्ञा. पुं. योग्य और गणवान पुत्र ।

सपेट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सपाटा] झपट ।

सपेत, सपेद—वि. [फा. सफ़ैद, हिं. सफ़ेद] श्वेत, उज्ज्वल ।

सपेती, सपेदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सफेदी] (१) श्वेतता, उज्जवलता । (२) चूने की पुताई । (३) उषःकाल का उज्जवल प्रकाश ।

सप्त—वि. [सं.] सात (गिनती) । उ.—(क) हरिजू की आरती बनी ।………महो सराव, सप्त सागर घृत बाती सैल घनी—२-२८ । (ख) जो कुल माहिं भक्त मम होइ । सप्त पुरुष लौं उधरै सोइ—७-२ ।

सप्तऋषि—संज्ञा पुं. [सं सप्तर्षि] सात ऋषियों का समूह या मंडल । उ.—ध्रुव समान आए री जु सप्तऋषि बहुरि तौ बेर ह्वैहै—२२४६ ।

सप्तक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सात वस्तुओं का समूह । (२) संगीत में सात स्वरों का समूह । उ.—(क) प्रथमनाद बल घेरि निकट लै मुरली सप्तक सुर बंधान सौं—१५३९ । (ख) कबहुँक नृत्य करत कौतूहल सप्तक भेद दिखावत—२३५४ ।

सप्तजिह्व—संज्ञा पुं. [सं.] अग्नि जिसकी सात जिह्वाएँ मानी गयी हैं ।

सप्तद्वीप—संज्ञा पुं. [सं.] पृथ्वी के सात बड़ विभाग जिनके नाम ये हैं—जंबू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर ।

सप्तधातु—संज्ञा पुं [सं.] शरीर के सात द्रव्य–रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र ।

सप्तपदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) विवाह की एक रीति जिसमें वर-वधू अग्नि की सात परिक्रमाएँ करके विवाह पक्का करते हैं, भाँवर, भँवरी । (२) (किसी बात को) अग्नि की साक्षी देकर पक्का करना ।

सप्तपाताल—संज्ञा पुं. [सं.] पृथ्वी के नीच सात लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ।

सप्तपुरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] सात पवित्र नगर या पुरी – अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार (माया), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका ।

सप्तम—वि. [सं.] सातवाँ । उ.—सप्तम दिन तोहिं तच्छक खाइ—१-२९० ।

सप्तमातृका संज्ञा स्त्री. [सं.] सात शक्तियाँ जिनका पूजन शुभ कार्यों के पूर्व होता है - ब्रह्मा या ब्राह्माणी, महेश्वरी, कौमारी, बैष्णवी, वाराही, इंद्राणी और चामुंडा ।

सप्तमी—वि. स्त्री. [सं.] सातवीं ।

संज्ञा स्त्री. (१) चांद्र मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि या दिन । (२) व्याकरण में अधिकरण कारक की बिभक्ति ।

सप्तर्षि—संज्ञा पुं [सं.] (१) सात ऋषियों का समूह या मंडल जिनके नाम कहीं ये बताये गये हैं—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कस्यप और अत्रि; तथा कहीं ये—मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ । (२) सात तारों का समूह जो ध्रुवतारे के चारो ओर घूमता जान पड़ता है ।

सप्तशती—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) सात सौ का समूह । (२) सात सौ पद्यों या छंदों का समूह ।

सप्तस्वर—संज्ञा पुं. [सं.] संगीत के सात स्वर—स, ऋ, ग, म, प, ध और नि ।

सप्ताह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सात दिनों का समूह । (२) सोमवार से रविवार तक के सात दिन । (३) 'श्रीमद्-भागवत' जैसे किसी धर्मग्रंथ का पाठ जो सात दिन में पढ़ या सुन लिया जाय ।

सप्रमाण—वि. [सं.] (१) प्रमाण या साक्षी के साथ । (२) ठीक, प्रामाणिक ।

सफ—संज्ञा स्त्री. [फा. सफ़.] (१) पंक्ति । (२) बिछावन ।

संज्ञा स्त्री. [फा. सैफ़] तलवार ।

सफर—संज्ञा पुं. [अ. सफ़र] **यात्रा।**

सफरी—वि. [हिं. सफर] **सफर में काम आनेवाला।**

संज्ञा पुं (१) **रास्ते का सामान या खर्च।** (२) **अमरूद।** (३) श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिउरा अरुन खुबानी—१०-२११।

संज्ञा स्त्री. [सं. शफरी] **एक तरह की मछली।**

सफल—वि. [सं.] (१) **जो फल से युक्त हो।** (२) **जिसका कुछ फल या परिणाम निकले, जिसका करना या होना व्यर्थ न जाय, सार्थक।** उ.—ता छिन हृदय-कमल प्रफुलित ह्वै जनम सफल करि लेखौं—९-३५। (३) **पूरा होना।** (४) **जो कृतकार्य हुआ हो।**

सफलता—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) **सफल होने का भाव, कार्य-सिद्धि।** (२) **पूर्णता।**

सफलित—वि. [हिं. सफल] (१) **सार्थक।** (२) **कृतकार्य।**

सफलीभूत—वि. [सं.] **जो सफल हुआ हो।**

सफा—वि. [हिं. साफ] (१) **स्वच्छ।** (२) **पवित्र।** (३) **जो खुरदुरा न हो, चिकना।**

संज्ञा पुं. [अ. सफ़हः]। **पुस्तक आदि का पृष्ठ।**

सफाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सफा] (१) **स्वच्छता, निर्मलता।** (२) **कूड़ा-करकट हटाने की क्रिया।** (३) **अर्थ या अभिप्राय प्रकट होने का गुण।** (४) **मन म मैल या दुर्भाव न रहना।** (५) **छल, कपट या दुराव का न होना।** (६) **दोष या आरोप का हटना, निर्दोषिता।**

मुहा.—सफाई देना—(**किसी को**) **निर्दोष प्रमाणित करना।** सफाई होना-(**किसी का**) **निर्दोष सिद्ध होना।**

(६) **लेन देन का हिसाब साफ होना।** (७) **झगड़े का निबटारा।**

सफाचट—वि. [हिं. साफ] (१) **स्वच्छ।** (२) **चिकना।**

सफेद—वि. [फ़ा. सुफ़ैद] (१) **उजला, श्वेत।**

मुहा—रंग सफेद पड़ जाना (होना)—**भय आदि से चेहरे का रंग फीका पड़ जाना या मुख का कांति हीन हो जाना।** स्याह-सफेद—**भला-बुरा।**

सफेदपोश—संज्ञा पुं. [फ़ा. सफ़ैद+पोश] (१) **साफ कपड़े पहननेवाला।** (२) **शिक्षित और कुलीन।**

सफेदा—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुफ़ैदा] (१) **जस्ते का चूर्ण या भस्म।** (२) **एक तरह का बढ़िया आम।** (३) **एक तरह का बढ़िया खरबूजा।** (४) **एक बड़ा वृक्ष।**

सफेदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सफेद] (१) **उजलापन।**

मुहा.—सफेदी आना—**बाल सफेद होना, बुढ़ापा आना।** सफेदी छाना—**बहुत भय के कारण मुख का कांतिहीन हो जाना।**

(२) **दीवार आदि पर चूने की पुताई।** (३) **उषःकाल का प्रकाश।**

सबंधु—क्रि. वि. [हिं. स+बंधु] **भाई-बन्धुओं के साथ।** उ.—कहौ तौ सचिव-सबंधु सकल अरि एकहिं एक पछारौं—९-१०८।

सब—वि. [सं. सर्व, प्रा. सब्ब] (१) **जितने हों, कुल, समस्त।** उ.—हेरी देत चले सब बालक—६११। (२) **पूरा, सारा।**

सबक—संज्ञा पुं. [फ़ा. सबक़] (१) **पाठ।** (२) **उपदेश।**

सबज—वि. [हिं सब्ज] **हरे रंग का।**

सबद—संज्ञा पुं. [सं. शब्द] (१) **आवाज, ध्वनि।** उ.—सबद करयो आघात, अघासुर टेरि पुकारयौ—४३१। (२) **वर्ण या अक्षरों से बनी सार्थक ध्वनि।** (३) **साधु-महात्मा के वचन।** (४) **उपदेशपूर्ण बात।**

सबदरसी, सबदर्सी—वि. [सं. सर्वदर्शी] (**संसार में**) **सब कुछ देखनेवाला।**

सबब—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **कारण।** (२) **साधन।**

सबर—संज्ञा पुं. [अ. सब्र] **धैर्य, संतोष।** उ.—ता दिन सूर सहर सब चकित सबर-स्नेह तज्यौ पितु-मात-९-३८।

मुहा.—किसी का सबर पड़ना—**अत्याचार करने वाले को, सब तरह के अत्याचार सबर या सहनशीलता के साथ सहनेवाले का या इसकी 'हाय' का कुफल भोगना पड़ना।**

सबरा—वि. [हिं. सब] (१) **सब, समस्त।** (२) **सारा, पूरा।**

सबरी—वि. स्त्री. [हिं सबरा] (१) **सब, कुल, समस्त।** (२) **सारी, पूरी।**

[सं. शबरी] **शबर नामक अनार्य जाति की एक स्त्री भक्त जिसके जूठे बेर श्रीराम ने सराह-सराह कर खाये थे।** उ.—सबरी आस्रम रघुबर आये। अरघासन दै प्रभु बैठाए—९-६७।

सबरै—क्रि. स. [हिं. सँवरना] **सँवरे, बने, सुधरे।** उ.—

बिगरै सबरै हमरे सिर ऊपर बल को बीर रखवारौ -९८७।

सब्रल—वि. [सं.] (१) **बलवान, प्रबल**। उ.—(क) सूर प्रभु की सबल माया, देति मोहिं भुलाइ—१-४५। (ख) माया सबल धाम-धन-बनिता बाँध्यौ हौं इहिं साज—१-२०८ (२) **जिसके साथ फौज या सेना का बल हो**। उ.—सुभट अनेक सबल दल साजे, परे सिंधु के पार—९-८३।

सबार, सबारे, सबारैं, सबारौ—क्रि. वि. [हिं. सबेरा] (१) **शीघ्र, जल्दी**। उ.—(क) घर के कहत सबारे काढ़ौ भूत होइ धरि खैहै—१-८६। (ख) चलौ न बेगि, सबारे जैए भाजि आपनैं धाम १०-२००। उ.—अबलौं कहा सोए मनमोहन और बार तुम उठत सबार—४०३। (२) **उपयुक्त या निश्चित समय से पूर्व**। (३) **सबेरे, प्रातःकाल**। उ.—जेवन करन चली जब भीतर छींक परी तौ आज सबारे—५९५।

यौ० साँझ सबारैं—**सबेरे-शाम, हर समय, दिन भर**। उ.—(क) उरहन कै कै साँझ सबारैं, तुमहिं बँधायौ स्याम—३५५। (ख) अब को निकरै साँझ सबारौ—७६२।

सबारचो, सबारचौ—क्रि. वि. [हिं. सबेरा] **इतनी सबेरे**। उ.—बोलि उठे बलराम, स्याम कत उठे सबारचौ —४३१।

सबिता—संज्ञा पुं. [सं. सविता] **सूर्य, रवि**। उ.—(क) सूर महरि सबिता सौं बिनवति, भली स्याम की जोटी—७०२। (ख) बार-बार सबिता सौं माँगति, हम पावैं पति स्याम सुजान—७८५।

सबी—संज्ञा स्त्री. [अ. शबीह] **तसबीर, चित्र**।

सबील—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **मार्ग**। (२) **उपाय**। (३) **प्रबंध, व्यवस्था**। (४) **पौशाला**।

सबूत—संज्ञा पुं. [अ.] **प्रमाण**।

सबेर—क्रि. वि. [अनु. बेर या हिं. सबेरा] **जल्दी, शीघ्र**। उ. —कूदि परयौ चढ़ि कदम तैं खबरि न करौ सबेर —५८९।

यौं—देर-सबेर—(१) **कुछ समय म**। (२) **कभी जल्दी, कभी देर**। (२) **कभी-कभी**।

सबेरा—संज्ञा पुं [हिं. स. + बेला] **प्रातःकाल**।

सबेरे—क्रि. वि. [हिं. सबेरा] **प्रातःकाल को**। उ.—ऊधौ जाहु सबेरे ह्याँ तैं बेगि गहर जनि लावहु—३३४०।

सबेरो, सबेरौ—संज्ञा पुं [हिं. सबेरा] **प्रातःकाल**।

क्रि. वि. (१) **जल्दी, शीघ्र**। उ.—जो कोऊ तेरौ हित-कारी सो कहै काढ़ि सबेरौ—१-३१९। (२) **हर समय**

यौ.—बेर-सबेरौ—(१) **कुछ समय में**। (२) **कभी जल्दी, कभी देर**। (३) **हर समय, कभी कभी**। उ.—मुरली बेंत बिषान देखिए शृंगी बेर-सबेरौ—२९६५।

सबै—वि. [हिं. सब + ही] (१) **सभी (संख्यावाचक)**। उ.—(क) सुख मैं आइ सबै मिलि बैठत रहत चहूँ दिसि घेरे - १-७९। (ख) ता दिन तेरे तन तरुवर के सबै पात झरि जैहैं—१-८६। (२) **सारा, समस्त (परिमाणवाचक)**। उ.—जिती हुती जग मैं अधमाई सो मैं सबै करी—१-१३०।

सब्ज—वि. [फ़ा. सब्ज़] (१) **हरे रंग का, हरा**। (२) **कच्चा और ताजा (फूल, फल आदि)**। (३) **सुंदर और लहलहाता हुआ**।

मुहा.—सब्ज बाग दिखाना—(**किसी स्वार्थ से) बड़ी बड़ी आशाएँ दिखाना**।

(४) **शुभ, उत्तम**।

सब्जा—संज्ञा पुं. [हिं. सब्ज] (१) **हरियाली**। (२) **भाँग, विजया**। (३) **पन्ना नामक रत्न**।

सब्जी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सब्जी] (१) **हरियाली**। (२) **हरी तरकारी**।

सब्द—संज्ञा पुं. [सं. शब्द] (१) **ध्वनि, आवाज**। उ.—(क) ताकी सरन रह्यौ क्यौं भावै सब्द न सुनिए कान —१-१३४। (ख) यहै सब्द सुनियत गोकुल मैं—६२२। (२) **वर्णों या अक्षरों से बनी सार्थक ध्वनि**। (३) **संत-महात्माओं के वचन या पद**। (४) **शिक्षा या उपदेश-प्रधान उक्ति**।

सब्र—संज्ञा पुं. [अ.] **धैर्य, संतोष**।

मुहा.—(किसी का) सब्र पड़ना—**अत्याचारी को, अत्याचार सहन करनेवाले के धैर्य या उसकी 'आह' का कुफल भोगना पड़ना**। सब्र कर बैठना (लेना)—**हानि, अनिष्ट या अत्याचार को सह लेना**। सब्र समे-

टना—**ऐसा अन्याय या निर्दयता का कार्य करना कि दूसरे की 'आह' का कुफल भोगना पड़े।**

सभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **समिति, गोष्ठी, परिषद्।** (२) **समूह, मंडली।** उ.—डासन काँस कामरी ओढ़न बैठन गोप-सभा ही—२२७५। (३) **वह संस्था या समूह जो विषय-विशेष पर विचार करने के लिए बनायी गयी हो।** (४) **राजदरबार, राजसभा।** उ.—(क) सभा मँझार दुष्ट दुस्सासन द्रौपदि आनि धरी—१-१६। (ख) द्रुपद-सुताहिं दुष्ट दुरजोधन सभा माँहि पकरावै—१-१२२।

सभाग संज्ञा पुं. [हिं. स+भाग] **सौभाग्य।**

वि. **जो सौभाग्यशाली हो।**

सभागा—वि. [हिं. सभाग] **भाग्यशाली।**

सभागी—वि. स्त्री. [हिं. सभागा] **भाग्यशालिनी।** उ.—चिरजीवौ मेरौ लाड़िलौ, मैं भई सभागी—१०-६८।

अव्य. **छोटोंको पुकारने का एक शुभ संबोधन।** उ.—कहाँ चली उठि भोरही सोवै न सभागी—१५४१।

सभागृह्—संज्ञा पुं. [सं.] **वह स्थान जहाँ सभा या समिति की बैठक हो।**

सभागे—वि. [हिं. सभाग] **भाग्यशाली।** उ.—(क) अहो बसुदेव जाहु लै गोकुल तुम हौ परम सभागे—१०-४। (ख) रसिक रासिका को सुख लूट्यौ स्याम सभागे—२२७५।

सभापति—संज्ञा पुं. [सं.] **सभा का प्रधान।**

सभा-चतुर—वि. [सं.] **जो सभा या समाज में सम्मिलित होकर चतुराई से बात कर सके।**

सभा-चातुरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सभा-समाज में बैठकर रुचिकर बातें करने की चतुरता या योग्यता।**

सभा-मंडप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह स्थान जहाँ सभा-समाज की बैठक हो।** (२) **देव-मंदिरों में वह स्थान जहाँ बैठकर भक्तजन कीर्तन आदि करते हों।**

सभासद—संज्ञा पुं. [सं.] **सदस्य, सभ्य।** उ.—पोच-पिसुन लस दसन सभासद प्रभु अनंग मंत्री बिन भीति—२२२३।

सभीत—वि. [हिं. स+भीत] **डरा हुआ।** उ.—अखुटित रहत सभीत ससंकित, सुकृत सब्द नहिं पावैं—१-४८।

सभ्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सदस्य, सभासद।** (२) **भला और शिष्ट व्यक्ति।**

वि. **भला, शिष्ट।**

सभ्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सदस्यता।** (२) **भलमंसी, शिष्टता।** (३) **वे बातें जो किसी व्यक्ति, जाति या राष्ट्र के सुजन, शिष्ट, शिक्षित और उन्नत होने की सूचक हों।**

समंजन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ठीक करना या बैठाना।** (२) **हिसाब ठीक करना।**

समंजस—वि. [सं.] (१) **उचित।** (२) **अभ्यस्त।**

समंत—संज्ञा पुं. [सं.] **सीमा, छोर।**

वि. **सब, कुल, समस्त।**

समंदर—संज्ञा पुं. [सं. समुद्र] (१) **सागर, समुद्र।** (२) **बड़ा तालाब या झील।**

सम—वि. [सं.] (१) **समान, तुल्य।** उ.—(क) अभ्रित ता सम नाहीं—१-२४१। (ख) आपु बिषमत तजि दोउ सम भै बानक ललित त्रिभंग—३३२७। (२) **जिसमें कहीं उतार-चढ़ाव या हेर-फेर न हो।** (३) **जिसका तल ऊबर-खाबड़ न होकर बराबर या चौरस हो।** उ.—धनुष सों टारि पर्वत किए एक दिसि, पृथ्वी सम करि प्रजा सब बसाई—४-११। (४) **जिस (संख्या) को दो से भाग करने पर शेष कुछ न बचे।**

अव्य. **(किसी के) समान या बराबर।** उ.—(क) जौ पै राम-भक्ति नहिं जानी, कह सुमेर सम दान किए—१-८९। (ख) रंक सुदामा कियौ इंद्र सम—१-९५। (ग) देखियत ह्वै रज्वा सम डारचौ—५७४। (घ) नहिं तिहुँ भुवन कोउ सम तुम्हारे—१० उ. ३१।

संज्ञा पुं. (१) **संगीत में वह स्थान जहाँ लय के विचार से गति की समाप्ति होती है और गायक या वादक का सर अपने आप हिल जाता है।** (२) **एक अर्थालंकार।**

संज्ञा पुं. [सं. शम] (१) **अंतःकरण तथा इंद्रियों का संयम।** उ.—गो कह्यौ, हरि बैकुंठ सिधारे, सम-दम उनहीं संग पधारे—१-१२९०। (२) **माफी, क्षमा।** (३) **शांति।**

संज्ञा पुं. [अ.] **जहर, विष।**

संज्ञा पुं. [अ. क़सम] **शपथ, सौगंध।**

समकक्ष—वि. [सं.] (१) **समान** (२) **बराबरी का।**

समकालीन—वि. [सं.] **जो (दो या कई) एक ही समय में हुए हों।**

समकिति—संज्ञा स्त्री. [सं. सम्यक] **सम्यकता।**

समकियाना, समकियानो—क्रि. स. [हिं. सम+करना] **बिखरी चीजें यथाक्रम रखना या सजाना।**

समकोण—संज्ञा पुं. [सं.] **९० अंश का कोण।**

समक्ष—अव्य. [सं.] **सामने, सम्मुख।**

समग्र—वि. [सं.] **सारा, सब।**

समग्री—संज्ञा स्त्री. [हिं. सामग्री] **सामान, पदार्थ।** उ.—(क) भोग-समग्री भरे भँडार—९-८। (ख) छाक-सामग्री सबै जोरि कै वाकैं कर दै तुरत पठाई—४५७।

समझ—संज्ञा स्त्री. [सं. सम्बुद्ध, प्रा. समुज्झ, समुंझ] **जानने-समझने की बुद्धि।**

समझदार—वि. [हिं. समझ+फ़ा. दार] **बुद्धिमान।**

समझदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. समझदार] **समझदार होने का भाव, बुद्धिमानी।**

समझना, समझनो—क्रि. स. [हिं. समझ] (१) **पढ़ या सुनकर हृदयंगम करना।** (२) **विचार करके ध्यान में लाना।** (३) **किसी परिचित या ज्ञात विषय में अधिक अनुमान करना।**

समझाना, समझानो—क्रि. स. [हिं. समझना] **दूसरे को समझने को प्रवृत्त करना।**

समझाव, समझावा—संज्ञा पुं. [हिं. समझना, समझाना] **समझने या समझाने की क्रिया या भाव।**

समझौता—संज्ञा पुं. [हिं. समझ] **आपस में ही होनेवाला निबटारा।**

समतल—वि. [सं.] **जिसकी तह या तल बराबर हो, सपाट, चौरस।**

समता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सम या समान होने का भाव, बराबरी, समानता।** उ.—कोटि स्वर्ग सम सुखउ न मानत हरि समीप समता नहिं पावत—३२४२।

समताई—संज्ञा स्त्री. [सं. समता] **बराबरी, समता।** उ.—अतिहिं करी उन अपतई हरि सों समताइ—पृ. ३२३ (२०)।

समतुल, समतूल—वि. [सं. हिं. सम+तोल] **बराबर, समान।** उ.—तो समतुल कन्या किन उपजी जो कुल सत्रु न मारचौ—९-१३४।

समतूली—संज्ञा स्त्री. [हिं. समतूल] **बराबरी।**

समतोल—वि. [सं. सम+हिं. तोल] **बराबर।**

समतोलन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **महत्व की दृष्टि से समान रखना।** (२) **दोनों पलड़ों या पक्षों को समान रखना।**

समत्थ—वि. [सं. समर्थ] **समर्थ।**

समत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **बराबरी, तुल्यता।**

समद—संज्ञा पुं. [सं. समुद्र] **सागर।**

समदत—क्रि. स. [हिं. समदना] (१) **सौंपना, समर्पित करना।** (२) **भेंट या उपहार देना।**

क्रि. वि. **समर्पित करते ही, सौंपते ही।** उ.—(क) तनया जा मातनि कौं समदत नैन नीर भरि आए—९-२७। (ख) समदत भई अनाहत बानी कंस कान झनकारा—१०-४।

समदन—संज्ञा स्त्री. [सं. समादान] (१) **उपहार, भेंट।** (२) **मुलाकात, भेंट।**

संज्ञा पुं. [सं.] **लड़ाई, युद्ध।**

समदना, समदनो—क्रि. स. [हिं. समदन] (१) **सौंपना, समर्पित करना।** (२) **उपहार या भेंट देना।**

क्रि. अ. **आनंद या उमंगमें भरकर भेंटना, प्रेमपूर्वक या सप्रेम मिलना।**

समदर्शन, समदर्सन—वि. [सं. समदर्शन] **सबको समान समझनेवाला।**

समदरसी, समदर्शी—वि. [सं. समदर्शिन्] **सबको बराबर या समान समझने या माननेवाला।** उ.—समदरसी है नाम तुम्हारौ—१-२२०।

समदे—क्रि. अ. [हिं. समदना] **मिले, भेंटे।** उ.—यह कहिकै समदे सकल जन नयन रहे जल छाई—१० उ.-१२३।

समदृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं] **समदर्शी की दृष्टि या भावना।** उ.—जो समदृष्टि आदि निर्गुन पद तौ कत चित्त चोराए—३२०१।

समधिक—वि. [सं.] **बहुत, अधिक।**

समधियाना—संज्ञा पुं. [हिं. समधी] **समधी का घर।**

समधी—संज्ञा पुं. [सं. सम्बन्धी] (१) **वर-वधू के पिता।** (२) **मान्य संबंधी।** उ. ताल पखावज चले बजावत समधी सोभा कौं—१-१५१।

समधिन, समधिनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. समधी] **समधी की पत्नी।** उ.—इहिं भाँति चतुर सुजान समधिनि सकति रति सबसौं करै—१० उ.—२४।

समन—संज्ञा पुं. [सं. शमन] (१) **दोष, विकार आदि दबाना।** (२) **शांति।** (३) **यम, यमराज।**

सम-नाम—संज्ञा पुं. [सं.] **समानार्थक शब्द।**

समन्वय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विरोध का अभाव।** (२) **मिलन, संयोग।** (३) **कार्य-कारण का निर्वाह।**

समन्वित—वि. [सं.] (१) **जिसका समन्वय हुआ हो।** (२) **मिला हुआ, संयुक्त।** (३) **जो किसी के अन्तर्गत या सम्मिलित हो।**

समपाद—संज्ञा पुं. [सं.] **छंद जिसके चारो चरण बराबर या समान हों।**

समबुद्धि—वि. [सं.] **जिसकी बुद्धि सुख-दुख, लाभ-हानि आदि की स्थिति में समान रहे।**

समय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वक्त, काल।** उ.—(क) बहुरि संध्या समय होन आयौ—७-६। (ख) प्रात समय रवि-किरनि कोंवरी—१०-७३। (२) **मौका, अवसर।** उ.—(क) तीनौ पन ऐसे हीं खोए, समय गये पर जाग्यौ—१-७३ (ख) त्रिय-नगन समय पति राखी—५६९

मुहा. समय पाइ—**सुअवसर या उचित अवसर देख-कर।** उ.—समय पाइ ब्रज बात चलाई—३४१८। तनेहोंमाद(३) **सुख या दुख के दिन।**

यौ—समय-कुसमय—(१) **अच्छे-बुरे दिन, सुख-दुख के दिन।** (२) **हर समय।**

(४) **फुरसत, अवकाश।** उ.—बुधि-बिबेक बिचित्र पौरिया समय न कबहूँ पावैं—१-४०। (४) **अंत, परिणाम।**

समया—संज्ञा पुं. [सं. समय] **संकट का अवसर, बुरे दिन।** उ.—और मित्र ऐसे समया महँ कत पहिचान करैं—१० उ.—७४।

समयौ—संज्ञा पुं. [सं. समय] **अवसर।** उ.—तिन अंकनि कोउ फिरि नहिं बाँचत गत स्वारथ समयौ—१-२९८।

समर—संज्ञा पुं. [सं.] **लड़ाई, युद्ध, संग्राम।** उ.—(क) लगन नहिं देत कहूँ समर-आँच ताती—१-२३। (ख) बहुत सनाह समर सर बेधे—१-२७८।

संज्ञा पुं. [सं. स्मर] **कामदेव।**

समरत्थ, समरथ—वि. [सं. समर्थ] (१) **कोई काम करने की शक्ति या योग्यता रखनेवाला।** उ.—(क) अब यह बिथा दूरि करिबे कौं और न समरथ कोई—१-११८। (ख) सूर स्याम गुरु ऐसौ समरथ, छिन मैं लै उधरै—६-६। (२) **शक्ति और साधन-संपन्न।** उ.—(क) सिंह कौ भच्छ सृगाल न पावै, हौं समरथ की नारी—९-७९। (ख) कै यह ठौर लियौ कहुँ आइ रह्यौ कोऊ समरथ नर—१० उ.-७०।

समरपना, समरपनो—क्रि. स. [हिं. समर्पना] **समर्पण करना, भेंट में देना।**

समरपे—क्रि. स. [हिं. समर्पना] **भेंट में दिये, अर्पित किये।** उ.—जिन तन-मन-धन मोहिं प्रान समरपे सील-सुभाव बढ़ाई—९-७।

समर-भूमि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **युद्ध-क्षेत्र।**

सम-रस—वि. [सं. सम + रस] (१) **समान रसवाले।** (२) **समान विचारवाले।** (३) **सदा एक सा रहनेवाला।**

समर-शायी—वि. [सं. समरशायिन्] **जो युद्ध में मारा गया हो, जिसे वीरगति मिली हो।**

समर-शैया—संज्ञा स्त्री. [सं. समर + शय्या] **युद्ध-भूमि में घायल होकर गिरने की स्थिति।**

समर-सेज, समर-सेज्या—संज्ञा स्त्री. [सं. समर + हिं. सेज] **युद्ध, क्षेत्र में घायल होकर गिरने की अवस्था।** उ.—पौढ़े कहा समर-सेज्या सुत—१-२९।

समरांगण, समरांगन—संज्ञा पुं. [सं. समरांगण] **लड़ाई का मैदान, युद्ध-क्षेत्र।**

समराना, समरानो—क्रि. स. [हिं. सँवारना] (१) **सजाना या सजवाना।** (२) **सँवारना या सँवरवाना।**

समरारी, समुरारी—संज्ञा पुं. [सं. समर+अरि] **समर-भूमि में युद्ध की इच्छा से उपस्थित वीर योद्धा।** उ.—समरारी को कुयस, कुयस की प्रगट एक ही काले—२०९७।

समर्थ—वि. [सं.] (१) कोई काल करने की शक्ति या योग्यता रखनेवाला (२) शक्ति और साधन संपन्न। उ.—ब्रह्म पूरन अकल कला तें रहित ए हरता-करता सुमर्थ और नाहीं—२५५६। (३) अधिकार रखनेवाला, सक्षक। (४) प्रभावित कर सकनेवाला। (५) काम में आ सकने योग्य।

समर्थक—वि. [सं.] समर्थन करनेवाला।

समर्थता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) समर्थ होने का भाव या धर्म। (२) शक्ति, सामर्थ्य।

समर्थन—संज्ञा पुं. [सं.] किसी विचार या मत से सहमत होकर उसका पोषण करना।

समर्थित—वि. [सं.] जिसका समर्थन हुआ हो।

समर्थक—वि. [सं.] समर्पण करने वाला।

समर्पण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) किसी को आदरपूर्वक या भेंट-स्वरूप कुछ देना। (२) श्रद्धा या भक्तिपूर्वक कुछ अर्पित करना। (३) अपना अधिकार, दायित्व आदि दूसरे को सौंपना। (४) विवाद, युद्ध आदि से बचने के लिए अपने को विपक्षी या किसी अधिकारी के हाथ में सौंप देना। (५) देना, दान।

समर्पत—क्रि.स. [हिं. समर्पना] दान देते या अर्पित करते हैं। उ.— एकनि कौं गौ-दान समर्पत—१०-२५।

समर्पना, समर्पनो—क्रि. स. [सं. समर्पण] (१) भेंट देना, अर्पित करना। (२) सौंपना।

समर्पि—क्रि. स. [हिं. समर्पना] अर्पित या अर्पण करके। उ.—तंदुल घिरत समर्पि स्याम कौं संत परोसौ करतौ—१-२९७।

समर्पित—वि. [सं.] (१) जो समर्पण किया गया हो। उ.—तनु आत्मा समर्पित तुम कहँ पाछे उपजि परी यह बात—१० उ. - ११। (२) जो सौंपा गया हो।

समर्पिती—वि. [सं. समर्पित] (१) जिसे समर्पण किया गया हो। (२) जिसे सौंपा गया हो।

समर्पौ—क्रि. स. [हिं. समर्पना]। अर्पित या अर्पण करो। उ.—सबै समर्पौ सूर स्याम कौं, यह साँचौ मत मेरौ—१—२६६।

समवयस्क—वि. [सं.] बराबर की उम्र का।

समवर्ती—वि. [सं. समवर्तिन्] (१) पास या साथ रहने वाला। (२) समकालीन।

समवाय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) झुंड, समूह। (२) सदा बना रहनेवाला या नित्य संबंध।

समवायी—वि. [सं. समवायिन्] नित्य संबंध रखनेवाला।

समवृत्त—संज्ञा पुं. [सं.] छंद जिसके चारो चरण समान वर्ण या मात्रावाले हों।

समवेत—वि. [सं.] (१) जमा या इकट्ठा किया हुआ, एकत्र, संचित। (२) सम्मिलित। (३) नित्य संबंध से बंधा हुआ।

समष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] सबका समूह, 'व्यक्ति' का विपरीतार्थक। उ.—सूरदास सोई समष्टि करि व्यष्टिभाव मन लाव—२-३८।

समसरि—वि. [सं. सम] बराबर, समान। उ.—(क) सूरदास सिसुता-सुख जलनिधि कहँ लौं कहौं, नहिं कोउ समसरि—१०-१२०। (ख) अपनी समसरि और गोप जे तिनको साथ पठाये—५८३।

संज्ञा स्त्री. बराबरी, समानता। उ.—दुहुन देहु कछु दिन अरु मोकौं तब करिहौ मो समसरि आई—६६८।

समसान—संज्ञा पुं. [सं. श्मशान] श्मशान।

सम-सामयिक—वि. [सं. सम + सामयिक] जो (दो या कई) एक ही समय में हुए हों।

समस्त—वि. [सं.] (१) सब, कुल, समग्र। (२) मिलाया हुआ, संयुक्त। (३) जो समास द्वारा मिलाया गया हो, समासयुक्त।

समस्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) जटिल या विकट प्रसंग। (२) छंद आदि का वह चरणार्द्ध जो नया और स्वतंत्र छंद बनाने के लिए कवियों को दिया जाता है।

समस्या-पूर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] दिये हुए चरणार्द्ध के आधार पर स्वतंत्र छंद बनाना।

समाँ—संज्ञा पुं. [हिं. समय] वक्त, समय।

मुहा.—समा बँधना—(संगीत, काव्य-पाठ आदि का) इतनी उत्तमता से संपन्न होना कि उपस्थित जन-समूह तन्मय हो जाय।

समा—संज्ञा स्त्री. [सं.] साल, वर्ष।

समाइ—क्रि.अ. [हिं समाना] लीन होकर, लीन हो जाय। उ.—(क) सनै सनै बिधि-लोकहिं जाइ, ब्रह्मा सँग हरि

पदहिं समाइ—३-१३ । (ख) ताहि सुनै जो प्रीति कै सो हरि पदहिं समाइ—१८६१ ।

प्र.—जाइ समाइ—**जाकर लीन हो जाय** । उ.—जाइ समाइ सूर वा निधि मैं बहुरि न उलटि जगत में नाचै—२-११ । गए समाइ—**लोप से हो गये** । उ.—मंदिर में गए समाइ, स्यामल तनु लखि न जाइ—१०-२७५ । कहा समाइ—**कैसे समा सकता या सहा जा सकता है ?** उ.—पलक वोट निमि पर अनखाती यह दुख कहा समाइ—३४४४ । सकै न समाइ—**भरा नहीं जा सकता है** । उ.—सूर-दास प्रभु सिमुता कौ सुख सकै न हृदय समाइ—१०-१७८ । गयो समाइ—**लीन हो गया, पच गया, मिल गया** । उ.—वल्लल देखि जननि व्याकुल भइ अंग विष गयौ समाइ—७५८ ।

समाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. समाना] (१) **समान की क्रिया या भाव** (२) **शक्ति, सामर्थ्य** । (३) **हैसियत औकात** ।

समाउँ—क्रि. अ. [हिं. समाना] **भर या समा जाता है** । उ.—ह्याँ के वासी अवलोकत हौं आनँद उर न समाउँ ९—१६५ ।

समाऊँ—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समा जाऊँ** । उ.—अंग सुभग सजि, ह्वै मधु मूरति नैननि माँह समाऊँ—१०४९ ।

समाए—क्रि. अ. [हिं. समाना] (१) **लीन हो गया** । उ.—पुनि सबको रचि अंड आपु मैं आपु समाए—२-३६ । (२) **आ गया, भर सका, समा सका** । उ.—अति बिसाल चंचल अनियारे हरि-हाथनि न समाए—६७५ ।

समाक—वि. [सं. सम्यक्] **सब, पूरा** ।

समागत—वि. [सं.] (१) **कहीं से आया हुआ (अतिथि आदि)** । (२) **उपस्थित या प्रस्तुत (प्रसंग आदि)** ।

समागम—संज्ञा पुं [सं.](१)**आना, आगमन** । (२) **मिलना, मिलन** । (क) ना हरि-भक्ति न साधु-समागम रह्यो बीच ही लटकैं -१-२९२ । (ख) सूरदास प्रभु संत-समागम आनँद अभय निसान बजावै—१-२३३ । (ग) धरनि तृन तनु रोम पुलकित पिय समागम जानि—२८२८ । (३) **मैथुन, संभोग** । उ.—प्रथम समागम आनँद-आगम दूलह वर-दुलहिनी दुलारी—१०३-३९ ।

समाचार—संज्ञा पुं. [सं.] **हाल, खबर, संवाद** । उ.—(क) पूछे समाचार सति भाएँ—१-२८४ । (ख) काहू समाचार कछू पूछे—४-५ । (ख) श्री रघुनाथ और लछिमन के समाचार सब पाये—९-९० ।

समाचार पत्र संज्ञा पुं. [सं.] **अखबार** ।

समाज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समूह** । (२) **एक ही कार-बार, आचार-विचार या समस्या के लोगों का वर्ग या समुदाय** । उ.—कछु डर नाहिंन जिय मैं डरपत अति आनंद समाज—सारा-४२ । (३) **सभा, समिति** ।

समाजवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **वह सिद्धांत जो समाज में सब प्रकार की समानता स्थापित करनेवाला हो** ।

समाजवादी—वि. [सं.] **'समाजवाद' के सिद्धांत मं विश्वास रखनेवाला** ।

समाजी—संज्ञा पुं. [हिं. (आर्य) समाज] **आर्य समाज का मतानुयायी** ।

संज्ञा पुं. [हिं. समाज] **नर्तकी के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला वर्ग** ।

समाज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **यश, कीर्ति** ।

समात—क्रि. अ. [हिं. समाना] (१) **समाता है** । उ.—(क) अमर मुनि फूले सुख न समात मुदित मति—१०-६ । (ख) अति अनुराग संग कमला तन पुलकित अंग न समात हियौ—१०-१४३ (२) **रुकता या ठहरता है** । उ.—ठाढ़ो थक्यो उतर नहिं आवै लोचन जल न समात—२४५७ ।

समाति—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समाती है** । उ.—(क) संपति घर न समाति—१०-३६ (ख) विद्यमान ब्रिरह-सूल उर में जु समाति—२५४३ ।

समातो, समातौ—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समा जाता** । उ.—यह ब्यापार वहाँ जु समातो हुती बड़ी नगरी—३१०४ ।

समादर—संज्ञा पुं. [सं.] **यथेष्ट सम्मान-सत्कार** ।

समादृत—वि. [सं.] **यथेष्ट रूप से सम्मानित** ।

समाध—संज्ञा स्त्री [सं. समाधि] **समाधि** ।

समाधा—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निपटारा** । (२) **विरोध दूर करना** । (३) **समाधान** । उ.—निरखत बिधि भ्रमि भूलि परचौ तब, मन मन करत समाधा—७०५ ।

संज्ञा स्त्री. [सं. समाधि] **समाधि** । उ.—नहिं पावत

जो रस योगीजन तब तब करत समाधा—१२३६।

समाधान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **किसी का संदेह, आशंका आदि दूर करने को दिया जानेवाला उत्तर जिससे उसे संतोष हो जाय।** उ.—(क) समाधान सुरगन को करिकै - सारा. २९४। (ख) समाधान सबहिनि को कीन्हो—सारा. ३०१। (ग) तुम हरि समाधान को पठए हमसों कहन सँदेस—३२३२। (२) **मतभेद या विरोध दूर करना।** (३) **निराकरण।** (४) **समाधि।** (५) **ध्यान।** (६) **समर्थन।** (७) **नाटक की मुखसंधि के बारह अंगों में एक जिसमें बीज को ऐसे रूप में पुनः प्रस्तुत किया जाय कि नायक या नायिका का अभिमत पूर्णरूप से स्पष्ट हो जाय।**

समाधानना, समाधाननो—क्रि. स. [सं. समाधान] (१) **संदेश, आशंका आदि दूर करके संतुष्ट करना।** (२) **धैर्य या सांत्वना देना।**

समाधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **ईश्वर के ध्यान में मग्न होना।** उ.—(क) रिषि की कपट-समाधि बिचारि, दियौ भुजंग मृतक गर डारि—१-२९०। (ख) सुचि-रुचि सहज समाधि साधि सठ, दीनबंधु करुनामय उर धरि—१-३१२। (ग) सिव समाधि जिहिं अंत न पावैं—१०-३। (घ) जिहिं सुख कौं समाधि सिव साधी—१०-१२८। (२) **योग का चरम फल जो उसके आठ अंगों में अंतिम है। इसके चार भेद हैं—संप्रज्ञात, सवितर्क, सविचार और सानंद। इस अवस्था में मनुष्य के चित्त की सब वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं, बाह्य जगत से किसी प्रकार का संबंध नहीं रह जाता और अनेक प्रकार की शक्तियों के साथ अंत में कैवल्य की प्राप्ति होती है।** उ.—सो अष्टांग जोग कौं करै।····
····। क्रम क्रम सौं पुनि करै समाधि। सूर स्याम भजि मिटै उपाधि—२-२१। (३) **प्राणी की वह अवस्था जिसमें उसकी चेतना नष्ट हो जाती है और वह कोई शारीरिक क्रिया नहीं कर पाता।** (४) **मौन।** (५) **निद्रा।** (६) **मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव गाड़ना।** (७) **वह स्थान जहाँ शव या अस्थियाँ गाड़ी जायँ।** (८) **एक अर्थालंकार।**

समाधित—वि. [सं.] **जिसने समाधि लगायी हो।**

समाधिस्थ—वि. [सं.] **जो समाधि में लगा हो।**

समान—वि. [सं.] **रूप, गुण, आकार आदि में एक जैसा, बराबर, तुल्य।** उ.—(क) तुमहिं समान और नहिं दूजौ—१-१११। (ख) सुनि थके देव बिमान, सुर-बधु चित्र समान—६२३। (ग) कोमल कमल समान देखि-यत ये जसुमति के बारे – २५६९।

मुहा.—एक समान—**बिलकुल मिलते-जुलते।**

यौ.—समान वर्ण—**एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले वर्ण जैसे, त, थ, द, ध।**

संज्ञा स्त्री. **बराबरी, समानता।**

समानता संज्ञा स्त्री. [सं.] **बराबरी, तुल्यता।**

समानान्तर—संज्ञा पुं. [सं. समान+अंतर] **वे रेखाएँ जो आदि से अंत तक समान अंतर पर ही रहें।**

समाना—क्रि. अ. [सं. समावेश] (१) **किसी वस्तु, अंग आदि के भीतर पहुँचकर भर जाना या लीन हो जाना।** (२) **कहीं से आकर उपस्थित होना, पहुँचना।**

क्रि. स. **किसी वस्तु आदि में भरना।**

समानाधिकरण—संज्ञा पुं. [सं.] **व्याकरण में किसी शब्द या पद का अर्थ या संबंध स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त किया जानेवाला समानार्थी शब्द या पद।**

समानार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **वह शब्द जिसका अर्थ दूसरे के समान अर्थात् वही हो, पर्याय।**

समानार्थक—वि. [सं.] **(किसी शब्द या पद के) समान अर्थ रखनेवाला, पर्यायवाची।**

समानी—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समा गयी, भर गयी, लीन हो गयी।** उ.—(क) सूर अगिनि सब बदन समानी—६१५। (ख) कहा करौं, सुन्दर मूरति इन नयननि माँझ समानी—११९८। (ग) बुधि बिबेक बल बचन चातुरी मनहुँ उलटि उन माँझ समानी —पृ.३३२ (२९)। (घ) नव से नदी चलत मर्यादा सूधी सिंधु समानी—२०४४।

समाने—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समा गये, भर गये, लीन हो गये।** उ.—(क) कबहुँ अघासुर बदन समाने—४९७। (ख) कोउ बन में रहे दुरि, कोऊ गगन समाने —१२९६। (ग) नैना नैननि माँझ समाने—पृ. ३२७ (६४)। (घ) सो मति मूढ़ कहत अबलनि सों, नहिं

सो हृदय समाने—३२१३।

वि. [हिं. समान] **बराबर, तुल्य।** उ.—मन-बच-कर्म पल वोट न भावत, छिन युग बरस समाने —पृ. ३२७ (६४)।

समानै—वि. [हिं. समान] **बराबर, तुल्य।**

समानौ—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समा गया, भर गया।** उ.—तिहूँ भुवन भरि नाद समानौ—पृ. ३४७ (५३)।

समान्यो, समान्यौ—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समा गया, भर गया।** उ.—(क) गैयन भीतर आइ समान्यौ—२३७३। (ख) सूर उहै निज रूप स्याम कौ है मन माँझ समान्यो – ३१२७।

समापक—वि. [सं.] **समाप्त करनेवाला।**

समापत—वि. [सं. समाप्त] **खत्म, समाप्त।**

समापन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कार्य पूरा या समाप्त करना।** (२) **विचार, विवाद आदि से बचने के लिए समाप्ति का आदेश देना या प्रस्ताव करना।** (३) **मार डालना।** (४) **समाधान।**

समापन्न—वि. [सं.] **समाप्त किया हुआ।**

समापिका क्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] **व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य की समाप्ति सूचित हो।**

समापित—वि. [सं.] **समाप्त किया हुआ।**

समापी—वि. [सं.] **समाप्त करनेवाला।**

समाप्त—वि. [सं.] **जो खत्म या पूरा हो गया हो।**

समाप्ति – संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **किसी चलते हुए कार्य का खत्म या पूरा होना।** (२) **सीमा, अवधि आदि का अंत होना।** (३) **(अस्तित्व आदि) न रह जाना।**

समाप्य—वि. [सं.] (१) **समाप्त करने योग्य।** (२) **जो समाप्त होने को हो।**

समाय—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समा जाय, भर जाय, लीन हो जाय।** उ.—जाइ समाय सूर वा निधि मैं बहुरि जगत नहिं नाचै—१-८१।

समायो, समायौ—क्रि. अ. [हिं. समाना] (१) **समा गया।** उ.—तब तनु तजि मुख माहिं समायौ—१-२२६। (२) **डूब गया।** उ.—मन-कृत दोष अथाह तरंगिनि तरि नहिं सक्यौ, समायौ—१-६७।

समारंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अच्छी तरह शुरू या आरंभ होना।** (२) **समारोह।**

समारना, समारनो—क्रि. स. [हिं. सँवारना] (१) **ठीक करना।** (२) **सजाना।** (३) **काम बनाना।**

समारोह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **धूम-धाम, तड़क-भड़क।** (२) **धूम-धाम या तड़क-भड़क से होनेवाला कोई उत्सव या आयोजन।**

समर्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **समान अर्थवाला शब्द, पर्याय।**

समार्थक—वि. [सं.] **समान अर्थवाला, पर्यायवाची।**

समालोचक—वि. [सं.] **समालोचना करनेवाला।**

समालोचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भली-भाँति देख-भाल कर गुण-दोषों का पता लगाना।** (२) **उक्त प्रकार से ज्ञात गुण-दोषों की विवेचना करना।**

समालोचना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **भली भाँति देख-भालकर गुण-दोषों का पता लगाना।** (२) **उक्त प्रकार से ज्ञात गुण-दोषों की विवेचना करना।** (३) **वह रचना जिसमें उक्त विवेचना की गयी हो।**

समालोची—वि. [सं. समालोचिन्] **समालोचना करनेवाला, समालोचक।**

समाव—संज्ञा पुं. [हिं. समाई] (१) **समाने की क्रिया या भाव।** (२) **शक्ति, सामर्थ्य।** (३) **हैसियत, बिसात।**

समावत—क्रि. अ. [हिं. समाना] **समाता है।** उ.—गोप-सखा सब बदन निहारत उर आनँद न समावत—४७९।

समावनो—संज्ञा पुं. [हिं. समाना] **समाने की क्रिया या भाव।** उ.—अधर अरुन छबि कोटि बज्र दुति ससि गुन रूप समावनो—२२८०।

समावर्त्तन – संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लौटना, वापस आना।** (२) **वह संस्कार या आयोजन जो शिक्षार्थी के शिक्षा समाप्त कर लेने पर, स्नातक होकर उसके लौटने के समय प्राचीन गुरुकुलों में किया जाता था या आधुनिक विश्वविद्यालयों में होता है।**

समाविष्ट—वि. [सं.] **जो समाया हुआ, सम्मिलित या अन्तर्गत हो।**

समावृत्त—वि. [सं.] **जिसका समावर्तन संस्कार हो चुका हो।**

समावेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक साथ रहना।** (२)

एक वस्तु का दूसरी के अंतर्गत होना।

समावेशित—वि. [सं.] जो किसी में समाया हुआ या किसी के अंतर्गत हो।

समावै—क्रि. अ. [हिं. समाना] भर जाय, लीन हो जाय, समा जाय। उ.—(क) आधे मैं जल-वायु समावै।....। प्रान-वायु पुनि आइ समावै—३-१३। (ख) सूरदास सो प्रेम हरि-हियँ न समावै री—६२९।

समास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संक्षेप। (२) समर्थन। (३) संग्रह। (४) सम्मिलन। (५) व्याकरण में दो या अधिक शब्दों का संयोग। इसके चार मुख्य भेद हैं—अव्ययी भाव, तत्पुरुष, समानाधिकरण तत्पुरुष या कर्मधारय और द्वंद्व।

समासक—संज्ञा पुं. [सं. समास+क (प्रत्य.)] समास चिह्न जो पदों के सामासिक होने का सूचक होता है।

समासोक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक अर्थालंकार।

समाहना, समाहनो—क्रि. अ. [हिं. सामुहें=सामने] सामने आना, सामना करना।

क्रि. स. [सं. समाहित] पकड़ना।

समाहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बहुत सी चीजों को इकट्ठा करना। (२) राशि, ढेर। (३) मिलाना, मिलाप कराना। (४) व्याकरण में द्वंद्व समास का एक भेद।

समाहित—वि. [सं.] (१) एकत्र, संगृहीत। (२) शांत। (३) समाप्त। (४) स्वीकृत।

संज्ञा पुं. 'समाधि' नामक एक अर्थालंकार का दूसरा नाम।

समाहिं—क्रि. अ. [हिं. समाना] मग्न या लीन हो जाते हैं। उ.—अतिहिं मगन महा मधुर रस रसन मध्य समाहिं—१-३३८।

समाही—क्रि. अ. [हिं. समाना] समा जाता है, लीन हो जाता है। उ.—(क) जैसै नदी, समुद्र समाही—पृ. ३१९ (८४)। (ख) ज्यों पानी में होत बुदबुदा पुनि ता माहिं समाही—१० उ.-१३१।

समिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] सभा, समाज।

समिद्ध—वि. [सं.] (१) जलता हुआ। (२) उत्तेजित।

समिध—संज्ञा पुं. [सं.] अग्नि।

समिधा—संज्ञा स्त्री. [सं. समिधि] हवन-कुंड में जलाने की लकड़ी।

समिर—संज्ञा पुं., स्त्री. [सं. समीर] हवा, वायु।

समी—संज्ञा पुं. [हिं. शमी] 'शमी' वृक्ष।

समीक—संज्ञा पुं. [सं. शमीक] एक क्षमाशील ऋषि जिनके गले में परीक्षित ने मरा हुआ साँप डाल दिया था और जिनके पुत्र ने उनको सातवें दिन तक्षक नाग द्वारा डसे जाने का शाप दिया था। उ.—इक दिन राइ अखेटक गयौ।....। रिषि समीक कैं आस्रम आयौ।....। दियौ भुजंग मृतक गर डारि—१-२९०।

समीकरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) (दो या अधिक वस्तुओं, राशियों आदि को) समान करने की क्रिया या भाव। (२) गणित में ज्ञात राशि से अज्ञात का पता लगाने की क्रिया। (३) यह सिद्ध करना कि अमुक-अमुक राशियाँ या मान समान हैं।

समीक्षक—वि. [सं.] समीक्षा करनेवाला।

समीक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देखना-भालना, जाँच-पड़ताल। (२) आलोचना।

समीक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) देखने-भालने या जाँच-पड़ताल करने की क्रिया। (२) समालोचना।

समीचीन—वि. [सं.] (१) ठीक। (२) उचित।

समीचीनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] ठीक, उचित या न्यायसंगत होने का भाव।

समीति—क्रि. वि. [सं.] प्रीति या मित्रता-भाव से। उ. जिनि पतियाहु मधुर सुनि बातैं लागे करन समीति।—२०५४।

संज्ञा स्त्री [सं. समिति] सभा, समाज।

समीप—क्रि. वि. [सं.] (१) पास, निकट। उ.—छहौं रस लै समीप सँचरै—१-११७। (२) सामने, तुलना में। उ.—कोटि स्वर्ग सम सुखउ न मानत हरि समीप समता नहिं पावत—३१४२।

समीपता—संज्ञा स्त्री. [सं.] समीप ही स्थित, निकटता।

समीपवर्ती—वि. [सं. समीपवर्त्तिन्] निकट का।

समीपस्थ—वि. [सं.] निकट का।

समीपै—क्रि. वि. [सं. समीप] पास, निकट। उ.—सुभग कर आनन समीपै मुरलिया इहिं भाइ—६२७।

समीर—संज्ञा पुं. [सं.] हवा, वायु। उ.—रघुपति रिस

पावक प्रचंड अति सीता-स्वास समीर— ९-१५८ ।

समीर—कुमार—संज्ञा पुं. [सं. समीर+कुमार] **हनुमान।**

समीरण—संज्ञा पुं [सं.] **हवा, वायु।**

समीहा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **चेष्टा।** (२) **इच्छा।**

समुंदर—संज्ञा पुं. [सं. समुद्र] **सागर, समुद्र।**

समुचित—वि. [सं.] (१) **उचित।** (२) **उपयुक्त।**

समुच्चय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कुछ चीजों का एक में मिलना।** (२) **ढेर, राशि, समूह।** (३) **एक अर्थालंकार।**

समुच्चयबोधक—संज्ञा पुं. [सं.] **व्याकरण में वह अव्यय जो दो शब्दों, पदों या वाक्यों को परस्पर जोड़ता हो।**

समुच्चित—वि. [सं.] (१) **ढेर या राशि-रूप में इकट्ठा किया हुआ।** (२) **एकत्र, संगृहीत।**

समुज्ज्वल—वि. [सं.] (१) **बहुत चमकीला।** (२) **बहुत प्रकाशमान।**

समुझ—संज्ञा स्त्री. [हिं समझ] **अक्ल, बुद्धि।** उ.—गुन अवगुन की समुझ न संका परि आई यह टेव—१-१५० ।

समुझत—क्रि. स. [हिं. समुझना] **समझता, बूझता या ध्यान में लाता है।** उ.—(क) मगन भयौ माया रस लंपट समुझत नाहिं हटी—१-९८ । (ख) जुग जुग जनम, मरन अरु बिछुरन, सब समुझत मत-भेव—१-१०० ।

समुझना, समुझनो—क्रि. स. [हिं. समझना] (१) **कोई बात विचार करके ध्यान में लाना।** (२) **किसी बात का स्वरूप आदि देखकर तद्विषयक अनुमान या कल्पना करना।**

समुझाइ—क्रि. स. [हिं. समुझाना] **अच्छी तरह बताकर या समझा-बुझाकर।** उ.—मन तोसौं किती कही समुझाइ—१-३१७ ।

समुझाईँ—क्रि. स. बहु. [हिं. समुझाना] **समझाया-बुझाया।** उ.—मानैं नहीं, कितौ समुझाईं—३९१ ।

समुझाई—क्रि. स. [हिं. समुझाना] **समझाया-बुझाया।** उ.—मन मैं सोच न करि तू माता, यह कहिकै समुझाई—९-८० ।

समुझाना, समुझानो—क्रि. स. [हिं. समुझना] (१) **समझाने की बात करना।** (२) **धीरज देना।**

समुझायो, समुझायौ—क्रि. स. [हिं. समझाया] (१) **समझाया-बुझाया।** (२) **धीरज दिया।**

संज्ञा पुं. **समझाने की क्रिया, भाव या उसका प्रभाव।** उ.—छिन छिन सुरति करत जसुमति की परत न मन समुझायो—१० उ.-७८ ।

समुझाव, समुझावा—संज्ञा पुं. [हिं. समुझाना] **समझने-समझाने की क्रिया या भाव।**

समुझावत—क्रि. स. [हिं. समुझाना] **समझाते-बुझाते हो, प्रबोधते हो।** उ.—मधुकर, हमहीं क्यों समुझावत—२९८९ ।

समुझावति—क्रि. स. [हिं समुझाना] **समझाती या प्रबोधती है।** उ.—जैहैं बिगरि दाँत ये आछे तातैं कहि समुझावति—१०-२२२ ।

समुझावही—क्रि. स. [हिं. समुझाना] **समझाता या प्रबोधता है।** उ.—सूर दुष्ट समुझावही त्यौं त्यौं जिय खरई—२८६१ ।

समुझावहु—क्रि. स. [हिं. समुझाना] **समझाते या प्रबोधते हो।** उ.—ऊधौ, हमैं कहा समुझावहु—३२०६ ।

समुझावै—क्रि. स. [हिं. समुझाना] (१) **बताता या सिखाता है।** उ.—बचन-रचन समुझावै—१-१८६ । (२) **समझाता या प्रबोधता है, समझाती या प्रबोधती है।** उ.—(क) सूरदास आपुहिं समझावै लोग बुरौ जिनि मानौ—१-६३ । (ख) ऐसौ पुरुषारथ सुनि जसुमति खीझति फिरि समुझावै—४८२ ।

समुझि—क्रि. स. [हिं. समुझना] **समझ-बूझकर, ध्यान देकर।** उ.—(क) रे मन, समुझि सोचि-बिचारि—१-३०९ । (ख) बौरे मन, समुझि-समुझि कछु चेत—१-३२२ ।

समुझिबी—क्रि. स. [हिं. समुझना] **समझ लो या लेंगे, जान लेंगे या लो।** उ.—इतने महि सब तात समुझिबी चतुर सिरोमनि नाह—२८६८ ।

समुझी—क्रि. स. [हिं. समुझना] **समझ में आयी।**
प्र.—समुझी न परी—**समझ में नहीं आई, जान नहीं पाया।** उ.—कौन भाँति हरि कृपा तुम्हारी, सो स्वामी समुझी न परी १-११५ ।

समुझे—वि. [हिं. समुझना] **समझने-बूझनेवाले।** उ.—सूरदास समुझे की यह गति, मन ही मन मुसुकायौ—४-१३१ ।

समुझैए—क्रि. स. [हिं. समुझना] **समझाइए-बुझाइए, प्रबोधिए।** उ.—कामी होइ काम आतुर तेहि कैसे कै समुझैए—२२७५।

समुझैहौं—क्रि. स. स्त्री., पुं. [हिं. समुझाना] **समझाऊँ-बुझाऊँगी, प्रबोधूँगी।** उ.—किहिं बिधि करि कान्हहिं समुझैहौं—१०-१८९।

समुझ्यो, समुझ्यौ—क्रि. स. [हिं. समझना] **समझ-बूझ सका, जान सका।** उ.—मैं अज्ञान कछू नहिं समझ्यौ परि दुख-पुंज सह्यो—१-४६।

समुद—संज्ञा पुं. [सं. समुद्र] **सागर, समुद्र।** उ.—(क) त्रिदसपति समुद के मथन के बचन जो सो सकल ताहि कहि कै सुनाए—८-८। (ख) हम लंकेस-दूत प्रतिहारी समुद तीर कौं जात अन्हाए—९-१२०।

समुदय—संज्ञा पुं. [सं] (१) **उदय।** (२) **दिन।** (३) **युद्ध।**

वि. **सब, कुल, समस्त।**

संज्ञा पुं. [सं. समुदाय] (१) **ढेर, राशि।** (२) **गरोह, झुंड, समूह।**

समुदाइ, समुदाई—संज्ञा पुं. [सं. समुदाय] **समूह, समुदाय।** उ.—सुख-संपति दारा-सुत झूठ सबै समुदाइ—१-३१७।

समुदाय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ढेर, राशि।** (२) **झुंड, समूह।**

समुदायो—संज्ञा पुं. [सं. समुदाय] **झुंड या समूह में।** उ.—सूर चले बन तें गृह को प्रभु बिहँसत मिलि समुदायो २३१६।

समुदित—वि. [सं.] (१) **उन्नत।** (२) **उत्पन्न।**

समुद्यत—वि. [सं.] **अच्छी तरह से तैयार।**

समुद्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सागर, उदधि।** उ.—आए तीर समुद्र के—९-७२। (२) **किसी विषय के ज्ञान, गुण आदि का बहुत बड़ा आगार।**

समुद्रकांची—संज्ञा स्त्री. [सं. समुद्रकाञ्ची] **पृथ्वी जिसकी मेखला समुद्र है।**

समुद्रकांता—संज्ञा स्त्री. [सं. समुद्रकान्ता] **नदी।**

समुद्रचुलुक—संज्ञा पुं. [सं.] **अगस्त्य मुनि जिन्होंने सारा समुद्र चुल्लुओं से पी डाला था।**

समुद्रज—वि. [सं.] **समुद्र से उत्पन्न।**

संज्ञा पुं. **मोती आदि रत्न जो समुद्र से उत्पन्न माने जाते हैं।**

समुद्रफेन—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र का फेन या झाग।**

समुद्री, समुद्रीय—वि. [सं. समुद्रीय] (१) **समुद्र का।** (२) **समुद्र में होनेवाला।**

समुन्नत—वि. [सं.] **भली भाँति उन्नत।**

समुन्नति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **यथेष्ट उन्नति।** (२) **महत्ता।** (३) **उच्चता।**

समुल्लास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आनंद, उल्लास।** (२) **ग्रंथादि का प्रकरण या परिच्छेद।**

समुहा—वि., क्रि. वि. [सं. सम्मुख] **सामने।**

समुहाइ, समुहाई—क्रि. अ. [हिं. समुहाना] (१) **सामने होकर।** उ.—(क) सोचति चली कुँवरि घर हीं तैं। खरिक गई समुहाइ—६७९। (ख) सुन्दरि गयी गृह समुहाइ—३९६। (ग) **मुकाबला या सामना करती है, सामने आकर अड़ती है।** उ.—माधौ, नैंकु हटकौ गाइ। ....। ढीठ, निठुर, न डरति काहूँ, त्रिगुन ह्वै समुहाइ—१-५६।

समुहाना—क्रि. अ. [सं. सम्मुख] (१) **सामने आना।** (२) **सामने आकर अड़ना, सामना करना।**

क्रि. अ. [हिं. समूह] **समूह बनाना, एकत्र होना।**

समुहाने—क्रि. अ. [हिं. समुहाना] **(किसी के) सामने या सम्मुख आ गये।** उ.—सुनि मृदु बचन देखि उन्नत कर हरषि सबै समुहाने—५०३।

समुहानो—क्रि. अ. [सं. सम्मुख] (१) **सामने आना।** (२) **सामना करना।**

समुहाहिं—क्रि. अ. [हिं. समूह] **एकत्र होकर, समूह बनाकर।** उ.—सूर राधा सहित गोपी चलीं ब्रज समुहाहिं—१३०६।

समूचा—वि. [सं. समुच्चय] (१) **सब, कुल।** (२) **बिना कटा-पिटा, पूरा, सारा।**

समूढ़—वि. [सं.] (१) **एकत्र, संचित।** (२) **भोगा हुआ।** (३) **ठीक, संगत।** (४) **हाल का जन्मा हुआ।** (५) **विवाहित।**

संज्ञा पुं. (१) **समूह।** (२) **भंडार, आगार।**

समूर—संज्ञा पुं. [सं.] **'शंबर' या 'साबर' मृग।**

वि. [सं. स+मूल] **मूलसहित।**

समूरा—वि. [सं. समस्त] **सारा, समूचा।**

वि. [सं. स+मूल] **मूल सहित।**

समूल—वि. [सं.] (१) **जिसमें जड़ या मूल हो।** (२) **जिसका कारण या हेतु हो।**

क्रि. वि. **जड़-मूल से।**

समूह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक तरह की चीजों का ढेर।** उ.—अधम-समूह उधारन कारन तुम जिय जक पकरी—१-१३०। (२) (**मनुष्यों का**) **समुदाय।** उ.—सैल-सिला-द्रुम बरषि ब्योम चढ़ि सत्रु-समूह सँहारौं—९-१०८।

समूहत:—क्रि. वि. [सं.] **सामूहिक रूप से।**

समृत—संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] (१) **ज्ञान जो स्मरण-शक्ति से प्राप्त हो।** (२) **साहित्य में किसी भूली बात का याद आना जो एक संचारी भाव है।** (३) **प्रियतम संबंधी बातों का याद आना जो पूर्वराग की दस अवस्थाओं में एक है।** (४) **हिंदू धर्म-शास्त्र।** उ.—समृत-बेद-मारग हरि-पुर कौं तातैं लियौ भुलाई—१-१८७।

समृद्ध—वि. [सं.] **धन-संपत्तिवाला।**

समृद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **धन-वैभव-संपन्नता।**

समृद्धी—वि. [सं. समृद्धिन्] **धन-वैभव बढ़ानेवाला।**

संज्ञा स्त्री. [सं. समृद्धि] **धन-वैभव-संपन्नता।**

समेटना, समेटनो—क्रि. स. [हिं. सिमटना] **बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना।**

समेत—वि. [सं.] **मिला हुआ, संयुक्त।**

अव्य. **साथ, सहित।** उ.—(क) अस्व समेत बभ्रु-बाहन लै सुफल जज्ञ-हित आए—१-२९। (ख) बल समेत नृप कंस बोलाए—२५६८। (ग) गज समेत तोहि डारौं मारी—२५८९।

समै—संज्ञा पुं. [सं. समय] **समय।** उ.—(क) सुरत समै के चिह्न राधिका राजत रंग भरे—२११४। (ख) तब तेहि समै आनि ऐरापति ब्रजपति सौं कर जोरे—१११८।

समैबो, समैबौ—संज्ञा पुं. [हिं. समाना] **जल में समाने या निमज्जित होने की क्रिया या भाव।** उ.—कैसै बसन उतारि धरैं हम कैसैं जलहिं समैबौ—७७९।

समैया—क्रि. स. [हिं. समाना] **समाता है।** उ.—फूँकि फूँकि जननी पय प्यावति, सुख पावति जो उर न समैया—१०-२२९।

समैहै—क्रि. स. [हिं. समाना] **समायगी, समा सकेगी।** उ.—जिन पै ते लै आए ऊधौ, तिनहिं के पेट समैहै—३१०५।

समैहौं—क्रि. स. [हिं. समाना] **समाऊँगी, समा जाऊँगी।** उ.—तजि अकास पिय भौन समैहौं—१२०७।

समो—संज्ञा पुं. [सं. समय] **समय।** उ.—अब वहि देस नंदनंदन कहँ कोउ न समो जनावत—२८३५।

समोई—क्रि. स. [हिं. समोना] **लीन हुई।**

प्र.—रही समोई—**समा गयी, लीन हो गयी।** उ.—कहा कहौं कछु कहत न आवै तन मन रही समोई—३१०३।

समोखना, समोखनो—क्रि. स. [स. सम्मुख] **बहुत जोर देकर कहना।**

समोधना, समोधनो—क्रि. स. [सं. सम्बोधन] **समझा-बुझाकर शांत करना या उचित मार्ग पर लाना।**

समोधे—क्रि. स. [हिं. समोधना] **समझा बुझाकर शांत किया।** उ.—ठानी कथा प्रबोधि तबहिं फिरि गोप समोधे—३४४३।

समोना, समोनो—क्रि. स. [हिं. समाना ?] **मिलाना।**

क्रि. अ. (१) **डूबना।** (२) **लीन होना।**

वि. [हिं. स+मोयन] (**पकवान**) **जिसमें मोयन मिला हो, जो** (**पकवान**) **मोयन मिलाने से बहुत मुलायम हो गया हो।**

समोयो, समोयौ—क्रि. स. [हिं. समोना] (१) **मिलाया।** उ.—तातौ जल आनि समोयौ अन्हवाइ दियौ, मुख धोयौ १०-१८३।

क्रि. अ. **मिल गया, लीन या विलीन हो गया।** उ.—जज्ञ समय सिसुपाल सुजोधा अनायास लै जोति समोयौ—१-५४।

मुहा. गरद समोयौ—**धूल में मिल गया, नष्ट हो गया।** उ.—सौ भैया दुरजोधन राजा, पल मैं गरद समोयौ—१-४३।

समोसा—संज्ञा पुं. [देश.] **एक नमकीन पकवान।**

समौ—संज्ञा पुं. [सं. समय] **समय।**

मुहा.—समौ गए तें—उपयुक्त समय या अवसर बीत जाने पर। उ.—(क) सुनि सुंदरि यह समौ गए तें पुनि न सूल सहि जैहै—२०३३। (ख) अब काहे जल मोचत सोचत समौ गए तें सूल नई —२५७।

समौ पहिचान—उपयुक्त समय या अवसर देखकर। उ.—करिये बिनती कमलनयन सों सूर समौ पहिचान—२५२२।

समौरिया—वि. [सं. सम + हिं. उमर] समान उम्र का।

सम्मत—वि. [सं.] जिसकी राय मिलती हो, सहमत।

सम्मति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) राय, सलाह। (२) अनुमति, आदेश। (३) मत, विचार अभिप्राय। उ.—सोचि-विचारि सकल स्रुति सम्मति, हरि तैं और न आगर—१-९१। (४) एकमत होना। (५) प्रस्ताव या विचार के पक्ष में दी जानेवाली अनुमति।

सम्मान—संज्ञा पुं. [सं.] गौरव, प्रतिष्ठा।

सम्मानना, सम्माननो—क्रि. स. [सं. सम्मान] आदर या सम्मान करना।

सम्मानित—वि. [सं.] (१) जिसका सम्मान किया गया हो। (२) जिसका सब सम्मान करें, प्रतिष्ठित।

सम्मान्य—वि. [सं.] आदर के योग्य।

सम्मिलन—संज्ञा पुं. [सं.] मिलना, मिलाप।

सम्मिलित—वि. [सं.] मिला हुआ, युक्त।

सम्मिश्रण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मिलने या मिलाने की क्रिया। (२) मेल, मिलावट।

सम्मुख—अव्यय [सं.] सामने, समक्ष।

सम्मुखी—संज्ञा पुं. [सं. सम्मुखिन्] दर्पण, मुकुर।

वि. जो सामने या समक्ष हो।

सम्मुखीन—वि. [सं.] जो सामने हो।

सम्मुहँ, सम्मुहें, सम्मुहौं, सम्मुहौं—क्रि. वि. [सं. सम्मुख] सामने, समक्ष।

सम्मेलन संज्ञा पुं. [सं.] (१) सभा, समाज। (२) जमावड़ा, जमघट। (३) मिलाप, संगम।

सम्मोह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रेम। (२) भ्रम, संदेह। (३) बेहोशी, मूर्छा। (४) एक छंद।

सम्मोहक—वि. [सं.] मोहनेवाला, लुभावना।

सम्मोहन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मोहित या मुग्ध करने की क्रिया। (२) एक प्राचीन-अस्त्र जिससे शत्रु-पक्ष को मोहित कर लिया जाता था। (३) कामदेव के पाँच बाणों में एक।

वि. जिससे मोह उपजे, मोहकारक।

सम्यक, सम्यक्—वि. [सं. सम्यक्] पूरा, सब।

क्रि. वि. (१) सब प्रकार से। (२) भली भाँति।

सम्राज्ञी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सम्राट की पत्नी। (२) साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट, सम्राट्—संज्ञा पुं. [सं. सम्राज] बड़ा राजा।

सम्रित, सम्रिति—संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] (१) वह ज्ञान जो स्मरणशक्ति से प्राप्त होता रहता है। (२) याद, स्मरण। (३) किसी पुरानी या भूली हुई बात का स्मरण हो आना जो एक संचारी भाव माना गया है। (४) प्रियतम के संबंध में पुरानी बातों का रह-रहकर याद आना जो पूर्वराग की दस अवस्थाओं म एक है। (५) वे हिंदू धर्मशास्त्र जिनकी रचना वेदों का स्मरण-चिंतन करके की गयी थी। (६) 'स्मरण' नामक अलंकार।

सम्हरना, सम्हरनो, सम्हलना, सम्हालनो—क्रि अ. [हिं. सँभलना] (१) किसी बोझ आदि का रोका या कर्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सकना। (२) आधार या सहारे पर रुका या टिका रहना। (३) सावधान होना। (४) बचाव करना। (५) रोग से छूटकर स्वस्थता प्राप्त करना। (६) सुधरना।

सम्हार, सम्हाल—संज्ञा पुं. [हिं. सँभाल, सँभार] (१) रक्षा। (२) पोषण या देखभाल का भार। (३) तन-बदन या शरीर की सुध। उ.—तन की सुधि-सम्हार कछु नाहीं—७९९।

क्रि. स. [हिं. सम्हालना] सुधार या बनाकर।

प्र.—दीन्ही बात सम्हार—बात सुधार या बना दी। उ.—हीरा जनम दियौ प्रभु हमकौं, दीन्ही बात सम्हार—१-१९६।

सम्हारत, सम्हालत—क्रि. स. [हिं. सम्हारना, सम्हालना] सुधारता है। उ.—पछिले कर्म सम्हारत नाहीं, करत नहीं कछु आगैं—१-६१।

सम्हारति, सम्हालति क्रि. स. [हिं. सम्हारना, सम्हा-

लना] (१) **ठीक या व्यवस्थित रखती है।** उ.—आनँद उर अंचल न सम्हारति सीस सुमन बरसावति –१०-२३। (२) **बुरी दशा में जाने से बचाती या रक्षा करती है।** उ.—पद-रिपु पट अँटक्यौ न सम्हारति उलट न पलट खरी—६५९।

सम्हारन—संज्ञा पुं. [हिं. सम्हारना] **'सम्हालने' की क्रिया या भाव।**

प्र.—सम्हारन लागे—**समेटने, बटोरने या इकट्ठा करने लगे।** उ.—मरती बेर सम्हारन लागे जो कछु गाड़ि धरी—१-७१।

सम्हारना, सम्हालना—क्रि. स. [हिं. सँभालना] (१) **भार ऊपर लेना।** (२) **रोककर वश में रखना।** (३) **गिरने न देना।** (४) **रक्षा करना।** (५) **बुरी दशा में जाने से बचाना।** (६) **पालन-पोषण या देखरेख करना।** (७) **ठीक तरह से काम करना।** (८) **ठीक या व्यवस्थित रखना, अस्तव्यस्त न होने देना।** (९) **सहेजना।** (१०) **सुधार लेना।**

सम्हारहुगे, सम्हालहुगे—क्रि. स. [हिं. सम्हारना, सम्हालना] **निभाओगे।** उ.– अपनौ बिरद सम्हारहुगे तौ यामैं सब निबरी—१-१३०।

सम्हारि, सम्हालि—क्रि. स. [हिं. सम्हारना, सम्हालना] (१) **सँभालो।**

मुहा.—सुरति सम्हारि **होश में आओ, सचेत या सावधान हो जाओ।** उ.—भली भई अबकैं हरि बाँचे अब तौ सुरति सम्हारि—१०-७९।

(२) **भार आदि रोका या उठा सका।** उ.—वातैं दूनी देह धरी, असुर न सक्यौ सम्हारि—४३१। (३) **सुधार या सम्हाल लेती है।** उ.- ज्यौं बालक अपराध सत जननी लेति सम्हारि—४९२। (४) **रक्षा करके।**

मुहा.—लैहैं सम्हारि—**रक्षा कर सकेगा।** उ.—सूर कौन सम्हारि लैहै चढ़यौ इंद्र प्रचारि—९५०। नाहिंन परत सम्हारि—**धैर्य नहीं रह जाता, धीरज छटने लगता है।** उ.– सूर प्रभु ब्रत देखि इनको नाहिंन परत सम्हारि - ७७७।

सम्हारी, सम्हाली—क्रि. स. [हिं. सम्हारना, सम्हालना] (१) **बचायी, रक्षा की।** उ.—अंबर हरत द्रुपद-तनया की दुष्ट-सभा मधि लाज सम्हारी—१-२२। (२) **मनोवेग को रोका, सम्हाला।**

प्र.—नहिं सके सम्हारी—**मनोवेग की रोक नहीं सके, अधीर या द्रवित हो गये।** उ.—थर थर अंग कँपति सुकुमारी। देखि स्याम नहिं सके सम्हारी —७९९।

सम्हारे, सम्हाले—क्रि. अ. [हिं. सम्हारना, सम्हालना] **सचेत या सावधान हुए, ध्यान दिया।** उ.—देवबानी भई जीत भई राम की ताउ पै मूढ़ नाहीं सम्हारे १० उ.—३३।

सम्हारै, सम्हालै—क्रि. स. [हिं. सम्हारना, सम्हालना] (१) **रक्षा करता है, बचाता या सुधारता है।** उ.—हरि तोहिं बारंबार सम्हारै – २०३८। (२) **सम्हालकर, सचेत या सावधान होकर।** उ.—तब झुकि बोली ग्वालि बात किन कही सम्हारै—१०१४।

सम्हारो, सम्हारौ, सम्हालो, सम्हालौ—क्रि. स. [हिं. सम्हारना, सम्हालना] **बचाता या सँभालता है।** उ.—लोटत पीत पराग कीच में नीच न अंग सम्हारो—२९९०।

सम्हारयो, सम्हारयौ, सम्हाल्यो, सम्हाल्यौ—क्रि. स. [हिं. सम्हारना, सम्हालना] **बचाया, रोका, रक्षा की, सँभाला।**

प्र० नहिं जात सम्हारयौ - **बचा नहीं सका, रोक या सँभाल नहीं सका।** उ.—निरतत पद पटकत फन-फन-प्रति, बमत रुधिर, नहिं जात सम्हारयौ—५६४।

सयन—संज्ञा पुं. [सं. शयन] **सोना, निद्रित होना, शयन।** उ.—(क) देखि सयन-गति त्रिभुवन कंपै, ईस बिरंचि भ्रमावै—१०-६५। (ख) छीरसमुद्र सयन संतत—३९२।

सयल—संज्ञा पुं. [सं. शैल] **पर्वत, शैल।**

वि. [सं. सकल] **सब, समस्त।**

सयान—संज्ञा पुं. [हिं. सयाना] (१) **चतुरता, चालाकी, सयानापन।** उ.—(क) व्याकुल रिस तन देखि कै सब गयौ सयान—२२६९। (ख) देखौं सकल सयान तिहारो लीने छोरि फटके—३१०७। (२) **समझदारी।** उ.—(क) तब लगि सबै सयान रहै—६४६।

(ख) **अब यह कौन सयान बहुरि ब्रज जा कारन उठि** आए हो—२९८६। (३) **सार, तत्व, बुद्धिमत्ता।** उ.—नाहिनैं कछू सयान ज्ञान में इह नीके हम जानैं—३२११। (४) **बुद्धि, विवेक।** उ.–एतो बालक अजान देखो, उनके सयान कहा—२६०४।

सयानप, सयानपन—संज्ञा पुं. [हिं. सयाना, सयानपन] (१) **चालाकी, चतुरता।** उ.—तेरे तनक मान मोहन के सबै सयानप भूले—२०७५। (२) **समझदारी।** उ.—(क) बाँधन गए, बँधायौ आपुन, कौन सयानप कीन्हौ—८-१५। (ख) सूरदास बिरही क्यौं जीवै कौन सयानप एहू—३३८२।

सयाना—वि. [सं. सज्ञान] (१) **पूर्ण अवस्था का, वयस्क।** (२) **चतुर, चालाक, बुद्धिमान।** (३) **धूर्त।**

सयानी—वि. स्त्री. [हिं. सयाना] (१) **पूर्ण या परिपक्व अवस्था की, वयस्क।** उ.—भली बुद्धि तेरैं जिय उपजी बड़ी बैस अब भई सयानी—३६८। (२) **चतुर, चालाक, बुद्धिमती।** उ.—(क) औरनि सों दुराव जो करती तौ हम कहतीं भली सयानी—१२६२। (ख) तुम इह कहति सबै वह जानति, हम सब तैं वह बड़ी सयानी—१२८४। (ग) जिनि सोचहु सुखमान सयानी—२८५३। (३) **चतुराई से भरी हुई।** उ.–लोग सब कहत सयानी बातैं—२७१३।

सयाने, सयानैं—वि. बहु. [हिं. सयाने] (१) **पूर्ण या परिपक्व अवस्था के, वयस्क।** उ.—(क) द्वै बालक बैठारि सयाने, खेल रच्यौ ब्रज-खोरी—६०४। (ख) गोप-बालक कछु सयाने, नंद के सुत बाल—६१०। (ग) सूर स्याम अब होहु सयाने बैरिनि के मुख खेहु—१००४। (घ) रूठेहिं आदर देत सयाने, इहै सूरज सगाइए—१६८८। (२) **चतुर, बुद्धिमान।** उ.—(क) जा जस कारन देत सयाने तन-मन-धन सब साजु—२८५१। (ख) सूर सपथ दै ऊधौ पूछो इहिं ब्रज कौन सयानै—३२११।

सयानो, सयानौ—वि. [हिं. सयाना] (१) **चतुर, बुद्धिमान।** उ.—और काहि बिधि करौं तुमहिं तैं कौन सयानौ—४९२। (२) **चतुरतापूर्ण, बुद्धिमानी का।** उ.—कीजै कछु उपकार परायो यहै सयानो काज—२८५१।

सयान्यो, सयान्यौ—संज्ञा पुं. [हिं. सयाना] **चतुरता, सयानापन।** उ.—चूक परी मोको सबही अँग कहा करौं गई भूलि सयान्यो—१४६०।

सरंजाम—संज्ञा पुं. [अ. सर+अंजाम] (१) **कार्य की समाप्ति।** (२) **प्रबंध, व्यवस्था।** (३) **सामान।**

सर—संज्ञा पुं. [सं. सरस्] **ताल, तालाब, जलाशय।** उ.—मानहु मकर सुधा-सर क्रीड़त—६४५।

संज्ञा पुं. [सं. शर] **तीर, बाण।** उ.—(क) सूर-दास सर लग्यौ सचानहिं—१-९७। (ख) धर्म कहैं सर-सयन गंग-सुत तेतिक नाहिं सँतोष—१-२१५।

संज्ञा स्त्री. [सं. सदृश] **बराबरी, समानता।** उ.—(क) ब्रज-जुवती ब्रजजन ब्रजवासी कहत स्याम सर कौन करै—९८९। (ख) कहाँ स्याम की तुम अर्धांगिनि, मैं तुम सर की नाहीं—२९३७।

मुहा.—(किसी का) सर पूजना—**(किसी की) बराबरी का सकना, (किसी के) समान हो सकना।**

संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **सिर।** (२) **सिरा।** (३) **चरम सीमा।**

मुहा.—सर (तक) पहुँचाना—**ठिकाने, हद या चरम सीमा तक पहुँचाना।**

वि. (१) **पराजित किया हुआ।** (२) **बलपूर्वक दबाया हुआ।** (३) **प्रभावित, अभिभूत।**

मुहा.—सर करना—(१) **वश में करना, दबाना।** (२) **खेल में हराना या पराजित करना।**

संज्ञा पुं. [सं. अवसर से अनु.] (१) **ऐसा अवसर जो कार्य-विशेष के उपयुक्त न हो।** (२) **जब अवसर या अवकाश हो।** उ.—सेवा यहै नाम सर-अवसर जो काहूहिं कहि आयो—१-१९३।

मुहा.—सर-अवसर न जानना (देखना या समझना)—**यह न सोचना कि अमुक कार्य के लिए कोई अवसर उपयुक्त या अनुकूल है या नहीं।** सर-अवसर नहिं जान्यो—**यह न समझा कि अमुक कार्य के लिए उपयक्त या अनुकूल अवसर है या नहीं।** उ.—नृप सिसुपाल महापद पायौ, सर-अवसर नहिं जान्यो।

क्रि. वि. [अनु.] 'सर-सर' **की ध्वनि के साथ।** उ.

— साँटी दीन्हीं सर-सर—३७३।

सरई—क्रि. अ. [हिं. सरना] (काम) हो सकता या चल सकता है, पूरा पड़ सकता है। उ.— आगैं बृच्छ फरै जो बिष-फर, बृच्छ बिना किन सरई—१०-४।

सरंकडा—संज्ञा पुं. [सं. शरकांड] 'सरपत' की तरह की एक वनस्पति जिसकी छड़ें गाँठदार होती हैं।

सरक—संज्ञा स्त्री. [हिं. सरकना] (१) 'सरकने' की क्रिया या भाव, चलना, खिसकना। (२) नशे की खुमारी। उ.—बारंबार सरक मदिरा की अपरस रटत उघारे—२९९०। (३) मद्यपात्र। (४) यात्री-दल।

सरकना, सरकनो—क्रि. अ. [हिं. खिसकना या सं. सरण] (१) खिसकना, किसी तरह हटना। (२) नियत काल से आगे टल जाना। (३) काम चलना, निर्वाह होना।

सरकश—वि. [फ़ा.] (१) नटखट, शरारती। (२) उद्दंड। (३) शासन या नियंत्रण न माननेवाला।

सरकार—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) स्वामी। (२) शासनसत्ता।

सरकारी—वि. [फ़ा.] (१) स्वामी का। (२) शासन का।

सरकि—क्रि. अ. [हिं. सरकना] किसी ओर को खिसक या हटकर।

प्र.—सरकि रही—एक ओर को खिसक या हट रही है। उ.—सूरदास मदन दहत पिय प्यारी सुनि ज्यों क्यों कह्यो, त्यों त्यों बरु उतकों सरकि रही—२२३६।

सरक्क—वि. [हिं. सरक] मस्त, मत्त।

सरखत—संज्ञा पुं. [फ़ा. सरख़त] वह कागज जिस पर किराये, लेनदेन आदि की शर्तें लिखी हों।

सरग—संज्ञा पुं. [सं. स्वर्ग] (१) स्वर्ग। उ.—मोकौं पंथ बतायौ सोई नरक की सरग लहौं—१-१५१। (२) सुखदायी स्थान। (३) सुख-शांतिपूर्ण परिवार।

सरगतिया, सरगतीय—संज्ञा[स्त्री. सं. स्वर्ग+हिं. त्रिया] (१) अप्सरा। (२) देवांगना।

सरगना—क्रि. अ. [देश.] डींग हाँकना।

संज्ञा पुं. [फ़ा. सरग़ना] सरदार, अगुवा।

सरगम—संज्ञा पुं. [हिं. स रे ग म] संगीत में सात स्वरों का समूह या उनके चढ़ाव-उतार का क्रम।

सरगर्म—वि. [फ़ा.] (१) जोशीला। (२) उत्साही।

सरगर्मी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) जोश। (२) उत्साह।

सर-घर—संज्ञा पुं. [सं. शर=तीर+हिं. घर] तरकश।

सरघा—संज्ञा स्त्री. [सं.] मधुमक्खी।

सरज—संज्ञा पुं. [सं. सर+ज] कमल। उ.—प्रफुलित सरज सरोवर सुंदर—२८५३।

सरजना, सरजनो—क्रि. स. [हिं. सिरजना] (१) रचना, बनाना। (२) उत्पन्न या तैयार करना।

क्रि. अ. (१) बनना, रचा जाना। (२) उत्पन्न होना।

सरजा—संज्ञा पुं. [फ़ा. सरजाह या अ. शरज:] (१) सरदार। (२) शेर, सिंह। (३) शिवाजी का एक नाम।

सरजिव—वि. [सं. सजीव] (१) जीवित। (२) ओजपू[illegible]। (३) प्रभावशाली। (४) सशक्त।

सरजी—क्रि. अ. [हिं. सरजना] बनी (हैं), रची गयी (हैं)। उ.—बिरह सहन को हम सरजी हैं।

सरजीवन—वि. [सं. संजीवन] (१) जिलाने या जीवन-शक्ति देनेवाला। (२) हरा-भरा, ताजा। (३) उपजाऊ, उर्वर। (४) प्रसन्न या प्रफुल्ल करनेवाला।

संज्ञा स्त्री. संजीवनी (बूटी)।

सरजोर—वि. [फ़ा. सरज़ोर] (१) बलवान। (२) जबरदस्त, प्रबल। (३) उद्दंड। (४) विद्रोही।

सरजोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सरजोर] (१) जबरदस्ती, प्रबलता। (२) उद्दंता। (३) विद्रोह।

सरट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छिपकली। (२) गिरगिट।

सरण—संज्ञा पुं. [सं.] सरकना, खिसकना।

सरणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) रास्ता, मार्ग। (२) ढर्रा, ढंग। (३) पगडंडी। (४) लकीर, रेखा।

सरत—क्रि. अ. [हिं. सरना] (काम बनता या चलता है। उ.—इहिं बिधि भ्रमत सकल निसि दिन गत कछु न काज सरत—१-५५।

सरता बरता—संज्ञा पुं. [हिं. बरतना+अनु. सरतना] बँटाई।

मुहा.—सरता बरता करना—किसी तरह आपस में ही बाँट-बँटाई करके काम चला लेना।

सर-ताज—संज्ञा पुं. [हिं. सिरताज] (१) मुकुट। (२) शिरोमणि। (३) सरदार, नायक। (४) स्वामी।

सरद—वि. [फ़ा. सर्द] (१) शीतल। (२) सुस्त।

संज्ञा स्त्री. [हिं. शरद] **शरद ऋतु।** उ.— ब्रज प्राची राका तिथि जसुमति, सरद सरस रितु नंद — १३३१।

सरदई – वि. [हिं. सरदा] **'सरदा' फल के, हलका हरापन लिए हुए, पीले रंग का।**

संज्ञा पुं. **हल्का हरापन लिये पीला रंग।**

सर-दर—क्रि. वि. [फ़ा. सर+दर=भाव] (१) **एक सिरे से।** (२) **सब मिलाकर, औसत में।**

सरदा—संज्ञा पुं. [फ़ा. सर्दः] **एक तरह का खरबूजा।**

सरदार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **नायक, अगुआ।** उ.—तुम अपने चित सोचत जा को असुरन के सरदार—२३-७७। (२) **शासक।** (३) **रईस, अमीर।**

सरदारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सरदार] **नायक या प्रधान का पद, कार्य का भाव।**

सरदियाना, सरदियानो—क्रि. अ. [हिं. सरदी] (१) **सरदी से ठंडा हो जाना।** (२) **आवेश शांत होना।**

सरदी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सर्दी] (१) **ठंढक।** (२) **जाड़ा।**

सर-धन—संज्ञा पुं. [सं. शर+हिं. धरना] **तरकश।**

सरधा - संज्ञा स्त्री. [सं. श्रद्धा] **श्रद्धा।**

सरन संज्ञा स्त्री. [सं. शरण] **रक्षा, आश्रय।** उ.—(क) इहिं कलिकाल-ब्याल-मुख ग्रासित सूर सरन उबरै—१-११७। (ख) सरन आए की प्रभु लाज धरिए—१-१८०। (ग) पटपटात टूटत अँग जान्यौ सरन-सरन सु पुकारचौ—५५६।

सरनगत—वि. [सं. शरणागत] **शरण में आया हुआ।**

प्र.—सरनगत भऐं—**शरण में जानेपर।** उ.—सूरदास गोपाल सरनगत भऐं न कौ गति पावत—१-१८१।

सरना, सरनो—क्रि. अ. [सं. शरण] (१) **सरकना, खिसकना।** (२) **हिलना-डोलना।** (३) **काम चलना, उद्देश्य सिद्ध होना, पूरा पड़ना।** (४) **किसी के काम या उपयोग में आना।** (५) **किया जाना, निबटना, संपादित होना।** (६) **निभना, पटना, परस्पर सद्भाव या प्रेम-भाव रहना।**

सरनाई—संज्ञा स्त्री. [सं. शरण] **आश्रय, रक्षा।** उ.—(क) सूर कुटिल राखौ सरनाई—१-२०१। (ख) इतनी कृपा करी नहिं काहू, जिनि राखे सरनाई—५५७।

वि. **आश्रय या रक्षा में लेनेवाले, शरण में रखनेवाले।** उ.—नमस्कार करि बिनय सुनाई, राखि राखि असरन-सरनाई—६-५।

सरनागत—वि. [सं. शरणागत] **शरण में आया हुआ।** उ.—(क) सरनागत की ताप निवारी—१-१२८। (ख) अर्जुन कह्यौ, जानि सरनागत, कृपा करौ ज्यौं पूर्व करी—१-२६८।

सरनाम—वि. [फ़ा.] **प्रसिद्ध, विख्यात।**

सरनी—संज्ञा संज्ञा [सं. सरणी] (१) **ढंग, रीति।** उ.—(क) ब्रज-जुवती सब देखि थकित भइँ सुन्दरता की सरनी—१०-१२३। (२) **रास्ता, पगडंडी, [illegible]।** (३) **लकीर, लीक, रेखा।**

सरनैं – संज्ञा स्त्री. सवि. [सं. शरण] **शरण में।** उ.—बलि सुरपति कौं बहु दुख दयौ, तब सुरपति हरि-सरनैं गयौ—८-७।

सरपंच – संज्ञा पुं. [फा. सर+हिं. पंच] **पंचों में प्रधान, पंचायत का सभापति।**

सरपंजर, सरपँजरा, सरपिंजरो, सरपिंजरौ—संज्ञा पुं. [सं. शर+हिं. पिंजरा] **बाणों का बना हुआ घेरा।** उ.—अर्जुन तब सर-पिंजर कियौ। पवन सँचार रहन नहिं दियौ—ना. ४३०९।

सरप—संज्ञा पुं. [सं. सर्प] **साँप।**

सरपट—क्रि. वि. [सं. सर्पण] **घोड़े की तेज चाल की तरह दौड़ते हुए।**

सरपत—संज्ञा पुं [सं. शरपत्र] **एक तरह की घास जिससे छप्पर आदि छाये जाते हैं।**

सरपना, सरपनो—क्रि. अ. [सं. सर्पण] (१) **सरकना, खिसकना।** (२) **धीरे-धीरे आगे बढ़ना।**

सरपरस्त—वि. [फ़ा.] (१) **रक्षक।** (२) **अभिभावक।**

सरपरस्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **रक्षा।** (२) **अभिभावकता।**

सरपेच—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **पगड़ी के ऊपर की कलगी।**

सरफराना, सरफरानो—क्रि. अ. [अनु.] **घबराना।**

सरबंगी—वि. [सं. सर्वज्ञ] **सर्वज्ञ।** उ.—सूधी कहै सबन समुझावत हे साँचे सरबंगी - २९९७।

सरबंधी—वि. [सं. शरबंध] **तीरंदाज, धनुर्धर।**

संज्ञा पुं. [सं. सम्बन्धी] **संबंधी।**

सरब—वि. [सं. सर्व] (१) **सब।** (२) **पूरा।**

सरबज्ञ—वि. [सं. सर्वज्ञ] **सब कुछ का ज्ञाता।** उ.—(क) तुम सरबज्ञ सबै बिधि समरथ असरन-सरन मुरारि—१-१११। (ख) सूर स्याम सरबज्ञ कृपानिधि—१-१२१।

सरबर—संज्ञा स्त्री. [हिं. सर+अनु. बर] **बराबरी, समानता।** उ.—(क) सेवक करै स्वामि सों सरबर इनि बातनि पति जाइ—९८५। (ख) मूरख, उन तुम सरबर करै—१० उ.-३२।

वि. **बराबर, समान।**

संज्ञा स्त्री. [अनु.] **व्यर्थ की या बहुत बढ़-चढ़कर की जानेवाली बात।**

सरबरन—वि. [हिं. सरबर] **समान, तुल्य।** उ.—कृष्ण-पद-मकरंद पावन और नहिं सरबरन—१-३०८।

सरबरना, सरबरनो—क्रि. अ. [हिं. सरबर] **(किसी की) बराबरी या समता करना।**

सरबरि, सरबरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सर-बर] **बराबरी, समानता।** उ.—(क) ताकी सरबरि करै सो झूठौ, जाहि गोपाल बड़ौ करैं—१-०३४। (ख) जब लगि जिय घटअंतर मेरैं कौ सरबरि करि पावै—१-२७५। (ग) खगपति सौं सरबरि करी तू—५८९।

वि. **बराबर, समान।** उ.—दिननि हमहूँ तुम सरबरी, तुव छवि अधिकाई—पृ. ३१७ (६१)

संज्ञा स्त्री. [सं. शर्वरी] **रात, रात्रि।**

सरबस—संज्ञा पुं. [सं. सर्वस्व] **सारी संपत्ति और जमा-पूँजी, सब कुछ।** उ.—(क) सिव कौ धन संतनि कौ सरबस, महिमा बेद-पुरान बखानत—१-११४। (ख) सरबस लै हरि धरयौ सबनि कौ—६५४।

सरबोर—वि. [हिं. सराबोर] **तरबतर, खूब तर।**

सरभ—संज्ञा पुं. [सं. शरभ] (१) **पशु (हाथी, शेर, ऊँट, बानर आदि)।** (२) **टिड्डी।**

सरम—संज्ञा स्त्री. [हिं. शरम] **हया, लाज।** उ.—(क) सूर सुहरि अब मिलहु कृपा करि बरबस सरम करत हठ हम सन—१६८७। (ख) रिसन उठी भहराइ झटकि भुज छुवत कहा पिय सरम नहीं—२१४२।

सरमा—**संज्ञा स्त्री.** [सं.] (१) **देवताओं की एक कुतिया जिसका उल्लेख ऋग्वेद में है।** (२) **कुतिया।**

सरमाइ—क्रि. अ. [हिं. शरमाना] **लजाता या लजाती है।** उ.—(क) नासिका सुक नयन खंजन कहत कवि सरमाइ—१२९४। (ख) उरज परसत स्याम सुन्दर नागरी सरमाइ—१८४९।

सरमाई—क्रि. अ. [हिं. शरमाना] **लज्जित हुआ या हुई।**

प्र.—गए सरमाई—**लज्जित हो गये।** उ.—यह सुनि अमर गए सरमाई—१०६५।

सरमात—क्रि. अ. [हिं. शरमाना] **लजाता या लज्जित होता है।** उ.—तुम तौ अति ही करत बड़ाई, मन मेरो सरमात—१४२४।

सरमाना—क्रि. अ. [हिं. शरमाना] **लज्जित होना।**

सरमानी—क्रि. अ. [हिं. शरमाना] **लज्जित हुई।** उ.—बेसरि नाउँ लेत सरमानी तब राधा झहरानी—१५-३४।

सरमाने—क्रि. अ. बहु. [हिं. शरमाना] **लज्जित हुए।** उ.—हम तौ आज बहुत सरमाने मुरली टेरि बजायो—१७००।

सरमानो—क्रि. अ. [हिं. शरमाना] **लज्जित होना।**

सरमाया—संज्ञा पुं. [फ़ा. सरमाय:] **पूँजी, संपत्ति।**

सरमिष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं. शर्मिष्ठा] **दानवराज वृषपर्वा की पुत्री जो दानव-गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी की प्रसन्नता के लिए उसकी दासी बनकर राजा ययाति के यहाँ गयी थी और राजा से जिसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे।** उ.—कह्यौ, सरमिष्ठा, सुत कहँ पाए? उनि कह्यौ, रिषि किरपा तैं जाए—९-१७४।

सरमैहौ—क्रि. अ. [हिं. शरमाना] **लज्जित होगे, शरमाओगे।** उ.—सूर स्याम राधा की महिमा रहै जानि सरमैहौ—१४९८।

सरयू—संज्ञा स्त्री. [सं.] **उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी जिसका नाम ऋग्वेद में है और जिसके किनारे पर प्राचीन अयोध्या नगरी बसी थी।**

सरसात—क्रि. अ. [हिं. सरराना] **वेग से हवा चलती है।** उ.—घटा घनघोर घहरात अररात दररात सररात ब्रज लोग डरपे—९४६।

सरराना, सररानो—क्रि. अ. [अनु. सर सर] **वेग से हवा**

बहने या उसमें किसी चीज के वेग से चलने का शब्द होना ।

सरल—वि. [सं.] (१) जो टेढ़ा न हो, सीधा। (२) सीधा-सादा, भोलाभाला। (३) सहज, सुगम।

सरलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सीधापन। (२) सिधाई, भोलापन। (३) सहजता, सुगमता।

सरवंग—संज्ञा पुं. [सं. सर्वांग] (१) संपूर्ण शरीर। (२) किसी चीज, काम या बात के सब भाग या अंग।

क्रि. वि. सब प्रकार से।

सरवन—संज्ञा पुं. [सं. श्रमण] अंधक मुनि का पुत्र जो माता-पिता को बहँगी में बिठाकर तीर्थ-यात्रा कराने के कारण अपनी मातृ-पितृ-भक्ति के लिए प्रसिद्ध है। (२) मातृ-पितृ-भक्त पुत्र। (३) श्रमण।

वि. मातृ-पितृ-भक्त (पुत्र)।

संज्ञा पुं. [सं. श्रवण] कान।

सरवर—संज्ञा पुं. [सं. सरोवर] तालाब, जलाशय। उ.—(क) सरवर नीर भरै, भरि उमड़ै—१-२६५। (ख) मानौं चारि हंस सरवर तैं बैठे आइ सदेहियाँ - ९-१९।

सरवर, सरवरि, सरवरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सदृश, प्रा. सरिस + वर] (१) बराबरी, समानता। उ. - सूरदास ह्याँ की सरवरि नहिं कल्पबृच्छ सुरधेनु - ४९१। (२) स्पर्धा, होड़।

सरवरिया—वि. [हिं. सरवार] सरयूपार का।

संज्ञा पुं. सरयूपारी (व्यक्ति)।

सरवांक, सरवाक—संज्ञा पुं, [सं. शरावक] (१) डिबिया। (२) प्याला, कटोरी। (३) सकोरा।

सरवान—संज्ञा पुं. [देश.] (१) तंबू। (२) झंडा।

सरवार—संज्ञा पुं. [सं. सरयू + पार] सरयू नदी के उस पार का प्रदेश।

सरस—संज्ञा पुं. [सं. सरस्] सरोवर।

वि. [सं.] (१) रसीला, रसयुक्त। (२) गीला, तर। उ.—(क) ह्वै गयौ सरस समीर दुहूँ दिसि—९५७। (ख) सरस बसन तन पोंछि स्याम को—१०-२२६। (३) हरा-भरा और ताजा। (४) सुंदर, मनोहर। उ.—(क) संबत सरस बिभावन—१०-८६। (ख) ब्रज-प्राची राकातिथि जसुमति सरद सरस रितु नंद—१३३१। (ग) स्यामा निसि में सरस बनी री—१५९९। (५) मीठा, मधुर। (६) जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो, भावपूर्ण। (७) रसिक, भावुक, सहृदय।

सरसई—संज्ञा स्त्री. [सं. सरस्वती] शारदा, भारती।

संज्ञा स्त्री. [सं. सरस] (१) सरसता, रसपूर्णता। (२) हरापन, ताजापन।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सरसों] फलों के सरसों बराबर छोटे दाने या अंकुर जो पहले दिखायी देते हैं।

सरसता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) 'सरस' होने का भाव। (२) रसीलापन। (३) रसिकता। (४) सुंदरता। (५) मधुरता। (६) भावपूर्णता।

सरसना, सरसनो—क्रि. अ. [सं. सरस] (१) हरा होना, पनपना। (२) बढ़ना, वृद्धि या उन्नति को प्राप्त होना। (३) सोहना, शोभित होना। (४) रसपूर्ण होना। (५) कोमल भाव की उमंग में भरना।

सरसब्ज—वि. [फ़ा. सरसब्ज़] (१) हरा-भरा, लहलहाता हुआ। (२) जहाँ हरियाली हो। (३) जहाँ सुख हो।

सर-सर—संज्ञा पुं. [अनु.] (१) जमीन पर (सर्प-जैसी) रेंगने की ध्वनि। (२) हवा के चलने से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि. वि. 'सर-सर' की ध्वनि के साथ। उ.—साँटी दीन्हीं सर-सर—३७३।

सरसराना, सरसरानो—क्रि. अ. [अनु. सर सर] (१) सर-सर की ध्वनि होना। (२) वायु का सर-सर ध्वनि करते हुए बहना। (३) (सर्प जैसे) कीड़े का तेजी से चलना। (४) जल्दी-जल्दी कोई काम होना।

सरसराहट—संज्ञा पुं. [हिं. सरसर + आहट] (१) (साँप आदि के) रेंगने की ध्वनि। (२) तेजी से हवा के चलने का शब्द। (३) शरीर पर रेंगने-जैसा अनुभव, सुर-सुराहट।

सरसरी—वि. [फ़ा. सरासरी] जो (दृष्टि) जमी हुई या एकाग्र न हो, जो जल्दी की हो।

क्रि. वि. मोटे तौर पर, स्थूल रूप से।

सरसाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सरस] (१) सरसता। (२) शोभा, सुंदरता। (३) अधिकता।

वि. हरी-भरी, ताजी।

क्रि. अ. [हिं. सरसाना] शोभित हुई।

सरसाना, सरसानो—क्रि. स. [हिं. सरसना] (१) रस से पूर्ण या युक्त करना। (२) हरा-भरा करना।
क्रि. अ. (१) हरा-भरा होना। (२) बढ़ना। ३) सोहना, शोभित होना। (४) रसपूर्ण होना। (५) भाव की उमंग में भरना।

सरसाम—संज्ञा पुं. [फ़ा.] सन्निपात (रोग)।

सरसार—वि. [फ़ा. सरशार] (१) मग्न। (२) चूर।

सरसिक—संज्ञा पुं. [सं. सरसीक] सारस पक्षी।

सरसिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] छोटा तालाब, बावली।

सरसिज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वह जो ताल से उत्पन्न होता हो। (२) कमल।

सरसिजनैनी—वि. स्त्री. [सं. सरसिज+हिं. नयनी] जिसके नेत्र कमल (के समान सुन्दर) हों। उ.—जा जल सुद्ध निरखि सनमुख ह्वै, सुंदरि सरसजिनैनी—९-११।

सरसिजयोनि—संज्ञा पुं. [सं.] (कमल से उत्पन्न) ब्रह्मा।

सरसिरुह—संज्ञा पुं. [सं.] (सर से उत्पन्न) कमल।

सरसी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) छोटा ताल या सरोवर। (२) बावली। (३) एक वर्णवृत्त।

सरसीक—संज्ञा पुं. [सं.] सारस पक्षी।

सरसीरुह—संज्ञा पुं. [सं.] (सर से उत्पन्न) कमल।

सरसेटना, सरसेटनो—क्रि. स. [अनु.] भला-बुरा कहना।

सरसों, सरसौं—संज्ञा स्त्री. [सं. सर्षप] एक धान्य या पौधा जिसके छोटे-छोटे बीजों से तेल निकलता है और पत्तों का साग बनता है। उ.—(क) सरसौं मेथी सोवा पालक—३९६। (ख) सोवा अरु सरसों सरसाई—२३२१।

सरसौंहा—वि. [हिं. सरस] सरस करनेवाला।

सरस्वति, सरस्वती—संज्ञा स्त्री. [सं. सरस्वती] (१) एक प्राचीन नदी जिसकी क्षीण धारा कुरुक्षेत्र में अब भी है। उ.—आजु सरस्वति-तट रह्यौ सोइ—१-२८९। (२) विद्या। (३) विद्या की देवी, भारती, शारदा। उ.—मनहुँ सरस्वति संग उभय दुज कल मराल अरु नील कठीर—१०-१६१।

सरस्वती-पूजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सरस्वती का एक उत्सव जो कहीं वसंत-पंचमी को और कहीं-कहीं आश्विन में होता है।

सरहंग—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) सिपाही। (२) सेनानायक।

सरहंगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) सिपाहीगीरी। (२) वीरता।

सरह—संज्ञा पुं. [सं. शलभ, प्रा. सरह] (१) पतिंगा। (२) 'टिड्डी' नामक कीड़ा।

सरहज—संज्ञा स्त्री. [सं. श्यालजाया] साले की पत्नी।

सरहथ—संज्ञा पुं. [सं. शर या शल्य+हिं. हाथ] एक हथियार जिससे मछली का शिकार किया जाता है।

सरहद—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सर+अ. हद] (१) सीमा। (२) चौहद्दी की रेखा। (३) सीमा की भूमि, सिवान।

सरहरा—वि. [सं. सरण] चिकना।

सरा—संज्ञा स्त्री. [सं. शर] चिता।
संज्ञा पुं. बाण, तीर।
संज्ञा स्त्री. [हिं. सराय] सराय।

सराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सलाई] सलाई, सलाका।
संज्ञा स्त्री. [सं. शराव] सकोरा।

सराख—संज्ञा स्त्री. [हिं. सलाख] छड़, सलाख।

सराजाम—संज्ञा पुं. [फ़ा. सरअंजाम] सामग्री।

सराध—संज्ञा पुं. [सं. श्राद्ध] श्राद्ध। उ.—जज्ञ-सराध न कोऊ करै—१-२३०।

सराना, सरानो—क्रि. स. [हिं. सारना] (१) काम पूरा करना। (२) काम पूरा कराना।

सराप—संज्ञा पुं. [सं. शाप] शाप। उ.—(क) जय अरु बिजय कर्म कह कीन्हौं, ब्रह्म सराप दिवायौ—१-१०४। (ख) सत्यवती सराप-भय मान, रिषि कौ बचन कियौ परमान—१-२२९।

सरापना, सरापनो—क्रि. स. [सं. शाप] (१) शाप देना, कोसना। (२) गाली देना।

सरापै—क्रि. स. [हिं. सरापना] शाप दे। उ.—मति माता करि कोप सरापै, नहिं दानव ठग मति कौ-९-८४।

सराफ—संज्ञा पुं. [अ. सर्राफ़] (१) सोने-चाँदी का व्यापारी। (२) बट्टा काटकर रुपये भुना देनेवाले दूकानदार।

सराफा—संज्ञा पुं. [हिं. सराफ] सराफों का बाजार।

सराफी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सराफ] (१) सराफ का काम। (२) महाजनी या मुंडालिपि।

सराब—संज्ञा पुं. [अ. शराब] **मदिरा।**

सराबोर—वि. [सं स्राव+हिं. बोर] **बहुत भीगा हुआ।**

सराय—संज्ञा स्त्री [फ़ा.] **मुसाफिरखाना।**

मुहा.—सराय का कुत्ता—**मतलबी यार-दोस्त।** सराय की भठियारी (भठियारिन)—**लड़ाका और निर्लज्ज स्त्री।**

सरायो, सरायौ—क्रि. स. [हिं. सैराना] **(काम) कराया या निकाला।** उ.—पुरुष भँवर दिन चार आपने अपनो चाउ सरायौ—१६५८।

सराव—संज्ञा पुं. [सं. शराव) (१) **शराब पीने का प्याला, मद्यपात्र।** (२) **सकोरा, कटोरा।** (३) **दीया।** (४) **आरती के ऊपर का दीपक जिसमें घी भरा जाता है।** उ.—हरि जू की आरती बनी।.....। मही सराव सप्त सागर घृत बाती सैल घनी—२-२८।

सरावग, सरावगी—संज्ञा पुं. [सं श्रावक] **जैन।**

सरासन—संज्ञा पुं. [सं. शरासन] **धनुष।** उ.—(क) मनौ सरासन धरे कर स्मर भौंह चढ़ै सर बरषै री—१०-१३७। (ख) मानौ सूर सकात सरासन, उड़िबै कौं अकुलात—३९६।

सरासर—अव्य. [फ़ा.] (१) **पूरा-पूरा।** (२) **प्रत्यक्ष।**

सराह—संज्ञा स्त्री. [हिं. सराहना] **बड़ाई, प्रशंसा।**

सराहत—क्रि. स. [हिं. सराहना] **बड़ाई या प्रशंसा करता है।** उ.—ग्वालनि कर तैं कौर छुड़ावत मुख लै मेलि सराहत गात—४६६।

सराहती—क्रि. स. स्त्री. [हिं. सराहना] **बड़ाई या प्रशंसा करती।** उ.—उन विपदनि कुंचित जो करते कछुअन जीव सराहती—३२४७।

सराहना—क्रि. स. [सं. श्लाघन्] **बड़ाई करना।**

संज्ञा स्त्री. **तारीफ, बड़ाई, प्रशंसा।**

सराहनीय—वि. [हिं. सराहना] (१) **बड़ाई या प्रशंसा के योग्य।** (२) **अच्छा, बढ़िया।**

सराहनो—क्रि. स. [सं. श्लाघन्] **बड़ाई करना।**

सराहि—क्रि. स. [हिं. सराहना] **बड़ाई करके, अच्छा बताकर।** उ.—बारंबार सराहि सूर प्रभु साग बिदुर घर खाहीं—१-२४१।

सराहौं, सराहौं—क्रि. स., स्त्री., पुं. [हिं. सराहना] **तारीफ या बड़ाई करती हूँ।** उ.—सराहौं तेरो नंद हियौ—२६९८।

सरि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **झरना, निर्झर।**

संज्ञा स्त्री [सं. सरित्] **नदी, सरिता।**

संज्ञा स्त्री. [सं. सृक] **लड़ी, शृंखला।**

संज्ञा स्त्री [प्रा. सरिस] **समता, बराबरी।** उ.—(क) और न सरि करिबे कौं दूजौ महा मोह मम देस। १-१४१। (ख) कौन करै इनकी सरि आन—४३५। (ग) राम-नाम-सरि तऊ न पूजै जौ तनु गारौ जाइ हिवार—२-३।

वि. **बराबर, समान, सदृश।** उ.—(क) सुनहु स्याम तुमहूँ सरि नाहीं—५३७। (ख) एक प्रबीन अरु सखा हमारे, जानी तुम सरि कौन—२९२५।

क्रि. वि. **तक, पर्यंत।**

सरिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मोतियों की लड़ी।**

सरिगम, सरिगमा—संज्ञा पुं. [हिं. सरगम] **संगीत के सात स्वर या उनके चढ़ाव-उतार का क्रम।** उ.—सरिगमा पधनिसा संसप्त सुरनि गाइ—पृ. ३५२ (८३)।

सरित, सुरिता, सरित्—संज्ञा स्त्री, [सं. सरित्=प्रवाहित] (१) **धारा।** उ.—बानवृष्टि स्रोनित करि सरिता, ब्याहत लगी न बार—९-१२४। (२) **नदी।** उ.—(क) जैसैं सरिता मिलै सिंधु कौं, बहुरि प्रवाह न आवै—२-१०। (ख) अपनी गति तजत पवन सरिता नहिं ढरै—६५२। (ग) स्याम सुन्दर सिंधु सनमुख सरित उमँगि बही—ना. २३८१।

सरितपति, सरितराज, सरितापति—संज्ञा पुं. [हिं. सरित, सरिता+राजा, पति] **सागर, समुद्र।** उ.—याकौ कहा परेखौ निरखौ, मधु छीलर, सरितापति खारौ—९-३६।

सरिया—संज्ञा स्त्री. [सं. शर] **पतली छड़।**

सरियाना, सरियानो—क्रि. स. [हिं. सरि=पंक्ति] (१) **तरतीब या क्रम से लगाना या रखना।** (२) **सुलझाना।**

सरिवरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. सर=वरि] **बराबरी, समता।**

सरिश्ता—संज्ञा पुं. [फ़ा. सरिश्तः] (१) **कचहरी, अदालत।** (२) **कार्यालय।** (३) **संबंध।**

सरिस—वि. [सं. सदृश, प्रा. सरिस] **समान, सदृश।** उ.–

पाहन सरिस कठोर—९-८३।

सरिहै—क्रि. प्र. [हिं. सरना] **काम होगा, पूरा पड़ेगा, निर्वाह होगा।** उ.—(क) आरज पंथ चले कहा सरिहै स्यामहिं संग फिरौ री—१६७२। (ख) लाज गए कछु काज न सरिहै, बिछुरत नंद के तात—२५३१।

सरी—क्रि. अ. [हिं. सरना] **(काम) पूरा हुआ, (उद्देश्य) सिद्ध हुआ।** उ.—भैया-बंधु कुटुम्ब घनेरे तिनतैं कछु न सरी—१-७१। (ख) सूरदास तैं कछु सरी नहिं, परी काल फँसरी—१-७१। (ग) सूर प्रभु के संग बिलसत सकल कारज सरी—१०-३०२।

सरीक—वि. [अ. शरीक़] (१) **किसी काम में साथ देनेवाला।** (२) **मिला हुआ, सम्मिलित।**

सरीकता—संज्ञा स्त्री. [हिं. सरीक+ता] **साझा।**

सरीका, सरीखा—वि. [प्रा. सरिस] **समान।**

सरीर—संज्ञा पुं. [सं. शरीर] **देह, शरीर।** उ.—(क) देख्यौ भरत तरुन अति सुंदर। थूल सरीर रहित सब दुंदर—५-३। (ख) जद्यपि बिद्यमान सब निरखत दुःख सरीर भरयौ—१-१००।

सरीसृप—संज्ञा पुं. [सं.] **रेंगनेवाले जंतु।**

सरुज—वि. [सं.] **रोगी।**

सरुझना—क्रि. अ. [हिं. सुलझना] **सुलझ जाना।**

सरुष—वि. [सं.] **कुपित, क्रुद्ध।**

सरूप—वि. [सं.] (१) **जिसमें आकार या रूप हो।** (२) **सुंदर, मनोहर।** (३) **समान रूपवाला।**

संज्ञा पुं. (१) **व्यक्ति, पदार्थ आदि की आकृति।** (२) **मूर्ति, चित्र।** उ.—सो सरूप हिरदै महँ आन। रहियौ करत सदा मम ध्यान—१-२८६। (३) **वह जिसने कोई देव-रूप धारण किया हो।** (४) **देव अवतार।** उ.—हँसत गोपाल नंद के आगैं, नंद सरूप न जान्यौ—१०-२६३।

सरूर—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुरूर] **नशे की तरंग।**

सरूरुह—संज्ञा पुं. [सं. सरोरुह] **कमल।**

सरेख—वि. [सं. श्रेष्ठ] **सयाना, समझदार।**

सरेखना, सरेखनो—क्रि. स. [हिं. सहेजना] **सँभालना।**

सरेस—संज्ञा पुं. [फ़ा. सरेश] **एक लसदार वस्तु।**

वि. (१) **चिपकनेवाला, लसीला।** (२) **जो हर समय साथ लगा रहे।**

सरै क्रि. स. [हिं. सरना] (१) **(काम) पूरा होता है, (उद्देश्य) सिद्ध होता है।** उ.—(क) कियैं नर की स्तुती कौन कारज सरै, करै सो अपनौ जनम हारै—४-११। (ख) बहुत उपाइ करै बिरहिनि, कछु न चाव सरै—२७८३। (२) **बनता-बिगड़ता है।** (३) **(प्रण आदि) पूरा होता या करता है।** उ.—चक्र धरे बैकुंठ तैं धाए, वाकी पैज सरै—१-८२।

सरैगौ—क्रि. स. [हिं. सरना] **(काम) पूरा, सिद्ध या संपन्न होगा।** उ.—राज काज तुमतैं सरैगो, काया अपनी पोषु—३०२६।

सरोंट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिलवट] **शिकन, सिलवट।**

सरो—संज्ञा पुं. [फ़ा. सर्व] **एक वृक्ष।**

सरोकार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **वास्ता, लागव।** (२) **पारस्परिक व्यवहार का संबंध।**

सरोज—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल।** उ.—(क) बंदौ चरन-सरोज तिहारे—१-९४। (ख) बाहु-पानि सरोज-पल्लव—१-३०७।

सरोजना—क्रि. स. [देश.] **पाना, प्राप्त करना।**

सरोजमुखी—वि. स्त्री. [सं.] **कमल-जैसा मुखवाली।**

सरोजै—संज्ञा पुं. सवि. [सं. कमल] **कमल के (समान)।** उ.—काम कमान समान भौंह दोउ चंचल नैन सरोजै—पृ. ३४५ (४१)।

सरोजिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कमल से भरी सरसी।** (२) **कमलों का समूह।** (३) **कमलिनी।**

सरोजी—वि. [सं. सरोजिन्] **जहाँ कमल हों।**

सरोट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिलवट] **शिकन, सिलवट।**

सरोता—संज्ञा पुं. [सं. श्रोता] **सुननेवाले।**

सरोद—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **बीन या सारंगी की तरह का एक प्रसिद्ध बाजा।**

सरोरुह—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल।**

सरोवर—संज्ञा. पुं. [सं.] **तालाब।** उ.—(क) चकई री, चलि चरन-सरोवर जहाँ न प्रेम-वियोग—१-३३७। (ख) मानसरोवर छाँड़ि हंस तट-काग-सरोवर न्हावै—३-१३।

सरोवरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सरोवर] **सरसी, छोटा ताल।**

उ.—श्रीपति केलि-सरोवरी सैसव जल भरिपूरि—२०६५।

सरोष—वि. [सं.] **कुपित, क्रुद्ध।**

सरोही—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिरोही] **एक चिड़िया।**

सरौ—क्रि. स. [हिं. सरना] (**काम, उद्देश्य या लाभ**) **सिद्ध या पूरा हुआ या होगा।** उ.—(क) सकल सुरनि कौ कारज सरौ, अंतर्धान रूप यह करौ—७-२। (ख) नैंकु धीरज धरौ, जियहिं कोउ जिनि डरौ, कहा इहिं सरौ, लोचन मुँदाए—५९६।

संज्ञा पुं. [सं. शराव] **कटोरी, प्याली।**

संज्ञा पुं. [हिं. सरो] **एक वृक्ष।**

सरौता—संज्ञा पुं. [सं. सार = लोहा + पत्र, प्रा. सारवत्त] **सुपारी काटने का प्रमुख औजार।**

सर्ग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चलना, गमन।** (२) **संसार, सृष्टि।** (३) **बहाव, प्रवाह।** (४) **उत्पत्ति-स्थान।** (५) **जीव, प्राणी।** (६) **संतान।** (७) **स्वभाव, प्रकृति।** (८) **ग्रंथ का अध्याय।**

सर्गबंध, सर्गबद्ध—वि. [सं.] **(काव्य या ग्रंथ) जो अध्यायों में विभक्त हो।**

सर्गुन—वि. [सं. सगुण] **सगुण।** उ.—बिनु बानी ए उमँगि सजल होइ सुमिरि सुमिरि वा सर्गुन जसहिं—३०१७।

सर्जन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **(कोई चीज) चलाना, छोड़ना या फेंकना।** (२) **निकालना।** (३) **बनाना, रचना।**

सर्जू—संज्ञा स्त्री. [सं. सरयू] **सरयू नदी।**

सर्त—संज्ञा स्त्री. [हिं. शर्त] (१) **दाँव, बाजी।** (२) **प्रतिबंध।** (३) **पारस्परिक निश्चय।**

सर्द—वि. [फ़ा.] (१) **ठंढा।** (२) **सुस्त।** (३) **मंद।**

मुहा.—सर्द होना—(१) **ठंडा होना।** (२) **मर जाना।** (३) **मंद या धीमा होना।** (४) **उत्साहहीन या उदासीन हो जाना।**

सर्दा—संज्ञा पुं. [पं.] **एक तरह का खरबूजा।**

सर्दार—संज्ञा पुं. [फ़ा. सरदार] **नायक।**

सर्दी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **ठंढ।** (२) **जाड़ा।**

सर्प—संज्ञा पुं. [सं.] **साँप।** उ.—सर्प इक आइहै तुम्हरै निकट, ताहि सौं नाव मम सृंग बाँधौ—८-१६।

सर्प-काल—संज्ञा पुं. [सं.] **गरुड़।**

सर्प-गति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सर्प की चाल।** (२) **टेढ़ी चाल, कपटभरी रीति।**

सर्पपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शेषनाग।** (२) **वासुकि।**

सर्पप्रिय—संज्ञा पुं. [सं.] **चंदन।**

सर्पबेल, सर्पबेलि—संज्ञा स्त्री. [सं. सर्पबेल] **पान।**

सर्पयज्ञ, सर्पयाग—संज्ञा पुं. [सं.] **वह यज्ञ जो जनमेजय ने सर्पों के संहार के लिए किया था।**

सर्पराज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शेषनाग।** (२) **वासुकि।**

सर्पारि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सर्पों का शत्रु।** (२) **गरुड़।** (३) **नेवला।** (४) **मोर, मयूर।**

सर्पिणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **साँप की मादा, साँपिन।**

सर्पिल—वि. [सं.] (१) **साँप की चाल जैसा टेढ़ा-तिरछा।** (२) **जो साँप-सा कुंडली मारे हो।**

सर्पी—वि. [सं. सर्पिन्] **धीरे-धीरे चलनेवाला।**

सर्फ—वि. [अ. सर्फ़] **खर्च किया हुआ।**

सर्फा—संज्ञा पुं. [अ. सर्फ़ः] **खर्च, व्यय।**

सर्ब—वि. [सं.] **सब, समस्त।** उ.—(क) बच्छ बालक लै गयौ धरि, तुरत कीन्हें सर्ब ४८५। (ख) सूर भक्त बत्सलता बरनौं सर्ब कथा कौ सार—१-२६७।

अव्य. **सर्वत्र।** उ.—सूर-चन्द्र नक्षत्र-पावक सर्ब तासु प्रकास—२-२७।

सर्बदा—अव्य. [सं. सर्वदा] **हमेशा, सदा।** उ.—सदा सर्बदा राज राम कौ—९-१७।

सर्बस—संज्ञा पु. [सं. सर्वस्व] **सारी जमा-पूँजी।**

सर्बोपरि—वि. [सं. सर्वोपरि] **सबसे ऊपर, सबसे बढ़कर।** उ.—सर्बोपरि आनंद अखंडित—१-८७।

सर्म संज्ञा पुं. [हिं. शरम] **हया, लाज।**

सरचो, सरचौ—क्रि. अ. [हिं. सरना] (१) **(काम या उद्देश्य) बना या सिद्ध हुआ।** उ.—बेर सूर की निठुर भए प्रभु मेरौ कछु न सरचौ—१-१३३। (२) **(आयु) पूरी या समाप्त हो गयी।** उ. सुनहुँ कंस, तव आइ सरचौ—१०-५९।

सर्रा—संज्ञा पुं. [अनु. सर सर] **धुरा, धुरी।**

सर्राटा—संज्ञा पुं. [अनु. सर्र सर्र] (१) **तेज हवा चलने का सर्र-सर्र शब्द।** (२) **तेज भागने का सर्र-सर्र शब्द।**

मुहा.—सर्राटा भरना—**(तेजी से) सर्र-सर्र शब्द**

करते हुए जाना।

सर्राफ—संज्ञा पुं. [अ. सर्राफ़] (१) सोने-चाँदी का व्यापारी। (२) रुपये-पैसे भुनानेवाला।

सर्राफा—संज्ञा पुं. [हिं. सर्राफ] सराफों का बाजार।

सर्व—वि. [सं.] सब, सारा। उ.—सर्वरी सर्व बिहानी तोहिं मनावति—२०४८।

सर्व-काम—वि. [सं.] (१) सब तरह की इच्छाएँ रखनेवाला। (२) सब तरह की इच्छाएँ पूरी करनेवाला।

सर्व-कामद—वि. [सं.] सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला।

सर्व-काल—क्रि. वि. [सं.] हर समय, सदा।

सर्वग—वि. [सं.] सब जगह जा सकनेवाला।

सर्वगत—वि. [सं.] जो सबमें हो, सर्वव्यापक।

सर्वगामी—वि. [सं.] सब जगह जा सकनेवाला।

सर्वग्रास—संज्ञा पुं. [सं.] वह ग्रहण जिसमें चंद्र या सूर्य का सारा बिंब ढक जाता है, खग्रास ग्रहण।

सर्वजनीन—वि. [सं.] सबसे संबंधित, सबका।

सर्वजित, सर्वजिय—वि. [सं. सर्वजित] (१) सबको जीत लेनेवाला। (२) सबसे बढ़कर।

सर्वज्ञ—वि. [सं.] सब कुछ जाननेवाला। उ.—तुम सर्वज्ञ सबै बिधि पूरन—१-१०३।

संज्ञा पुं. (१) ईश्वर। (२) ओंकार।

सर्वज्ञता—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'सर्वज्ञ' होने का गुण या भाव (जो ईश्वर का एक गुण माना जाता है)।

सर्वज्ञा—वि. स्त्री. [सं.] सब कुछ जाननेवाली।

सर्वतंत्र—वि. [सं.] जिसे सब (शास्त्रादि) मानते हों।

सर्वतः—अव्य. [सं.] (१) सब ओर। (२) सब तरह से। (३) पूर्ण रूप से।

सर्वतोभद्र—वि. [सं.] (१) सब तरह से कल्याणकारी। (२) जिसका सिर, दाढ़ी, मूँछ—सब मुड़े हों।

संज्ञा पुं. (१) देव-पूजन के वस्त्रों पर बनाया जानेवाला एक तरह का मांगलिक चिह्न। (२) हठयोग में बैठने का एक आसन या मुद्रा। (३) एक तरह का चित्रकाव्य।

सर्वतोभाव—क्रि. वि. [सं.] सब प्रकार से।

सर्वतोमुख—वि. [सं.] (१) जिसके मुँह चारों ओर हो। (२) जो सब दिशाओं में प्रवृत्त हो। (३) सब जगह मिलने या होनेवाला, व्यापक।

सर्वतोमुखी—वि. स्त्री. [सं.] (१) जो सब दिशाओं में प्रवृत्त हो। (२) सब जगह मिलने या होनेवाली।

सर्वत्र—अव्य. [सं.] सब जगह।

सर्वथा—अव्य. [सं.] (१) सब तरह से, सब प्रकार से। (२) बिलकुल, पूरा।

सर्वदर्शी—वि. [सं. सर्वदर्शिन्] सब कुछ देखनेवाला।

सर्वदा—अव्य. [सं.] हमेशा, सदा।

सर्वदैव—अव्य. [सं.] सदा ही, सदैव।

सर्वनाम—संज्ञा पुं. [सं. सर्वनामन्] संज्ञा शब्द के स्थान पर प्रयुक्त होनेवाला शब्द (व्याकरण)।

सर्वनाश—संज्ञा पुं. [सं.] पूरी बरबादी, सत्यानाश।

सर्वनाशक—वि. [सं.] सब कुछ नष्ट करनेवाला।

सर्वनाशी—वि. [सं.] सत्यानाश करनेवाला।

सर्वप्रिय—वि. [सं.] जो सबको प्रिय हो।

सर्वप्रियता—संज्ञा स्त्री. [सं.] सबको प्रिय लगने या होने का भाव, लोकप्रियता।

सर्वभक्षी—वि. [सं. सर्वभक्षिन्] सब कुछ खानेवाला।

सर्वभोगी—वि. [सं.] अच्छी-बुरी, सभी चीजों का भोग करनेवाला।

सर्वमंगला—वि. [सं.] सब तरह से कल्याण या मंगल करनेवाला।

सर्वरी—संज्ञा स्त्री. [सं. शर्वरी] रात, रात्रि। उ.—(क) उगत अरुन बिगत सर्वरी, ससांक किरन-हीन—१०-२०५। (ख) सर्वरी सर्व बिहानी तोहिं मनावति राधा-रानी—२२४८।

सर्वविद्—वि. [सं.] सर्वज्ञ।

संज्ञा पुं. (१) ईश्वर। (२) ओंकार।

सर्वव्यापक—वि. [सं.] जो सबमें व्याप्त हो।

संज्ञा पुं. ईश्वर।

सर्वव्यापी—वि. [सं.] जो सबमें व्याप्त हो।

संज्ञा पुं. ईश्वर।

सर्वशः—अव्य. [सं.] (१) पूरा-पूरा। (२) पूर्णरूप से।

सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान्—वि. [सं. सर्वशक्तिमत्] जो सब कुछ करने में समर्थ हो।

संज्ञा पुं. ईश्वर।

सर्वश्री—वि. [सं.] एक आदरसूचक विशेषण जिसका प्रयोग साथ-साथ प्रयुक्त कई नामों में से प्रत्येक के साथ 'श्री' का प्रयोग न करके, सामूहिक 'श्री' सूचक रूप में, केवल प्रथम नाम के साथ प्रयुक्त होता है।

सर्वश्रेष्ठ—वि. [सं.] सबसे उत्तम।

सर्वसंहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) काल। (२) यमराज।

सर्वस—संज्ञा पुं. [सं. सर्वस्व] सारी जमा-पूँजी, सर्वस्व।
उ.—जाकी जहाँ प्रतीति सूर सो सर्वस तहाँ सँचै री —२२७०।

सर्व-सम्मत—वि. [सं.] जिससे सब सहमत हों।

सर्व-सम्मति—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह स्थिति जिसमें, किसी प्रसंग में, सभी संबंधितजन सहमत हों।

सर्व-साधारण—संज्ञा पुं. [सं.] सारा जन-समूह।

सर्व-सामान्य—वि. [सं.] जो सबमें समान हो।

सर्व-सिद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] सभी कार्यों की सिद्धि।

सर्वसु—संज्ञा पुं. [सं. सर्वस्व] सारी जमा-जथा या संपत्ति।
उ.—सूरदास प्रभु सर्वसु लै गए हँसत हँसत रथ हाँक्यो —२५४६।

सर्वसोख—वि. [सं. सर्व+हिं. सोखना] सब कुछ निगल जाने, ले लेने या हजम कर जानेवाला।
संज्ञा पुं. काल। (२) यमराज।

सर्वस्व—संज्ञा पुं. [सं.] सारी जमा-जथा।

सर्वहर—वि. [सं.] सब कुछ हर लेनेवाला।
संज्ञा पुं. (१) काल। (२) यमराज।

सर्वहारी—वि. [सं. सर्वहारिन्] सब कुछ हर लेनेवाला।
संज्ञा पुं. (१) काल। (२) यमराज।

सर्वांग—क्रि. वि. [सं.] सब प्रकार से।
संज्ञा पुं. (१) सारा शरीर। (२) (किसी वस्तु आदि के) सब अंग या अंश।

सर्वांगीण—वि. [सं.] (१) सब अंगों से संबंधित। (२) सब अंगों से युक्त, संपूर्ण।

सर्वाणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुर्गा, पार्वती।

सर्वात्मा—संज्ञा पुं. [सं. सर्वात्मन्] आत्मा-रूप में सारे विश्व में व्याप्त चेतन सत्ता, ब्रह्म।

सर्वाधिकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पूर्ण प्रभुत्व। (२) सभी प्रकार का अधिकार।

सर्वाधिकारी—वि. [सं.] जिसे सभी अधिकार हों।

सर्वास्तिवाद—संज्ञा पुं. [सं.] एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें सभी वस्तुओं की सत्ता यथार्थ मानी जाती है, असत्य नहीं।

सर्वास्तिवादी—वि. [सं.] उक्त सिद्धांत का माननेवाला।

सर्वेश, सर्वेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सबका स्वामी। (२) ईश्वर, परमेश्वर।

सर्वेसर्वा—वि. [सं. सर्वे-सर्वाः] जिसे सब अधिकार हों।

सर्वोत्तम—वि. [सं.] सबसे उत्तम।

सर्वोदय—संज्ञा पुं. [सं.] वह सिद्धांत जिसमें सबकी सभी प्रकार की उन्नति का समर्थन हो।

सर्वोपरि—वि. [सं.] सबसे ऊपर या बढ़कर।

सर्षप—संज्ञा पुं. [सं.] सरसों।

सल—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) सिलवट। (२) परत, तह। (३) जानकारी। (४) परिचय।
संज्ञा पुं. [सं.] (१) पानी, जल। (२) एक कीड़ा।

सलज्ज—वि. [सं.] जिसे लज्जा लगे।
क्रि. वि. शरमाते या लजाते हुए।

सलतनत—संज्ञा स्त्री. [अ. सल्तनत] (१) बादशाहत। (२) साम्राज्य। (३) आराम, सुभीता। (४) प्रबंध।
मुहा. सलतनत बैठना—प्रबंध ठीक होना।

सलना, सलनो—क्रि. अ. [सं. शल्य] (१) छिदना, भिदना। (२) छेद में किसी चीज का डाला जाना।

सलब—वि. [अ. सल्ब] बरबाद, नष्ट।

सलभ—संज्ञा पुं. [सं. शलभ] पतिंगा।

सलमा—संज्ञा पुं. [अ. सलमः] सोने-चाँदी का बहुत पतला या महीन तार, बादला।

सलवट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिलवट] सिकुड़न, सिमटन।

सलवार—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शलवार] एक तरह का ढीला पाजामा जिसे प्रायः स्त्रियाँ पहनती हैं।

सलसलाना, सलसलानो—क्रि. अ. [अनु.] (१) हलकी खुजली या सरसराहट होना। (२) गुदगुदी होना। (३) रेंगना।
क्रि. स. (१) खुजलाना। (२) गुदगुदाना। (३) बहुत शीघ्रता से काम करना।

सलसलाहट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) सलसल शब्द। (२)

खुजली । (३) गुदगुदी । (४) लपझप जैसी शीघ्रता ।

सलहज—संज्ञा स्त्री. [हिं. साला] **साले की पत्नी ।**

सलाइ—क्रि. स. [हिं. सलाना] **चुभाकर, पीड़ित होकर ।** उ.—सौति साल सलाइ बैठी डुलति इत उत नाहिं—२०२१ ।

सलाई—संज्ञा स्त्री. [सं. शलाका] **(१) काठ या धातु की महीन सींक जैसी छड़ । (२) सुरमा लगाने की सींक-जैसे छड़ ।**

मुहा.—सलाई फेरना—**(१) आँख में सलाई से सुरमा आदि लगाना । (२) किसी को अंधा करने के लिए गरम सलाई आँखों में लगाना ।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. सालना] **सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।**

सलाक—संज्ञा स्त्री. [सं. शलाका] **पतली छड़, सलाख ।** उ.—पलकनि सूल सलाक सही है, निसि-वासर दोउ रहत अरे रीपृ.—३२७ (६०) ।

संज्ञा पुं. **तीर, बाण ।**

सलाकना, सलाकनो—क्रि. अ. [सं. शलाका] **सलाई जैसी चीज से कुरेदकर चिह्न बनाना ।**

सलाकनि—संज्ञा स्त्री. सवि. [हिं. सलाक+नि] **सलाखों से ।** उ.—सहि न सकति अति बिरह त्रास तनु आगि सलाकनि जारी—३२४६ ।

सलाका—संज्ञा स्त्री. [सं. शलाका] **सलाख ।** उ.—सहि न सकति अलि, गुरु ज्ञान सलाका ।

सलाख—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सलाख़] **धातु की छड़ ।**

सलाम—संज्ञा पुं. [अ.] **प्रणाम ।**

मुहा.—दूर से सलाम करना—**बुरी वस्तु या बुरे आदमी से बचकर या दूर रहना ।** सलाम है—**दूर ही रहना चाहते हैं, बाज आये ।** सलाम करके चलना—**अप्रसन्न होकर विदा लेना ।** सलाम फेरना—**किसी से इतना अप्रसन्न होना कि प्रणाम भी स्वीकार न करना ।**

सलामत—वि. [अ.] **(१) हानि या आपत्ति से बचा हुआ या रक्षित । (२) जीवित और स्वस्थ । (३) कायम, बरकरार, स्थित ।**

क्रि. वि. **खरियत से, सकुशल ।**

सलामती—संज्ञा स्त्री. [अ. सलामत] (१) तंदुरुस्ती, **स्वस्थता । (२) कुशल-क्षेम । (३) जिंदगी, जीवन ।**

सलामी—संज्ञा स्त्री. [अ. सलामी] **(१) प्रणाम करने की क्रिया । (२) सैनिकों आदि की शस्त्रों से प्रणाम करन की रीति या प्रणाली । (३) उक्त रीति से किसी माननीय व्यक्ति का अभिवादन ।**

मुहा.—सलामी उतारना (देना)—**उक्त प्रकार से किसी माननीय व्यक्ति का अभिवादन करना ।** सलामी लेना—**उक्त अभिवादन को स्वीकार करना ।**

वि. **जो स्थान कुछ-कुछ ढालू हो ।**

सलाह—संज्ञा स्त्री. [अ.] **राय, परामर्श ।**

मुहा.—सलाह ठहराना—**(सबका) निश्चय करना ।**

सलाहकार—वि. [अ. सलाह+फ़ा. कार] **राय या परामर्श देनेवाला ।**

सलिल—संज्ञा पुं. [सं.] **पानी, जल ।** उ.—(क) सलिल सौं सब रंग तजि कै एक रंग मिलाइ—१-७० । (ख) जनु सीतल सौ तप्त सलिल दै सुखित समोइ करे —९-१७१ ।

सलिलज—वि. [सं.] **जो जल से उत्पन्न हो ।**

संज्ञा पुं. **कमल, नीरज ।**

सलिला—संज्ञा स्त्री. [सं. सलिल] **नदी ।**

सलीका—संज्ञा पुं. [अ. सलीक़ः] **(१) काम ठीक-ठीक करने का ढंग । (२) हुनर, लियाकत । (३) शिष्टता ।**

सलीता—संज्ञा पुं. [देश.] **(१) एक तरह का बहुत मोटा कपड़ा । (२) झोला, थैला ।**

सलील—वि. [सं.] **(१) लीला युक्त । (२) खिलाड़ी । (३) कौतुकी, कौतूहलप्रिय ।**

सलीस—वि. [अ.] **(१) सुगम । (२) मुहावरेदार ।**

सलूक—संज्ञा पुं. [अ. सलूक़] **(१) बर्ताव । (२) उपकार । (३) मेल-मिलाप । (४) तौर-तरीका ।**

सलूनो—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रावणी ?] **रक्षाबंधन ।**

सलोक—संज्ञा पुं. [सं. श्लोक] **श्लोक ।**

सलोन, सलोना—वि. [हिं. स+लोन] **(१) नमकीन । (२) रसीला, सुन्दर ।** उ.—(क) इत सुन्दरी बिचित्र उतहिं घनस्याम सलोना—११३२ । (ख) खेलै फागं नैन सलोन री रँग राँची ग्वालिनि —२-४०५ ।

सलोनापन—संज्ञा पुं. [हिं. सलोना+पन] **(१) नमकीन**

होने का भाव। (२) सुन्दर होने का भाव।

सलोनी—वि. स्त्री. [हिं. सलोना] (१) सुन्दरी। (२) जिसमें नमक पड़ा हो। उ.—दाल भात घृत कढ़ी सलोनी—सारा. १८७।

सलोनो—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रावणी ?] रक्षाबंधन।

सलोल—वि. [सं. स+लोल] बहुत चंचल या हिलता-डोलता। उ.—लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोल—पृ. ३४४ (३५)।

सल्लम—संज्ञा पुं. स्त्री. [देश.] गाढ़ा (कपड़ा)।

सल्लाह—संज्ञा स्त्री. [हिं. सलाह] राय, परामर्श।

सल्लू—वि. [देश.] बेवकूफ, मूर्ख।

सल्व—संज्ञा पुं. [सं. शल्व] शल्व।

सव—संज्ञा पुं. [सं. शव] मृत शरीर। उ.—फिरत सृगाल सज्यौ सव कटात चलत सो सीस लै भागि—९-१५८।

मुहा.—सव साजना—चिता बनाकर उस पर जलाने के लिए शव रखना।

सवत, सवति—संज्ञा स्त्री. [हिं. सौत] सौत, सपत्नी।

मुहा.—कीने सवति बजाइ—खुल्लमखुल्ला या सबको जताकर किसी की सौत करना। उ.—सूरदास प्रभु हम पर ताको कीने सवति बजाइ—२३२९।

सवत्स—वि. [सं.] जिसके साथ बच्चा हो।

सवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रसव। (२) यज्ञ।

सवयस्क—वि. [सं.] समान अवस्थावाला।

सवया—संज्ञा स्त्री. [सं.] सखी, सहेली, सहचरी।

सवर्ण—वि. [सं.] (१) समान, सदृश। (२) एक ही वर्ण या जाति का।

सवाँग—संज्ञा पुं. [हिं. स्वाँग] (१) बनावटी वेश या रूप। उ.—सूरदास प्रभु जब जब देखत नट सवाँग सो काछे—पृ. ३३१ (६)।

सवाँगना, सवाँगनो—क्रि. अ. [हिं. स्वाँगना] बनावटी वेश या रूप बनाना।

सवा—वि. [सं. स+पाद] चौथाई (भाग) सहित।

सवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सवा] जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।

वि. (१) एक और चौथाई, सवाया। (२) सामान्य से अधिक। उ.—(क) मान करौ तुम और सवाई—१८८८। (ख) प्रीतम सो जो रहै एकरस निसि बढ़ि प्रेम सवाई—३३१०।

सवाद—संज्ञा पुं. [सं. स्वाद] (१) कुछ खाने पीने से जीभ को होनेवाला अनुभव, खाने-पीने का सुखद अनुभव। उ.—(क) ज्यौं गूँगौ गुरु खाइ अधिक रस, सुख-सवाद न बतावै—२-१०। (ख) सो रस है मोहूँ कौ दुरलभ, तातैं लैंत सवाद—१०-६४। (२) किसी बात में होने-वाली रुचि या उससे मिलनेवाला आनंद।

सवादिक, सवादिल—वि. [सं. स्वादिष्ट] स्वादिष्ट।

सवाब—संज्ञा पुं. [अ.] (१) पुण्य। (२) उपकार।

सवाया—वि. [हिं. सवा] (१) पूरे से एक चौथाई अधिक। (२) सामान्य से कुछ अधिक।

सवार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) वह जो (घोड़े, गाड़ी या वाहन पर) चढ़ा हो। (२) घुड़सवार सैनिक।

वि. (घोड़े, गाड़ी या वाहन आदि पर) चढ़ा हुआ। उ.—सुरपुर तैं आयौ रथ सजिकै, रघुपति भए सवार—९-१५८।

मुहा.—पाँचवा सवार बनना—योग्यता या पात्रता न होने पर भी बड़ों के साथ अपनी गिनती कराने का प्रयत्न करना।

क्रि. वि. [हिं. सबार] जल्दी, शीघ्र। उ.—सूरदास प्रभु सों हठ कीन्हो उठि चल क्यों न सवार—२२११।

संज्ञा पुं. सबेरा, प्रातःकाल।

सवारना, सवारनो—क्रि. स. [हिं. सँवारना] सजाना, अलंकृत करना।

सवारा—संज्ञा पुं. [हिं. सबेरा] प्रातःकाल।

सवारि—क्रि. वि. [हिं. सबार] जल्दी, शीघ्र। उ.—सहज सिथिल पल्लव ते हरि जू लीन्हों छोरि सवारि—पृ. ३४८ (५)।

सवारी—क्रि. वि. [हिं. सबार] जल्दी, शीघ्र, तुरन्त। उ.—(क) सुरपति-पूजा करौ सवारी—१००७। (ख) तुम सुन्दरी काकी बधू घर जाहु सवारी—पृ. ३१७ (६३)।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) किसी चीज पर (विशेषतः) चलने के लिए चढ़ने की क्रिया। (२) वह चीज या वाहन जिस पर सवार हुआ जाय। (३) वह व्यक्ति

जो सवार हो । (४) बड़े आदमी, देव-मूर्ति आदि के साथ चलनेवाला जलूस ।

सवारे—क्रि. वि. [हिं. सबार] शीघ्र, तुरन्त । उ.—(क) जेहि हठ तजै प्रान प्यारी सो जतन सवारे करिए—२२७५ । (ख) ह्वै यह जीति विधाता इनकी करहु सहाय सवारे—२५६९ ।

संज्ञा पुं. सबेरा, प्रातःकाल । उ.—यहै देत लवनी नित मोकौ, छिन छिन साँझ-सवारे—१०-१८९ ।

सवारैं, सवारै—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. सबार] सबेरे, प्रातः-काल को ही । उ.—(क) साँझ-सवारै आवन लागी—७१० । (ख) निकट बैठारि सब बात तेई कही गए जे भाषि नारद सवारैं—२४६६ ।

सवारो, सवारौ—क्रि. वि. [हिं. सबार] शीघ्र, तुरंत । उ. —इह उपदेस आपुनो ऊधौ, राखौ ढाँप सवारो —३२०५ ।

सवाल—संज्ञा पुं. [अ.] (१) पूछने की क्रिया । (२) वह जो पूछा जाय, प्रश्न । (३) माँग, याचना । (४) गणित का प्रश्न ।

सवाल-जवाब—संज्ञा पुं. [अ.] (१) बहस, तर्क-वितर्क, वाद विवाद । (२) तकरार, हुज्जत, झगड़ा ।

सविकल्प—वि. [सं.] संदेहयुक्त, संदिग्ध ।

संज्ञा पुं. दो प्रकार की समाधियों में एक जो किसी आलंबन की सहायता से होती है ।

सविता—संज्ञा पुं. [सं. सवितृ] (१) रवि, सूर्य । उ.—जनु जल सोखि लयो सो सविता—२०६२ । (२) बारह की संख्या । (३) आक, मदार । (४) ईश्वर ।

सवेरा—संज्ञा पुं. [हिं. स+सं. वेला] (१) सुबह, प्रातः-काल । (२) निश्चित समय या उपयुक्त अवसर से पूर्व का समय ।

सवैया—संज्ञा पुं. [हिं. सवा+ऐया] (१) सवा सेर का बाँट । (२) वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है । (३) सवाया भाग । (४) एक प्रसिद्ध छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है । इसे 'मालिनी', 'मदिरा' और 'दिवा' भी कहते हैं ।

वि. जो सवाया हो ।

सव्य—वि. [सं.] (१) बाँया, बाम । (२) दाहना, दाँया । (३) उलटा, प्रतिकूल ।

सव्यसाची—संज्ञा स्त्री. [सं.] अर्जुन जो दाहने और बायें, दोनों हाथों से तीर चला सकते थे ।

सशंक—वि. [सं.] (१) जिसे शंका हो, शंकित । (२) डरा हुआ, भयभीत ।

सशंकना—क्रि. अ. [सं. सशंक] (१) शंका या संदेह करना, शंकित होना । (२) डरना, भयभीत होना ।

सशक्त—वि. [सं.] बली, शक्तिशाली ।

सशस्त्र—वि. [सं.] (१) शस्त्रों से युक्त । (२) शस्त्रों से लज्जित ।

ससंकि—क्रि. अ. [हिं. सशंकना] शंकित होकर । उ.—बिडरत बिझुकि जानि रथ ते मृग जनु ससंकि ससि लंगर सारे—१३३३ ।

ससंकित—क्रि. अ. [हिं. सशंकना] शंकित होकर । उ.—अखुटित रहत सभीत ससंकित सुकृत सब्द नहिं पावै —१-४८ ।

सस—संज्ञा पुं. [सं. शशि] (१) चंद्रमा । (२) चंद्रमा का काला धब्बा या कलंक ।

संज्ञा पुं. [सं. शस्य] (१) अनाज । (२) खेतीबारी ।

ससक, ससका—संज्ञा पुं. [सं. शशक] खरगोश ।

ससकाई—संज्ञा स्त्री. [सं. शशक+हिं. आई] चंद्रमा की कालिमा । उ.—माँग उरग नव तरनि तरौना तिलक भाल ससि की ससकाई—१८८७ ।

ससना, ससनो—क्रि. अ. [सं. शासन] कष्ट सहना ।

क्रि. अ. [देश.] समाना, प्रविष्ट होना ।

क्रि. अ. [हिं. साँस] साँस लेने में कष्ट होना ।

ससहर—संज्ञा पुं. [सं. शशिधर] चंद्रमा ।

ससहरना, ससहरनो—क्रि. अ. [हिं. सिहरना] डरना ।

ससांक—संज्ञा पुं. [सं. शशांक] चंद्रमा । उ.—उगत अरुन बिगत सर्वरी, ससांक किरनहीन—१०-२०५ ।

ससा—संज्ञा पुं. [सं. शशा] खरगोश ।

ससाना, ससानो—क्रि. अ. [हिं. सासना] (१) घबराना, विकल होना । (२) काँपना ।

ससि—संज्ञा पुं. [सं. शशि] चंद्रमा । उ.—(क) रवि-ससि किये प्रदच्छिनकारी—३-३४ । (ख) बारिज ससि बैर जानि जिय—१०-१६४ ।

संज्ञा पुं. [सं. शस्य] अनाज, धान्य ।
सर्सिधर, ससिहर संज्ञा पुं. [सं. शशिधर] चन्द्रमा ।
ससी—संज्ञा पुं. [सं. शशि] चन्द्रमा ।
ससुधौटी—संज्ञा स्त्री. [सं स+हिं. सुधौटी] सुधा का पात्र। उ.—हरि-कर राजति माखन-रोटी । मनु बारिज ससि बैर जानि जिय गह्यौ सुधा ससुधौटी—१०-१६४।
ससुर, ससुरा—संज्ञा पुं. [सं. श्वशुर] पति या पत्नी का पिता ।
ससुरा, ससुराल—संज्ञा स्त्री. [सं. श्वशुर+आलय] पति या पत्नी के पिता का घर ।
सस्ता—वि. [सं. स्वस्थ] (१) थोड़े मूल्य का, जो महँगा न हो। (२) जिसका मूल्य गिर गया हो ।

मुहा. सस्ता समय—वह समय जब सब चीजें थोड़े ही मूल्य पर मिल जाती हों । सस्ता छूटना—(१) साधारण से भी कम दाम पर बिक जाना। (२) सहज में ही या बहुत थोड़ी हानि सहकर किसी काम या भंझट से छुटकारा पा जाना ।

(३) जो बहुत थोड़े परिश्रम, व्यय या कार्य से प्राप्त हो जाय । (४) घटिया, मामूली ।
सस्ताना, सस्तानो—क्रि. अ. [हिं. सस्ता] सस्ता होना ।

क्रि. स. सस्ते दाम पर बेचना ।

क्रि. अ. [हिं. सुसताना] थकावट दूर करना ।
सस्ती—वि. स्त्री. [हिं. सस्ता] (१) साधारण से भी कम मूल्य की । (२) जिसका मूल्य गिर गया हो। (३) जो बहुत थोड़े श्रम या व्यय से प्राप्त हो जाय । (४) घटिया, मामूली ।

संज्ञा स्त्री. (१) सस्ता होने का भाव । (२) वह समय जब सब चीजें सस्ते दाम पर मिल जायँ ।
सस्तो, सस्तौ—वि. [हिं. सस्ता] जो थोड़े ही श्रम से सिद्धि प्राप्त करा दे । उ.—जहाँ तहाँ तैं सब आवैंगे सुनि-सुनि सस्तौ नाम—१-१९१ ।
सस्त्र—संज्ञा पुं. [सं. शस्त्र] हथियार जिन्हें हाथ में पकड़े रहकर ही वार किया जाय । उ.—(क) जुद्ध न करौं सस्त्र नहिं पकरौं, एक ओर सेना सिगरी—१-२६८ । (ख) जेतक सस्त्र सो किए प्रहार—६-५ ।
सस्त्रनि—संज्ञा पुं. सवि. [सं. शस्त्र] हथियारों या शस्त्रों को । उ.—ते सब ठाढ़ सस्त्रनि धारे—४-१२ ।
सस्त्रीक—वि. [सं.] स्त्री या पत्नी के साथ ।
सस्मित—वि. [सं. स+स्मित] हँसता हुआ ।

क्रि. वि. मुस्कराकर , हँसकर ।
सस्य - संज्ञा पुं. [सं.] (१) अनाज । (२) खेतीबारी ।
सहँगा—वि. [हिं. महँगा का अनु.] सस्ता ।
सह - अव्य. [सं.] समेत, सहित । उ.—मनु बराह भूधर सह पुहुमी धरी दसन की कोटी—१०-१६४ ।

वि. [सं.] (१) सहनशील । (२) योग्य, समर्थ ।
सहकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सुगन्धित पदार्थ । (२) आम का पेड़ । (३) सहायक । (४) सहयोग ।
सहकारता, सहकारिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मिलकर काम करना । (२) मदद, सहायता ।
सहकारी—संज्ञा पुं. [सं. सहकारिन्] (१) सहयोगी, साथी। (२) सहायक ।
सहगमन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) किसी के साथ जाने की क्रिया या भाव। (२) पति के शव के साथ स्त्री के सती होने की क्रिया । उ.—ज्यौं सहगमन सुन्दरी के सँग बहु बाजन हैं बाजत—९-१३० ।
सहगान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कई लोगों के साथ मिलकर गाना । (२) वह गान जो इस प्रकार गाया जाय ।
सहगामिनि, सहगामिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. सहगामिनि] (१) वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो जाय। (२) पत्नी । (३) सहेली ।

संज्ञा पुं. स्त्री. सहगमन । उ.—(क) गंधारी सह-गामिनि कियौ—१-२८४ । (ख) सब नारिन सह-गामिनि कियौ—९-९ ।
सहगामी—संज्ञा पुं. [सं. सहगामिन्] (१) साथ चलनेवाला । (२) साथ रहनेवाला, साथी । (३) अनुकरण करनेवाला, अनुयायी ।
सहगौन—संज्ञा पुं. [सं. सहगमन] सहगमन ।
सहचर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संगी साथी । (२) पति । (३) सेवक ।
सहचरि, सहचरी संज्ञा स्त्री. [सं.सहचरि] (१) पत्नी । (२)सेविका । (३) सखी, सहेली । उ.-(क) सुपनेहुसंयोग सहति नहिं सहचरि सौति भई—२७९१। (ख)गावहिं सब

सहचरी कुँवरि तामस करि हेरयौ—१० उ.-८।

सहचार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **साथ**। (२) **साथी**।

सहचारिणी, सहचारिनि, सहचारिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. सहचारिणी] (१) **सखी, सहेली**, । (२) **पत्नी**।

सहचारिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'सहचरी' होने का भाव**।

सहचारी—संज्ञा पुं. [सं. सहचारिन्] (१) **संगी, साथी, सहचर**। (२) **सेवक**।

सहज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सगा भाई**। (२) **स्वभाव**।

वि. (१) **साथ-साथ उत्पन्न होनेवाला**। (२) **प्राकृतिक, स्वाभाविक**। उ.—(क) नाभि-ह्रद रोमावली अलि चले सहज सुभाव—१-३०७। (३) **प्रकृत, साधारण**। उ.—मनौ नव घन दामिनी, तजि रही सहज सुबेस—६३३। (४) **सरल, सुगम**।

क्रि. वि. (१) **सुगमता से**। उ.– बहुरौ ध्यान सहज ही होइ—३-१३। (२) **सरल और आडंबररहित रूप में**। उ.—सहज भजै नँदलाल कौं सो सब सचु पावै २-९। (३) **सीधेपन से, सिधाई से**। उ.—हम माँगत हैं सहज सों तुम अति रिस कीन्हों—२५७६।

सहजता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सरलता, सुगमता**। (२) **स्वाभाविकता**।

सहज-ध्यान—संज्ञा पुं. [सं.] **वह ध्यान जो सुगम रूप में किया जाय और जिसके लिए आसन, मुद्रा आदि की आवश्कता न हो**।

सहज-पंथ—संज्ञा पुं. [सं.] **गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक वर्ग**।

सहज-बुद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जीव-जंतु या प्राणी की स्वाभाविक ज्ञान-शक्ति**।

सहज-समाधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह समाधि जो सुगम रूप में लगायी जाय और जिसके लिए आसन, मुद्रा आदि की आवश्यकता न हो**। उ.—सुचि रुचि सहज समाधि साधि सठ, दीनबंधु करुनामय उर धरि — १-३१२।

सहजात—वि. [सं.] (१) **साथ-साथ उत्पन्न होनेवाला, सहोदर**। (२) **यमज**।

सहजिया—वि. [सं.] **सहज-पंथानयायी**।

सहजीवी—वि. [सं.] **साथ रहनेवाला**।

सहत—क्रि. स. [हिं. सहना] **सहन करता है, सहता है**। उ.—(क) कौर-कौर कारन कुबुद्धि जड़ किते सहत अपमान—१-१०३। (ख) सूर सो मृग ज्यौं बान सहत कित १-३२०।

सहताना, सहतानो—क्रि. अ. [हिं. सुसताना] **आराम करके थकावट दूर करना**।

सहतिं—क्रि. स. [हिं. सहना] **सहती या सहन करती हैं**। उ.—सलिल तैं सब निकसि आवहु बृथा सहतिं तुषार—७८६।

सहति—क्रि. स. [हिं. सहना] **भोगती, झेलती या बरदाश्त करती है**। उ.—(क) कत हौ सीत सहति ब्रज-सुंदरि—७८७। (ख) सहति बिरह के सूलनि—८९७। (ग) बात मेरी सुनति नाहिंन, कतहिं निंदा सहति—११८९।

सहदान—संज्ञा पुं. [सं.] **अनेक देवताओं के लिए एक ही में दिया जानेवाला दान**।

सहदानि, सहदानी—संज्ञा स्त्री. [सं. संज्ञान] **निशानी, पहचान, चिह्न**। उ—(क) लेहु मातु सहदानि मुद्रिका दई प्रीति करि नाथ—९-८३ (ख) चरन चापि महि प्रगट करी पिय सेष सीस सहदानी—२०७६।

सहदूल—संज्ञा पुं. [सं. शार्दूल] **सिंह**।

सहदेव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **राजा पांडु के पाँच पुत्रों में सबसे छोटा पुत्र जो माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारों के औरस से जन्मा था**। (२) **जरासंध का पुत्र जो महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु द्वारा मारा गया था**।

सहधर्मिणी—संज्ञा स्त्री. [सं. सहधर्म्मिणी] **पत्नी**।

सहधर्मी—संज्ञा पुं. [सं. सहधर्म्मी] **पति**।

सहन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सहने की क्रिया या भाव**। (२) **क्षमा**। (३) **आज्ञा या आदेश पालन करना**।

संज्ञा पुं. [अ.] (१) **घर का आँगन या चौक**। (२) **एक तरह का रेशमी कपड़ा**।

सहनशील—वि. [सं.] (१) **बरदाश्त या सहन करनेवाला, सहिष्णु**। (२) **संतोषी**।

सहनशीलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सहनशील होने का भाव, सहिष्णुता**। (२) **संतोष**।

सहना—क्रि. स. [सं. सहन] (१) **बरदाश्त करना, झेलना,**

सहभोज—संज्ञा पुं. [सं.] लोगों का साथ भोजन करना।
सहभोजी—वि. [सं. सहभोजिन्] साथ खानेवाला।
सहम—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) डर। (२) हिचक, संकोच।
सहमत—वि. [सं.] एक मत का।
सहमति—संज्ञा स्त्री. [सं.] किसी के साथ एकमत या सहमत होने की क्रिया या भाव।
सहमना, सहमनो—क्रि. अ. [फ़ा. सहम] डरना।
सहमरण—संज्ञा पुं. [सं.] स्त्री का सती होना।
सहमाना, सहमानो—क्रि. स. [फ़ा. सहम] डराना।
सहयोग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साथ मिलकर काम करने का व्यापार या भाव। (२) संग, साथ। (३) सहायता।
सहयोगी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साथ मिलकर काम करनेवाला व्यक्ति। (२) वह जो एक ही कार्यालय या विभाग में काम करता हो। (२) साथी, सहकारी। (४) समवयस्क। (५) समकालीन।
सहर—क्रि. वि. [हिं. सहराना] धीरे, रुक रुककर।
संज्ञा पुं. [देश.] बनबिलाव।
संज्ञा पुं. [अ.] सबेरा, प्रातःकाल।
संज्ञा पुं. [अ. सेह्र] जादू-टोना।
संज्ञा पुं. [फ़ा. शहर] पुर, नगर। उ.—ता दिन सूर सहर सब चकित सबर-सनेह तज्यौ पितु मात—९-३८। (ख) आनँद मगन नर गोकुल सहर के—१०-३०। (ग) जीवन हैं ये स्याम, सहर के—६०७।
सहराना, सहरानो—क्रि. स. [हिं. सहलाना] धीरे-धीरे हाथ फेरना, धीरे-धीरे मलना।
सहरी—संज्ञा स्त्री. [अ.] निर्जल व्रत के दिन बहुत तड़के किया जानेवाला भोजन।
संज्ञा स्त्री. [सं. शफ़री] एक तरह की मछली।
वि. [हिं. सहर] नगर या पुर का।
सहल—वि. [अ.] सरल, सहज, सुगम।
सहलग, सहलगा—वि. [सं. सह+हिं. लगना] साथ-साथ लगा रहनेवाला।
संज्ञा पुं. साथी, सहचर।
सहलगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सहलगा] (१) साथ लगे रहने की क्रिया या भाव। (२) सहचरी।
वि. साथ-साथ लगी रहनेवाली।
सहलाना, सहलानो—क्रि. स. [अनु.] (१) धीरे धीरे हाथ फेरना। (२) धीरे-धीरे मलना।
सहवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साथ-साथ रहना, संग, साथ। (२) मैथुन, संभोग।
सहवासी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) साथी। (२) पति।
सहस—वि. [सं. सहस्त्र] हजार, हजारों। उ.—(क) सहस सकट भरि कमल चलाए—५८३। (ख) सोरह सहस घोषकुमारि—७९५।
सहसक—वि. [सं. सहस+एक] लगभग हजार। उ.—मन सहसक केसरि लै दीनो—८४३३।
सहस-किरन—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रकिरण] सूर्य।
सहसगो—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रगु] सूर्य।
सहसचरण—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रचरण] सूर्य।
सहसजिभ्या, सहसजीभ, सहसजीभी—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रजिह्व] शेषनाग।
सहसदल—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रदल] कमल।
सहसनयन—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रनयन] इंद्र।
सहसनाम—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्र+नाम] (१) वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों। (२) महाप्रभु वल्लभाचार्य का 'पुरुषोत्तम सहस्त्रनाम नामक' ग्रंथ। उ.—सहसनाम तहँ तिन्हैं सुनायौ—१-२२६।
सहसनैन—संज्ञा पुं [सं. सहस्त्रनयन] इंद्र।
सहसफन, सहसफनी—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रफण] शेषनाग। उ.—हरि जू की आरती बनी।.........डाँड़ी सहसफनी—२-२६।
सहसबदन—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रवदन] शेषनाग।
सहसबाहु—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रबाहु] राजा कृतवीर्य का पुत्र 'हैहय' जिसे कार्तवीर्यार्जुन भी कहते हैं। इसने रावण को युद्ध में परास्त किया था और पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए परशुराम ने इसे मार डाला था। उ.—सहसबाहु रविबंसी भयौ।.........। सहसबाहु तब ताकौ गह्यौ—९-१३।
सहसमुख—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रमुख] शेषनाग।
सहसवदन—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रवदन] शेषनाग।
सहससीस—संज्ञा पुं. [सं. सहस्त्रशीर्ष] शेषनाग।
सहसा—अव्य. [सं.] एकाएक, अचानक।

सहसाई—संज्ञा पुं. [सं. सहाय] **सहायता।**

संज्ञा पुं. **सहायता करनेवाला व्यक्ति।**

सहसाच्छ, सहसाच्छि, सहसाखि, सहसाखी—संज्ञा पुं. [सं. सहस्राक्ष] **इन्द्र।**

सहसान—संज्ञा पुं. [सं.] **मोर, मयूर।**

सहसानन—संज्ञा पुं. [सं. सहस्रानन] **शेषनाग।** उ.—(क) चारि बदन मैं कहं कहौं, सहँसानन नहिं जान—४९२। (ख) सहसानन जेहि गावै हो—१५५७।

सहसौ—वि. [सं. सहस्र] **हजार, हजारों।** उ.—सेष सकुचि सहसौ फल पेलत—१०-६३।

सहस्मार—संज्ञा पुं. [सं.] **शरीर के भीतरी आठ कमलों या चक्रों में एक जिसे 'शून्य चक्र' भी कहते हैं। यह सहस्र दलवाला और मस्तिष्क के ऊपरी भाग में स्थित कहा गया है।**

सहस्र—संज्ञा पुं. [सं.] **हजार की संख्या।**

वि. **जो गिनती में हजार हो।** उ.—(क) सतजुग लाख बरस की आइ, त्रेता दस सहस्र कहि गाइ—१-२३०। (ख) साठ सहस्र सगर के पुत्र—९-९।

सहस्र—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्य।**

सहस्रकरण—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्य।**

सहस्रचक्षु—संज्ञा पु. [सं. सहस्रचक्षुस्] **इन्द्र।**

सहस्रकिरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य।** (२) **विष्णु।**

सहस्रदल—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल, पद्म।**

सहस्रधारा—संज्ञा पुं. [सं.] **देवताओं को स्नान कराने का पात्र जिसमें हजार छेद होते हैं।**

सहस्रनयन—संज्ञा पुं. [सं.] **इन्द्र।**

सहस्रनाम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह स्तोत्र जिसम किसी देवता के हजार नाम हों।** (२) **महाप्रभु वल्लभाचार्य का 'पुरुषोत्तम सहस्रनाम' नामक ग्रंथ।**

सहस्रपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल, पद्म।**

सहस्रपाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य।** (२) **विष्णु।**

सहस्रबाहु—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्यवंशी राजा कृतवीर्य का पुत्र जो 'हैहय' और 'सहस्रार्जुन' नामों से भी प्रसिद्ध है। इसने एक बार रावण को पराजित किया था। मुनि जमदग्नि की कामधेनु हरने और उनकी हत्या करने के अपराध में उनके पुत्र परशुराम ने उसे मार डाला था।**

सहस्रभुज—संज्ञा पुं. [सं. सहस्र+भुजा] **सहस्रबाहु।**

सहस्रभुजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **देवी का वह रूप जब महिषासुर का वध करने के लिए उनकी हजार भुजाएँ हो गयी थीं।**

सहस्रलोचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इंद्र।** (२) **विष्णु।**

सहस्राक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इन्द्र।** (२) **विष्णु।**

सहस्राब्द—संज्ञा पुं. [सं.] **हजार वर्ष।**

सहस्रार्जुन—संज्ञा पुं. [सं.] **सहस्रबाहु।**

सहाइ, सहाई—वि. [सं. सहाय] **सहायता करनेवाला।** उ.—(क) सूर स्याम ......गिरि लै भए सहाई—१-१२२। (ख) जहाँ तहाँ सो होत सहाई—३९१। (ग) जहँ तहं तुमहिं सहाइ सदा हौ—६०७। (घ) राजसूय यज्ञ को कियो अरंभ मै जानि कै नाथ तुमको सहाई—१० उ.-५१।

संज्ञा स्त्री. (१) **सहायता।** उ.—(क) हरिजू ताकी करी सहाइ—७-२। (ख) ना जानौं धौं कौन पुन्य तैं को करि लेत सहाइ—१०-८१। (ग) तिनके चरन सरोज सूर अब किए गुरु कृपा सहाइ—२५५५। (२) **फौज, सेना।**

क्रि. स. [हिं. सहना] **सहन करके या की, सहन करने को प्रवृत्त किया।**

सहाउ, सहाऊ—वि. [सं. सहाय] **सहायक।**

सहाध्यायी—संज्ञा पुं. [सं. सहाध्यायिन्] **सहपाठी।**

सहाना, सहानो—क्रि. स. [हिं. सहना] **सहन करने को प्रवृत्त या विवश करना।**

वि. [फ़ा. शाहाना] (१) **राजसी** (२) **उत्तम।**

संज्ञा पुं. **एक तरह का राग (संगीत)।**

सहानी—संज्ञा पुं. [फ़ा. शाहाना] **एक रंग जो पीलापन लिये हुए लाल हो।**

सहानुगमन—संज्ञा पुं. [सं.] **सती होना, सहगमन।**

सहानुभूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **किसी के दुख से दुखी या द्रवित होना।**

सहाब—संज्ञा पुं. [फ़ा. शहाब] **एक तरह का गहरा लाल रंग जो कुसुम के फूलों से बनता है।**

सहाय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सहायता।** उ.—(क) कहं न सहाय करी भक्तनि की—१-२५। (ख) कौन सहाय

करै घर अपने मेटै बिधि अपना—२५४७। (ग) इनकी करहु सहाय सवारे—१५६९। (घ) सत्वर सूर सहाय करै को—३१६५। (२) सहारा, भरोसा।

वि. सहायक। उ.—तेरो पुन्य सहाय भयो है—१०-३३५।

सहायक—वि. [सं.] (१) सहायता करनेवाला। उ.—सूरदास हम दृढ़ करि पकरे अब ये चरन सहायक—१-१७७। (२) जो (छोटी नदी) बड़ी नदी में मिलती हो। (३) अधीन काम करनेवाला, सहकारी।

सहायता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मदद, कार्य में सहयोग। (२) कार्य-विशेष के लिए दिया जानेवाला धन।

सहायी—वि. [सं. सहाय] सहायक।

संज्ञा पुं. (१) सहायता। (२) आश्रय।

सहायौ—वि. [सं. सहाय] सहायक। उ.—तुमहिं बिना प्रभु कौन सहायो—३९१।

सहार—संज्ञा पुं. [हिं. सहारना] (१) सहने की क्रिया या भाव। (२) सहनशीलता।

सहारना, सहारनो—क्रि. स. [हिं. सहार] (१) बर्दाश्त या सहन करना, सहना। (२) अपने ऊपर भार लेना या सँभालना। (३) गवारा करना। (४) सहारा देना।

सहारा—संज्ञा पुं. [सं. सहाय] (१) मदद, सहायता। (२) आश्रय। (३) भरोसा।

मुहा.—सहारा पाना—सहायता पाना। सहारा देना—(१) सहायता करना। (२) टेक देना। (३) आसरा देना। (४) आश्रय देना। (५) रोकना। सहारा ढूँढ़ना—आसरा ताकना।

सहारि—क्रि. स. [हिं. सहारना] सहन करके।

प्र.—सकी सहारि—सहन कर सकी। उ.—कठिन बचन सुनि स्रवन जानकी, सकी न बचन सहारि (सँभारि)—९-१९।

सहारे—वि. [हिं. सहारा] सहायक। उ.—सो उबर्यो भयो धर्म सहारे—५९५।

सहारो, सहारौ—संज्ञा पुं. [हिं. सहारा] आश्रय। उ.—सूर पतित को और ठौर नहिं है हरि-नाम सहारो—१-३३९।

सहालग—संज्ञा पुं. [सं. सह+हिं. लगाव या लगना] (१) ब्याह-शादी के दिन, लगन। (२) लाभ के दिन।

सहावल—संज्ञा पुं. [हिं. साहुल] लटकन, साहुल।

सहाहीं—वि. [सं. सहाय] सहायक। उ.—तब अति ध्यान कियौ श्रीपति को, केसव भये सहाहीं—सारा. ३९।

सहिंजन—संज्ञा पुं. [हिं. सहिजन] एक वृक्ष।

सहि—क्रि. स. [हिं. सहना] (१) झेलकर, बरदाश्त करके। उ.—सहि सन्मुख तउ सीत-उष्न कौं, सोई सुफल करै—१-११७।

प्र.—सहि जैहै—झेली या सहन की जायगी। उ.—सुनि सुन्दरि यह समौ गए तें पुनि न सूल सहि जैहै—२०३३। लई सहि कै—झेल ली, सहन कर ली। उ.—हमसों कही, लई हम सहि कै जिय गुन लेहु सयाने—३००६। सहि सकत—झेली जा सकती है, सहन की जा सकती है। उ.—सहि न सकति अति बिरह त्रास तनु आगि सलाकनि जारी—३२४६। सहि सकी—सहन कर सकी। उ.—सहि न सकी, रिस ही रिस भरि गई बहुतै ढीठ कन्हाई—३७७।

सहिए, सहिऐ—क्रि. स. [हिं. सहना] बरदाश्त या सहन कीजिए। उ.—(क) सखा-भीर लै पैठत घर मैं आपु खाइ तौ सहिऐ—१०-३२२। (ख) कैसे रिस मन सहिए जू—२०१५।

सहिक—वि. [सं. स (अस्)+हिं. क (प्रत्य.)] (१) स्पष्ट और निश्चित (कथन)। (२) वास्तविक। (३) दृढ़ और निश्चित।

सहिजन—संज्ञा पुं. [सं. शोभांजन] एक वृक्ष जिसकी फलियों की तरकारी बनती है।

सहिजानी—संज्ञा स्त्री. [सं. संज्ञान] निशानी।

सहित, सहितै—अव्य. [सं. सहित] साथ, समेत। उ.—(क) लक्ष्मी सहित होति नित क्रीड़ा—१-३३७। (ख) बेगि बढ़ै बल सहित बिरध लट—१०-१३८। (ग) सूर राधा सहित गोपी चलीं ब्रज समुहाहिं—१३०६। (घ) गिरिवर सहितै ब्रजै बहाई—१०४१।

सहिदान—संज्ञा पुं. [सं. संज्ञान] निशान, चिह्न।

सहिदानि, सहिदानी—संज्ञा स्त्री. [सं. संज्ञान] निशानी, पहचान, चिह्न। उ.—(क) कछु इक अंगनि की सहिदानी मेरी दृष्टि परी—९-६३। (ख) लेहु मातु सहि-

दानि मुद्रिका दई कृपा करि नाथ—९-८३।

सहिबे—संज्ञा पुं. [हिं. सहना] **सहन करने की क्रिया, सहना।** उ.— मन मानै सोऊ कहि डारौ पालागैं हम सुनि सहिबे को—२००४।

सहियत—क्रि. स. [हिं. सहना] **भोगते या सहते हैं।** उ.— इतनो दुख सहियत—२८५६।

सहियै—क्रि. स. [हिं. सहना] **भोगिए, सहन कीजिए।** उ. - (क) जम की त्रास न सहियै -१-६२। (ख) इतौ द्वंद जिय सहिए— २-१८।

सहिष्णु—वि. [सं.] **सहन करनेवाला।**

सहिष्णुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सहनशीलता।**

सहींजन—संज्ञा पुं. [हिं. सहिजन] **एक वृक्ष जिसकी फलियों की तरकारी बनती है।** उ.—फूले फूले सहींजन छौंके —२३२१।

सही—वि. [फ़ा. सहीह] (१) **सच, सत्य।** उ.—करवत चिन्ह कहै हरि हमकौं ते अब होत सही—२५०१। (२) **यथार्थ, प्रामाणिक।** (३) **ठीक, शुद्ध।**

मुहा.—सही पड़ना - **ठीक उतरना, सच होना, प्रमाणित होना।** सही परी— **ठीक या सत्य हुआ।** उ.—(क) निगमनि सही परी—१०-६९। (ख) तीनि लोक अरु भुवन चतुरदस वेद पुरानन सही परी— २६५६। सही भरना—(१) **मान लेना।** (२) **सत्यता की साक्षी देना।**

संज्ञा स्त्री. **छाप, दस्तखत, हस्ताक्षर।** उ.—रही ठगी, चेटक सो लाग्यौ परि गयी प्रीति सही—१०-२८१।

मुहा.—सही करना—**मान लेना।** करैं सही— **मान लें, अंगीकार कर लें।** उ.—अब जोई पद देहि कृपा करि सोइ हम करैं सही – ३३७०।

क्रि. स. [हिं. सहना] **भोगी, बरदाश्त या सहन की, झेली।** उ.— (क) उर अध-सूल सही—१-३२४। (ख) सही दूध-दही की हानि – १०-२७६। (ग) पलकनि सूल-सलाक सही है—पृ. ३२७ (६०) सही बिपति तनु गाढ़ी—२५३५।

प्र.—परति सही—**सही जाती हैं।** उ.—कहा करौं दिनप्रति की बातैं, नाहिंन परति सही—१०-२९१। परति सही—**सहन की जाती है।** उ.—(क) नाहिंन सही परति मौंपै अब दारुन त्रास निसाचर केरी—९-९३। (ख) दित प्रति कैसैं सही परति है दूध-दही की हानि—१०-२८०।

क्रि. वि. **सत्य ही, सचमुच, वस्तुतः।**

सही-सलामत—वि. [हिं सही+अ. सलामत] (१) **भला-चंगा, स्वस्थ।** (२) **जिसमें कोई बाधा न पड़े।**

क्रि. वि. **सकुशल, कुशलपूर्वक।**

सहुँ—अव्य. [सं. सम्मुख] (१) **सामने।** (२) **ओर।**

सहु—वि. [हिं. सब] **सारा, कुल।**

सहूँ—क्रि. स. [हिं. सहना] **झेलूँ, सहन करूँ।** उ.—निपट निलज बैल (?) बिलखि सहूँ—१०-२६५।

सहूलियत—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **आसानी, सुगमता।**

सहृदय—वि. [सं.] (१) **दूसरे का सुख-दुख समझनेवाला।** (२) **दयालु, भला, सज्जन।** (३) **रसिक, भावुक।**

सहृदयता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सहृदय होने का भाव।** (२) **दयालुता, सौजन्य।** (३) **रसिकता, भावुकता।**

सहेज—संज्ञा पुं. [देश.] **(दही का) जामन।**

सजहेना, सहेजनो—क्रि. स. [हिं. सही] (१) **सँभालना।** (२) **समझा-बुझाकर सुपुर्द करना।**

सहेजवाना, सहेजवानो – क्रि. स. [हिं. सहेजना] **सहेजने को प्रवृत्त करना।**

सहेट—संज्ञा पुं. [हिं. संकेत] **मिलने का स्थल।**

सहेटना, सहेटनो --क्रि. अ. [देश.] **घूमना-फिरना।**

क्रि. स. (१) **समेटना।** (२) **सँभालना।**

सहेटी – वि. [हिं. सहेटना] **घुमक्कड़।**

सहेत—संज्ञा पुं. [सं. संकेत] **प्रेमी-प्रेमिका-मिलन का पूर्व निश्चित एकान्त स्थल।**

क्रि. वि. [सं. स+हेतु] (१) **हेतु या उद्देश्य से।** (२) **प्रेम या प्रीति से।**

सहेतुक—वि. [सं.] **जिसमें कुछ उद्देश्य हो।**

क्रि. वि. **किसी हेतु या उद्देश्य से।**

सहेलरा—वि. [हिं. सुहेल] (१) **सुहावना।** (२) **सुखद।**

संज्ञा पुं. (१) **मित्र।** (२) **साथी।**

सहेलरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सहेलरा] **सहेली, सखी, सहचरी।** उ.—हरषी सखी-सहेलरी (हो) आनँद भयौ

सुभ जोग—१०-४० ।

सहेला—वि. [हिं. सुहेला] (१) **सुंदर** । (२) **सुखद** ।

संज्ञा पुं. (१) **मित्र** । (२) **साथी** ।

सहेलि, सहेली—संज्ञा स्त्री. [सं. सह + हिं. एली (प्रत्य.)] **सखी, संगिनी** । उ.—(क) बिनु रघुनाथ और नहिं कोऊ, मातु, पिता न सहेली—९-९३ । (ख) कबहुँ रहसत मचत लै सँग एक-एक सहेलि—२२७८ । (ग) एकै मत सब भईं सहेली—३१४४ ।

सहेस—क्रि. वि. [सं. स + हर्ष] **सानंद, सहर्ष** ।

सहैंगे—क्रि. स. [हिं. सहना] **सहन करेंगे** । उ.—बासर निसि कहुँ होत न न्यारे बिछुरन हृदय सहैंगे—२५०० ।

सहै—क्रि. स. [हिं. सहना] **सहन करे या करता है** । उ.—(क) लोभ लिए दुर्बचन सहै—१-५३ । (ख) घन आसा सब दुख सहै—१-३२५ । (ग) त्रिभुवन-नाथ नाह जो पावै सहै सो क्यों बनवास—९-८३ ।

सहैया—संज्ञा पुं. [सं. सहाय] **सहायक** ।

संज्ञा स्त्री. **सहायता** । उ.—(क) स्याम कहत नहिं भुजा पिरानी ग्वालनि कियो सहैया—१०७१ । (ख) जब-जब गाढ़ परति है हमकौ, तहँ करि लेत सहैया—२३७४ ।

वि. [सं. सहन] **सहन करनेवाला, सहनशील** ।

सहोक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक काव्यालंकार** ।

सहोदर, सहोवर—वि. [सं. सहोदर] **एक ही माता के गर्भ से जन्म लेनेवाला, सगा** ।

संज्ञा पुं. **सगा भाई** ।

सहोदरा, सहोदरी, सहोवरि, सहोवरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सहोदरा] **सगी बहन** ।

वि. **एक ही माता के गर्भ से जन्म लेनेवाली** ।

सहौं—क्रि. स. [हिं. सहना] **सहन करूँ** । उ.—(क) कहाँ लगि सहौं रिस—१०-२९५ । (ख) ब्रज बसि काके बोल सहौं—२७७४ । (ग) समुझि आपनी करनी गुसाईं काहे न सूल सहौं—११-२ ।

सहौ—क्रि. स. [हिं. सहना] **सहन करो** । उ.—तुम जिनि सहौ स्याम सुन्दर बर, जेती में जु सही—१-२५८ ।

सह्य—वि. [सं.] **जो सहा जा सके** ।

संज्ञा पुं. [सं.] **बम्बई प्रान्त का 'सह्याद्रि' पर्वत** ।

सह्याद्रि—संज्ञा पुं. [सं.] **बम्बई प्रान्त का एक पर्वत** ।

सह्यो, सह्यौ—क्रि. स. [हिं. सहना] (१) **सहन किया, सहा** । उ.—किहिं जुग इतौ सह्यौ—१-४९ । (२) **भार उठाया** । उ.—इहिं भरु अधिक सह्यौ अपनें सिर अमित अंडमय बेष—५७० ।

प्र.—सह्यौ न जाइ—**सहा या सहन किया नहीं जाता** । उ.—ताकौ बिषम बिषाद अहो मुनि मोपै सह्यौ न जाइ—९-७ ।

साँइयाँ—संज्ञा पुं. [हिं. साँईं] (१) **पति** । उ.—जागिहै मेरौ साँइयाँ—५७७ । (२) **स्वामी** । (३) **परमेश्वर** ।

साँईं—संज्ञा पुं. [सं. स्वामी] (१) **मालिक, स्वामी** । उ.—तुम हर्ता तुम कर्ता एकै तुम हौ अखिल भुवन के साईं—२५५८ । (२) **ईश्वर** । (३) **पति** । (४) **(मुसलमान) फकीर** ।

साँक—संज्ञा स्त्री. [सं. शंका] (१) **अनिष्ट का भय** । (२) **'शंका' नामक संचारी भाव** । (३) **संदेह, संशय** ।

वि. [सं. सशंक] (१) **जिसके शंका या संदेह हो** । (२) **डरा हुआ, भयभीत** ।

साँकड़—संज्ञा पुं. [शृंखल] (१) **जंजीर, सीकड़** । (२) **पैर का एक गहना जो चाँदी का बनता है** ।

साँकड़ा—संज्ञा पुं. [सं. शृंखला] **पैर में पहनने का चाँदी का एक गहना** ।

साँकर—संज्ञा स्त्री. [सं. शृंखला] **जंजीर, शृंखला** ।

वि. [सं. संकीर्ण] (१) **सँकरा** । (२) **कष्टपूर्ण** ।

संज्ञा पुं. **संकट, विपत्ति** ।

साँकरा—वि. [हिं. सँकरा] (१) **कम चौड़ा, तंग, सँकरा** । (२) **कष्ट या दुखमय** ।

संज्ञा पुं. (१) **कष्ट, दुख** । (२) **कष्ट या दुख का समय या अवस्था** ।

साँकरी—वि. स्त्री. [हिं. साँकरा] **कम चौड़ी, तंग** । उ.—(क) नाचत फिरत साँकरी खोरि—१०-३२७ । (ख) रोकि रहत गहि गली साँकरी—१०-३२८ । (ग) तब घिरे साँकरी खोरि—२४४७ ।

साँकरे—वि. [हिं. साँकरा] (१) **कम चौड़ा, तंग** । (२) **छोटा, छोटे क्षेत्रफल या आकार का** । उ.—सोभा-सिंधु समाइ कहाँ लौं हृदय साँकरे ऐन—२७६५ ।

संज्ञा पुं. संकट के दिवस या स्थिति। उ.—हरि तुम साँकरे के साथी—१-११२।

साँकरैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. साँकरा] संकट के समय या स्थिति में। उ.-तुम बिनु साँकरैं को काकौ-१-११३।

सांकर्य—संज्ञा पुं. [हिं. संकरता] (१) मिले हुए या संकर होने का भाव। (२) दोगलापन।

सांकेतिक - वि. [सं.] (१) इशारे या संकेत का। (२) जो संकेत-रूप में हो।

साँखा—संज्ञा स्त्री. [सं. शंका] (१) अनिष्ट का भय। (२) 'शंका' नामक संचारी भाव। (३) संदेह।

सांख्य—संज्ञा पुं. [सं.] छह भारतीय दर्शनों में एक जिसके कर्त्ता महर्षि कपिल थे। इसमें सृष्टि की उत्पत्ति के क्रम की चर्चा है तथा जड़ प्रकृति और चेतन पुरुष को जगत का मूल माना गया है।

सांख्यिकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) विषय-विशेष की संख्याएँ एकत्र करके निष्कर्ष निकालना। (२) इस उद्देश्य से एकत्र की गयी संख्याएँ।

साँग, सांग—संज्ञा स्त्री. [सं. शक्ति] एक तरह की बरछी, शक्ति। उ.—ताहि आवत निरखि स्याम निज साँग को काटि करि साल्व की सुधि भुलाई-१० उ.-५६।

वि. [सं. स + अंग] पूर्ण, सफलता से सम्पन्न। उ.—मैं अपमान रुद्र कौ कियौ। तब मम जज्ञ सांग नहिं भयौ—४-५।

संज्ञा पुं. [हिं. स्वाँग] (१) बनावटी वेश या रूप। (२) नकल।

साँगि, साँगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. साँग] छोटी बरछी।

संगोपांग—अव्य. [सं. साङ्गोपाङ्ग] अंगों और उपांगों सहित, सम्पूर्ण।

सांघातिक—वि. [सं.] (१) संघात सम्बन्धी। (२) घातक (चोट या प्रहार)। (३) बड़े संकट का।

साँच—वि. [सं. सत्य] (१) ठीक, सत्य, सिद्ध, यथार्थ। उ.—पतित पावन बिरद साँच (तौ) कौन भाँति करिहौ—११२४।

मुहा.—साँच-झूठ करि—झूठे-सच्चे व्यापार से, उचित-अनुचित सभी कुछ करके। उ.—साँच-झूठ करि माया जोरीं—१-३०२।

(२) सच बोलनेवाला।

साँचना, साँचनो—क्रि. स. [सं. संचय] (१) संचित करना। (२) किसी चीज में भरना।

साँचला—वि. [हिं. साँच] जो सच बोले, सच्चा।

साँचा—संज्ञा पुं. [सं. स्थाता] (१) वह उपकरण जिसमें कोई गीली या गाढ़ी चीज डालकर आकार-विशेष की बनायी जाय।

मुहा.—साँचा (साँचे में) ढला—रूप-आकार में सुन्दर और सुडौल होना। साँचा (साँचे में) ढालना—बहुत सुन्दर और सुडौल बनाना।

(२) किसी आयोजित बड़ी कृति का छोटा नमूना। (३) बेल-बूटे छापने का ठप्पा या छापा। (४) गठा हुई देह, शरीर।

वि. [हिं. साँच] (१) सत्य। (२) सत्यवादी।

साँचि—वि. स्त्री. [हिं. साँच] सत्य। उ.—मेरी कही साँचि तुम जानौ, कीजै आगत-स्वागत—१४८२।

साँचिया—वि. [हिं. साँचा] साँचा बनानेवाला।

साँचिला—वि. [हिं. साँचला] जो सच बोले, सच्चा।

साँचिले वि. [हिं. साँचला] ठीक, यथार्थ। उ.—सूरदास प्रभु साँचिले उपमा कवि गाए—१९७५।

साँची—संज्ञा पुं. [हिं. साँची नगर ?] पान-विशेष।

संज्ञा पुं. [हिं. साँचा] पुस्तक की बेड़े बल की छपाई।

वि. [हिं. साँचा] (१) ठीक, सत्य, यथार्थ। उ.—(क) साँची बिरुदावलि—१-१२२। (ख) मन-क्रम-बचन कहति हौं साँची, मैं मन तुमहिं लगायो—१२२३। (ग) कहि कुसलातैं, साँची बातैं—३४४१। (घ) दरसन कियौ आइ हरि जी को कहत सपन की साँची—१० उ.-११२। (२) सच या सत्य बोलनेवाली। उ.—यह है बिन कलंक की साँची, हम कलंक में सानी—१६०३।

क्रि. वि. सत्य ही, सचमुच।

साँचे—वि. [हिं. साँच] सच्चे। उ.—दीनानाथ हमारे ठाकुर साँचे प्रीति-निबाहक—१-१९।

क्रि. वि. सत्य ही, सचमुच, वस्तुतः। उ.—हौं जानौं साँचे मिले माधौ भूलो यह अभिमान—२७८८।

संज्ञा पुं. [हिं. साँचा] **उपकरण-विशेष में, जिससे विभिन्न आकारोंऔर रूपों की वस्तुएँ बनायी जाती हैं।**

मुहा.—साँचे भरि काढ़ी—**साँचे में ढालकर सुन्दर और सुडौल बनायी है।** उ.–अँगिया बनी कुचनि सौं माढ़ी। सूरदास प्रभु रीझि थकित भए मनहुँ काम साँचे भरि काढ़ी—१०-३००। एक ही साँचे के ढले या भरे हुए—**एक ही रूप-रंग, आकार या स्वभाव के।** भरे दोउ एक ही साँचे—**दोनों एक ही रूप, आकार या स्वभाव के हैं।** उ.—मानो भरे दोउ एकहिं साँचे—३०५१।

साँचेन—वि. सवि. [हिं. साँच] **सत्य बोलनेवालों को।** उ.—लावहिं साँचेन को खोर—११-३।

साँचैंहिं—क्रि. वि. [हिं. साँच] **सत्य ही, सचमुच।** उ.—साँचैंहिं सुत भयौ नँदनायक कैं—१०-२३।

साँचौ—वि. [हिं. साँच] **सच्चा, ठीक, यथार्थ।** उ.—(क) प्रभु, तेरौ बचन-भरोसौ साँचौ—१-३२। (ख) सूर स्याम कौ सौदा साँचौ—१-३१०।

साँझ, साँझि—संज्ञा स्त्री. [सं. संध्या] **शाम, सायंकाल।** उ.—(क) देखियत नहिं भवन माँझ, जैसोइ तन तैसि साँझि—१०-२७६। (ख) साँझ-सवारे आवन लागी—७१०।

साँझी—संज्ञा स्त्री. [हिं. साँझ] **देव-मंदिरों या भक्तों के यहाँ भूमि या मिट्टी के चबूतरे अथवा दीवारों पर रंगीन चूर्ण या फूल-पत्तियों से, सावन के महीने में बनाये गये विविध लीलाओं के चित्र या विशेष आकृतियाँ आदि।**

साँट—संज्ञा स्त्री. [अनु. सट] (१) **छड़ी।** (२) **कोड़ा।** (३) **शरीर पर बना हुआ छड़ी या कोड़े की मार का चिह्न।**

साँटा—संज्ञा [हिं. साँट = छड़ी] (१) **कोड़ा।** (२) **गन्ना।**

संज्ञा पुं. [देश.] **बदला, प्रतिकार।**

साँटि—क्रि. वि. [देश.] **किसी के बदले में।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. सटना] **मेल-मिलाप।** उ.—नैननि साँटि करी मिलि नैननि।

साँटिया—संज्ञा पुं. [हिं. साँटा] **साँटेमार।**

संज्ञा पुं. [देश.] **डुग्गी या डौंड़ी पीटनेवाला।**

साँटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. साँट] **पतली छड़ी।** उ.—(क) साँटी लिये दौरि भुज पकरयौ—१०-२५३। (ख) मारन कौं साँटी कर तौरै—३४४। (ग) साँटी दीन्हीं सर-सर—३७३।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सटना] (१) **मेल-मिलाप।** (२) **बदला।**

साँटेमार—संज्ञा पुं. [हिं. साँटा + मारना] **राजा की सवारी के साथ साँटा लेकर चलनेवाले सिपाही।**

साँठ—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **पैर में पहनने का 'साँकड़ा' नामक गहना।** (२) **गन्ना।** (३) **सरकंडा।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. सटना] (१) **हेलमेल।** (२) **सम्बन्ध।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. गाँठ से अनु.] **पूंजी, मूलधन।**

यौ—साँठ-गाँठ—(१) **गुप्त सम्बन्ध या मेल।** (२) **गुप्त संधि या कुचक।**

साँठना, साँठनो—क्रि. स. [हिं. सटना] **पकड़ना।**

साँठा—संज्ञा पुं. [सं. शरकांड] (१) **गन्ना।** (२) **सरकंडा।**

साँठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. गाँठ से अनु.] **पूँजी, धन।**

साँड़—संज्ञा पुं. [सं. षंड] (१) **बैल जो केवल गर्भाधान करने के लिए पाला जाता है।** (२) **बैल जो मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ दिया जाता है।**

मुहा.—साँड़ की तरह (सा) घूमना—**आजाद और बेफिक्र घूमना।** साँड़ की तरह डकराना—**बहुत जोर से या डरावना शब्द करके चिल्लाना।**

संज्ञा पुं. **ऊँट।**

वि. (१) **खूब मजबूत।** (२) **आवरा, चरित्रहीन।**

साँड़नी—संज्ञा स्त्री. [हिं. साँड़] **ऊँटनी जो बहुत तेज चलने के लिए प्रसिद्ध है।**

साँड़िया—संज्ञा पुं. [हिं. साँड़] **साड़नी-सवार।**

सांत—वि. [सं. स + अंत] (१) **जिसका अंत अवश्य होता हो।** (२) **अंत-युक्त।**

वि. [सं. शांत] (१) **राग आदि से रहित।** (२) **गति रहित।** (३) **शब्द-रहित।** (४) **जिसके दुष्ट विचारों का अन्त हो गया हो।** (५) **विघ्न-बाधा से रहित।** (६) **धीर और सौम्य।** (७) **मौन।** (८) **मृत।**

संज्ञा पुं. **साहित्य के नौ रसों में एक।**

सांतनु—संज्ञा पुं. [सं. शांतनु] **भीष्म पितामह के पिता का नाम।** उ.—तौ लाजौं गंगा-जननी कौं सांतनु-सुत न कहाऊँ—१-२६९।

सांतनु-सुत—संज्ञा पुं. [सं. शांतनु+सुत] **भीष्म पितामह।**

सांति—संज्ञा स्त्री. [सं. शांति] (१) **चित्त की आवेगहीनता।** उ.—बहुरि पुरान अठारह किये। पै तउ सांति न आई हिये—१-२३०। (२) **गतिहीनता।** (३) **सन्नाटा, नीरवता।** (४) **मार-काट या विघ्न-बाधा का प्रभाव।** (५) **धीरता और सौम्यता।** (६) **मृत्यु।** (७) **अमंगल आदि दूर करनेवाले धार्मिक कृत्य।**

सांत्वना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ढारस, धीरज।**

साँथरी—संज्ञा स्त्री. [सं. संस्तर] **चटाई, बिछौना।**

साँद, साँदा—संज्ञा पुं. [देश.] **लकड़ी जो पशु को भागने से रोकने के लिए गले में बाँधी जाती है।**

सांदीपन, सांदीपनि—संज्ञा पुं. [सं. सान्दीपनि] **एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने श्रीकृष्ण और बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी।**

सांद्र—संज्ञा पुं. [सं.] **जंगल, बन।**

वि. (१) **घना।** (२) **कोमल।** (३) **सुन्दर।**

सांद्रता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'सांद्र' होने का भाव।**

साँध, सांध—संज्ञा पुं. [सं. संधान] **निशाना, लक्ष्य।**

संज्ञा स्त्री. [सं. संधि] **संधि।**

वि. [सं.] **संधि का, संधि-संबंधी।**

साँधत—क्रि. स. [हिं. साँधना] **निशाना साधता है।** उ.—हँसि हँसि नाग-फाँस सर साँधत बंधन बंधु समेत बँधायौ—९-१४१।

साँधना, साँधनो—क्रि. स. [सं. संधान] **निशाना साधना, लक्ष्य या संधान करना।**

क्रि. स. [सं. साधन] **पूरा करना, साधना।**

क्रि. स. [सं. संधि] (१) **एक में मिलाना, मिश्रित या सम्मिलित करना।** (२) **सानना।** (३) **टूटी रस्सी में जोड़ लगाना।**

साँधा—संज्ञा पुं. [सं. संधि] **टूटी रस्सी आदि को जोड़ने से पड़ी हुई गाँठ।**

मुहा.—साँधा मारना—**टूटी रस्सी को गाँठ लगाकर जोड़ना।**

साँधि, सांधि—संज्ञा स्त्री. [सं. संधि] **संधि।**

क्रि. स. [हिं. साँधना] **निशाना साधकर, लक्ष्य या संधान करके।** उ.—(क) सप्त ताल सर साँधि बालि हति—९-७०। (ख) भृकुटी सर धनु साँधि बचनबर—१८८७।

साँधिल—वि. [हिं. साधना] **साधक।**

साँधे—वि. [हिं. साँधना] **लक्ष्य या संधान किये हुए।** उ.—राम धनुष अरु सायक साँधे, सिय-हित मृग पाछैं उठि धाए—९-५८।

क्रि. स. **लक्ष्य या संधान किये।**

सांध्य—वि. [सं.] **संध्या-सम्बन्धी।**

साँप—संज्ञा पुं. [सं. सर्प, प्रा. सप्प] **भुजंग, सर्प।**

मुहा.—कलेजे पर साँप लोटना—**(किसी की उन्नति या सफलता देखकर) ईर्ष्या आदि के कारण बहुत दुख होना।** साँप सूँघ जाना—(१) **साँप के काटने से निर्जीव हो जाना।** (२) **सर्वथा गतिहीन और मौन हो जाना (व्यंग्य)।** साँप की तरह केंचुल छोड़ना या झाड़ना—**पुराना और भद्दा रूप-रंग छोड़कर नया और सुन्दर रूप धारण करना (व्यंग्य)।** साँप के मुँह में—**बड़े जोखिम या संकट में।** साँप-छँछूदर की दशा—**बहुत असमंजस और दुबिधा की दशा या स्थिति।**

(२) **बहुत दुष्ट और निर्दयी व्यक्ति।**

सांपत्तिक—वि. [सं. साम्पत्तिक] **संपत्ति का, आर्थिक।**

साँपधरन—संज्ञा पुं. [हिं. साँप+सं. धारण] **शिवजी।**

साँपि, साँपिन, साँपिनि, साँपिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. साँप] (१) **सर्प की मादा।** उ.—पूँछ राखी चाँपि, रिसनि काँपि काली काँनि, देखि सब साँपि-अवसान भूले—५५२। (२) **दुष्ट और कुटिल नारी।** (३) **घोड़े के शरीर की एक भौंरी जो अशुभ समझी जाती है।**

साँपियाँ—संज्ञा पुं. [हिं. साँप] **गहरा भूरा या काला रंग जो साँप के रंग जैसा होता है।**

सांप्रत—अव्य. [सं. साम्प्रत] **अभी, इसी समय।**

सांप्रतिक—वि. [सं. साम्प्रतिक] **आधुनिक।**

सांप्रदायिक—वि. [सं. साम्प्रदायिक] **संप्रदाय का।**

सांप्रदायिकता—संज्ञा स्त्री. [सं. साम्प्रदायिकता] (१) **सांप्रदायिक होने का भाव।** (२) **केवल अपने संप्रदाय**

का ही हित चाहने की संकुचित भावना या दृष्टि।
सांब—संज्ञा पुं. [सं. साम्ब] श्रीकृष्ण का पुत्र जो जांबवंती के गर्भ से जन्मा था। अत्यन्त रूपवान होने का इसे बहुत गर्व था। इसका विवाह दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा से हुआ था। उ.—स्याम सुनि सांब गयौ हस्तिनापुर तुरत लक्ष्मणा जहाँ स्वयंवर रचायो—१० उ.-४६।
सांबर—संज्ञा पुं. [सं. संबल] राहखर्च, पाथेय।
संज्ञा पुं. [सं.] (१) साँभरहिरन। (२) साँभरनमक।
सांबरी—संज्ञा स्त्री. [सं. साम्बरी] जादूगरी, माया।
साँभर—संज्ञा पुं. [सं. सम्भल या साम्भल] (१) राजपूताने की एक झील जिसके खारे पानी से नमक बनता है। (२) उक्त झील के पानी से बना हुआ नमक। (३) एक तरह का हिरन।
संज्ञा पुं. [सं. संबल] राहखर्च, पाथेय।
साँमुहें—अव्य. [सं. सम्मुख] सामने, सम्मुख।
साँवत—संज्ञा पुं. [सं. सामन्त] (१) योद्धा। (२) सामन्त।
संज्ञा पुं. एक तरह का राग।
साँवर, साँवरा—वि. [हिं. साँवरा] (१) श्याम रंग का। (२) सलोना, सुन्दर।
संज्ञा पुं. (१) श्रीकृष्ण का एक नाम। (२) पति, प्रियतम, प्रेमी।
साँवरी—वि. स्त्री. [हिं. साँवला] श्याम वर्ण की। उ.—जहाँ जमुना बहै सुभग साँवरी—३४३०।
साँवरे—वि. [हिं. साँवला] श्याम रंगवाले। उ.—मानो गज-मुक्ता मरकत पर सोभित सुभग साँवरे गात—१०-१५९।
संज्ञा पुं. सवि. श्रीकृष्ण ने। उ.—मेरे साँवरे जब मुरली अधर धरो—६२३।
साँवरैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. साँवरा] श्रीकृष्ण ने। उ.—सूर सरबस हरयौ साँवरैं—१०-३०७।
साँवरो, साँवरौ—वि. [हिं. साँवरा] श्याम वर्ण का। उ.—साँवरौ मनमोहन माई—६१६।
संज्ञा पुं. विष्णु या उनके अवतार राम और कृष्ण। उ.—छाड़ि सुखधाम अरु गरुड़ तजि साँवरौ, पवन के गवन तैं अधिक धायौ—१-५।
साँवल—वि. [हिं. साँवला] श्याम रंग का। उ.—उज्जल साँवल बपु सोभित अंग—१६१३।
संज्ञा पुं. (१) श्रीकृष्ण का एक नाम। (२) पति, प्रियतम, प्रेमी।
साँवलता, साँवलताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. साँवला] 'सावला' होने का भाव, श्यामता।
साँवला—वि. [सं. श्यामला] श्याम वर्ण का।
संज्ञा पुं. (१) श्रीकृष्ण का एक नाम। (२) पति, प्रियतम, प्रेमी।
साँवलापन—संज्ञा पुं. [हिं. साँवला + पन] साँवला होने का भाव, अवस्था या गुण, श्यामलता।
साँवाँ—संज्ञा पुं. [सं. श्यामक] एक तरह का घटिया अन्न।
वि. [सं. श्याम] (१) साँवला। (२) काला।
साँस—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. श्वास] (१) नाक या मुँह से हवा खींचने और निकालने की क्रिया, दम।
मुहा.—साँस उखड़ना—मरते समय बहुत कष्ट से साँस ले पाना। साँस ऊपर-नीचे होना—(१) साँस रुकना, दम घुटना। (२) बहुत घबरा जाना। साँस खींचना—दम साधना। साँस चढ़ना—परिश्रम आदि से साँस का बहुत जल्दी-जल्दी चलना। साँस चढ़ाना—दम साधना। साँस टूटना—मरते समय बहुत कष्ट से साँस ले पाना। साँस तक न लेना—बिलकुल चुपचाप या मौन होना। साँस फूलना—(१) दमे का रोग होना। (२) जल्दी-जल्दी साँस चलना। गहरी, ठंढी या लंबी साँस भरना या लेना—(१) बहुत अधिक दुख के कारण लंबी साँस लेकर और रोककर धीरे-धीरे छोड़ना। (२) बहुत संतोष का अनुभव करना। साँस रहते—जीते जी, जीवित रहते हुए। साँस रुकना—साँस के लेने-निकालने में किसी कारण से बाधा होना। उलटी साँस लेना—(१) मरते समय बहुत कष्ट से साँस ले पाना। (२) बहुत अधिक दुख आदि के कारण लम्बी साँस लेकर और रोककर धीरे-धीरे निकलना या छोड़ना।
(२) फुरसत, छुट्टी, अवकाश।
मुहा.—साँस लेना—कोई काम करते करते थककर विश्राम लेने के लिए ठहरना या रुकना।
(३) गुंजाइश, दम, समाई। (४) वह संधि या

दरार जिसमें से होकर हवा पानी आ-जा सके।

मुहा.—(किसी पदार्थ या वस्तु का) साँस लेना—**(किसी पदार्थ या वस्तु में) संधि या दरार पड़ जाना।**

(४) **किसी अवकाश में भरी हुई हवा।**

साँसत—संज्ञा स्त्री. [हिं. साँस+त] (१) **दम छुटने-जैसी बहुत यातना या पीड़ा।** (२) **झंझट, बखेड़ा।** (३) **सजा, दंड।**

साँसतघर—संज्ञा पुं. [हिं. साँसत + घर] (१) **काल कोठरी।** (२) **वह घर जहाँ हवा-रोशनी न आती हो।**

साँसना—क्रि. स. [सं. शासन] (१) **सजा या दंड देना।** (२) **बहुत अधिक कष्ट या यातना पहुँचाना।** (३) **डाँटना, डपटना।**

संज्ञा स्त्री. (१) **बहुत अधिक कष्ट या यातना।** (२) **दंड।** (३) **डाँट-डपट।**

सांसर्गिक—वि. [सं.] (१) **संसर्ग-सम्बन्धी।** (२) **संसर्ग के कारण उत्पन्न होनेवाला।**

साँसा—संज्ञा पुं. [हिं. साँस] (१) **साँस, श्वास।** (२) **जिंदगी, जीवन।** (२) **प्राण।**

संज्ञा पुं. [हिं. साँसत] (१) **घोर कष्ट।** (२) **चिंता।**

मुहा.—साँसा चढ़ना—**बहुत चिंता होना।**

संज्ञा पुं. [सं. संशय] (१) **शक, संदेह।** (२) **डर।**

मुहा. - साँसा पड़ना—**संदेह होना।**

सांसारिक—वि. [सं.] **संसार-सम्बन्धी, लौकिक।**

साँसी – संज्ञा स्त्री. [हिं. साँस] **साँस, श्वास।**

साँसो—संज्ञा पुं. [हिं. साँसा] **संशय, संदेह।**

सांस्कृतिक—वि. [सं.] **संस्कृति-सम्बन्धी।**

सा—अव्य. [सं. सदृश] (१) **समान, तुल्य।** (२) **एक परिमाण-सूचक शब्द।**

संज्ञा पुं. [सं. षड्ज] **संगीत में षड़ज-सूचक शब्द।**

साइक—संज्ञा पुं. [सं. शायक] (१) **तीर।** (२) **खड्ग।**

साइत—संज्ञा स्त्री. [अ. साअत] (१) **क्षण, पल।** (२) **समय।** (३) **मुहूर्त।** (४) **शुभ समय।**

साइयाँ—संज्ञा पुं. [हिं. साँईं] (१) **स्वामी।** (२) **पति।** (३) **परमेश्वर।**

साइर—संज्ञा पुं. [सं. सागर] **सागर, समुद्र।** उ.—जनकसुता हित हत्यौ लंकपति, बाँध्यौ साइय-(सायर)-पाँज—१-२५५।

साईं—संज्ञा पुं. [सं. स्वामी] (१) **प्रभु, स्वामी।** (२) **परमेश्वर।** (३) **पति।**

साई—संज्ञा स्त्री. [हिं. साइत ?] **पेशगी, बयाना।**

मुहा.—साई बजाना—**जिससे साई पायी हो, उसके यहाँ जाकर गाना-बजाना।**

वि. [हिं. शायी] **सोने या शयन करनेवाला।**

यौ. जलसाई—**जलशायी, जल में शयन करनेवाले विष्णु।** उ.—अच्युत रहै सदा जलसाई—१०-३।

साउज—संज्ञा पुं. [हिं. सावज] **शिकार।**

साऊ—संज्ञा पुं [हिं. शाह] **महाजन।** उ.—मोसौं क[illegible] मोल को लीनौ, आपु कहावत साऊ—३८१।

साकभरी—संज्ञा पुं. [सं. शाकम्भरी] **साँभर झील या उसका निकटवर्ती प्रदेश।**

साक—संज्ञा पुं. [सं. शाक] **साग-भाजी, सब्जी।** उ.—साक पत्र लै सबै अघाए—१-१२२।

संज्ञा पुं. [हिं. साका] **रोब, धाक।**

मुहा.—साक चलना—**प्रभाव माना जाना, धाक बँधना।** चलति साक—(**सर्वत्र**) **प्रभाव या धाक है।** उ.—करजकर पर कमल वारत चलति जहँ-तहँ साक—१४१३।

साक-चेरी, साकचेरी—संज्ञा स्त्री. [सं. शाक+हिं. चेरी ?] **हिना, मेंहदी।**

साकट, साकत—वि. [सं. शाक्त] (१) **शाक्त मत का अनुयायी।** उ.—तुम साकट वै भगत भागवत राग-द्वेष तैं न्यारे—१-२४२। (२) **जिसने गुरु-दीक्षा न ली हो।** (३) **जो मद्य-मांस-सेवी हो।** (४) **दुष्ट, कुटिल।**

संज्ञा स्त्री. [सं. शक्ति] **शक्ति।**

साकर—वि. [सं. संकीर्ण] **तंग, सँकरा।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. शक्कर] **शक्कर।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. साँकल] **जंजीर, शृंखला।** उ.—धावत अध अवनी आतुर तजि साकर सगुन सु छूटो—३४०१।

साकल, साकला—संज्ञा स्त्री. [हिं. साँकल] **जंजीर।**

साकल्य—संज्ञा पुं. [सं.] **सकलता, पूर्णता।**

साका, साकौ—संज्ञा पुं. [सं. शाका] (१) **संवत्।** (२)

ख्याति, प्रसिद्धि। (३) यश, कीर्ति। (४) कीर्ति का स्मारक। (५) रोब, धाक।

मुहा.—साका चलना—रोब या धाक बँधना, प्रभाव माना जाना। साका चलाना या बाँधना—रोब या धाक जमाना, प्रभाव डालना। साकौ कीन्हौ—रोब या धाक जमाकर कीर्ति या ख्याति प्राप्त की है। उ.—ऐसौ और कौन त्रिभुवन मैं तुम सरि साकौ कीन्हौ—१०-३५।

(२) ऐसा असामान्य कार्य जिससे कर्ता की कीर्ति या ख्याति बढ़े।

साकार—वि. [सं.] (१) जिसका आकार या स्वरूप हो। (२) मूर्त, मूर्तिमान, साक्षात्। (३) स्थूल। (४) कल्पना या योजना) जिसे क्रियात्मक रूप दिया जाय।

संज्ञा पुं. ईश्वर का अवतारी या मूर्तिमान रूप।

साकारता—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'साकार' होने का भाव।

साकारोपासना—संज्ञा स्त्री. [सं.] ईश्वर की मूर्ति, रूप या अवतार की उपासना।

साकिन—वि. [अ.] रहनेवाला, निवासी।

साकी—संज्ञा पुं. [अ. साक़ी] (१) शराब पिलानेवाला। (२) वह जिससे प्रेम किया जाय।

साकेत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अयोध्या नगरी। (२) भगवान रामचन्द्र का लोक या धाम।

साक्षर—वि. [सं.] पढ़ा-लिखा, शिक्षित।

साक्षरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] साक्षर होने का भाव।

साक्षात, साक्षात्—अव्य. [सं. साक्षात्] सामने, प्रत्यक्ष।

वि. साकार, मूर्तिमान।

संज्ञा पुं. मुलाकात, भेंट, देखा-देखी, मिलन।

साक्षात्कार—संज्ञा पुं. [सं.] मुलाकात, भेंट, मिलन।

साक्षी—संज्ञा पुं. [सं. साक्षिन्] (१) वह जिसने किसी घटना को स्वयं देखा हो। (२) गवाह, साखी। (३) देखनेवाला, दर्शक।

संज्ञा स्त्री. किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया, गवाही।

साक्ष्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गवाही। (२) दृश्य।

साख—संज्ञा पुं. [हिं. साक्षी] (१) गवाह। (२) गवाही।

संज्ञा पुं. [हिं. साका] (१) रोब, धाक। (२) मर्यादा। (३) लेनदेन आदि में खरेपन की मान्यता।

संज्ञा स्त्री. [सं. शाखा] वृक्ष की शाखा या डाली। उ.—सुर तरुवर की साख लेखिनी लिखत सारदा हारैं—१-१८३।

साखना, साखनो—क्रि. स. [हिं. साख] गवाही देना।

साखर—वि. [सं. साक्षर] पढ़ा-लिखा, साक्षर।

साखा—संज्ञा स्त्री. [सं. शाखा] (१) पेड़ की टहनी या डाली। उ.—(क) फल की आसा चित्त धरि, जो बृच्छ बढ़ावै। महामूढ़ सो मूल तजि साखा जल नावै—२-९। (ख) साखा पत्र भए जल मेलत—१०-१७३।

(२) वंश या जाति का उपभेद।

साखामृग—संज्ञा पुं. [सं. शाखामृग] बंदर। उ.—महा मधुर प्रिय बानी बोलत, साखामृग तुम किहिं के तात—९-६९।

साखि, साखी—संज्ञा पुं. [सं. साक्षि, हिं. साखी] गवाह, साक्षी। उ.—(क) ऊँच-नीच ब्योरौ न रहाई। ताकी साखी मैं, सुनि भाइ—१-२३०। (ख) सकल देव-मुनि साखी—१०-४। (ग) ग्वाल सबै हैं साखी—७७४। (घ) भए चंद्र सूरज तहाँ साखी—२४५९।

संज्ञा स्त्री. (१) गवाही, साक्षी। उ.—(क) चिता तजै परीच्छित राजा सुनि सिख-साखि हमार—१-२२२। (ख) अब लौं हमारी जग में चलती नई पुरानी साखी—२७३९।

मुहा.—साखी पुकारना—गवाही देना। पुकारत साखि—गवाही देता है। उ.—सूरदास स्वामी के आगे निगम पुकारत साखि—३३७३।

(२) ज्ञान-संबंधी दोहे, पद या कविता।

संज्ञा पुं. [सं. शाखिन्] पेड़, वृक्ष।

साखू—संज्ञा पुं. [सं. शाख या शाल] शाल वृक्ष।

साखैं—क्रि. स. [हिं. साखना] गवाही या साक्षी (देते) हैं। उ.—जाति-पाँति-कुल कानि न मानत वेद-पुराननि साखैं—१-१५।

साखोच्चारन—संज्ञा पुं. [सं. शाखोच्चारण] विवाह के अवसर पर वर-वधू का वंश-परिचय देने की क्रिया।

साग—संज्ञा पुं. [सं. शाक] (१) कुछ पेड़-पौधों की पत्तियाँ जो तरकारी की तरह खायी जाती हैं। उ.—(क)

सौग चना सँग सब चौराई—२३२१। (ख) भक्त के बस भक्त-वत्सल बिदुर सातों साग खायो—१० उ.-१८। (२) **तरकारी, भाजी।**

यौ.—साग-पात—(१) **रूखा-सूखा भोजन।** (२) **तुच्छ और निकम्मी चीज।**

मुहा.—*साग-पात समझना*—**बहुत तुच्छ समझना।**

सागर—संज्ञा पुं [सं.] (१) **समुद्र।** उ.—देखौ माई, सुंदरता कौ सागर—६२८। (२) **झील, जलाशय** (३) **आकर, निधान।** उ.—कलानिधान सकल गुन-सागर —१-७। (४) **दशनामी साधुओं की उपाधि या सांप्रदायिक नाम।**

सागौन—संज्ञा पुं. [सं. शाल] **एक वृक्ष।**

साग्र—वि. [सं.] **सब, कुल, समस्त।**

क्रि. वि. **आदि या आरंभ से।**

साग्रह—क्रि. वि. [सं.] **जोर देकर, आग्रहपूर्वक।**

साचरी—संज्ञा स्त्री. [सं] **एक रागिनी।**

साचेत—वि. [सं. सचेत] (१) **चेतनायुक्त।** (२) **सचेत।**

साच्छात—अव्य. [सं. साक्षात्] **सामने, सम्मुख, प्रत्यक्ष रूप में।** उ.—(क) जीवनि-आस प्रबल स्तुति लेखी। साच्छात सो तुममैं देखी—१-२८४। (ख) ब्रह्मादिक खोजत नित जिनकौं। साच्छात् देख्यौ तुम तिनकौं—८००।

वि. **साकार, मूर्तिमान।**

संज्ञा पुं. **मुलाकात, भेंट, मिलन।**

साच्छ, साछ—संज्ञा पुं. [सं. साक्षी] **गवाह।**

संज्ञा स्त्री. **गवाही, साक्षी।**

साच्छी, साछी—संज्ञा स्त्री. [सं. साक्षी] **गवाही।**

साज—संज्ञा पुं. [फ़ा. साज़ या सं. सज्जा] (१) **सजावट का काम, बात या तैयारी।** उ.—सूर अब डर न करि जुद्ध को साज करि—९-१४२ (२) **वैभव, शोभा आदि की सूचक बातें।** उ.—या बिधि राजा करचौ बिचारि राज-साज सबहीं कौं डारि—१-३४१। (३) **सजावट का सामान, उपकरण या सामग्री।** उ.—कर कंकन कंचन थार मंगल-साज लिए—१०-२४। (४) **रंग-ढंग, स्थिति, दशा।** उ.—और पतित आवत न आँखि-तर देखत अपनौ साज—१-९६। (५) **बाजा, वाद्य।**

मुहा.—साज छेड़ना—**बाजा बजाना शुरू करना।** (६) **लड़ाई के हथियार** (७) **मेल-जोल।**

वि. **बनाने या मरम्मत करनेवाला।**

साजति—क्रि. स. [हिं. साजना] **सजाती है।** उ.—(क) नैन दोउ आँजति नासा बेसरि साजति—२०८०। (ख) उलटि अंग आभूषन साजति—२५७२।

साजन—संज्ञा पुं. [सं. सज्जन] (१) **सज्जन।** (२) **प्रेमी, प्रिय, वल्लभ।** उ.—सूरदास गोपी क्यों जीवैं बिछुरे हरि जी साजन—१० उ.-९९। (३) **पति, भर्ता।**

संज्ञा पुं. [सं. सज्जा] (१) **साज-शृंगार।** उ.—(क) सूरदास प्रभु मिली राधिका अंग अंग करि साजन—६२२। (ख) दूलह फिरत ब्याह के साजन-३१८३।

संज्ञा पुं. [हिं. साजना] **सजाने की क्रिया या भाव।**

क्रि. स. **आवश्यकतानुसार तैयारी करना।**

प्र.—लग्यो साजन—**सजाने लगा।** उ.—फौज मदन लग्यो साजन—२८१७।

साजना, साजनो—क्रि. स. [हिं. सजाना] (१) **क्रमानुसार रखना।** (२) **अलंकृत करना।**

क्रि. अ. [हिं. सजना] **अलंकृत होना।**

संज्ञा पुं. [हिं. साजन] (१) **पति।** (२) **प्रेमी।**

साज-बाज—संज्ञा पुं. [हिं. साज+अनु. बाज] (१) **तैयारी, उपक्रम।** (२) **मेल-जोल, घनिष्ठता।**

साज-सामान—संज्ञा पुं. [हिं. साज+सामान] (१) **माल-असबाब, सामग्री।** (२) **ठाटबाट।**

साजिंदा—संज्ञा पुं. [फ़ा. साजिंदः] **बाजा बजानेवाला।**

साजि—क्रि. स. [हिं. साजना] **अवसर के अनुकूल रूप में प्रस्तुत करके।** उ.—दिन दस लौं जल-कुंभ साजि दीप-दान करवायौ—९-५०।

साजिया—वि. [हिं. सजाना] **सजानेवाला।**

संज्ञा पुं. **परमेश्वर।**

संज्ञा पुं. [हिं. साज] **बाजा बजानेवाला।**

साजिश—संज्ञा स्त्री. [फ़ं. साजिश] **कुचक्र, षड्यंत्र।**

साजु—संज्ञा पुं. [हिं. साज] (१) **(तैयारी या साधना के) उपकरण या साधन।** उ.—कैसे हैं निबहत अबलन पै कठिन योग के साजु—३२३५ (२) **तैयारी, उपक्रम।** उ.—चितवति हुती झरोखैं ठाढ़ी किये मिलन कों साजु—८०८। (३) **ऐश्वर्य-सूचक बातें और साधन।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. साड़ी] **चौड़े किनारे की जनानी धोती।**

साढ़ू—संज्ञा पुं. [सं. श्यालिवोढर] **साली का पति।**

साढ़ेसाती—संज्ञा स्त्री. [हिं. साढ़े+सात+ई] **शनि ग्रह की वह दशा जो साढ़े सात दिन, मास या वर्ष की होती है और जिसका फल बहुत बुरा होता है।**

मुहा. साढ़ेसाती आना या चढ़ना—**दुर्दशा या विपत्ति के दुर्दिन आना या होना।**

सातंक—क्रि. वि. [सं. स+आतंक] **आतंक के साथ।**

सात—वि. [सं. सप्त] **जो पाँच और दो के योग के बराबर हो।** उ.—तद्यपि भवन भाव नहिं ब्रज बिनु खोजौ दीपै सात—३३५१।

मुहा.—सात-पाँच या पाँच और सात—(१) **चालाकी, चतुरता।** उ.—सूरदास प्रभु के वै बचन सुनहु मधुर मधुर अब मोहिं भूली री पाँच और सात —पृ. ३१५ (४८)। (२) **मक्कारी, धूर्तता।** सात-पाँच करना—(१) **बहाना करना या बनाना।** (२) **झगड़ा या उपद्रव करना।** (३) **चतुराई दिखाना।** (४) **मक्कारी या धूर्तता करना।** सात परदे में रखना —(१) **बहुत छिपाकर रखना** (२) **बहुत सँभालकर रखना।** सात समुद्र पार—**बहुत दूर।** सात राजाओं की साक्षी देना—**किसी बात की सत्यता को दृढ़ता-पूर्वक कहना।** सात राजा साखि—**सत्यता की दृढ़ता-पूर्वक पुष्टि करके।** उ.—मनसि बचन अरु कर्मना कछ कहति नाहिंन राखि। सूर प्रभु यह बोल हिरदय सात राजा साखि।

वि. [सं. सात्] **एक प्रत्यय जो 'मिला हुआ' या 'रूप में आया हुआ' अर्थ देता है।**

सातत्य—संज्ञा पुं. [सं.] **'सतत' का भाव, निरंतरता।**

सात फेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सात+फेरी] **विवाह की भाँवर नामक रीति जिसमें वर-वधू अग्नि की सात परिक्रमाएँ करते हैं।**

सातवें, सातवैं—वि. सवि. [हिं. सात] **जो क्रम में सात के स्थान पर हो।** उ.—सातवैं दिवस दिखराइहौं प्रलय तोहिं—८-१६।

साता—वि. [हिं. सात] **सात।** उ.—पियौ पय मोद करि घूँट साता—४४०।

सातिक—वि. [सं. सात्विक] (१) **सतोगुणी।** (२) **पवित्र।** (३) **सत्वगुण से उत्पन्न।**

सातों, सातौं—वि. [हिं. सात] **कुल सात, सब सात।** उ. —सातौं द्वीप राज ध्रुव कियौ—४-९।

मुहा.—सातौं भूल जाना—**पाँच इंद्रियों के साथ-साथ मन और बुद्धि का भी काम न करना, होश-हवास चला जाना।**

सात्—वि. [सं.] **एक प्रत्यय जो शब्दांत में जुड़कर 'मिला हुआ' या 'रूप में आया हुआ' अर्थ देता है।**

सात्म्य—संज्ञा पुं. [सं.] **एकरूपता, सरूपता।**

सात्यकि, सात्यकी—संज्ञा पुं. [सं. सात्यकि] **एक यादव जिसने श्रीकृष्ण और अर्जुन से अस्त्र विद्या सीखी थी।**

सात्व—वि. [सं.] **सत्वगुण-सम्बन्धी।**

सात्वती—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) **शिशुपाल की माता का नाम।** (२) **सुभद्रा का एक नाम।** (३) **नाटक की एक वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है। इसमें नायक के वाक्यों से उसकी, दानशीलता आदि गुण प्रकट होते हैं।**

सात्विक—वि. [सं.] (१) **सत्वगुण से सम्बन्ध रखनेवाला, सतोगुणी।** (२) **सत्वगुण से उत्पन्न।** (३) **जिसमें सत्वगुण की प्रधानता हो।** (४) **निर्मल, पवित्र।**

संज्ञा पुं. (१) **सतोगुण से उत्पन्न आठ अंग-विकार —स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय।** (२) **सात्वती वृत्ति।** (३) **विष्णु।** (४) **वह भक्त जिसकी वृत्ति में सत्वगुण की प्रधानता हो।**

सात्विकी—वि. पुं. स्त्री. **सत्वगुण से सम्बन्धित।**

संज्ञा पुं. **भक्त जिसकी वृत्ति में सात्विकता की प्रधानता हो।** उ.—भक्त सात्विकी सेवैं संत, लखै तिन्हैं मूरति भगवंत ...... भक्त सात्विकी चाहत मुक्ति —३-१३।

साथ—संज्ञा पुं. [सं. सहित] (१) **संगत, सहचार।**

मुहा.—साथ छूटना—**अलग होना।** साथ देना—**सहायता या सहयोग देना।** साथ लेना—**अपने संग ले चलना या रखना।** साथ सोना—**समागम करना।** साथ रहकर या सोकर मुँह छिपाना—**बहुत घनिष्ठता**

होने पर भी संकोच या दुराव करना। साथ का (को) —**सहायक खाद्य पदार्थ**। साथ का खेला—**बचपन का साथी**। साथ की खेली—**बचपन की सहचरी**।

(२) **साथी, संगी**। (३) **मेल, मित्रता**।

अव्य. (१) **एक सम्बन्ध सूचक अव्यय, सहित**। उ.—(क) रहत विषय के साथ—१-११२। (ख) सेना साथ बहुत भाँतिनि की—१-१४१। (ग) अपनी समसरि और गोप जे तिनको साथ पठाए—५८३।

मुहा.—साथ ही—**सिवा, अतिरिक्त**। साथ-साथ या साथ ही साथ—**एक ही सिलसिले में**। एक साथ—**एक क्रम या सिलसिले में**।

(२) **प्रति, से**। (२) **द्वारा**। उ.—नखन साथ तब उदर बिदारयौ—७-२।

साथरा—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **बिछौना**। (२) **चटाई**।

साथरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) **बिछौना**। (२) **चटाई, कुश की बनी चटाई**। उ.—(क) कुस-साथरी बैठि इक आसन—९-१२१। (ख) नातौ मान सगर सागर सौं कुस-साथरी परयौ—९-१२२।

साथी—संज्ञा पुं. [हिं. साथ] (१) **साथ रहनेवाला, संगी**। उ.—तुम अलि कमलनयन के साथी—३३२०। (२) **सहायक**। उ.—हरि तुम साँकरे के साथी—१-११२।

साथै—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. साथ] **(साथी या सहायक) रूप में (हों या रहते हों)** उ.—सूर तुम्हारी आसा निबहै संकट मैं तुम साथै—१-११२।

सादगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **सादापन**। (२) **सीधापन**।

सादर—क्रि. वि. [सं. स+आदर] **आदर सहित**।

सादा—वि. [फ़ा. सादः] (१) **साधारण और संक्षिप्त बनावट का**। (२) **जिसके ऊपर बेल-बूटे-जैसा सजावट का काम न हो**। (३) **बिना मेल या मिलावट का**। (४) **जो छल-कपट न जानता हो, सीधा**।

यौ. सीधा-सादा—**सरल हृदयवाला**।

सादापन—संज्ञा पुं. [हिं. सादा+पन] **सादगी**।

सादी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सादा] (१) **वह पूरी जिसमें पीठी, दाल आदि न भरी हो**। (२) **'लाल' चिड़िया की मादा**।

संज्ञा पुं. [फ़ा. सद=शिकार] (१) **शिकारी**। (२) **घोड़ा**। (३) **घुड़सवार व्यक्ति**।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शादी] **ब्याह, विवाह**।

सादूर—संज्ञा पुं. [सं. शार्दूल] (१) **सिंह**। (२) **हिंसक पशु**।

सादृश्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समान या सदृश होने का भाव, समानता**। (२) **बराबरी, तुलना**।

साध—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रद्धा=उत्कट कामना] (१) **इच्छा, कामना, अभिलाषा**। उ.—(क) हरि देखन की साध भरी—९०२। (ख) बार-बार ललचात साध करि, सकुचति पुनि-पुनि बाला—२०७४। (ग) जोइ जोई मन की साध कहौं मैं करिहौं सोई—२६२५। (घ) कल्पतरु देखिबे की भई साध मोहिं—१० उ.-३१।

मुहा.—(किसी बात की) साध न रहने देना—**सब प्रकार से इच्छा पूरी कर लेना या कर देना**। साध राधना—**इच्छा पूरी करना या होना**।

(२) **गर्भ के सातवें महीने होनेवाला उत्सव**।

वि. [सं. साधु] (१) **अच्छा, उत्तम**। (२) **सज्जन**। उ.—हौं असाध, तुम साध हौ—१८१४। (३) **साधु, महात्मा**। उ.—महाराज, तुम तौ हौ साध—९-३।

साधक—वि. [सं.] (१) **साधना करनेवाला**। (२) **तप करनेवाला, तपस्वी**। उ.—पचि पचि रहे सिद्ध-साधक मुनि तऊ न घटै बढ़ै—१-२६३। (३) **भूत-प्रेत आदि को साधने या बश में करनेवाला**। (४) **जो दूसरे के स्वार्थ-साधन में सहायक हो**।

संज्ञा पुं. (१) **वह जिससे कोई कार्य सिद्ध हो, जरिया, साधन**। (२) **वह हेतु या लक्षण जिसके आधार पर कोई बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाय**।

साधतिं—क्रि. स. [हिं. साधना] **अभ्यास में संलग्न रहती हैं, साधना करती हैं**। उ.—गौरीपति पूजतिं, तप साधतिं, करत रहतिं नित नेम—७८२।

साधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **काम को सिद्ध करने की क्रिया, विधान**। उ.—दुर्मति अति अभिमान ज्ञान बिन सब साधन तैं टरतौं—१-२०३। (२) **निर्देश, आदेश आदि के अनुसार कार्य का रूप देना**। (३) **कर्तव्य या दायित्व का निर्वाह**। (४) **वह उपचार या कार्य जिससे दोष या क्षति का परिहार हो**। (५) **सामान या उपकरण जिससे कोई वस्तु तैयार की जाय**। (६) **कार्य पूरा करने की शक्ति या सामर्थ्य**। (७) **उपाय, युक्ति**। (८) **औषध**

के लिए धातु-शोधन-कार्य। (६) साधना, उपासना। उ.—(क) साधन मंत्र-जंत्र उद्यम बल ये सब डारो धोई—१-२६२। (ख) जप, तप, ब्रत संजम साधन तैं द्रवित होत पाषान—७६५। (१०) **सहायता। (११) कारण, हेतु। (१२) तपस्या-द्वारा मंत्र सिद्ध करना।**

साधनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **साधन का भाव या धर्म। (२) साधन-क्रिया, साधना।** उ.—कहि आचार भक्ति-बिधि भाषी हंस-धर्म प्रगटायो। कही बिभूति सिद्ध साधनता आस्रम चार कहायो—सारा. ८४४।

साधनहार, साधनहारा—वि. [सं. साधना+हिं. हार] (१) **साधने या सिद्ध करनेवाला। (२) जो साधा या सिद्ध किया जा सके। (३) जो हो सकता हो, साध्य।**

साधना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कार्य सिद्ध करने की क्रिया या भाव। (२) उपासना, आराधना। (३) साधन।**

क्रि. स. [सं. साधन] (१) **कार्य सिद्ध या पूरा करना। (२) निशाना लगाना, लक्ष्य या संधान करना। (३) अभ्यास करना। (४) शोधना, शुद्ध करना। (५) सच्चा प्रमाणित करना। (६) पक्का करना, ठहराना। (७) इकट्ठा या एकत्र करना। (८) वश में करना। (९) बनावटी को असल की तरह कर दिखाना।**

साधनिक—वि. [सं.] (१) **साधन का। (२) कार्य-साधन से सम्बन्ध रखनेवाला।**

साधनी—संज्ञा स्त्री. [सं. साधन] (१) **जमीन या दीवार की सीध नापने का औजार। (२) राज, मेमार।**

साधनीय—वि. [सं.] (१) **साधना करके के योग्य। (२) जो हो सके या साधा जा सके।**

साधनो—क्रि. स. [सं. साधन] **साधना।**

साधर्म्य—संज्ञा पुं. [सं.] **समान धर्म या गुणों से युक्त होने की अवस्था या भाव, 'वैधर्म्य' का विपर्याय।**

साधा—संज्ञा स्त्री. [हिं. साध] **इच्छा, कामना।** उ.—(क) मनहुँ तड़ित घन इंदु तरनि, ह्वै बाल करत रस साधा—७०५। (ख) कहाँ मिली नँदनंदन को जिन पुरचौ मन की साधा—११३५। (ग) मैं जानी यह बात हृदय की रही नहीं कछु साधा—१४३७। (घ) कहति कंत (मोहिं) झूलन की साधा—२२७७.

साधार—वि. [सं. स+आधार] **जिसका आधार हो।**

साधारण—वि. [सं.] (१) **जिसमें कोई विशेषता न हो, सामान्य। (२) सरल, सहज। (३) सार्वजनिक। (४) सबके समझने योग्य, सुगम।**

साधारणत:, साधारणतया—अव्य. [सं. साधारणत:] (१) **सामान्य रूप से। (२) अक्सर, प्रायः, बहुधा।**

साधारणता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'साधारण' होने का भाव या धर्म।**

साधारणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक अप्सरा का नाम।**

साधारणीकरण—संज्ञा पुं. [सं.] **विशिष्ठ तत्वों के आधार पर ऐसा सामान्य नियम या सिद्धांत स्थिर करना जो उन सब पर समान रूप से प्रयुक्त हो। (२) सम्पन्न गुण-धर्म के आधार पर अनेक तत्वों में समानता स्थिर करना।**

साधि—क्रि. स. [हिं. साधना] (१) **सिद्ध या सम्पन्न करके, साधकर।** उ.—जब तैं रसना राम कह्यौ। मानौ धर्म साधि सब बैठ्यौ, पढ़िबे मैं धौं कहा रह्यौ—२-८। (२) **सिद्ध या साधन करो।** उ.—सुचि रुचि सहज समाधि साधि सठ, दीनबंधु करुनामय उर धरि—१-३१२।

साधिका—वि. स्त्री. [सं.] **सिद्ध या साधना करनेवाली।**

साधिकार—क्रि. वि. [सं.] **अधिकारपूर्वक।**

वि. (१) **जिसे अधिकार प्राप्त हो। (२) जो अधिकारपूर्वक कहा या किया जाय।**

साधित—वि. [सं.] **सिद्ध किया या साधा हुआ।**

साधी—क्रि. स. [हिं. साधना] **सिद्ध या सम्पन्न की, लगायी।** उ.—जिहिं सुख कौं समाधि सिव साधी—१०-२२।

साधु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **संत, महात्मा।** उ.—(क) साधु-निंदक स्वाद-लंपट कपटी गुरु-द्रोही—१-१२४। (ख) एक अधार साधु-संगति कौ—१-१३०। (२) **शिष्ट या सज्जन पुरुष।**

मुहा.—साधु-साधु कहना—**अच्छा काम करने पर किसी की बहुत प्रशंसा करना।**

वि. (१) **भला, उत्तम। (२) प्रशंसनीय। (३) शिष्ट और शुद्ध (भाषा)। (४) उपयुक्त।**

अव्य. (१) **ठीक है (स्वीकारात्मक)। (२) बहुत**

और उत्तम ।

साधुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) 'साधु' होने का भाव या धर्म । (२) साधु का या साधु-जैसा आचरण । (३) सज्जनता ।(४) नेकी, भलाई । (५) सिधाई, सीधापन ।

साधुवाद—संज्ञा पुं. [सं.] उत्तम कार्य करने पर 'साधु-साधु' कहकर उसकी प्रशंसा करना ।

साधू—संज्ञा पुं. [सं. साधु] साधु-संत ।

साधे—क्रि. स. [हिं. साधना] (१) सिद्ध या संपन्न किये । उ.—राघव आवत हैं अवध आज । रिपु जीते, साधे देव-काज—९-१६६ । (२) ठाने, पक्का किये, ठहराये । उ.—सुफलत-सुत मिलि ढँग ठान्यो है, साधे बिष मन घात—३३५१ । (३) निशाना ठीक किये (हैं) । उ.—हौं अनाथ बैठ्यो द्रुम-डरिया पारधि साधे बान—१-९७ ।

साधैं—क्रि. सं [हिं. साधना] साधना करती हैं । उ.—पति कैं हेत नेम तप साधैं—७९९ ।

साधै—क्रि. स. [हिं. साधना] (१) करता है । उ.—मुक्ति-हेत जोगी स्रम साधै—१-१०४ । (२) इकट्ठा या एकत्र करती है । उ.—जसुमति जोरि जोरि रजु बाँधै । अंगुर द्वै द्वै जेंवरि साधै—३९१ ।

साधो, साधौ—संज्ञा पुं. [सं. साधु] संत, साधु ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. साध] लालसा, कामना । उ.—(क) नैन मरत दरसन की साधो—१८०९ । (ख) मिटै न दरस की साधो—२५०८ । (ग) को जानै तन छूट जायगो, सूल रहै जिय साधो—२७५८ ।

क्रि. स. [हिं. साधना] सिद्ध या संपन्न किया । उ.—बहुरि नृप आपनौ कर्म साधौ—८-१६ ।

साध्य—वि. [सं.] (१) (सिद्ध या संपन्न) करने योग्य । (२) जो सिद्ध या संपन्न हो सके । (३) सरल, सहज, सुगम । (४) (बात) जो सिद्ध या प्रमाणित करना हो । (५) (रोग) जो ठीक किया जा सके ।

संज्ञा पुं. (१) बारह गणदेवता । (२) देवता । (३) ज्योतिष के सत्ताइस योगों में इक्कीसवाँ जो बहुत शुभ माना जाता है । (४) वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय । (५) प्रश्न या समस्या रूप में सामने आनेवाली बात जिसे ठीक सिद्ध करना हो । (६) शक्ति, सामर्थ्य ।

साध्यता संज्ञा स्त्री. [सं.] साध्य का भाव या धर्म ।

साध्यो, साध्यौ क्रि. स. [हिं. साधना] (१) सिद्ध, संपन्न या पूर्ण किया । उ.—लै चरनोदक निज व्रत साध्यौ—९-५ । (२) साधन किया, साधा । उ.—(क) सकल जोग व्रत साध्यौ—१२-१२८ । (ख) मन-क्रम-बच हरि सों धरि पतिव्रत प्रेम योग तप साध्यौ—३०१४ । (३) लक्ष्य का संधान किया । उ.—लागत तो जानो नहिं बिषम बाण साध्यौ—२८०६ ।

साध्वी—वि. स्त्री. [सं.] (१) पतिव्रता । (२) शुद्ध चरित्र या आचरणवाली, सच्चरित्रा ।

सानंद—क्रि. वि. [सं.] आनंदपूर्वक ।

सान—संज्ञा पुं. [सं. शाण] वह पत्थर जिस पर घिसकर अस्त्रादि की धार तेज की जाती है ।

मुहा. सान देना या धरना—धार तेज करना । सान धराना—धार तेज कराना । सान धराए—(हथियार) तेज किये हुए । लै लै ते हथियार आपने सान धराए त्यौं—१-१५१ ।

संज्ञा स्त्री. [अ. शान] (१) ठाट-बाट । (२) ठसक ।

सानना—क्रि. स. [हिं. सनना] (१) किसी चूर्ण को तरल पदार्थ मिलाकर गीला करना, गूँधना । (२) मिलाना, मिश्रित करना । (३) एक के दोष, अपराध आदि के लिए उसके साथ दूसरे को अकारण ही दोषी या अप-राधी बनाने का प्रयत्न करना । (४) घोलना ।

क्रि. स. [हिं. सान=शाण] धार तेज करना ।

साना—क्रि. अ. [सं. शांत] (१) शांत होना (२) समाप्त होना (३) नष्ट होना ।

क्रि. स. (१) शांत करना । (२) समाप्त करना । (३) नष्ट करना ।

सानि—क्रि. स. [हिं. सानना] (१) मिलाकर, लपेटकर, मिश्रित करके । उ.—(क) यह सुनि धावत धरनि चरन की प्रतिमा खगी पंथ में पाई । नैन नीर रघुनाथ सानि सो सिव ज्यों गात चढ़ाई—९-६४ । (ख) सानि-सानि दधि-भात लियौ कर सुहृद सखनि कर देत—४१६ । (ग) रंग कापै होत न्यारो हरद-चूनो सानि—८९५ । (घ) जोग पाती हाथ दीनी बिष लगायौ सानि

—३३५५। (२) घोलकर। उ.—दूध औटचौ आनि अधिक मिसरी सानि—४४०

सानिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] मुरली, वंशी।

सानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सानना] (१) भूसा या चारा जो पानी से सानकर पशुओं को खिलाया जाता है। (२) अनुचित रीति से एक में मिलाए हुए कई खाद्य पदार्थ (व्यंग्य)।

वि. [अ.] (१) दूसरा, द्वितीय। (२) बराबरी का, समानता करनेवाला।

यौ. लासानी—बेजोड़, अद्वितीय, अनुपम।

क्रि. स. [हिं. सानना] (१) मिलायी, मिश्रित की। उ.—सद दधि-माखन द्यौं आनी। तापर मधुमिसरी सानी—१०-१८३।(२) लपेट या लथेड़ दी, भिगो दी। उ.—मेरे सिर की नई बहनियाँ, लै गोरस मैं सानी—१०-३३८।

वि. [हिं. सनना] भरी या लिपटी हुई, सनी हुई। उ.—यह है बिन कलंक की साँची, हम कलंक में सानी—१६३०।

सानु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पर्वत की चोटी, शिखर। (२) छोर, सिरा। (३) चौरस जमीन। (४) बन, जंगल।

वि. (१) लंबा-चौड़ा। (२) चौरस, सपाट।

सानुज—क्रि. वि. [सं. स+अनुज] अनुज के साथ।

साने—वि. [हिं. सनना] (१) लगे या जड़े हुए। उ.—भूषन मय मनि साने—१३५४। (२) भरे या लिपटे हुए। उ.—जैसे हरि तैसे तुम सेवक कपट चतुरई साने हो—३०१५।

सानै—क्रि. स. [हिं. सानना] मिलाती है या सानती है। उ.—तब महरि बाँह गहि आनै। लै तेल उबटनौ सानै—१०-१८३।

सान्निधि—क्रि. वि. [सं.] समीप।

सान्निध्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) समीपता, निकटता। (२) मुक्ति का वह प्रकार जिसमें आत्मा, परमात्मा के समीप पहुँचती मानी जाती है।

सान्निध्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] समीप होने का भाव या धर्म।

सान्यो, साम्यौ—क्रि. स. [हिं. सानना] (१) मिलाया, मिश्रित किया। (२) साना (३) लिपटा या सम्मिलित है। उ.—ऊख माहिं ज्यों रस है सान्यौ—३-१३।

साप—संज्ञा पुं. [सं. शाप] किसी के अनिष्ट की कामना से कहा हुआ वाक्य। उ. (क) दैहौं साप, महा दुख भरै—१-२२९। (ख) धन्य धन्य रिषि साप हमारे—३८५।

सापत्न्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सपत्नी का भाव। (२) सौत या सपत्नी का पुत्र। (३) शत्रु।

सापन—संज्ञा पुं. [सं. शाप] शाप देने की क्रिया या भाव, शाप देने (को)। उ.—(क) कौरव-काज चले रिषि सापन—१-१३। (ख) अतिथि रिषीस्वर सापन आए—१-२८२।

सापना, सापनो—क्रि. स. [हिं. साप] (१) अनिष्ट की कामना से कोई बात कहना, शाप देना। (२) कोसना, दुर्वचन कहना।

सापै—क्रि. स. [हिं. सापना] शाप दे। उ.—जिय अति डरचौ, मोहिं मति सापै, ब्याकुल बचन कहंत—९-८३।

सापेक्ष—वि. [सं.] (१) जो किसी तत्व, विचार आदि से संबंधित होने के कारण उसकी अपेक्षा रखता हो। (२) किसी की अपेक्षा करनेवाला। (३) जो निर्णय या आदेश की अपेक्षा में रुका हो।

सापेक्षता—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'सापेक्ष' होने का भाव।

सापेक्षवाद—संज्ञा पुं. [सं.] वह सिद्धांत जिसमें दो बातें एक दूसरे की अपेक्षक मानी जाती हैं।

साप्ताहिक—वि. [सं.] (१) सप्ताह-संबंधी। (२) प्रति सप्ताह होनेवाला। (३) प्रति सप्ताह छपने या प्रकाशित होनेवाला।

साफ—वि. [अ. साफ़] (१) स्वच्छ, निर्मल। (२) शुद्ध। (३) दोषरहित। (४) स्पष्ट। (५) उज्ज्वल। (६) जिसमें गड़बड़ी या झगड़ा-बखेड़ा न हो। (७) चमकीला। (८) जिसमें छल-कपट न हो।

मुहा. साफ-साफ सुनाना—खरी बातें कहना।

(९) जिसके सुनने-समझने में कठिनाई न हो। (१०) समतल। (११) जिसमें विघ्न-बाधा न हो। (१२) सादा, कोरा। (१३) जिसमें कुछ सार-तत्व न रह गया हो। (१४) जिसमें रद्दी भाग न हो। (१५) खाली।

मुहा. साफ करना—(१) मार डालना। (२) चौपट कर देना। (३) खा-पी जाना।

(१६) लेन-देन का निपटना या चुकता होना। उ.—बढ़ौ तुम्हार बरामद हूँ कौ लिखि कीन्हो है साफ—१-१४३।

क्रि. वि. (१) बिना किसी दाग, द्वेष या कलंक के। (२) बिना हानि या कष्ट उठाये। (३) इस तरह कि किसी को पता न लगे या कोई बाधक न बन सके। (४) बिलकुल, नितांत।

साफल्य—संज्ञा पुं [सं.] सफलता, सिद्धि।

साफा—संज्ञा पुं. [अ. साफ़ः] (१) पगड़ी, मुरेठा, मुड़ासा। (२) पशु-पक्षियों को किसी उद्देश्य से उपवास कराना।

मुहा. साफा देना—भूखा रखना।

(३) वस्त्रादि को साबुन लगाकर साफ करना।

साफी—संज्ञा स्त्री. [हिं. साफ] (१) छोटा रूमाल। (२) वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे रखते हैं। (३) भाँग छानने का कपड़ा।

साबर—संज्ञा पुं. [सं. शंबर] (१) साँभर (हिरन)। (२) साँभर का चमड़ा। (३) शबर जाति के लोग। (४) एक प्रकार का सिद्ध मंत्र जो शिव कृत माना जाता है। उ.—साबर मंत्र लिख्यौ स्तुतिद्वार।

वि. [सं. शाबर] शबर-संबंधी।

साबल—संज्ञा पुं. [सं. शबर] बरछी, भाला।

साबिक—वि. [अ. साबिक़] पहले का, पुराने समय का। उ.—साबिक जमा हुती जो जोरी मिनजालिक तल ल्यायौ—१-१४३।

पद—साबिक-दस्तूर—जैसा पहले था वैसा ही।

साबिका—संज्ञा पुं. [अ. साबिक़ा] (१) जान-पहचान। (२) सरोकार, संबंध, व्यवहार, संपर्क।

मुहा. साबिका पड़ना—(१) काम पड़ना। (२) संबंध होना। (३) लेन-देन होना।

साबित—वि. [फ़ा.] जिसका सबूत दिया गया हो।

वि. [अ. सबूत] (१) पूरा। (२) ठीक। उ.—द्वै लोचन साबित नहिं तेऊ—१४२८। (३) पक्का।

साबुत—वि. [फ़ा. सबूत] (१) संपूर्ण। (२) दुरुस्त, ठीक। (३) पक्का, दृढ़।

साबुन—संज्ञा पुं. [अ. साबून] शरीर, वस्त्रादि साफ करने का एक प्रसिद्ध पदार्थ।

साबूदाना—संज्ञा पुं. [अँ. सैगो+हिं. दाना] सागू के तने के गूदे से तैयार किये गये दाने जो शीघ्र पच जाने के लिए प्रसिद्ध हैं।

साभार—क्रि. वि. [सं. स+आभार] कृतज्ञतापूर्वक।

सामंजस्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) औचित्य, उपयुक्तता। (२) अनुकूलता। (३) विरोध या विषमता का अभाव, एकरसता।

सामंत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वीर, योद्धा। (२) बड़ा और शक्तिशाली जमींदार या सरदार।

सामंती—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक रागिनी।

संज्ञा स्त्री. [सं. सामंत] सामंत का भाव या पद।

साम—संज्ञा पुं. [सं. सामन्] (१) वे वेद-मंत्र जो गेय हों। (२) चारों वेदों में तीसरा। (३) मीठी बातें, मधुर भाषण। (४) राजनीति के चार अंगों में एक जिसमें शत्रु से मीठी-मीठी बातें करके उसे अपनी ओर मिला लिया जाता है। (५) मित्रता।

संज्ञा पुं. [सं. श्याम] श्याम, श्रीकृष्ण।

वि. श्याम, साँवला।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शाम] साँझ, संध्या।

संज्ञा पुं. [सं. स्वामी] (१) प्रभु। (२) पति।

सामक—संज्ञा पुं. [सं. श्यामक] 'साँवा' नामक अन्न।

वि. [सं.] सामवेद का ज्ञाता।

सामकारी—वि. [सं. सामकारिन्] मधुरभाषी।

संज्ञा स्त्री. मधुर वचन बोलने की रीति-नीति।

सामग—वि. [सं.] सामवेद का गायक या ज्ञाता।

सामग्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) (आवश्यक) वस्तुएँ। (२) घर-गृहस्थी के काम की वस्तु। (३) साधन, उपकरण।

सामत—संज्ञा स्त्री. [अ. शामत] (१) दुर्भाग्य।

पद—शामत का मारा—अभागा

(२) विपत्ति, दुर्दशा।

मुहा. शामत सवार होना—विपत्ति का समय आना।

सामना—संज्ञा पुं. [हिं. सामने] (१) समक्ष या सम्मुख होने की क्रिया या भाव। (२) मुलाकात, भेंट, मिलन।

(३) किसी पदार्थ का आगे का भाग। (४) मुकाबला, विरुद्ध या विपक्ष में होना।

मुहा. सामना करना समक्ष या सम्मुख रहकर जवाब देना या धृष्टता करना।

सामने—क्रि. वि. [सं. सम्मुख, पु. हिं. सामुहें] (१) समक्ष, सम्मुख।

मुहा. सामने आना—आगे या सम्मुख आना। सामने का—(१) जो सम्मुख या समक्ष हो। (२) जो अपनी उपस्थिति में घटित हुआ हो। (३) जो अपनी उपस्थिति में जन्मा या पला हो। सामने करना—सम्मुख या समक्ष उपस्थित करना। सामने की बात - बात जो अपने सामने घटित हुई हो। सामने पड़ना—दिखायी दे जाना। सामने होना—(स्त्री का) परदा न करके सम्मुख या समक्ष आना।

(२) मौजूदगी या उपस्थिति में। (३) सीधे या आगे की ओर। (४) मुकाबले में, विरुद्ध। (५) तुलना में।

सामबेद—संज्ञा पुं. [सं. सामवेद] चारों वेदों में तीसरा। उ.—भीर भई दसरथ के आँगन सामबेद धुनि छाई—९-१७।

सामयिक—वि. [सं.] (१) समय से संबंध रखनेवाला। (२) वर्तमान समय का। (३) समय की दृष्टि से ठीक, उचित या उपयक्त, समयानुसार।

सामयिकता—सज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सामयिक होने का भाव। (२) वर्तमान समय या स्थिति के विचार से युक्त दृष्टिकोण या अवस्था।

सामरथ—संज्ञा स्त्री. [सं. सामर्थ्य] शक्ति, क्षमता।

सामरस्य—संज्ञा पुं. [सं. सम + रस] समरसता।

सामरा—वि. [हिं. साँवला] साँवला।

संज्ञा पुं. श्याम, श्रीकृष्ण।

सामरिक—वि. [सं.] समर-संबंधी।

सामर्थ, सामर्थ्य—संज्ञा स्त्री. [सं. सामर्थ्य] (१) 'समर्थ' होने का भाव। (२) ताकत, शक्ति। (३) योग्यता। (४) शब्द की व्यंजनाशक्ति।

सामवेद—संज्ञा पुं. [सं. सामन्] भारतीय आर्यों के चार वेदों में तीसरा जिसकी ऋचाएँ गायत्री छंद में हैं।

सामवेदिक, सामवेदी—वि. [सं. सामवेदिन्] (१) सामवेद-संबंधी। (२) जो सामवेद का ज्ञाता हो।

सामसाली—वि. [सं. साम + शाली] साम, दाम, दंड, भेद, राजनीति के इन चार अंगों का ज्ञाता, राजनीतिज्ञ।

सामहिं—अव्य. [हिं. सामने] सम्मुख, समक्ष।

सामाँ—संज्ञा पुं. [फ़ा. सामान] (१) उपकरण। (२) साधन। (३) आवश्यक वस्तुएँ। (४) माल-असबाब।

वि. [सं. श्यामा] साँवली।

संज्ञा स्त्री. श्यामा, राधा।

सामाजिक—वि. [सं.] समाज से संबंधित।

सामाजिकता—संज्ञा स्त्री. [सं.] लौकिकता।

सामान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) सामग्री, उपकरण। (२) तैयारी, आयोजन, उपक्रम। (३) माल-असबाब।

मुहा. सामान बाँधना—चलने की तैयारी करना।

सामान्य—वि. [सं.] (१) मामूली, साधारण। (२) लगभग सबसे संबंध रखनेवाला। (३) सार्वजनिक।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) बराबरी, समानता। (२) सारे वर्ग में समान रूप से पाया जानेवाला गुण या धर्म। (३) एक काव्यालंकार।

सामान्यत:, सामान्यतया—क्रि. वि. [सं.] (१) साधारण रूप से। (२) जैसा साधारणतः होता है।

सामान्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मामूली या सामान्य होने का भाव या स्थिति। (२) लगभग सर्वत्र सामान्य रूप से पाये जाने का भाव या स्थिति।

सामान्य बुद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह सहज बुद्धि जो सामान्यतया सभी में होती है और जिससे वे साधारण कार्य अंतःप्रेरणा से ही किया करते हैं।

सामान्य विधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] साधारण कर्तव्य या दायित्व-संबंधी आज्ञा या विधि।

सामान्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] नायिका जो धन लेकर पर-पुरुष से संबंध रखती है।

सामासिक—वि. [सं.] (१) समास का या समास-संबंधी। (२) समास से युक्त।

सामिग्री—संज्ञा स्त्री. [सं. सामग्री] सामग्री।

सामियाना—संज्ञा पुं. [हिं. शामियाना] बड़ा तंबू।

सामिल—वि. [फ़ा. शामिल] सम्मिलित।

सामिष—वि. [सं.] (भोजन) जिसमें आमिष (मांस, मछली

आदि) का अंश हो।
सामी—संज्ञा पुं. [सं. स्वामी] (१) प्रभु। (२) पति।
सामीप्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) निकटता, समीपता। (२) मुक्ति का एक प्रकार जिसमें जीव का परमाराध्य के समीप पहुँच जाना माना जाता है। उ.—सालोक्य सामीप्य नासारोपिता भुज चारि—२९२४।
सामीर—संज्ञा पुं. [सं. समीर] वायु, पवन।
सामीर्य—वि. [सं.] वायु का, वायु-संबंधी।
सामुझि—संज्ञा स्त्री. [हिं. समझ] अक्ल, बुद्धि।
सामुदायिक—वि. [सं.] समुदाय संबंधी।
सामुद्र—वि. [सं.] (१) समुद्र-संबंधी। (२) जो समुद्र से उत्पन्न हुआ हो।
सामुद्रिक—वि. [सं.] समुद्र-संबंधी।
संज्ञा पुं. (१) वह विद्या जिसमें मनुष्य की हथेली या शारीरिक लक्षण देखकर जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल आदि बताये जाते हैं। (२) इस विद्या का ज्ञाता व्यक्ति।
सामुहाँ, सामुहीं, सामुहें, समुहें—अव्य. [पु. हिं. सामुहें] सामने। उ.—(क) रथ तैं उतरि चक्र कर लीन्हौ, सुभट सामुहें आए—१-२७४। (ख) जाके अस्त्र तिनहिं तेहि मारयो, चले सामुहीं खौरी—२५८६। (ग) मैं जब चली सामुहें पकरन तब के गुन कहा कहिऐ—१०-३२२।
सामूहिक—वि. [सं.] समूह से संबंधित।
साम्य—संज्ञा पुं. [सं.] समता, समानता।
साम्यवाद—संज्ञा पुं. [सं.] एक पाश्चात्य सामाजिक सिद्धांत जिसके अनुसार समाज में सभी को समान होना चाहिए, किसी को न बहुत अमीर होना चाहिए न बहुत गरीब; समाजवाद, समष्टिवाद।
साम्यवादी—वि. [सं.] उक्त सिद्धान्त का समर्थक, समाज या समष्टिवादी।
साम्राज्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बड़ा या सार्वभौम राज्य। (२) पूर्ण अधिकार, आधिपत्य।
साम्राज्यवाद—संज्ञा पुं. [सं.] वह सिद्धांत जिसके अनुसार साम्राज्य बनाये रखा और बढ़ाया जाय।
साम्राज्यवादी—वि. [सं.] उक्त सिद्धांत का समर्थक।
सायं—संज्ञा पुं. [सं.] शाम, संध्या।
वि. संध्या-संबंधी, संध्याकालीन।
सायंकाल—संज्ञा पुं. [सं.] संध्या का समय।
सायंकालीन—वि. [सं.] संध्या के समय का।
साय—संज्ञा पुं. [सं. सायं] शाम, संध्या।
सायक—संज्ञा पुं. [सं.] तीर, बाण। उ.—(क) त्यागति प्रान निरखि सायक-धनु—१-२९। (ख) राम धनुष अरु सायक साँधे—९-५८। (२) खड्ग। (३) (कामदेव के पाँच बाणों के कारण) पाँच की संख्या।
सायत—संज्ञा स्त्री. [अ. साअत] (१) पल, क्षण। (२) समय। (३) मुहूर्त। (४) शुभ समय।
अव्य. [फ़ा. शायद] कदाचित्, संभव है।
सायन—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य की वह गति जब उसके भूमध्य रेखा पर पहुँचने पर (२० मार्च और २३ सितम्बर को) दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।
वि. अयनयुक्त (ग्रह आदि)।
सायना, सायनो—क्रि. अ. [हिं. साना] (१) शांत होना। (२) समाप्त होना। (३) नष्ट होना।
क्रि. स. (१) शांत करना। (२) समाप्त करना, शेष न रखना। (३) नष्ट करना।
सायब—संज्ञा पुं. [फ़ा. साहब] (१) स्वामी। (२) पति।
सायबान—संज्ञा पुं. [फ़ा. साय:बान] मकान या कमरे के सामने का छाजन या ओसारा।
सायर—संज्ञा पुं. [सं. सागर] (१) सागर, समुद्र। उ.—(क) कागद धरनि, करै द्रुम लेखनि, जल-सायर मसि घोरै—१-१२५। (ख) सकल बिषय-बिकार तजि तू उतरि सायर-सेत—१-३११। (२) बड़ा जलाशय। उ.—सात दिवस मूसल जलधारा सायर समुद्र भरे—९६८। (३) ऊपरी भाग, शीर्ष।
संज्ञा पुं. [अ. शायर] कवि।
सायल—संज्ञा पुं. [अ.] (१) प्रश्नकर्ता। (२) भिखारी। (३) याचक। (४) प्रार्थी। (५) इच्छुक।
साया—संज्ञा पुं. [फ़ा. साय:] (१) छाँह, छाया।
मुहा. साया मिलना—शरण या संरक्षण पाना।
(२) परछाईं, प्रतिबिंब।
मुहा. साया से बचना या भागना—बहुत दूर या

बचकर रहना।

(३) **भूत, प्रेत आदि।**

मुहा. साया आना या पड़ना—**भूत, प्रेत आदि से प्रभावान्वित होना।**

(४) **असर, प्रभाव।**

मुहा. साया पड़ना—**किसी की कुसंगत का असर होना।** साया डालना—(१) **कृपा करना।** (२) **प्रभाव डालना।**

सायास—क्रि. वि. [सं. स+आयास] **प्रयत्नपूर्वक।**

सायुज, सायुज्य—संज्ञा पुं. [सं. सायुज्य] (१) **एक में मिल जाना।** (२) **मुक्ति का एक प्रकार जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है।**

सायुज्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सायुज्य का भाव।**

सायुध—वि. [सं. स+आयुध] **अस्त्र-शस्त्र से सज्जित।**

साराँग, सारंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मृग।** उ.—(क) प्रथम ही उपमान साराँग सों करावत हेत—लहरी.। (ख) स्रवन सुयस सारंग नाद-विधि—२-१२। (२) **कोयल, कोकिल।** उ.—(क) बयन बर साराँग सम—लहरी। (ख) निकस साराँग तें सु 'साराँग' हरत तन की ताप—लहरी.। (ग) सूरदास सदा प्रहर्षन सुरुच साराँग बैन—लहरी.। (३) **बाज (पक्षी), श्येन।** उ.—हेरो साराँग मदन-तिया के अंत बिचारी बाम—लहरी.। (४) **रवि, सूर्य।** उ.—(क) जलसुत दुखी, दुखी है मधुकर द्वै पंछी दुख पावत। सूरदास साराँग केहि कारन साराँग-कुलहिं लजावत। (ख) उदै 'साराँग' जान साराँग गयौ अपने देस—लहरी. ५५। (५) **सिंह।** (६) **हंस पक्षी।** (७) **मोर, मयूर।** उ.—सारंग ऊपर साराँग राजत 'साराँग' शब्द सुनावै—सारा. ९४४। (८) **पपीहा (पक्षी), चातक।** उ.—(क) ति पी-पी डर डार दीनी, प्रान बारी रंक। रटन साराँग तें निकासी नाग समर मिलाइ। डार दीनी सुमुख तिनकैं—लहरी.। (९) **हाथी।** (१०) **घोड़ा।** (११) **छाता, छत्र।** (१२) **शंख।** उ.—निकस 'साराँग' तें साराँग, हरत तन की ताप—लहरी.। (१३) **कमल।** उ.—(क) लब उलटौ दो जाऊँ तिहारी, ताकी साराँग-नैन—लहरी.। (ख) उलटौ रस साराँग हित सजनी, कबहूँ तीर न जैहौं—लहरी.। (ख) साराँग सम कर नीक—लहरी.। (१४) **सोना, स्वर्ण।** (१५) **गहना, आभूषण।** (१६) **तालाब, सर, सरोवर।** उ.—मानहुँ उमँगि चल्यौ चाहत है साराँग सुधे भरे। (१७) **भौंरा, भ्रमर।** उ.—खुल्यौ चाहत सरनि साराँग, देत 'साराँग' दान—लहरी.। (१८) **भौंरा या लट्टू नामक खिलौना।** उ.—नचत हैं सारंग सुंदर करत सब्द अनेक—लहरी.। (१९) **मधुमक्खी-विशेष।** (२०) **धनुष, विष्णु का धनुष।** उ.—(क) गहि साराँग, रन रावन जीत्यौ—१-२४। (ख) घन तन दिव्य कवच सजि करि अरु कर धारचौ साराँग—९-१५८। (ग) एकहू बान आयौ न हरि के निकट, तब गह्यौ धनुष सारंगधारी। (२१) **कपूर, कर्पूर।** (२२) **लवा पक्षी।** (२३) **श्रीकृष्ण का एक नाम।** उ.—साराँग-सुता देखि 'साराँग' कौं तेरौ अटल सुहाग—सारा. ९४६। (२४) **चंद्रमा, शशि।** उ.—धिग 'सारंग', साराँगमय सजनी—लहरी.। (२५) **सागर, समुद्र।** (२६) **जल, पानी।** (२७) **तीर, बाण।** उ.—ज्यौं साराँग, साराँग के कारन, 'साराँग' सहत, न डोलै—लहरी। (२८) **दिया, दीपक।** उ.—परौ साराँग, रिपु न मानत, करत अद्भुत खेद—लहरी.। (२९) **शिव, शंभु।** उ.—जनु पिनाक की आस लागि ससि साराँग सरन बचै। (३०) **सुगन्धित द्रव्य।** (३१) **साँप, सर्प।** उ.—साराँग चरन पीठ पर, 'साराँग, कनक खंभ अहि मनहुँ चढ़ोरी—लहरी.। (३२) **चंदन।** (३३) **जमीन, भूमि।** (३४) **बाल, केश, अलक।** (३५) **चमक, ज्योति, दीप्ति।** (३६) **सुन्दरता, सरसता, शोभा।** उ.—सारंग देख सुनै मृगनैनी, सारंग सुख दरसावै—सारा. ९४४। (३७) **नारी, स्त्री, नायिका।** उ.—'साराँग' हेरत उर साराँग तें, सारंग-सुत ढिग आवै—लहरी.। (३८) **रात, रत्रि।** उ.—धिग साराँग, 'साराँग' मै सजनी, सारंग अंग समाई—लहरी.। (३९) **दिन, दिवस।** (४०) **अनुराग।** उ.—'साराँग' बस भय, भय बस साराँग, 'साराँग' बिसमै मानै—लहरी.। (४१) **राग।** उ.—ज्यौं साराँग 'साराँग' के कारन साराँग सहत, न डोलै—लहरी.। (४२) **मेघ, बादल।** उ.—(क) बाचर नीतम

तें सारँग अति, बार-बार झर लावै—लहरी । **(ख) 'सारँग'** ऊपर 'सारँग' राजत, सारँग सब्द सुनावै—सारा. ९४४ । (४३) **कामदेव** । उ.—(क) धिग सारँग, सारँग मैं सजनी, 'सारँग' अंग न समाई—लहरी. । (ख) सारँग देख सुनै मृगनैनी, 'सारँग' सुख दरसावै—सारा. ९४४ । (४४) **कबूतर, कपोत** । (४५) **एक छंद** । (४६) **एक प्रकार का मृग** । (४७) **मोती** । (४८) **कुच, स्तन** । (४९) हाथ । (५०) **कौआ, वायस** । (५१) **ग्रह, नक्षत्र** । (५२) **खंजन पक्षी** । (५३) **आकाश, गगन** । (५४) **चिड़िया, पक्षी** । (५५) **कपड़ा, वस्त्र** । (५६) **'सारंगी' नामक वाद्ययंत्र** । (५७) **ईश्वर** । (५८) **काजल, अंजन** । (५९) **बिजली, विद्युत** । (६०) **फूल, पुष्प** । (६१) **एक राग** ।

वि. (१) **रँगा हुआ, रंगीन, रंजित** । उ.—सारँग दसन बसन पुनि 'सारँग' बसन पीतपट डारी । (२) **सुन्दर, सुहावना** । (३) सरस । उ.—सारँग नैन बैन बर 'सारँग' सारँग बदन कहै छबि को री-लहरी ।

सारंग नट—संज्ञा पुं. [सं. सारंग+हिं. नट] **एक संकर राग** ।

सारंगधर—संज्ञा पुं. [हिं. सारंग+धरना] **'सारंग' नामक धनुष धारण करनेवाले विष्णु या उनके अवतार** । उ.—(क) श्रीनाथ सारंगधर कृपा करि दीन पर—१-१२० । (ख) जब लौं सारँगधर-कर नाहीं सारँग-बान बिराजत—९-१३० । (ग) सरन साधु श्रीपति सारँग-धर—९८२ ।

सारंगपति—संज्ञा पुं. [हिं. सारंग=मेघ+पति] **मेघों का स्वामी इन्द्र** । उ.—सारँग-पति ता पति ता बाहन कीरत रट अनुराग—सारा. ९४६ ।

सारंगपतिनी, सारंगपत्नी—संज्ञा स्त्री. [हिं सारंग=समुद्र+पत्नी] **समुद्र की पत्नी, गंगा** । उ.—स्रवन बचन तें पावन पतिनी-सारँग कहत पुकार—लहरी. ।

सारँगपाणि, सारँगपानि, सारँगपानी—संज्ञा पुं. [हिं. सारंग+सं. पाणि] **'सारंग' नामक धनुष धारण करनेवाले विष्णु या उनके अवतार** । उ.—(क) तेली के बृष लौं नित भरमत भजत न सारँगपानि—१-१०२ । (ख) सोइ दसरथ कुल-चंद अमित बल आए सारँग-पानी—९-११५ । (ग) कुंभकरन समुझाइ रहे पचि, दै सीता सारँगपानी—९-१६० ।

सारंग-पिता—संज्ञा पुं. [हिं. सारंग=कमल+पिता] **कमल का पिता, जल या समुद्र** । उ.—सारंग-पितु-सुत-धर-सुत-बाहन आजु न नैंक पुकारै—लहरी. ।

सारंग-बैरी—संज्ञा पुं. [हिं. सारंग=भौंरा+बैरी] **भौंरे का शत्रु, चंपा पुष्प** । उ.—आदि को सारंग-बैरी पट प्रथम दिखराइ—लहरी. ।

सारंग-माल—संज्ञा स्त्री. [हिं. सारंग=कमल+माला] **कमलों की माला** । उ.—सारँग-माल लसत सारँग सी—लहरी. ।

सारंग-रिपु—संज्ञा पुं. [हिं. सारंग=दीपक, भौंरा+रिपु] (१) **दीपक का शत्रु वस्त्र या घूँघट** । उ.—परौ सारँग-रिपु न मानत करत अद्भुत खेद—लहरी. । (२) **दीपक का शत्रु वस्त्र या साड़ी का अंचल** । उ.—आनन-अमल पोंछ सारँग-रिपु तैं—लहरी. । (३) **भ्रमर का शत्रु, चंपा का फूल** । उ.—सुधा गेह में करि की सोभा, सारँग-रिपु सीस बनैहै—लहरी. ।

सारंगलोचना—वि. स्त्री. [हिं. सारंग+सं. लोचना] **मृग या हिरन जैसी नेत्रवाली, मृगनयनी** ।

सारंग-सुत—संज्ञा पुं. [हिं. सारंग=दीपक+सुत] **दीपक से उत्पन्न, काजल** । उ.—(क) बिछुर गयौ सारँग-सुत सिगरौ—लहरी. । (ख) सारँग-सुत नीकन तें बिछुरत—लहरी. । (ग) सारँग-सुत नीकन में सोहत-लहरी. । (घ) सारँग-सुत रेख सँभारी—लहरी. ।

सारंगसुता—संज्ञा स्त्री. [हिं. सारंग=आह्लाद, सूर्य+सुता=पुत्री] (१) **आह्लाद की पुत्री, आह्लादिनी या आनंद देनेवाली शक्ति** । उ.—सारँग-सुता देख सारँग को, तेरौ अटल सुहाग—सारा. ९४६ । (२) **सूर्य की पुत्री, यमुना** । उ.—ब्रह्म-सुता-सुत-पद-रज परसत, सारँग-सुता दिखावै—सारा. ९६१ ।

सारंगिन, सारंगिनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. सारंग] **सखी, सहचरी** । उ.—सारँग-माल लसत सारँग-सी सारंगिनि जो फूली—लहरी. ।

सारंगिया—वि. [हिं. सारंगी] **सरंगी बजानेवाला** ।

सारंगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सारंग] **एक प्रसिद्ध बाजा जिसमें**

लगे हुए तार कमानी से बजाये जाते हैं । उ.—सुर सरनाई सरस सारंगी उपजत तान तरंग-सारा ।

सार—संज्ञा पुं. [सं.] **पदार्थ का मूल या मुख्य भाग, सत्त, तत्व ।**

पद—सार को सार—**सर्वोत्तम तत्व** । उ.—(क) सूर भक्त-बत्सलता बरनौ सर्व कथा कौ सार—१-२६७ । (ख) सार कौ सार सकल-सुख कौ सुख हनूमान-सिव जानि गह्यौ—२-८ ।

(२) **तात्पर्य, निष्कर्ष** । (३) **किसी पदार्थ का अरक या रस** । (४) **पानी, जल** । (५) **गूदा** । (६) **मलाई** । (७) **मक्खन** । (८) **फल, परिणाम** । (९) **धन-संपत्ति** । (१०) **अमृत** । (११) **लोहा** । (१२) **बल, शक्ति** । (१३) **जुवा खेलने का पासा** । (१४) **तलवार** । (१५) **एक छंद** । (१६) **एक अर्थालंकर** ।

वि. (१) **श्रेष्ठ, उत्तम** । उ.—हम तीनों हैं जग-करतार, माँगि लेहु हमसौं बर सार—४-३ । (२) **मजबूत, दृढ़** ।

संज्ञा पुं. [सं. सारिका] **मैना (पक्षी)** ।

संज्ञा पुं. [हिं. सारना] (१) **पालन-पोषण** । (२) **देख-रेख** । (३) **खोज-खबर** । उ.—तलफत छाँड़ि गए मधुबन को बहुरि न कीन्ही सार—२७१७ । (४) **रक्षा** । उ.—जहँ जहँ दुसह कष्ट भक्तनि कौं तहँ तहँ सार करै—१-४५ (५) **पलँग, शैया** ।

संज्ञा पुं. [सं. घनसार] **कपूर** ।

संज्ञा पुं. [हिं. साल] (१) **सालने की क्रिया या भाव** । (२) **मन में खटकने या कष्ट देनेवाली बात** ।

संज्ञा पुं. [हिं. साला] **पत्नी का भाई, साला** ।

वि. **मुश्किल, कठिन** ।

वि. [हिं. सर] **(एक) जैसे, (एक) से** । उ.—सखी री स्याम सबै इक सार—२६८७ ।

सारखा—वि. [हिं. सरीखा] **समान, सदृश** ।

सारगंध, सारगंधि—संज्ञा पुं. [सं.] **चंदन** ।

सारगर्भित—वि. [सं.] **तत्वपूर्ण** ।

सारग्रहण—संज्ञा पुं. [सं. सार+ग्रहण] **तत्व-भाग स्वीकार या ग्रहण करने का भाव, अवस्था या प्रवृत्ति** ।

सार-ग्राहिता—संज्ञा स्त्री [सं.] **तत्व-भाग ग्रहण करने का भाव, अवस्था या प्रवृत्ति** ।

सार-ग्राही—वि. [सं.] **तत्व ग्रहण करनेवाला** ।

सारघ—संज्ञा पुं. [सं.] **शहद, मधु** ।

सारज—संज्ञा पुं. [सं.] **मक्खन, नवनीत** ।

सारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पारे आदि रसों का संस्कार** । (२) **रावण का एक मंत्री जो राम की सेना में उनका भेद लेन गया था** ।

सारणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **छोटी नदी** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. सारिणी] **छोटे-छोटे खानों में अंक आदि की सूची** ।

सारत—क्रि. स. [हिं. सारना] **पूरी या पालन करता है** । उ.—बरबस ही लै जान कहत हैं, पैज आपनी सारत—पृ. ३२७ (६८) ।

सारता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सार या तत्व का भाव या धर्म** ।

सारथि—संज्ञा पुं. [सं. सारथी] (१) **रथादि चलानेवाला, सूत** । उ.—पारथ के सारथि हरि आप भए हैं—१-२३ । (२) **सागर, समुद्र** ।

सारथित्व—संज्ञा पुं. [सं.] **सारथी का कार्य, पद या भाव** ।

सारथी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रथ आदि चलानेवाला, सूत** । उ.—(क) अरजुन के हरि हुते सारथी—१-२६४ । (ख) सारथी पाय रुख दये सटकार हय—१० उ.-५६ । (२) **सागर, समुद्र** ।

सारथ्य—संज्ञा पुं. [सं.] **सारथी का कार्य, पद या भाव** ।

सारद—संज्ञा स्त्री. [सं. शारदा] **सरस्वती** । उ.—(क) सेस, सारद रिषय नारद संत चिंतन सरन—१-३०८ । (ख) गौरि गनेस्वर बीनऊँ (हो) देवी सारद तोहिं—१०-४० ।

संज्ञा पुं. [सं. शरद्] **शरद ऋतु** ।

वि. **शरद ऋतु-संबंधी, शारदीय** ।

सारदा—संज्ञा स्त्री. [सं. शारदा] **सरस्वती** । उ.—सुर-तरुवर की साख लेखिनी लिखत सारदा हारैं—१-१८३ ।

सारदी, सारदीय—वि. [सं. शारदीय] **शरद ऋतु-सम्बन्धी** ।

सारदूल—संज्ञा पुं. [सं. शार्दूल] **सिंह** ।

सारधू—संज्ञा स्त्री. [हिं.] **पुत्री, कन्या** ।

सारन—संज्ञा पुं. [सं. सारण] रावण का मंत्री जो गुप्त दूत बनकर राम की सेना का भेद लेने गया था। उ.—सुक-सारन द्वै दूत पठाए—९-१२०।

सारना—क्रि. स. [हिं. सरना] (१) (काम) पूरा या ठीक करना। (२) प्रतिज्ञा पूरी करना, प्रण पालना। (३) सजाना, सुंदर करना। (४) बनाना, साधना। (५) सँभालना, देखरेख या रक्षा करना। (६) आँखों में अंजन लगाना। (७) (अस्त्र-शस्त्र) चलाना, प्रहार करना। (८) दूर हटाना। (९) (आग) बुझाना।

सारनाथ—संज्ञा पुं. [हिं. सारंग+नाथ] बनारस से उत्तर-पश्चिम पर स्थित एक प्रसिद्ध स्थान जो हिंदुओं, बौद्धों और जैनियों का तीर्थ है। यही प्राचीन मृगदाव है जहाँ से गौतम बुद्ध ने अपना उपदेश आरम्भ किया था।

सारनो—क्रि. सं. [हिं. सरना] सारना।

संज्ञा पुं. 'सारने' की क्रिया या भाव। उ.—ललिता बिसाखा ब्रजबधू झुलावैं सुरुचि सार सारको सारनो—२२८०।

सारल्य—संज्ञा पुं. [सं.] सरलता।

सारवती—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक छंद।

सारवत्ता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सार ग्रहण करने का भाव। (२) सारवान् होने का भाव।

सारवान, सारवान्—वि. [सं. सारवान्] सारयुक्त।

सारस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक सुन्दर पक्षी। उ.—मृग मृगनी-द्रुम बन सारस खग काहू नहीं बतायौ री—१८०८। (२) हंस। (३) चंद्रमा। (४) कमल। उ—(क) सारस रस अचवन को मानो तृषित मधुप जुग जोर। (ख) सारस हूँ तैं नैन बिसाला—२४८२। (५) स्त्रियों का एक कटिभूषण। (६) झील का जल। (७) छप्पय छंद का एक भेद।

सारसन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) करधनी। (२) कमरबंद।

सारसी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) आर्या छंद का एक भेद। (२) सारस पक्षी की मादा।

सार-सुता—संज्ञा स्त्री. [सं. सुर-सुता] यमुना। उ.—निरखति बैठि नितंबिनि पिय सँग सार-सुता की ओर।

सारसुती—संज्ञा स्त्री. [सं. सरस्वती] भारती, शारदा।

सारस्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सरसता। (२) रसीलापन।

सारस्वत—संज्ञा पुं. [सं] (१) दिल्ली के उत्तर-पश्चिम का वह प्रदेश जो सरस्वती नदी के तट पर है। (२) इस देश का प्राचीन निवासी। (३) इस देश का ब्राह्मण।

वि. (१) सरस्वती-संबंधी। (२) विद्वानों का। (३) सारस्वत प्रदेश का।

सारांश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) निचोड़, सार-भाग संक्षेप। (२) तात्पर्य, अभिप्राय। (३) परिणाम। (४) उपसंहार, परिशिष्ट।

वि. उत्तम, श्रेष्ठ।

सारा—संज्ञा पुं. [सं. सार] सार, तत्व।

पद—सार के सारा—सर्वश्रेष्ठ या मूल तत्व। उ.—तुम संसार-सार के सारा—२४५९।

संज्ञा पुं. [हिं. साला] पत्नी का भाई, साला।

वि. [सं. सह] पूरा, समस्त।

संज्ञा पुं. एक काव्यालंकार।

सारि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) चौपड़ या जूआ खेलने का पासा। उ.—ढारि पासा साधु-संगति फेरि रसना सारि। दाँव अबकैं परचौ पूरो कुमति पिछली हारि—१-३०९। (२) चौपड़ या पासा खेलनेवाला। (३) गोटी। उ.—चौपरि जगत मड़े जुग बीते। गुन पाँसे, क्रम अंक, चारि गति सारि, न कबहूँ जीते—१-६।

संज्ञा स्त्री. [हिं. साड़ी] साड़ी। उ.—पगनि जेहरि लाल लहँगा अंग पँचरँग सारि—पृ. ३४४ (२९)।

क्रि. स. [हिं. सारना] (१) (तिलक आदि) लगाकर या बनाकर। उ.—इंद्र की पूजा मिटाई, तिलक गिरि को सारि—९४१। (२) (भोजन आदि) ग्रहण करके। उ.—सारि जेवनार अँचवन कै भए सुद्ध दियो तमोर नँद हर्ष आगे—२४९३। (३) (व्रत आदि का) निर्वाह या पालन (करो)। उ.—भूख लगी भोजन करिहैं हम नेम सारि तुम लेहु—२५५३।

सारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] मैना (पक्षी)। उ.—बन उपबन फल फूल सुभग सर सुक सारिका हंस पारावत।

सारिखा, सारिखे—वि. [हिं. सरीखा] समान, तुल्य। उ.—तुम सारिखे बसीठ पठाए कहिए कहा बुद्धि उन केरी—३०१२।

सारिणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) खाने या स्तंभ-रूप में दिये गये अंक आदि। (२) सूची।

सारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) मैना (पक्षी), सारिका। (२) गोटी। (३) पासा।

संज्ञा स्त्री. [हिं. साड़ी] स्त्रियों की बढ़िया धोती, साड़ी। उ.—(क) तब अंबर और मँगाइ सारी सुरंग चुनी—१०-२४। (ख) यह तौ लाल ढिगनि की औरै है काहू की सारी—६९३।

संज्ञा स्त्री. [हिं. साली] पत्नी की बहन।

वि. [हिं. सारा] सब, पूर्ण, समस्त। उ.—बलि हो बृन्दाबन की भूमिहिं सो तो भाग की सारी—३४१२।

वि. [सं. सारिन्] अनुकरण करनेवाला।

सारु—संज्ञा पुं. [सं. सार] सार। उ.—मनहुँ छिड़ाइ लिये नँदनंदन वा ससि को सत सारु—१३३२।

सारूप, सारूप्य—संज्ञा पुं. [सं. सारूप्य] (१) समान रूप होने का भाव, एकरूपता। (२) पाँच प्रकार की मुक्तियों में एक जिसमें भक्त उपास्य का ही रूप प्राप्त कर लेता है।

सारूपता, सारूप्यता—संज्ञा स्त्री. [सं. सारूप्यता] सारूप्य का भाव।

सारे—वि. [हिं. सारा] सब। उ.—(क) भीमादिक रोए पुनि सारे—१-२८८। (ख) यौं कहि पुनि बैकुंठ सिधारे। बिधि हरि महादेव सुर सारे—४-५।

क्रि. स. [हिं. सारना] निर्वाह किये, निबाहे। उ. —जन्मत ही गोकुल सुख दीन्हो नंद दुलार बहुत सारे री—२५३३।

सारो—संज्ञा पुं. [हिं. साला] पत्नी का भाई।

संज्ञा स्त्री. [सं. सारिका] मैना (पक्षी)।

सारोपा—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'लक्षणा' का एक भेद।

सारौं—संज्ञा स्त्री. [सं. सारिका] मैना (पक्षी)।

सारौ—वि. [हिं. सारा] सब। उ.—जज्ञ मैं करत तब मेघ बरसत मही, बीज अंकुर तबै जमत सारौ ४-११।

सार्ङ्पानि, सार्ङ्पानी—संज्ञा पुं. [सं. सारङ्गपाणि] 'सारंग' नामक धनुष धारण करनेवाले विष्णु या उनके अवतार। उ.—फूली है जसोदा रानी, सुत जायौ सार्ङ्गपानी—१०-३४।

सार्थ—वि. [सं.] अर्थ से युक्त या सहित।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) समूह। (२) वणिक्-समूह।

सार्थक—वि. [सं.] (१) अर्थ-युक्त। (२) सफल, पूर्ण मनोरथ। (३) गुणकारी, उपकारी।

सार्थकता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सार्थक होने का भाव। (२) सफलता, सिद्धि।

सार्थपति—संज्ञा पुं. [सं.] समूह में जाकर व्यापार करनेवालों का नायक।

सार्थवाह—संज्ञा पुं. [सं.] समूह के साथ दूर स्थानों म जाकर व्यापार करनेवाला।

सार्दूल—संज्ञा पुं. [सं. शार्दूल] सिंह।

सार्‍यो, सार्‍यौ—क्रि. स. [हिं. सारना] पूरा किय।

उ.—अदिति सुतन को कारज सार्‍यो—११-२।

सार्व—वि. [सं.] सबसे संबंध रखनेवाला।

सार्वकालिक—वि. [सं.] (१) सब समयों से संबंधित। (२) सर्व कालों में होनेवाला।

सार्वजनिक—वि. [सं.] (१) सब लोगों से संबंध रखनेवाला। (२) सब लोगों के काम आनेवाला।

सार्वजनीन—वि. [सं.] सबसे संबंधित।

सार्वत्रिक—वि. [सं.] सब स्थानों में होनेवाला।

सार्वदेशिक—वि. [सं.] (१) सारे देश से संबंधित। (२) सब देशों में होनेवाला या सब देशों से संबंधित।

सार्वभौतिक—वि. [सं.] सब भूतों या तत्वों से संबंधित या उनमें होनेवाला।

सार्वभौम—संज्ञा पुं. [सं.] चक्रवर्ती राजा।

वि. सारी पृथ्वी से संबंधित या उसमें होनेवाला।

सार्वभौमिक—वि. [सं.] (१) सारी पृथ्वी से संबंधित या उसमें होनेवाला। (२) सारी पृथ्वी के समस्त देशों को एक समान समझने के उदार दृष्टिकोणवाला।

साल—संज्ञा स्त्री. [हिं. सालना] (१) 'सालने' की क्रिया या भाव। (२) सूराख, छेद। (३) घाव। (४) दुख, पीड़ा, वेदना। उ.—सुरति-साल-ज्वाला उर अंतर ज्यौं पावकहिं पियौ—९-४६।

वि. चुभने, खटकने या पीड़ा पहुँचानेवाले। उ.—(क) बैरिनि कौ उर साल—१०-१३८। (ख) मन-मन बिहँसत गोपाल, भक्त-पाल, दुष्ट-साल—१०-२७६।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) जड़, मूल। (२) किला।

संज्ञा पुं. [फ़ा.] बरस, वर्ष।

संज्ञा पुं. [सं. शाल] सूखा वृक्ष।

संज्ञा पुं. [फ़ा. शाल] दुशाला।

संज्ञा पुं. [सं. शालि] धान-विशेष।

संज्ञा स्त्री. [सं. शाला] (१) घर। (२) स्थान।

सालई क्रि. स. [हिं. सालना] पीड़ा पहुँचाता है।

सालक—वि. [हिं. सालना+क (प्रत्य.)] दुख देनेवाला। उ.—(क) सुर पालक असुरनि उर सालक त्रिभुवन जाहि डराई—३६३। (ख) सूर स्याम चले गाइ चरावन कंस उरहिं के सालक—४३६। (ग) तुही अनंत सक्ति प्रभु असुर सालक—१० उ.-३५।

साल-गिरह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] बरस-गाँठ।

सालग्राम—संज्ञा पुं. [सं. शालग्राम] शालग्राम।

सालग्रामी—संज्ञा स्त्री. [सं. शालग्राम] गंडक नदी (जिसमें शालग्राम की शिलाएँ पायी जाती हैं)।

सालत—क्रि. स. [हिं. सालना] छेद करते, चुभते या दुख पहुँचाते हैं। उ.—आपुस ही में कहत हँसत हैं प्रभु हृदय यह सालत—२५७४।

सालन—संज्ञा पुं. [सं. सलवण] पकी हुई मसालेदार तरकारी। उ.—(क) सालन सकल कपूर सुबासत, स्वाद लेत सुंदर हरि ग्रासत—३९६। (ख) बेसन सालन अधिकौ नागर—२३२१।

सालना, सालनो—क्रि. अ. [सं. शल्य] (१) मन में खटकना या कसकना। (२) चुभना, गड़ना।

क्रि. स. (१) छेद करना। (२) चुभाना, गड़ाना। (३) दुख या कष्ट पहुँचाना। (४) प्रविष्ट करना। (५) एक लकड़ी आदि में छेद करके दूसरी का सिरा उसमें डालना।

साला—संज्ञा पुं. [सं. श्यालक] (१) पत्नी का भाई। (२) इस संबंध की सूचक एक गाली।

संज्ञा पुं. [सं. सारिका] मैना (पक्षी)।

संज्ञा स्त्री. [सं. शाला] (१) घर। (२) पाठशाला।

सालाना—वि. [फ़ा. सालान:] साल का, वार्षिक।

सालार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) पथ-प्रदर्शक। (२) नेता, अगुआ, प्रधान, नायक।

सालि—संज्ञा पुं. [सं. शालि] धान-विशेष।

सालिग्राम—संज्ञा पुं. [सं. शालग्राम] विष्णु की, एक प्रकार के गोल पत्थर की, मूर्ति। उ.— सालिग्राम मेलि मुख भीतर बैठि रहे अरगाई—१०-२६३।

साली—संज्ञा स्त्री. [हिं. साला] पत्नी की बहन।

सालु—संज्ञा पुं. [हिं. सालना] (१) कष्ट। (२) ईर्ष्या।

सालू—संज्ञा पुं. [देश.] एक तरह का लाल कपड़ा जो विवाह जैसे मांगलिक कार्यों में उपयोग में आता है।

सालोक्य—संज्ञा पुं. [सं.] पाँच प्रकार की मुक्तियों में एक जिसमें भक्त भगवान के साथ उनके लोक में वास करता है। उ.—(क) सालोक्य सामीप्य नासारो।पता भुज चारि—२९२४। (ख) हम सालोक्य स्वरूप सरो जो रहत समीप सहाई—३२९०।

साल्मलि, साल्मली—संज्ञा पुं. [सं. शाल्मली] (१) सेमल (पेड़)। (२) एक (पौराणिक) द्वीप। उ.— सातों दीप ......। जँबू प्लच्छ, क्रौंच, साक, साल्मलि कुस पुष्कर भरपूर—सारा. ३४।

साल्व—संज्ञा पुं. [सं. शाल्व] शाल्व। उ.—ताहि-आवत निरखि स्याम निज साँग को काटि करि साल्व की सुधि भुलाई—१० उ.-५६।

सावंत—संज्ञा पुं. [सं. सामंत] (१) वह भूस्वामी जो किसी बड़े राजा को कर देता हो। (२) वीर, योद्धा। उ.—लात के लगत सिर तें गयो मुकुट गिर केस धरि लै चले हरषि सावंत—२६१४। (३) अधिनायक।

साव—संज्ञा पुं. [सं. शावक] बालक, पुत्र।

संज्ञा पुं. [हिं. सार] साहु।

सावक—संज्ञा पुं. [सं. शावक] पशु-पक्षी का बच्चा। उ.—सिंह-सावक ज्यौं तजै गृह इंद्र आदि डरात —१-१०६।

संज्ञा पुं. [सं. श्रावक] (१) बौद्ध संन्यासी। (२) जैनी साधु, जैनी।

सावकाश—क्रि वि. [सं.] अवकाश होनेपर, सुभीते से।

वि. अवकाश के साथ।

सावचेत—वि. [सं. सा+हिं. चेत] चौकन्ना, सावधान।

सावचेती—संज्ञा स्त्री. [हिं. सावचेत] सतर्कता।

सावत—संज्ञा पुं. [हिं. सौत] सौतिया डाह।

सावधान—वि. [सं.] **सजग, सचेत, सतर्क**। उ.—(क) अजहूँ सावधान किन होहि। माया बिषम भुजंगिनि कौ बिष उतरचौ नाहिंन तोहिं—२-३२। (ख) साव-धान करिकै गई—१६७८।

सावधानता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सजगता, सतर्कता**।

सावधानी—संज्ञा स्त्री. [सं. सावधान] **सतर्कता**।

सावधि—वि. [सं. स+अवधि] **जिसमें या जिसकी अवधि निश्चित की गयी हो**।

सावन—संज्ञा पुं. [सं. श्रावण] (१) **श्रावण मास जब खूब पानी बरसता है**। उ.—नैना सावन-भादों जीते—२७६५। (२) **इस मास में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत**। (३) **कजली (गीत)**।

संज्ञा पुं. [सं.] **एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का समय**।

सावनी—संज्ञा पुं. [हिं. सावन] **धान-विशेष**।

संज्ञा स्त्री. (१) **सावन में गाया जानेवाला एक गीत**। (२) **कजली (गीत)**। (३) **सावन में वर-पक्ष की ओर से कन्या के लिए भेजे जानेवाले वस्त्र, मिठाई आदि उपहार**।

वि. **सावन की, सावन-संबंधी**। उ.—रंगमहल में जहँ नँदरानी खेलति सावनी तीज सुहाई—२२९०।

संज्ञा स्त्री. [सं. श्रावणी] **सावन मास की पूर्णमा जो 'रक्षाबंधन' का दिन है**।

सावर—संज्ञा पुं. [सं. शावर] **शिव-कृत एक तंत्र का नाम**। उ.—सावर-मंत्र लिख्यौ स्तुति-द्वार।

संज्ञा पुं. [सं. शबर] **एक तरह का हिरन**।

सावर्ण—वि. [सं.] **समान वर्ण सम्बन्धी**।

सावित्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य**। (२) **सूर्य का पुत्र**।

वि. **सविता या सूर्य-संबंधी**।

सावित्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **(वेदमाता) गायत्री**। (२) **सरस्वती**। (३) **उपनयन के समय होनेवाला एक संस्कार**। (४) **मद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री जो सत्यवान को ब्याही थी और जिसने अपने मृत पति के प्राण वरदान-रूप में यमराज को प्रसन्न करके प्राप्त किये थे**। (५) **सती-साध्वी स्त्री**। (६) **सधवा स्त्री**।

सावित्रीव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] **वह व्रत जो स्त्रियाँ, पतियों की दीर्घायु-कामना से ज्येष्ठ कृष्ण १४ को करती हैं**।

साश्रु—वि. [सं. स+अश्रु] **जिनमें आँसू भरे हों**।

क्रि. वि. **आँखों में आँसू भरकर**।

साषी—संज्ञा स्त्री. [सं. साक्षी] **गवाही, साक्षी**।

साष्टांग—क्रि. वि. [सं.] **आठों अंगों से**।

वि. **आठों अंग-सहित**।

यौ. साष्टांग प्रणाम—**भूमि पर लेटकर, मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन से प्रणाम करना**।

मुहा.—(किसी को) साष्टांग प्रणाम कहना या करना—**(किसी से) बहुत दूर या बचकर रहना**।

सास—संज्ञा स्त्री. [सं. श्वश्रु] (१) **पति या पत्नी की माता**। उ.—जिय परी ग्रंथि कौन छोर, निकट ननँद न सास—पृ. ३४८ (५७ (२) **वह वृद्धा जिससे पति या पत्नी की माता-जैसा संबंध माना जाय**। उ.—नाहीं ब्रज-वास, सास, ऐसी बिधि मेरौ—१०-२७६।

सासत—क्रि. स. [हिं. सासना] (१) **दंड देता है**। (२) **कष्ट पहुँचाता है**। (३) **डाँटता-डपटता है**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. साँसत] (१) **दंड**। (२) **कष्ट**।

सासरा—संज्ञा पुं. [सं. सास] **ससुराल**।

सासन—संज्ञा पुं. [सं. शासन] (१) **आज्ञा, आदेश**। (२) **नियंत्रण**। (३) **राज्य-संचालन**।

सासना—संज्ञा स्त्री. [सं. शासन] (१) **सजा, दंड**। (२) **डाँट-डपट**। (३) **बहुत अधिक शारीरिक कष्ट, साँसत**। उ.—(क) बहुत सासना दई प्रहलादहिं ताहि निसंक कियौ—१-३८। (ख) हिरनाकुस प्रहलाद भक्त कौं बहुत सासना जारचौ—१-१०९।

क्रि. स. (१) **दंड देना**। (२) **डाँटना-डपटना**। (३) **बहुत अधिक शारीरिक कष्ट देना**।

सासरा—संज्ञा पुं. [हिं. सास+आलय] **ससुराल**।

सासा—संज्ञा पुं. [सं. संशय] **संदेह**।

संज्ञा पुं. [हिं. साँस] (१) **साँस**। (२) **प्राण**।

सासु—संज्ञा स्त्री. [हिं. सास] **पति या पत्नी की माता**। उ.—(क) सासु-ननद घर घर लिए डोलतिं, याकौं

रोग बिचारौ री—१०-१३५। (ख) सासु रिसाय, लरै मेरी ननदी—२३९७।

सासुर - संज्ञा पुं. [हिं. ससुर] (१) **पति या पत्नी का पिता। (२) ससुराल।**

साह—संज्ञा पुं. [हिं. साहु] (१) **सज्जन। (२) सेठ, महाजन। (३) बनिया, व्यापारी। (४) ईमानदार।**

संज्ञा पुं. [फा. शाह] (१) **महाराज। (२) मुसलमान फकीर।**

वि. (१) **बड़ा, भारी, महान। (२) उदार।**

साहचर्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **साथ रहने का भाव, सहचरता। (२) संग, साथ।**

साहना - क्रि. स. [हिं. सहना] **लेना, ग्रहण करना।**

साहनी संज्ञा पुं. [सं. साधनिक, प्रा. साहनिय] (१) **सेना के विभागीय अध्यक्ष। (२) राज-कर्मचारी। (३) परिषद। (४) संगी, साथी।**

संज्ञा स्त्री. **फौज, सेना।**

साहब—संज्ञा पुं. [अ. साहिब] (१) **प्रभु, स्वामी। (२) परमेश्वर।** उ.—(क) तुम साहब मैं ढाढ़ी तुम्हरौ प्रभु मेरे ब्रजराज—१०-३६। (ख) पोषन-भरन बिसंभर साहब—१-३५। (ग) साहब सों जो करै धुताई—१०४१। (३) **एक सम्मानसूचक शब्द, महाशय। (४) गोरी जाति का व्यक्ति।**

वि. **बहुत फैशन से रहनेवाला।**

साहबजादा—संज्ञा पुं. [अ. साहिब+जादा] **बेटा।**

साहब-सलामत—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **सलाम। (२) मेल-जोल।**

साहस—संज्ञा. पुं. [सं.] (१) **मन की वह दृढ़ता जो कोई बड़ा काम करने को प्रवृत्त करती है, हिम्मत, हियाब।** उ.—जरत ज्वाला गिरत गिरि तैं स्व कर काटत सीस। देखि साहस सकुच मानत राखि सकत न ईस—११०६। (२) **कोई बुरा काम। (३) जबरदस्ती धन लूटना।**

साहसिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पराक्रमी। (२) डाकू। (३) मिथ्यावादी। (४) निडर, निर्भय।**

साहसी—वि. [सं. साहसिन्] **हिम्मत रखनेवाला।**

साहस्र—वि. [सं.] **सहस्र का, सहस्र-संबंधी।**

साहस्रिक—वि. [सं.] **सहस्र का, सहस्र सम्बन्धी।**

साहस्री—संज्ञा स्त्री. [सं. सहस्र] **हजार वर्षों का समूह।**

साहाय्य—संज्ञा पुं. [सं.] **मदद, सहायता।**

साहि—संज्ञा पुं. [फ़ा. शाह] **राजा।**

संज्ञा पुं. [हिं. साहु] **साहु।**

साहित्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **'सहित' या साथ होने या रहने का भाव। (२) किसी भाषा के उन गद्य-पद्य ग्रंथों आदि का समूह जिनमें स्थायी, उच्च और गूढ़ विषयों का व्यवस्थित विवेचन हो, वाङ्मय। (३) वे कृतियाँ जिनके गुण और प्रभाव के कारण समाज में आदर हो। (४) किसी विषय या वस्तु से सम्बन्धित कृतियाँ। (५) किसी कवि या लेखक की समस्त रचनाएँ। (६) गद्य-पद्य के गुण-दोष, भेद-उपभेद आदि सम्बन्धी ग्रंथों का समूह।**

साहित्यकार—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जो ग्रंथादि लिखकर साहित्य की रचना करता हो।**

साहित्यिक—वि. [सं.] (१) **साहित्य-संबंधी। (२) साहित्य की सेवा या रचना करनेवाला।**

साहिब—संज्ञा पुं. [हिं. साहब] **साहब।**

साहिबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. साहब] (१) **'साहब' होने का भाव। (२) प्रभुता। (३) महत्व। (४) ऐश्वर्य और अधिकार का सुख-भोग।** उ.—(क) नहात-खात सुख करत साहिषी, कैसैं करि अनखाऊँ—९-१७। (ख) जनम साहिबी करत गयौ—१-६४। (५) **ठाट-बाट।**

वि. (१) **साहब का। (२) साहब-जैसा।**

साहियाँ—संज्ञा पुं. [सं. साँई] (१) **पति। (२) स्वामी।**

साहिल—संज्ञा पुं. [अ.] **तट, किनारा।**

साही—संज्ञा स्त्री. [सं. शल्यकी] **एक जंगली जंतु जिसके शरीर पर लंबे-लंबे काँटे होते हैं।**

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शाही] **एक तरह की तलवार।**

वि. **बादशाहों का, राजसी।**

साहु—संज्ञा पुं. [सं. साधु] (१) **भलामानस, सज्जन। (२) बनिया, व्यापारी। (३) जो 'चोर' न हो, ईमानदार।** उ.—(क) ये भए चोर तैं साहु—१-४०। (ख) ए हैं साहु कै चोर—३५९। (ग) बीस बिरियाँ चोर की तौ कबहुँ मिलिहैं साहु—१२८०। (४) **सेठ, महा-**

जन । उ.—मुख मागौ पैहौ सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावहु—३३४० ।

साहुल—संज्ञा पुं. [फ़ा.शाकूल] **दीवार की सीध नापने का एक यंत्र जिसकी डोरी में एक लट्टू-सा बँधा रहता है ।**

साहू—संज्ञा पुं. [हिं. साहु] **साह, साहु ।**

साहूकार—संज्ञा पुं. [हिं. साहु+कार] **बड़ा महाजन ।**

साहूकारा—संज्ञा पुं. [हिं. साहूकार] (१) **महाजनी कारबार ।** (२) **वह बाजार जहाँ महाजनी कारबार होता हो ।** (३) **वह स्थान जहाँ साहूकार रहते हों ।**

साहेब—संज्ञा पुं. [हिं. साहब] **साहब ।**

साहैं—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाँह] **बाजू, भुजदंड ।**

अव्य. [हिं. सामुहें] **सामने, सम्मुख ।**

सिउँ—प्रत्य. [पुं. हिं. स्यौं] (१) **साथ ।** (२) **निकट ।**

सिंकना—क्रि. अ. [हिं. सेंकना] **सेंका जाना ।**

सिंग—संज्ञा पुं. [हिं. सींग] **सींग ।**

सिंगरफ—संज्ञा पुं. [फ़ा. शिंगरफ़] **ईंगुर ।**

सिंगरफी—वि. [हिं. सिंगरफ] **ईंगुर का बना हुआ ।**

सिंगरौर—संज्ञा पुं. [सं. शृंगवेर] **प्रयाग के पश्चिमोत्तर स्थित शृंगवेरपुर जहाँ निषादराज गुह की राजधानी थी ।**

सिंगा—संज्ञा पुं. [हिं. सींग] **सींग या लोहे का बना एक बाजा, तुरही, नरसिंहा, रणसिंगा ।**

सिंगार—संज्ञा पुं. [सं. शृंगार] (१) **सजावट, सज्जा ।** उ.—(क) ऐपन की सी पूतरी सब सखियनि कियौ सिंगार—१०-४० । (ख) सूर स्याम कहैं चोर देत हौं मो आगे सिंगार करौ—७९० । (२) **शोभा ।** उ.—तुम्हरैं भजन सबहिं सिंगार—१-४१ । (३) **शृंगार-रस (साहित्य) ।**

सिंगारदान—संज्ञा पुं. [हिं. सिंगार+फ़ा. दान] **शृंगार की सामग्री रखने की पेटी या संदूकची ।**

सिंगारना, सिंगारनो—क्रि. स. [हिं. सिंगार] **सजाना ।**

सिंगार-हाट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिंगार+हाट] **वेश्याओं के रहने का स्थान, चकला ।**

सिंगारहार—संज्ञा पुं. [सं. हरशृंगार] **हरसिंगार (फूल) ।**

सिंगारिया—संज्ञा पुं. [हिं. सिंगार+इया] **देव-मूर्ति का शृंगार करनेवाला पुजारी ।**

सिंगारी—वि. पुं. [हिं. सिंगार] (१) **सजानेवाला ।** (२) **शृंगार-संबंधी ।**

संज्ञा पुं. **देवमूर्ति का शृंगार करनेवाला ।**

सिंगार्‌यो, सिंगार्‌यौ—क्रि. स. [हिं. सिंगारना] **सजाया, सँवारा ।** उ.—पहिरि पटम्बर जकरि अडंबर यह तन मूढ़ सिंगार्‌यौ—१-३३६ ।

सिंगिया—संज्ञा पुं. [सं. शृंगिका] **एक विष ।**

सिंगी—संज्ञा पुं. [हिं. सींग] **सींग का बना बाजा ।**

मुहा.—सिंगी पूरना—**सिंगी बाजा बजाना ।**

संज्ञा स्त्री. (१) **एक तरह की मछली ।** (२) **सींग की नली जिससे शरीर का दूषित रक्त चूसकर निकाला जाता है ।**

सिंगौटा—संज्ञा पुं. [हिं. सींग] **पशुओं के सींगों पर चढ़ाया जानेवाला धातु का आवरण ।**

सिंगौटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिंगार+औटी] **स्त्रियों की शृंगार-प्रसाधन की पिटारी ।**

सिंघ—संज्ञा पुं. [हिं. सिंह] **सिंह ।**

सिंघल—संज्ञा पुं. [सं. सिंहल] **सिंहल द्वीप ।**

सिंघली—वि. [हिं. सिंहली] **सिंहल द्वीप-वासी ।**

सिंघाड़ा—संज्ञा पुं. [सं. शृंगाटक] **पानी की एक लता जिसके छोटे-छोटे तिकोने फल, जिन पर दो सींग से रहते हैं, खाये जाते हैं ।**

सिंघासन—संज्ञा पुं. [सं. सिंहासन] **सिंहासन ।**

सिंघिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंहनी] **शेरनी ।**

सिंचन—संज्ञा पुं. [सं.] **सींचना ।**

सिंचना—क्रि. अ. [हिं. सींचना] **सींचा जाना ।**

सिंचाई—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंचन] **सींचने का काम, भाव, पारिश्रमिक या कर ।**

सिंचाना—क्रि. स. [हिं. सींचना] **सींचने को प्रवृत्त करना ।**

सिंचित—वि. [सं.] (१) **सींचा हुआ ।** (२) **गीला, तर ।**

सिंजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अलंकारों की झनकार ।**

सिंजित—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंजा] **ध्वनि, झंकार ।**

वि. **जिसमें ध्वनि या झनकार हो ।**

सिंदन—संज्ञा पुं. [सं. स्यंदन] **रथ ।**

सिंदूर—संज्ञा पुं. [सं.] **ईंगुर का लाल चूर्ण जिससे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ अपनी माँग भरती हैं ।**

मुहा.—सिंदूर चढ़ना—**कुमारी का विवाह होना।** सिंदूर देना या लगाना—**कन्या की माँग में सिंदूर लगाकर उसे पत्नी बनाना।**

सिंदूर-दान—संज्ञा पुं. [सं.] **विवाह के अवसर पर वर का कन्या की माँग में सिंदूर भरना।**

सिंदूरबंदन—संज्ञा पुं. [सं.] **विवाह की एक रीति जिसमें वर, कन्या की माँग में सिंदूर भरता है।**

सिंदूरिया, सिंदूरी—वि. [सं. सिंदूर+इयां, ई] **सिंदूर के पीले मिले लाल रंग का।**

सिंदोरी, सिंदौरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंदूर] **सिंदूर रखने की डिबिया जो सौभाग्य की सामिग्री में होती है।**

सिंध—संज्ञा पुं. [सं. सिंधु] (१) **पश्चिमी भारत का एक प्रदेश जो अब पाकिस्तान में है।** (२) **पंजाब की एक प्रसिद्ध नदी।**

सिंधव—संज्ञा पुं. [सं. सैंधव] (१) **नमक।** (२) **सिंधु देश का घोड़ा।**

वि. (१) **सिंध देश का।** (२) **समुद्र का।**

सिंधवी—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंधु] **एक रागिनी।**

सिंधारा—संज्ञा पुं. [देश.] **सावन की दोनोंतीजों को वर-पक्ष का कन्या के लिए भेजा गया पकवान, वस्त्र आदि।**

सिंधिया—संज्ञा पुं. [मराठी शिंदे] **ग्वालियर के मराठा-वंश की एक प्रसिद्ध उपाधि।**

सिंधी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिंध] **सिंध प्रांत की बोली।**

वि. **सिंध देश का, सिंध देश-संबंधी।**

संज्ञा पुं. (१) **सिंध देश का निवासी।** (२) **सिंध देश का घोड़ा।**

सिंधु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नद, बड़ी नदी।** (२) **पंजाब का प्रसिद्ध नद।** (३) **सागर, समुद्र।** उ.—(क) बाँधै सिंधु सकल सैना मिलि आपुन आयसु दीजै—९-११०। (ख) सोभा-सिंधु समाइ कहाँ लौं हृदय साँकरे ऐन—२६६५। (४) **बड़ा जलाशय।** (५) **आकर, निधान।** उ.—करनी करुना-सिंधु की मुख कहत न आवै—१-४। (६) **सात की संख्या।** (७) **सिंध प्रदेश।** (८) **एक राग।**

सिंधुज—वि. [सं.] (१) **जो समुद्र से उत्पन्न हो।** (२) **सिंधु देश में होनेवाला।**

संज्ञा पुं. (१) **सेंधा।** (२) **शंख।**

सिंधुजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **(समुद्र से उत्पन्न) लक्ष्मी।** (२) **सीप जिसमें से मोती निकलता है।**

सिंधुजात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सिंधी घोड़ा।** (२) **मोती।**

सिंधुनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] **(समुद्र का पुत्र) चंद्रमा।**

सिंधुर—संज्ञा पुं. [सं.] **हाथी, हस्ती।**

सिंधुर-मणि—संज्ञा पुं. [सं.] **गजमुक्ता।**

सिंधुरवदन—संज्ञा पुं. [सं.] **गजवदन, गणेश।**

सिंधुरागामिनी—वि. स्त्री. [सं.] **गजगामिनी।**

सिंधुलवण, सिंधुलवन—संज्ञा पुं. [सं. सिंधु+लवण] (१) **नमक का या खारा समुद्र।** उ.—अगम सुपंथ दूरि दच्छिन दिसि तहँ सुनियत सखि सिंधु-लवन—१० उ.-९१। (२) **सेंधानमक।**

सिंधुशयन, सिंधुसयन—संज्ञा पुं. [सं. सिंधुशयन] **विष्णु।**

सिंधु-सुत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जलंधर राक्षस जिसे शिवजी ने मारा था।** (२) **चंद्रमा।**

सिंधु-सुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **लक्ष्मी।** उ.—(क) जो पद-पदुम सदा सिव के धन, सिंधु-सुता उर तैं नहिं टारै—१-९४। (ख) चक्रत होइ नीर में बहुरि बुड़की दई, सहित सिंधु-सुता तहाँ दरस पाए—२५७०। (२) **सीप जिसमें से मोती निकलता है।**

सिंधु-सुता-सुत—संज्ञा पुं. [सं.] **सीप का पुत्र अर्थात् मोती।** उ.—सिंधु-सुना-सुत ता रिपु गमनी सुन मेरी तू बात—लहरी।

सिंधूरा—संज्ञा पुं. [सं. सिंधुर] **एक राग।**

सिंधूरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंधुर] **एक रागिनी।**

सिंधोरी, सिंधौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिंदूर+औरी] **सिंदूर रखने की डिबिया।**

सिंबी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **फली।** (२) **सेम।**

सिंह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शेर बबर, केसरी।** उ.—नृप-गज कौ अब डर कहा प्रगटयौ सिंह कन्हाइ—५८९। (२) **बारह राशियों में पाँचवीं।** उ.—चौथै सिंह रासि के दिनकर जीति सकल महिं लैहैं—१०-८६। (३) **वीरता या श्रेष्ठतावाचक शब्द।** (४) **वीर पुरुष।** (५) **एक राग।**

सिंहकर्मा—संज्ञा पुं. [सं.] **वीर पुरुष।**

सिंह-केसर—संज्ञा पुं. [सं.] सिंह की गरदन के बाल।
सिंहद्वार—संज्ञा पुं. [सं.] किले, महल आदि का बड़ा फाटक जहाँ प्रायः सिंह की मूर्ति बनी रहती है। उ.– सिंह द्वार आरती उतारहि जसुमति आनँदकंद की।
सिंह-नाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सिंह की गरज या दहाड़। (२) युद्ध में वीरों की ललकार। (३) ललकार कर कही हुई बात। (४) रावण के एक पुत्र का नाम।
सिंह-नादी—वि. [सं. सिंह+नदिन्] सिंह-सा गरजने या ललकारनेवाला।
सिंहनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) शेरनी (२) एक छंद।
सिंहपौर—संज्ञा पुं. [सं. सिंह+हिं. पौर] किले, महल आदि का बड़ा फाटक जिस पर प्रायः सिंह की मूर्ति बनी रहती है। उ.— भीर जानि सिंह-पौर त्रियन की जसुमति भवन दुराई—सारा. १०२८।
सिंहयाना—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुर्गा जिसका वाहन सिंह है।
सिंहल—संज्ञा पुं. [सं.] भारत के दक्षिण का एक द्वीप जिसे प्राचीन 'लंका' माना जाता है।
सिंहली—वि. [हिं. सिंहल] सिंहल द्वीप-संबंधी।
संज्ञा पुं. सिंहल द्वीप का निवासी।
संज्ञा स्त्री. सिंहल द्वीप की भाषा।
सिंहवाहिनी—वि. स्त्री. [सं.] सिंह पर चढ़नेवाली।
संज्ञा स्त्री. दुर्गा जिसका वाहन सिंह है।
सिंह-शावक, सिंह-सावक—संज्ञा पुं. [सं. सिंह+शावक] सिंह का बच्चा। उ.—सिंह-सावक ज्यौं तजै गृह इंद्र आदि डरात—१-१०६।
सिंहस्थ—वि. [सं.] सिंह राशि में स्थित (ग्रह)।
संज्ञा पुं. वह समय जब वृहस्पति सिंह राशि में हो।
सिंहहनु—वि. [सं.] सिंह जैसी दाढ़वाला।
सिंहार-हार—संज्ञा पुं. [हिं. हर-सिंगार] हरसिंगार (फूल)।
सिंहाली—वि. पुं. स्त्री. [सं. सिंहल] सिंहल का (की)।
सिंहावलोकन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। (२) पिछली बातों का संक्षेप में कथन। (३) पद्य-रचना की एक रीति जिसमें पिछले चरणांत के शब्द लेकर अगला चरण चलता है।
सिंहासन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) राजा या देवता के बैठने का विशेष आसन या चौकी। उ.—(क) आसा के सिंहासन बैठ्यौ, दंभ-छत्र सिर तान्यौ—१-१४१। (ख) स्फटिक-सिंहासन मध्य राजत हाटक सहित सजावनों—२२८०। (२) भौंहों की बीच का तिलक-विशेष।
सिंहिका—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) एक राक्षसी जो दक्षिणी समुद्र में रहती थी और आकाशचारियों की छाया देखकर ही उनको खींचकर खाती थी। लंका जाते समय हनुमान ने इसको मारा था। राहु इसका पुत्र कहा जाता है। (२) एक छंद।
सिंहिकासुवन, सिंहिकासूनु—संज्ञा पुं. [सं. सिंहिका+सुवन] सिंहिका राक्षसी का पुत्र राहु। उ.—ललित-लट छिटकति मुख पर देति सोभा दून। मनु मयंकहिं अंक लीन्हौ सिंहिका कै सून—१०-१८४।
सिंहिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंह] शेरनी। उ.—स्वान संग सिंहनी रति अजुगुत बेद बिरुद्ध असुर करै आई।
सिंही—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंह] शेरनी, सिंहिनी।
सिंहेजा, सिंहेला—संज्ञा पुं.[सं. सिंह] सिंह का बच्चा।
सिंहोदरी—वि. स्त्री. [सं.] सिंह-सी पतली कमरवाली।
सि—वि. स्त्री. [हिं. सा.] समान, तुल्य।
सिअन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीवन] सिलाई, सीवन।
सिअरा—वि. [सं. शीतल] ठंढा।
संज्ञा पुं. छाँह, छाया।
संज्ञा पुं [हिं. सिआर] सिआर।
सिआए—क्रि. स. [हिं. सिआना, सिलाना] सिलवाए। उ.—पहिरि मेघला चीर चिरातन पुनि पुनि फेरि सिआए—३१२५।
सिआना, सिआनो—क्रि. स. [हिं. सिलाना] सिलाना।
सिआर—संज्ञा पुं. [सं. शृगाल] गीदड़।
सिकंजबी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सीकंजबीव] (१) सिरके या नीबू के रस में पकाया हुआ शरबत या दवा। (२) नीबू का शरबत।
सिकंजा—संज्ञा पुं. [फ़ा. शिकंजा] (१) दबाने, कसने आदि का यंत्र। (२) अपराधी को दंड देने का एक प्राचीन यंत्र।

सिकड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. शृंखला] (१) **जंजीर।** (२) **दरवाजे की कुंडी या साँकल।** (३) **गले में पहनने का एक गहना।** (४) **करधनी, तागड़ी।**

सिकत, सिकता—संज्ञा स्त्री. [सं. सिकता) (१) **बालू, रेत।** उ.—सूर सिकत हठि नाव चलावत ए सरिता हैं सूखी—३०२९। (२) **रेतीली जमीन।** (३) **शकर, चीनी, शर्करा।**

सिकतिल—वि. [सं. सिकता] **रेतीला।**

सिकदार—संज्ञा पुं. [हिं. सरदार] **नायक, अधिपति।** उ.—ब्रज-परगन-सिकदार महर, तू ताकी करत नन्हाई—१०-३२९।

सिकरवार—संज्ञा पुं. [देश.] **क्षत्रियों की एक शाखा।**

सिकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिकड़ी] (१) **जंजीर।** (२) **साँकल, कुंडी।** (३) **गले का एक गहना।** (४) **करधनी, तागड़ी।**

सिकली—संज्ञा स्त्री. [अ. सैकल] **धारदार हथियारों पर सान चढ़ाने की क्रिया।**

सिकलीगर—संज्ञा पुं. [हिं. सिकली + फ़ा. गर] **गुट्ठल धार पर सान धरने या धातु को चमकानेवाला।**

सिकहर—संज्ञा पुं. [सं. शिक्य + धर] **छींका।**

सिकहरैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. सिकहर] **छींके को।** उ.—आपु खाइ सो सब हम मानैं, औरनि देत सिकहरैं तोरि—१०-३२७।

सिकार—संज्ञा पुं. [फ़ा. शिकार] **मृगया, आखेट।** उ.—सदा सिकार करत मृग-मन कौ—१-६४।

सिकारी—वि. [फ़ा. शिकार] **आखेट करनेवाला।**

सिकुड़न—संज्ञा स्त्री. [सं. संकुचन] (१) **फैली हुई वस्तु के सिमटने की क्रिया।** (२) **सिमटने से पड़ा हुआ चिन्ह, शिकन।**

सिकुड़ना, सिकुरना, सिकुरनो—क्रि. अ. [हिं. सिकुड़न, सिकुड़ना] (१) **फैली हुई वस्तु का सिमटना।** (२) **शिकन या सिमटन पड़ना।** (३) **तनाव के कारण छोटा या तंग होना।**

सिकोड़ना, सिकोरना, सिकोरनो—क्रि. स. [हिं. सिकुड़ना] (१) **फैली हुई वस्तु को समेटना या संकुचित करना।** (२) **समेटना, बटोरना।** (३) **तंग, छोटा या संकीर्ण करना।**

सिकोरा—संज्ञा पुं. [हिं. सकोरा] **मिट्टी का छोटापात्र।**

सिकोली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **मूँज, बेंत आदि से बनायी गयी डलिया।**

सिकोही—वि. [फ़ा. शिकोह = वैभव] (१) **वैभवसम्पन्न।** (२) **आनबान या ठसकवाला,।** (३) **बहादुर, वीर।**

सिक्कड़, सिक्कर—संज्ञा पुं. [सं. सीकर] (१) **छींट, जल-कण।** (२) **पसीना, स्वेद-कण।**

सिक्का—संज्ञा पुं. [अ. सिक्कः] (१) **मोहर, छाप।** (२) **टकसाल में ढला हुआ निर्दिष्ट मूल्य का धातु खंड।** (३) **अधिकार, प्रभुत्व।**

मुहा० सिक्का जमना या बैठना—(१) **प्रभुत्व या अधिकार स्थापित होना।** (२) **रोब जमना, आतंक छाना।** सिक्का जमाना या बैठाना—(१) **प्रभुत्व या अधिकार स्थापित करना।** (२) **रोब जमाना, प्रभाव डालना।**

सिक्ख—संज्ञा पुं. [सं. शिष्य] (१) **चेला, शिष्य।** (२) **गुरु नानक के पंथ का अनुयायी, सिख।**

संज्ञा स्त्री. [सं. शिक्षा] **सीख, उपदेश।**

संज्ञा पुं. [सं. शिखा] **चोटी, शिखा।**

सिक्त—वि. [सं.] (१) **सींचा हुआ।** (२) **भीगा हुआ।**

सिखंड—संज्ञा पुं. [सं. सिखंडी] (१) **मोर, मयूर।** (२) **मोर का पंख।** उ.—(क) कुटिल भ्रू पर तिलक-रेखा सीस सिखिनि सिखंड—१-३०७। (ख) सिखी सिखंड सीस, मुख मुरली—४७६।

संज्ञा पुं. [सं. श्रीखंड] (१) **हरिचंदन।** (२) **शिखरन।**

सिखंडी—संज्ञा पुं. [हिं. शिखंडी] (१) **मोर, मयूर।** (२) **मुर्गा (पक्षी)।** (३) **बाण, तीर।** (४) **शिखा।** (५) **राजा द्रुपद का नपुंसक पुत्र जिसे सामने करके अर्जुन ने भीष्म को मारा था।** उ.—पारथ भीषम सौं मति पाइ। कियौ सारथी सिखंडी आइ। भीषम ताहि देखि मुख फेरयौ—१-२७६।

सिख—संज्ञा स्त्री. [सं. शिक्षा] **सीख, उपदेश।** उ.—(क) चिंता तजौ परीच्छित राजा सुन सिख-सांखि हमार—२-२। (ख) सुनु सिख कंत दंत तृन धरिकै

स्यौं परिवार सिधारौ—९-११५। (ग) किती दई सिख-मंत्र साँवरे तउ हठ लहरि न जागी—२२७५। (घ) सुन री सखी समुझि सिख मेरी—२८५१।

संज्ञा स्त्री. [सं. शिखा] **चोटी, शिखा। उ.—** रोम-रोम नख-सिख लौं मेरैं महा अघनि बपु पाग्यौ —१-१३।

संज्ञा पुं. [सं. शिष्य] (१) **चेला, शिष्य।** (२) **गुरु नानक आदि दस गुरुओं का अनुयायी।**

सिखई—क्रि. स.[हिं. सिखाना] (१) **शिक्षा दी, सिखायी।** उ.—इक हरि चतुर हुते पहिले ही, अब बहुतै उन गुरु सिखई—३३०४। (२) **सिखाया है।** उ.—तोहिं किन रूठब सिखई प्यारी—२२०१।

संज्ञा स्त्री. **सिखायी हुई बात।** उ.—श्रीमुख की सिखई ग्रंथो कत, तें सब भईं कहानी—३४६९।

वि. **सिखायी हुई।** उ.—सिखई कहत स्याम की बतियाँ, तुमकौं नाहिंन दोषु—३०२६।

सिखना—क्रि. स. [हिं. सीखना] (१) **कोई बात जानना।** (२) **किसी काम को समझना।**

सिखये—क्रि. स. [हिं. सिखाना] **सिखा-पढ़ा दिये (जाने पर)। उ.—**एक बेर श्रीपति के सिखये, उन आयो सब गुन गान—२३४०।

सिखयो, सिखयौ—क्रि. सं. [हिं. सिखाना] **सिखाया-पढ़ाया, समझाया।** उ.—जसुमति माइ कहा सुत सिखयौ—७७१।

सिखर—संज्ञा पुं. [सं. शिखर] (१) **सिरा, चोटी।** (२) **पहाड़ की चोटी।** उ.—चढ़ि गिरि-सिखर सब्द इक उचरयौ गगन उठयौ आघात—९-७४। (३) **कँगूरा, कलश।** (४) **गुंबद।**

संज्ञा पुं. [हिं. सिकहर] **छींका।**

सिखरन, सिखरनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. शिखरन] **दही मिला हुआ चीनी का गाढ़ा शरबत।** उ.—बासौंधी सिखरनि अति सोंधी—२३२१।

सिखराना, सिखरानो—क्रि. स. [हिं. सिखलाना] (१) **किसी बात की जानकारी कराना।** (२) **समझाना, बताना।**

सिखरावै—क्रि. स. [हिं. सिखलाना] **समझाता या बताता है।** उ.—आपुन सिखै औरनि सिखरावै—१०७०।

सिखलाना, सिखलानो—क्रि. स. [हिं. सिखाना] (१) **किसी बात की जानकारी कराना।** (२) **बताना, समझाना।**

सिखवत—क्रि. स. [हिं. सिखाना] **बताता या समझाता है।** उ.—(क) फिरि-फिरि बात सोइ सिखवत, हम दुख पावत जातैं—२०२४। (ख) निरगुन ज्योति कहाँ उन पाई, सिखवत बारंबार—३२१५।

सिखवति—क्रि. स. [हिं. सिखाना] **सिखाती है, अभ्यास कराती है।** उ.—सिखवति चलनि जसोदा मैया—१०-११५।

क्रि. वि. **सिखाते-सिखाते, समझाते-समझाते।** उ. —सूरस्याम को सिखवति हारी, मारेहु लाज न आवति—८६५।

सिखवन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिखावन] (१) **सीख, उपदेश।** उ.—अंतहु सिखवन सुनहु हमारी, कहियत बात बिचारी—३३१३। (२) **सिखाने की क्रिया, भाव या उद्देश्य (से)।** उ.—(क) आईं सिखवन भवन पराएँ स्यानि ग्वालि बौरैया—३७१। (ख) जाहि ज्ञान सिखवन तुम आए—३३१३।

सिखवहु—क्रि. स. [हिं. सिखाना] **सिखाओ, बताओ।** उ.—धेनु दुहत हरि देखत ग्वालनि। आपुन बैठि गए तिनकैं सँग, सिखवहु मोहिं कहत गोपालनि—४०० ।

सिखा—संज्ञा स्त्री. [सं. शिखा] **चोटी, शिखा।**

सिखाना, सिखानो—क्रि. स. [सं. शिक्षण] (१) **शिक्षा या उपदेश देना।** (२) **पढ़ाना, समझाना।**

मुहा० सिखाना-पढ़ाना—(१) **चालाकी सिखाना, चालबाजी बताना।** (२) **खूब कान भरना।** (३) **धमकाना, दंड या ताड़ना देना।**

सिखापन—संज्ञा पुं. [हिं. सिखाना+पन] **सीख, उपदेश।**

सिखायो, सिखायौ—क्रि. स. [हिं. सिखाना] **बताया-समझाया है।** उ.—बाबा मोकौं दुहन सिखायौ—६६७।

सिखावत—क्रि. स. [हिं. सिखावना] **बताते-समझाते हैं।** उ.—(क) ये बशिष्ठ कुल-इष्ट हमारे, पालागन कहि सखनि सिखावत—९-१६७। (ख) निज प्रतिबिंब

सिखावत ज्यौं सिसु—१०-२६७। (ग) कोउ हेरी देत परस्पर स्याम सिखावत—४३१। (घ) बेनु पानि गहि मोकों सिखावत मोहन गावन गौरी—२८७३।

सिखावति—क्रि. स. [हिं. सिखावना] **बताती हैं, अभ्यास कराती हैं**। उ.—जसुमति-सुत कौं चलन सिखावति अँगुरी गहि-गहि दोउ जनियाँ—१०-१३२।

सिखावति—क्रि. स. [हिं. सिखावना] **समझाती है**। उ.—जसुमति कान्हहिं यहै सिखावति। सुनहु स्याम अब बड़े भए तुम, कहि अस्तन-पान छुड़ावति—१०-२२२।

सिखावन—संज्ञा पुं. [हिं. सिखाना+वन] **सीख**।

सिखावना, सिखावनो—क्रि. स. [हिं. सिखाना] **सिखाना**।

सिखावहु—क्रि. स. [हिं. सिखावना] **बताओ, समझाओ**। उ.—मैं दुहिहौं, मोहिं दुहन सिखावहु—४०१।

सिखावैं—क्रि. स. [हिं. सिखावना] **बतायेंगे, सिखायेंगे**। उ.—कालिह तुम्हैं गो-दुहन सिखावैं, दुहीं सकल अब गाइ—४००।

सिखावै—क्रि. स. [हिं. सिखाना] (१) **समझाता-बुझाता है**। (२) **सीख देता है**। उ.—छिन न रहै नँदलाल इहाँ बिनु जो कोउ कोटि सिखावै—३४१०। (२) **समझा-बुझा सकता है**। उ.—मूरख कौं कोउ कहा सिखावै—३९१।

सिखि—संज्ञा पुं. [सं. सिखिन्] **मोर (पक्षी), मयूर**। उ.—चंद्र-चूड़ सिखि-चंद सरोरुह जमुना-प्रिय गंगा-धारी—१०-१७१।

सिखिर—संज्ञा पुं. [सं. शिखर] **पर्वत की चोटी**।

सिखी—संज्ञा पुं. [हिं. शिखी] **मोर, मयूर**। उ.—सिखी सिखंड सीस—४७६।

सिखै—क्रि. स. [हिं. सीखना] (१) **सीखकर, समझकर**। उ.—आपुन सिखै औरनि सिखरावैं—१०७०। (२) **सीखे, समझे**। उ.—यह अक्रूर दसा जो सुमिरै, सीखै, सुनै अरु गावै—३४९४।

क्रि. स. [हिं. सिखाना] **सिखाकर, समझा-बुझा कर**। उ.—हरि कौ सिखै, सिखावत हमको अब ऊधो पग धारे—३०५५।

क्रि. वि. **सिखा-पढ़ाकर, समझा-बुझाकर**। उ.—इक हम जरैं खिझावन आए, मानो सिखै पठाए—३२१०।

सिगरा—वि. [सं. समग्र] **सब, सारा**।

सिगरी—वि. स्त्री. [हिं. सिगरा] (१) **सब, सारी (परिमाणवाचक)**। उ.—(क) सिगरी रैनि नींद भरि सोवत जैसैं पसू अचेत—१-१२५। (ख) जाके बदन-सरोज निरखत आस सिगरी भरी—१०-३०२। (ग) सूर तहाँ नग अंग परसि रस लूटति निधि-सिगरी। (२) **सब (संख्यावाचक)**। उ.—उरहन कौं ठाढ़ी रहैं सिगरी—३९१।

सिगरे—वि. बहु. [हिं. सिगरो] **सब (संख्यावाचक)**। उ.—सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं मेरे पाँइ पिराइँ—५१०।

सिगरो, सिगरौ—वि. [हिं. सिगरा] **सारा (परिमाणवाचक)**। उ.—नीके राखि लियो ब्रज सिगरो—९९७।

सिगरोइ, सिगरौइ—वि. [हिं. सिगरा+ही] **सारा ही, सारा का सारा**। उ.—सिगरोइ दूध पियौ मेरे मोहन, बलहिं न दैहौं बाँटी—१०-२५९।

सिगारहार—संज्ञा पुं. [हिं. हरसिंगार] **हरसिंगार (फूल)**।

सिचान—संज्ञा पुं. [सं. संचान] **बाज (पक्षी)**।

सिच्छा—संज्ञा स्त्री. [सं. शिक्षा] (१) **शिक्षा**। (२) **सीख**। उ.—हरि तिनसौ कह्यौ आइ, भली सिच्छा तुम दीनी—३-११।

सिजदा—संज्ञा पुं. [अ. सिजदा] **माथा टेकना**।

सिजल—वि. [हिं. सजीला] **सुंदर, रूपवान**।

सिझना, सिझनो क्रि. अ. [हिं. सीझना] **आँच या आग पर पकना**।

सिझाना, सिझानो—क्रि. स. [सं. सिद्ध, प्रा. सिज्झ+हिं. आना] (१) **आँच पर पकाकर गलाना**। (२) **कष्ट देना, पीड़ित करना**। (३) **मिलने योग्य या प्राप्य करना**। (४) **बहला-फुसलाकर (धन) वसूल करना**। (५) **शरीर को तपाना, तपस्या करना**।

सिटकिनी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **चटकिनी**।

सिटपिटाना, सिटपिटानो—क्रि. अ. [अनु.] (१) **मंद पड़ना, दबना**। (२) **भयभीत या संकुचित होकर स्तब्ध रह जाना**। (३) **दुबिधा या असमंजस में पड़**

जाना ।

सिट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीटना] **बढ़-बढ़कर बोलना, डींग हाँकना ।**

यौ० सिट्टी-पिट्टी—**होश-हवास ।**

मुहा० सिट्टी (पिट्टी) गुम होना या भूलना —**बहुत घबरा जाना, होश-हवास ठीक न रहना ।**

सिट्ठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीठी] (१) **नीरस भाग ।** (२) **सारहीन पदार्थ ।** (३) **बची-खुची चीज ।**

सिठनी—संज्ञा स्त्री. [सं. अशिष्ट] **विवाह के अवसर पर गायी जानेवाली गालियाँ ।**

सिठाई - संज्ञा स्त्री. [हिं. सीठी] **फीकापन, नीरसता ।**

सिड़—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिड़ी] (१) **पागलपन ।** (२) **धुन, झक, सनक ।**

मुहा० सिड़ सवार होना—**धुन, झक या सनक चढ़ना ।**

सिड़वारा—वि. [हिं. सिड़+वाला] (१) **पागल ।** (२) **सनकी, झक्की ।** (३) **मनमौजी ।**

सिड़ी—वि. [सं. शृणीक] (१) **पागल बावला ।** (२) **सनकी, झक्की** (३) **मनमानी करनेवाला ।**

सित—वि. [सं.] (१) **सफेद, उजला ।** उ.—(क) असित अरुन सित आलस लोचन उभय पलक परि आवै—१०-६५ । (ख) अरुन असित सित बपु उनहार । (२) **चमकीला, उज्ज्वल ।** उ.—अगिनि-पुंज सितबान धनुष धरि तोहिं असुर-कुल सहित जरावन–९-१३१ । (३) **स्वच्छ, निर्मल ।**

संज्ञा पुं. (१) **शुक्र ग्रह ।** (२) **शुक्ल पक्ष ।** (३) **शुक्राचार्य ।** (४) **चीनी, शकर ।** (५) **चाँदी, रजत ।**

सितकंठ - वि. [सं.] **जिसका कंठ सफेद हो ।**

संज्ञा पुं. [सं. शितिकण्ठ] **महादेव, शिव ।**

सितकर—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा ।**

सितकुंजर—संज्ञा पुं. [सं.] **ऐरावत हाथी ।**

सितच्छद—संज्ञा पुं. [सं.] **हंस, मराल ।**

सितता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सफेदी ।** (२) **चमकीलापन, उज्ज्वलता ।** (३) **निर्मलता, स्वच्छता ।**

सितपत्त, सितपच्छ—संज्ञा पुं. [सं. सितपक्ष] (१) **हंस, मराल ।** (२) **शुक्लपक्ष ।** उ.–सो सितपच्छ सम बीतत कबहुँ न देत दिखाई—३४८६ ।

सितपुष्पा—संज्ञा पुं. [सं.] **चमेली-विशेष, मल्लिका ।**

सितभानु—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा ।**

सितम—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **अनर्थ ।** (२) **अत्याचार ।**

सितमगर—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **दुखदायी, अत्याचारी ।**

सितल—वि. [सं. शीतल] (१) **ठंढा ।** (२) **शांत ।**

सितलता—संज्ञा स्त्री. [सं. शीतलता] (१) **ठंढक ।** (२) **शांति, उद्वेगहीनता ।**

सितलाई—संज्ञा स्त्री. [सं. शीतल+आई] **शीतलता ।**

सितवराह—संज्ञा पुं. [सं.] **श्वेतवाराह जिसने पृथ्वी का उद्धार किया था ।**

सितवराहपत्नी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पृथ्वी ।**

सितसागर—संज्ञा पुं. [सं.] **क्षीरसागर ।**

सितांबर—वि. [सं.] **श्वेत वस्त्र धारण करनेवाले ।**

संज्ञा पुं. **जैनों का श्वेतांबर संप्रदाय ।**

सितांशु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चंद्रमा ।** (२) **कपूर ।**

सिता—संज्ञा स्त्री.—[सं] (१) **चीनी, शक्कर ।** (२) **शुक्लपक्ष ।** (३) **मोतिया, मल्लिका ।** (४) **चाँदनी, चंद्रिका ।** (५) **शराब, मदिरा ।** (६) **चाँदी, रजत ।**

सिताब—क्रि. वि. [फ़ा. शिताब] (१) **शीघ्र ।** (२) **सहज में ।**

सितार—संज्ञा पुं. [सं. सप्त+तार] **एक प्रसिद्ध बाजा जिसके तार उँगली से बजाये जाते हैं ।**

सितारा—संज्ञा पुं. [फ़ा. सितार] (१) **तारा, नक्षत्र ।** (२) **भाग्य, प्रारब्ध ।**

मुहा० सितारा चमकना या बुलंद होना—**भाग्योदय होना ।** सितारा मिलना—**परस्पर प्रेम होना ।**

(३) **चाँदी-सोने के पत्तरों की छोटी-छोटी गोल बिंदियाँ, चमकी ।**

संज्ञा पुं. [हिं. सितार] **सितार बाजा ।**

सितारिया—वि. [हिं. सितार] **सितार बजानेवाला ।**

सितारेहिंद—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **एक उपाधि जो 'स्टार आव इंडिया' का अनुवाद है ।**

सितासित—वि. [सं.] **सफेद और काला ।**

सिति—वि. [सं. शिति] (१) **सफेद ।** (२) **श्याम ।**

सितिकंठ—संज्ञा पुं. [सं. शितिकंठ] **महादेव, शिव ।**

सितिमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सफेदी, श्वेतता।
सितोत्पल—संज्ञा पुं. [सं.] सफेद कमल।
सितोदर—संज्ञा पुं. [सं.] श्वेत उदरवाला, कुबेर।
सिथिल—वि. [सं. शिथिल] (१) जो अच्छी तरह बँधा, कसा और जकड़ा न हो, ढीला। उ.—(क) सुभ स्रवननि तरल तरौन, बेनी सिथिल गुही—१०-२४। (ख) सिथिल धनुष रति-पति गहि डारचौ—१०-२३३। (२) धीमा, जो कड़ा न हो, कोमल। उ.—सहज सिथिल पल्लव तैं हरि जू लीन्हे छोरि सवारि—पृ. ३४८ (५)। (३) अलसाया हुआ, आलस्ययुक्त। उ.—सिथिल रूप मन में लस वाको—२६०६।
सिथिलाइ, सिथिलाई—संज्ञा स्त्री. [सं. शिथिल] शिथिलता।
सिद—संज्ञा पुं. [सं. सिद्ध] (१) सुनार। (२) पारखी।
सिदिक—वि. [अ. सिद्क] सच्चा, खरा।
सिदौसी—क्रि. वि. [देश.] जल्दी, शीघ्र।
सिद्ध—वि. [सं.] (१) जिसका साधन हो चुका हो, संपन्न, संपादित। (२) प्राप्त, सफल, उपलब्ध। (३) प्रयत्न में सफल, कृतकार्य। (४) जिसका तप, योग या आध्यात्मिक साधना पूरी हो चुकी हो। (५) जो योग की विभूतियाँ प्राप्त कर चुका हो। (६) जिसे अलौकिक सिद्धि हुई हो। (७) लक्ष्य पर पहुँचा हुआ। (८) जिस (कथन) के अनुसार ही कोई बात घटी हो। (९) जो तर्क या प्रमाण से ठीक या निश्चित हो, प्रमाणित। (१०) जो नियमानुसार ठीक हो। (११) जिसका फैसला या निबटारा हो चुका हो। (१२) पकाकर तैयार किया हुआ। उ.—देखौ आइ जसोदा सुत-कृत, सिद्ध पाक इहिं आइ जुठायो—१०-२४८। (१३) प्रसिद्ध। (१४) तैयार, प्रस्तुत।

संज्ञा पुं. (१) वह जिसने योग या तप में अलौकिक शक्ति या सिद्धि प्राप्त की हो। (२) वह जो पूर्ण योगी या ज्ञानी हो। (३) बहुत पहुँचा हुआ संत या महात्मा। (४) एक देवयोनि।
सिद्धकाम—वि. [सं. (१) जिसकी कामना पूरी हो गयी हो। (२) सफल, कृतकार्य।
सिद्धगुटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह (कल्पित) मंत्र सिद्ध गोली जिसे मुँह में रखने से व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।
सिद्धता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सिद्ध होने की स्थिति या अवस्था। (२) प्रामाणिकता। (३) पूर्णता।
सिद्धपीठ संज्ञा पुं. [सं.] स्थान जहाँ योग या तांत्रिक साधन में शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त हो।
सिद्धर—संज्ञा पुं. [सं. सिद्धि+धर] एक ब्राह्मण जो कंस की आज्ञा से श्रीकृष्ण को मारने गया था और श्रीकृष्ण ने जिसकी जीभ मरोड़ दी थी। उ.—सिद्ध (श्रीधर) बाँभन करम कसाई। कह्यौ कंस सौं बचन सुनाई—१०-५७।
सिद्धविनायक—संज्ञा पुं. [सं.] गणेश की एक मूर्ति।
सिद्धहस्त—वि. [सं.] (१) जिसका हाथ किसी काम में खूब सधा हुआ या साफ हो। (२) कुशल, निपुण।
सिद्धांजन—संज्ञा पुं. [सं.] वह (कल्पित) अंजन जिसे आँखों में लगा लेने से जमीन के भीतर गड़ी चीजें भी दिखायी देने लगती हैं।
सिद्धांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सोच विचार कर निश्चित किया हुआ मत, उसूल, नियम। (२) मुख्य उद्देश्य, अभिप्राय या लक्ष्य। (३) वह बात या मत जो विद्या, कला आदि के संबंध में विद्वानों द्वारा स्थापित किया जाय। (४) ऋषि-मुनियों के मान्य उपदेश। (५) तत्व की बात। उ.—सकल निगम सिद्धांत जन्मकर स्याम उन सहज सुनायौ—३४९०। (६) पूर्ण या विरोधी पक्ष के खंडन के पश्चात् स्थिर किया गया मत। (७) शास्त्र-विशेष संबंधी ग्रंथ।
सिद्धांतित—वि. [सं.] तर्क से प्रमाणित।
सिद्धांती—वि. [सं. सिद्धांत] (१) तार्किक। (२) शास्त्रीय तत्वों का ज्ञाता। (३) अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाला।
सिद्धा—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'सिद्ध' की पत्नी।

संज्ञा पुं. [सं. असिद्ध] बिना पका हुआ अन्न, सीधा जिसमें कच्चा अनाज रहता है।
सिद्धाई—संज्ञा स्त्री. [सं. सिद्ध+हिं. आई] सिद्धपन।
सिद्धार्थ—वि. [सं.] जिसकी कामना पूर्ण हो गयी हो।

संज्ञा पुं. (१) गौतम बुद्ध। (२) राजा दशरथ

का एक मंत्री।

सिद्धासन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **योग-साधना का एक आसन।** (२) **सिद्ध पीठ।**

सिद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **काम का पूरा होना, पूर्णता।** उ.—राजा कह्यौ सप्त दिन माहिं सिद्धि होति कछु दीसति नाहिं—१-१४१। (२) **सफलता, कृतकार्यता।** (३) **प्रमाणित होना।** (४) **निर्णय, निश्चय।** (५) **पकना, सीझना।** (६) **योग, तप आदि से प्राप्त अलौकिक शक्ति या संपन्नता।** (७) **योग-साधन के अलौकिक फल जो आठ सिद्धियों के रूप में माने गये हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।** उ.—अष्ट सिद्धि नवनिधि सुर-संपति—१०-२०४। (८) **मुक्ति, मोक्ष।** (९) **दक्षता, निपुणता।** (१०) **भाँग, विजया।**

सिद्धिदाता—संज्ञा पुं. [सं. सिद्धिदातृ] **गणेश।**

सिद्धिभूमि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सिद्धपीठ।**

सिद्धेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **महायोगी।** (२) **शिव।**

सिध—वि. [सं. सिद्ध] **पकाकर तैयार किया हुआ।** उ.—सिध जेवन सिरात, बैठे नंद, ल्यावहु बोलि कान्ह तत्कालहिं—१०-२३६।

संज्ञा पुं. **योगी, ज्ञानी।** उ.—मेरे साँवरे जब मुरली अधर धरी, सुनि सिध-समाधि टरी—६२३।

सिधवाना, सिधवानो—क्रि. स. [हिं. सीधा] **सीधा कराना।**

सिधाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीधा] **सीधापन, सरलता।**

क्रि. अ. [हिं. सिधाना] **गयी, गमन किया।** उ.—(क) नंद-घरनि कछु काज सिधाई—१०-५०। (ख) सतभामा करि सोक पिता को जदुपति पास सिधाई—१० उ.-२७।

सिधाए—क्रि. अ. [हिं. सिधाना] **गये, प्रस्थान किया।** उ.—सूरदास हरि के गुन गावत हरषवंत निज पुरी सिधाए—३८६।

सिधाना, सिधानो—क्रि. अ. [हिं. सीधा+जाना] **जाना, गमन या प्रस्थान करना।**

सिधाये—क्रि. अ. [हिं. सिधाना] **गए, प्रस्थान किया।** उ.—स्याम आनंद सहित पुर सिधाए—१० उ.-२१।

सिधायो, सिधायौ—क्रि. अ. [हिं. सिधाना] **गया, गमन किया।** उ.—(क) सूर के प्रभु की सरन आयौ जो नर करि जगत-भोग बैकुंठ सिधायौ—४-१०। (ख) यह सुनि ह्वाँ तैं भरत सिधायौ—५-३।

सिधारना, सिधारनो—क्रि. अ. [हिं. सिधाना] (१) **जाना, गमन या प्रस्थान करना** (२) **मरना, स्वर्गवास होना।**

क्रि. स. [हिं. सुधारना] **ठीक करना, सुधारना।**

सिधारे—क्रि. अ. [हिं. सिधारना] **गये, प्रस्थान किया।** उ.—(क) सूरज-प्रभु नँद-भवन सिधारे—१०-१०। (ख) सदा रहत बर्षा रितु हम पर जब तें स्याम सिधारे—२७६३।

सिधारो, सिधारौ—क्रि. अ. [हिं. सिधारना] **जाओ, प्रस्थान करो।** उ.—तुम लछिमन निज पुरहिं सिधारौ—९-३६। (ख) सुनु सिख कंत दंत तृन धरिकै, स्यौं परिवार सिधारौ—९-११५। (ग) श्रीकंत सिधारौ मधुसूदन पै, सुनियत हैं, वै मीत तुम्हारे—१० उ.-६०।

सिधारयो, सिधारयौ—क्रि. अ. [हिं. सिधारना] **चला गया, मर गया।** उ.—काल-अवधि पूरन भई जा दिन तनहूँ त्यागि सिधारयौ—१-३३६।

सिधावै—क्रि.अ. [हिं. सिधाना] **(मरकर) जाता है।** उ.—निष्कामी बैकुंठ सिधावै—३-१३।

सिधि—संज्ञा स्त्री. [सं. सिद्धि] **योग-साधना के अलौकिक फलस्वरूप प्राप्त आठ शक्तियाँ या सिद्धियाँ।** उ.—(क) अष्ट महासिधि द्वारैं ठाढ़ी—१-४०। (ख) सूर स्याम सहाइ हैं तो आठहूँ सिधि लेहि—१-३१४। (ग) तेरौ दुःख दूरि करिबे कौं रिधि-सिधि फिरि-फिरि जाहीं—१-३२३।

सिन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शरीर** (२) **वस्त्र।**

संज्ञा पुं. [अ.] **उम्र, अवस्था।**

अव्य. [पुं. हिं. सन] **से।** उ.—तौ का कहिए सूर स्याम सिन—३३९४।

सिनि, सिनी—संज्ञा पुं. [सं. शिनि] (१) **एक यादव जो सात्यकि का पिता था।** (२) **क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा।**

सिनीवाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **एक वैदिक देवी।** (२) **शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा।** (३) **एक प्राचीन नदी।**

सिन्नी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शीरीनी] **पीर या देवता को**

चढ़ाकर प्रसाद-रूप में बाँटी जानेवाली मिठाई।

सिपर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (वार रोकने की) ढाल।

सिपरा—संज्ञा स्त्री. [सं. सिप्रा] (१) स्त्रियों का कटिबंध। (२) मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन बसा है।

सिपहसालार—संज्ञा पुं. [फ़ा.] सेनानायक।

सिपाई—संज्ञा पुं. [फ़ा. सिपाही] सैनिक, योद्धा।

सिपारस—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिफारिश] सिफारिश।

सिपारसी—वि. [हिं. सिफारशी] सिफारशी।

सिपारा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] 'कुरान' के तीस भागों में कोई एक।

सिपाह—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] फौज, सेना, कटक।

सिपाहियाना—वि. [फ़ा.] सिपाही-जैसा।

सिपाही—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) योद्धा, सैनिक। (२) पुलिस विभाग का कर्मचारी। (३) पहरेदार। (४) चपरासी।

सिप्पर—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सिपर] ढाल।

सिप्पा—संज्ञा पुं. [देश] (१) निशाने या लक्ष्य पर किया गया वार। (२) कार्य-साधन का डौल या उपाय।

मुहा. सिप्पा जमना (भिड़ना, लड़ना)—(१) कार्य-साधन की युक्ति होना। (२) डौल या उपाय का सफल होना। सिप्पा जमाना (भिड़ाना, लड़ाना)—कार्य-साधन का उपाय करना।

(३) डौल, प्रारम्भिक उपाय, सूत्रपात, भूमिका।

मुहा. सिप्पा जमना (भिड़ना, लड़ना)—कार्य-साधन की भूमिका तैयार होना। सिप्पा जमाना—(भिड़ाना, लड़ाना)—कार्य-साधन की भूमिका तैयार करना।

(४) रंग, धाक, प्रभाव। (५) एक तरह की तोप।

सिप्पी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीपी] 'सीप' नामक जंतु का आवरण या संपुट।

सिप्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) स्त्रियों का कटिबंध। (२) मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन बसा है।

सिफत—संज्ञा स्त्री. [अ. सिफ़त] (१) गुण, विशेषता। (२) लक्षण। (३) स्वभाव। (४) सूरत, शुक्ल।

सिफर—संज्ञा पुं. [अ. सिफ़र] शून्य।

सिफारिश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सिफ़ारिश] किसी के पक्ष में कुछ अनुकूल अनुरोध, अनुशंसा।

सिफारिशी—वि. [फ़ा. सिफ़ारशी] (१) जिसमें सिफारिश की गयी हो। (२) जिसकी सिफारिश की गयी हो।

यौ. सिफारशी टट्टू—जो (योग्यता से नहीं) केवल सिफारिश के बल पर उन्नति करता हो।

सिबिका—संज्ञा स्त्री. [सं. शिविका] डोली, पालकी।

सिमंत—संज्ञा पुं. [सं. सीमंत] स्त्री (के सिर) की माँग।

सिमट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिमटना] सिमटने-सिकुड़ने की क्रिया, भाव या स्थिति।

सिमटना, सिमटनो—क्रि. अ. [सं. समित+ना] (१) सुकड़ना, संकुचित होना। (२) शिकन या सिलवट पड़ना। (३) बटुरना, इकट्ठा होना। (४) (कार्य) पूरा होना, निपटना। (५) लज्जित या संकुचित होना। (६) सिटपिटा जाना।

सिमरना, सिमरनो—क्रि. स, [हिं. सुमिरना] स्मरण करना।

सिमरिख—संज्ञा स्त्री. [देश] एक चिड़िया।

संज्ञा पुं. [शिंगरफ़] ईंगुर।

वि. ईंगुर के रंग का।

सिमाना—संज्ञा पुं. [सं. सीमांत] हद, सीमा, सिवाना।

क्रि. स. [हिं. सिलाना] सिलाना।

सिमिट—क्रि. अ. [हिं. सिमटना] एकत्र होकर। उ.—परिवा सिमिट सकल ब्रजबासी चले जमुन-जल न्हान—२४४६।

सिमिटना, सिमिटनो—क्रि. अ. [हिं. सिमटना] सिमटना।

सिमिटि—क्रि. अ. [हिं. सिमिटना] बटुर कर, एकत्र होकर। उ.—इतनी सुनत सिमिटि सब आए प्रेम-सहित धारे अँसुपात—९-३८। (ख) मानौ जल-जीव सिमिटि जाल मैं समान्यौ—९-९६।

सिमिटैं—क्रि. अ. [हिं. सिमिटना] बटुरकर (एकत्र हों)। उ.—यह सुनि जहाँ तहाँ तैं सिमिटैं आइ होइ इक ठौर—१-१४६।

सिमृति—संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] याद, स्मृति।

सिमेटना, सिमेटनो—क्रि. स. [हिं. समेटना] (१) सुकोड़ना, संकुचित करना। (२) इकट्ठा या एकत्र करना। (३) (काम) पूरा करना या निबटाना।

सिय—संज्ञा स्त्री. [सं. सीता] **जानकी, सीता।**

सियना, सियनो—क्रि. अ. [सं. सृजन] **उत्पन्न करना।**

क्रि. अ. [हिं. सीना] (**वस्त्रादि**) **सीना।**

सियपति—संज्ञा पुं. [सं. सीता+पति] **श्रीरामचंद्र।** उ.—हा सीता, सीता, कहि सियपति उमड़ि नयन जल भरि-भरि ढारत—९-६२।

सियर—वि. [हिं. सियरा] **ठंढा, शीतल।**

सियरना, सियरनो—क्रि. अ. [हिं. सियरा] शीतल होना।

सियरा—वि. [सं. शीतल, प्रा. सीअड़] (१) **ठंढा, शीतल।** (२) **कच्चा, अपक्व।**

सियराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सियरा +ई] **ठंढक, शीतलता।** उ.—मुकुलित कुसुम नयन निद्रा तजि रूप-सुधा सियराई—२८११।

संज्ञा पुं. [सं. सीता+राज, हिं. राय] **श्रीराम।**

क्रि. अ. **ठंढी या शीतल हो गयी।**

सियराना, सियरानो—क्रि. अ. [हिं. सियरा+ना] **जुड़ाना, ठंढा या शीतल होना।**

सियरी—वि. स्त्री. [हिं. सियरा] **ठंढी, शीतल।**

सियरो—वि. [हिं. सियरा] **शीतल, सुखदाई।** उ.—बिष यासक्त रहत निसिबासर सुख सियरौ, दुख तातौ—१-३०२।

सिया—संज्ञा स्त्री. [सं. सीता] **जानकी, सीता।** उ.—बढ़ी परस्पर प्रीति रीति तब भूषन सिया दिखाए-९-७०।

सियाना, सियानो—वि. [हिं. सयाना] (१) **चतुर।** (२) **वयस्क।**

क्रि. स. [हिं. सिलाना] **सिलाना।**

सियापा—संज्ञा पुं. [हिं. स्यापा] **मरे हुए संबंधी के शोक में प्रतिदिन परिवार और जाति की स्त्रियों के एकत्र होकर रोने-पीटने की रीति।**

सियार—संज्ञा पुं. [हिं. स्यार] **गीदड़, जंबुक।** उ.—सूरदास प्रभु तुम्हरे भजन बिनु जैसे सूकर-स्वान सियार —१-१४।

सियारा—संज्ञा पुं. [हिं. सियरा+काल] **शीतकाल।**

सियारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. स्यारी] **गीदड़ी।**

सियाल—संज्ञा पुं [सं. शृगाल] **गीदड़, जंबुक।** उ.—चहूँ दिसि सूर सोर करि धावैं ज्यों केहरिंहि सियाल।

सियाला—संज्ञा पुं. [सं. शीतकाल] **जाड़े की ऋतु।**

सियाली—वि. [हिं. सियाला] **जाड़े की फसल।**

सियाह—वि. [हिं. स्याह] **काला।**

सियाही—संज्ञा स्त्री. [हिं. स्याही] (१) **रोशनाई।** (२) **कालिमा।**

सिर—संज्ञा पुं. [सं. शिरस्] (१) **शरीर का सबसे ऊपरी भाग, खोपड़ी, कपाल।** (२) **शरीर में गर्दन के ऊपर का भाग।** उ.—(क) मीन इंद्री तनहिं काटत मोट अघ सिर भार—१-९९। (ख) दंभ-छत्र सिर तान्यौ —१-१४१।

मुहा.—सिर-आँखों पर बैठाना या लेना—**बहुत स्वागत-सत्कार के साथ ग्रहण करना।** सिर-आँखों पर होना—**सहर्ष स्वीकार करना, शिरोधार्य होना।** सिर उठाना—(१) **दुख, कष्ट, रोग आदि से छुटकारा पाना।** (२) **विरोध या शत्रुता के लिए खड़ा होना।** (३) **उधम या उपद्रव करना।** (४) **घमंड करना।** (५) **लज्जित न होना।** (६) **ससम्मान खड़ा होना या जीवन व्यतीत करना।** सिर उठाने की फुरसत न होना—**कार्य की अधिकता के कारण बहुत व्यस्त होना।** सिर उठाकर चलना—**अकड़कर चलना, घमंड दिखाना।** सिर उतरवाना—**मरवा डालना।** सिर उतारना—**मार डालना।** (किसी का) सिर ऊँचा करना—**सम्मान बढ़ाना, सम्मान का पात्र बनाना।** (अपना) सिर ऊँचा करना—(**प्रतिष्ठित लोगों में**) **प्रतिष्ठा के साथ रहना।** सिर (के) ऊपर—**बहुत ही निकट।** उ.—(क) अजहूँ चेति भजन करि हरि कौ, काल फिरत सिर ऊपर भारौ—१-८०। (ख) सिर ऊपर बैठे रखवारे—१०१०। सिर औंधाकर पड़ना (औंधाना)—**बहुत चिंता या दुख से सिर झुकाना, सिर झुकाकर बहुत चिंता या दुख सूचित करना।** सिर करना—(१) (**स्त्रियों का**) **केश सँवारना।** (२) **बहुत लाड़-प्यार करना।** (कोई वस्तु) सिर करना—**इच्छा के विरुद्ध देना, गले मढ़ना।** सिर काटना—**मार डालना।** सिर काढ़ना—**प्रसिद्ध होना।** सिर का बोझ टलना—**झंझट या मुसीबत दूर होना, बला टलना।** सिर का बोझ टालना—**जी लगाकर न करना, बेगार टालना।** सिर

के बल चलना या जाना—(१) (किसी के प्रति) **बहुत विनीत भाव या आदर प्रदर्शित करते हुए जाना या चलना।** (२) **प्रसन्नतापूर्वक कष्ट सहन करते हुए जाना या चलना।** सिर खाली करना—(१) **बहुत बकवाद करना।** (२) **सोच-विचार करके हैरान होना।** सिर खाना—**बहुत बकवाद करके तंग या परेशान करना।** सिर खपाना—(२) **बहुत सोच-विचार करके हैरान होना।** (२) **किसी कार्य में बहुत व्यस्त या व्यग्र होना।** सिर खुजलाना—(१) **मार खाने की इच्छा होना।** (२) **शरारत सूझना।** सिर चकराना—(१) **सिर में चक्कर आना।** (२) **घबराहट या चिंता से विभ्रम होना।** सिर चढ़ा—**बहुत मुँह लगा हुआ, ढीठ, धृष्ट।** सिर चढ़ाना—(१) **माथे से लगाकर सम्मान या पूज्य भाव दिखाना।** (२) **किसी को मुँह लगाकर धृष्ट कर देना।** (३) **किसी देवी-देवता के सामने या महत् उद्देश्य से सिर कटा देना।** (४) **आदर पूर्वक मान्य या शिरोधार्य करना।** सिर घूमना—(१) **सिर में चक्कर आना।** (२) **घबराहट या चिंता से विभ्रम होना।** सिर चढ़कर बोलना—(१) **भूत-प्रेत का प्रभाव पड़ना।** (२) **अपना पाप या अपराध छिपाने में असमर्थ होकर स्वयं प्रकट कर देना।** सिर चढ़कर मरना—**किसी के ऊपर क्रुद्ध होकर या प्रतिकार स्वरूप अपनी जान दे देना।** सिर जोड़कर बैठना-**मिलजुल कर रहना।** सिर जोड़ना—(१) **एकत्र होकर पंचायत करना।** (२) **कुचक्र या षड़यन्त्र रचना।** सिर झाड़ना—**बाल सभालना, कंघी करना।** सिर झुकाना—(१) **नमस्कार करना।** (२) **लज्जित होना।** (३) **चुपचाप मान लेना।** सिर टकराते फिरना—**जहाँ जाना वहाँ असफल होना।** (किसी के) सिर डालना—**कार्य-विशेष का भार (दूसरे को) सौंपना।** सिर टूटना—**लड़ाई-झगड़ा होना।** सिर टेकना—(१) **नमस्कार करना।** (२) **विनय दिखाना।** सिर टेकि—**माथा नवाकर।** उ.—असुर सिर टेकि तब कह्यौ निज नृपति सौं, नहिं तिहुँ भुवन कोउ सम तुम्हारे—१० उ.-३१। सिर ढोरना—(१) **प्रसन्न होकर सिर हिलाना।** (२) **सहर्ष स्वीकार करना।** सिर तोड़ना—(१) **खूब मार-पीट करना।** (२) **वश में करना।** सिर देना—**प्राण निछावर करना।** सिर देत—**प्राण निछावर करता है।** उ.—सूरदास सिर देत सूरमा सोइ जानैं ब्यवहार—२९०५। (किसी के) सिर दोष देना—**(दूसरे को) दोषी या अपराधी बताना।** सिर दोष लगावन कौं—**दोषी या अपराधी बताने के लिए।** उ.—तुम तौ दोष लगावन कौं सिर, बैठे देखत नेरैं। सिर धरना—**सादर स्वीकार करना, शिरोधार्य करना।** (किसी के) सिर धरना (**दूसरे पर) दोष या अपराध लगाना।** सिर धारचौ—**सादर स्वीकार किया, शिरोधार्य किया।** उ. मात-पिता-पति-बंधु-सुजनजन तिनहूँ को कहिबो सिर धारचौ—३०३५। सिर धुनना—**अपनी भूल समझकर शोक और पछतावा करना।** सिर धुनत—**अपनी भूल के लिए शोक और पछतावा करता है।** उ.—बार-बार सिर धुनत जातु मग, कैहौं कहा बदन दिखराई—९७७। सिर धुनतिं—**अपनी भूल के लिए शोक और पछतावा करती हैं।** उ.—कर मीड़ति सिर धुनतिं नारि सब यह कहि-कहि पछिताहीं—१८००। सिर धुनति—**अपनी भूल के लिए शोक करती और पछताती है।** उ.—बार-बार सिर धुनति बिसूरति बिरह-ग्राह जनु भखियाँ—२७६६। सिर धुनि—**सिर पीट-पीट कर, बहुत शोक और पश्चाताप करके।** उ.—(क) कहत सूर भगवंत-भजन बिनु सिर धुनि-धुनि पछितायौ—१-३३५। (ख) रोहिनी चितै रही जसुमति तन सिर धुनि-धुनि पछितानी-३९५। (ग) नारद गिरा सम्हारी पुनि-पुनि सिर धुनि आयु सरै—२४६२। सिर नंगा करना—(१) (पुरुष का) **सिर से टोपी या पगड़ी उतारना।** (२) (स्त्री का) **सिर से धोती या पल्ला उतारना।** (३) **इज्जत लेना, अपमानित करना।** सिर नवाना—(१) **सिर झुकाना, नमस्कार करना।** (२) **दीन या विनम्र बनना।** सिर नीचा करना—(१) **लज्जित या अपमानित करना।** (२) **पराजित करना।** सिर नीचा होना—(१) **लज्जित या अपमानित होना।** (२) **पराजित होना।** सिर पचाना—(१) **बहुत परिश्रम करना।** (२) **बहुत सोच-विचार करके हैरान होना।** सिर पटकना—(१) **बहुत परिश्रम करना।** (२) **बहुत**

पछताना। सिर पर—(१) र। (२) **बहुत पास या सामने**। सिर पर आ पड़ना—(१) **अपने ऊपर आना या बीतना**। (२) **अपने जिम्मे पड़ना, अपने गले मढ़ा जाना**। सिर पर आ जाना—(१) **बहुत समीप आ जाना**। (२) **थोड़े ही दिन शष रह जाना**। सिर पर उठा लेना—**बहुत उधम मचाना या हो-हल्ला करना**। सिर पर पाँव (पैर) रखकर भागना—**बहुत तेजी से भागना**। (किसी के) सिर पर पाँव रखना—**(किसी के साथ) बहुत उद्दंडता का व्यवहार करना**। सिर पर पृथ्वी या आसमान उठाना—**बहुत शोर-गुल करना और उधम मचाना**। सिर पर पड़ना—(१) **जिम्मे पड़ना, गले मढ़ा जाना**। (२ **अपने ऊपर बीतना या घटित होना**। सिर पर खून चढ़ना या सवार होना—(१) **किसी की जान लेने को उतारू होना**। (२) **किसी की हत्या करके आपे में न रह जाना**। सिर पर खेलना—**अपने प्राण संकट में डालना**। (किसी के) सिर पर खेलना—**दूसरे के सामने या उसकी उपस्थिति में ही) उद्दंडता दिखाना या दुष्कर्म करना**। सिर पर रखना—(१) **आदर-सत्कार करना**। (२) **सादर स्वीकार करना**। सिर राखै—**सादर स्वीकार करता है**। उ.—अपने जन को प्रसाद सारी सिर राखै—२६१९। (किसी के) सिर पर छप्पर रखना—**बहुत बोझ या दबाव डालना**। सिर पर मिट्टी डालना—**बहुत शोक करना**। सिर पर लेना—**अपने ऊपर जिम्मेदारी लेना**। सिर पर शैतान चढ़ना—**बहुत ज्यादा गुस्सा आना**। सिर पर जूँ न रेंगना—**जरा भी होश या ध्यान न आना**। सिर रहना—**मान या प्रतिष्ठा बनी रहना**। किसी के सिर पर डालना—**(दूसरे के) जिम्मे देना या सौंपना**। सिर पर बीतना—**अपने ऊपर पड़ना, भुगतना**। सिर पर होना—(१) **बहुत ही निकट होना** (२) **थोड़ा ही समय शेष रह जाना**। (किसी का) किसी के सिर पर होना—**संरक्षक होना**। सिर पर हाथ धरना या रखना—(१) **सहायक या संरक्षक होना**। (२) **शपथ खाना**। (दर्द या पीड़ा से) सिर फटना या फटा जाना—**सिर में बहुत दर्द या पीड़ा होना**। सिर फिरना—(१) **सिर चकराना**। (२) **होश-हवास ठीक न रहना, बुद्धि नष्ट हो जाना**। (३) **पागल हो जाना**। सिर फोड़ना—(१) **लड़ाई-झगड़ा करना**। (२) **शव की कपाल-क्रिया करना**। सिर फेरना—**अस्वीकार या अवज्ञा करना**। सिर बाँधना—(१) **पटेबाजी या लड़ाई में) सिर पर आक्रमण करना**। (२) **(स्त्री का) केश सँवारना या चोटी करना**। सिर बेचना—**सेना में नौकरी करना**। सिर भारी होना—**स्वस्थ न होना**। सिर मारना—(१) **समझाते-समझाते हैरान हो जाना**। (२) **बहुत सोचते-विचारते परेशान हो जाना**। (३) **चिल्लाकर पुकारना**। (४) **बहुत प्रयत्न या परिश्रम करना**। सिर मुड़ाना—**संन्यास लेना**। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना—**आरम्भ में ही संकट आ जाना**। सिर मढ़ना—**(किसी की) इच्छा के विरुद्ध कोई दायित्व सौंपना**। सिर (में) लकड़ी ठोंकना—**कपाल-क्रिया करना**। सिर ठोंकी लकरी—**कपाल-क्रिया की**। उ.—लै देही घर-बाहर जारी, सिर ठोंकी लकरी—१-७१। सिर रँगना—**सिर फोड़कर लहू-लोहान करना**। सिर रहना—**दिन-रात परिश्रम करना**। (किसी के) सिर रहना या होना—**(किसी के) पीछे पड़ जाना**। सिर सफेद होना—**वृद्धावस्था से बाल सफेद हो जाना**। सिर पर सेहरा होना—**किसी कार्य का श्रेय मिलना**। सिर (पर) सहना—**(अपने ऊपर) झेलना**। अपने सिर सह्यौ—**(भार आदि) उठाया या झेला**। उ.—इहिं भरु अधिक सह्यौ अपनैं सिर अमित अंडमय बेष—५७०। सिर सहलाना—(१) **खुशामद करना**। (२) **बहुत दुलार-प्यार करना**। सिर सूँघना—**छोटों का दुलार करने या उनके प्रति प्रेम प्रदर्शित करने के लिए उनका सिर सूँघना**। सिर से पैर तक—(१) **एड़ी से चोटी तक**। (२) **आरम्भ से अंत तक**। सिर से पैर तक आग लगना—**बहुत क्रोध आना**। सिर (के बल या) से चलना—**बहुत सम्मान करना**। सिर से कफन बाँधना—**मरने के लिए तैयार होना**। सिर से बला टालना—**जी लगाकर काम न करना, बेगार टालना**। सिर से बोझ उतरना—(१) **झंझट दूर होना**। (२) **निश्चिंत होना**। सिर से बोझ उतारना—(१) **झंझट दूर करना**। (२) **किसी तरह काम निबटाकर निश्चिंत**

होना । सिर तक पानी होना या आ जाना—(१) **बहुत ऋण चढ़ जाना** । (२) **सहन की पराकाष्ठा हो जाना** । सिर से खेल जाना—**प्राण दे देना** । सिर से सिरवाहा (पगड़ी) है—**सरदार या स्वामी के साथ सेना या सेवक अवश्य रहेंगे** । सिर पर सींग होना—**कोई विशेषता होना** । सिर का पसीना पैर तक आना—**बहुत परिश्रम पड़ जाना** । सिर होना—(१) **पीछा न छोड़ना** । (२) **बार-बार आग्रह करके तंग करना** । (३) **झगड़ा कर बैठना** । (किसी बात के) सिर होना—(१) **उसी की धुन में लगे रहना** । (२) **समझ या ताड़ लेना** । (३) **जिम्मे होना, ऊपर पड़ना** । सिर हिलाना—(१) **स्वीकृति-अस्वीकृति जताना** । (२) **प्रसन्नता सूचित करना** ।

(२) **ऊपर का छोर, सिरा, चोटी** ।

वि. (१) **बड़ा,महान** । (२) **बढ़िया, उत्तम**

सिरकटा—वि. [हिं. सिर+कटना] **जिसका ऊपरी भाग या सिर कटा हुआ हो** ।

वि. [हिं. सिर+काटना] (१) **दूसरों का सिर काटनेवाला** । (२) **किसी का अपकार करनेवाला** ।

सिरका—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ किसी फल का रस** ।

सिरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सरकंडा] (१) **सरकंडा** । (२) **सरकंडे का छोटा छप्पर** ।

सिरगा—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह का घोड़ा** ।

सिरगाना, सिरगानो—क्रि. स. [हिं. सुलगाना] **सुलगाना** ।

सिरगिरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिर + गिरि] **कलगी** ।

सिर-चंद—संज्ञा पुं.[हिं. सिर+सं. चंद्र] **हाथी के मस्तक का एक अर्द्ध चंद्राकार गहना** ।

सिरजक—वि. [हिं. सिरजना] **रचनेवाला** ।

संज्ञा पुं. **सृष्टिकर्ता, ईश्वर** ।

सिरजत—क्रि. स. [हिं. सिरजना] **रचता या बनाता है** । उ.—जग सिरजत पालत संहारत पुनि क्यों बहुरि करयो—१० उ.-१३१ ।

सिरजन—संज्ञा पुं. [सं. सृजन] (१) **रचने या बनाने की क्रिया** । (२) **सृष्टि** ।

सिरजनहार, सिरजनहारा, सिरजनहारो—वि. [सं. सृजन +हिं. हार] **रचने या बनानेवाला** ।

संज्ञा पुं. **सृष्टि की रचना करनेवाला ईश्वर** ।

सिरजना, सिरजनो—क्रि. स. [सं. सृजन] (१) **रचना, बनाना** । (२) **उत्पन्न करना** ।

क्रि. स. [सं. संचय] **सुरक्षित रखना** ।

सिरजित वि. [सं. सर्जित] (१) **रचा या बनाया हुआ** । (२) **तैयार या उत्पन्न किया हुआ** ।

सिरजी—क्रि. अ. [हिं. सिरजना] **उत्पन्न की गयी (हैं)** । उ.—बिरह सहन को हम सिरजी हैं पाहन हृदय हमार —३२१५ ।

सिरताज—संज्ञा पुं. [हिं. सिर+फ़ा. ताज] (१) **मुकुट** । (२) **सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु, शिरोमणि** । उ.—(क) पाछैं भयौ न आगैं ह्वैहै सब पतितनि सिरताज —१-९६ । (ख) सूर स्याम तहाँ स्याम सबनि कौ दिखियत है सिरताज—९२० । (३) **नायक, मुखिया** । उ.—अपने सुत कौ बदन दिखावहु बड़ महर सिरताज —१०-३६ ।

सिर ता पा—क्रि. वि. [हिं. सिर + फ़ा. ता+पा=पैर] (१) **सिर से पैर तक** । (२) **आदि से अंत तक** ।

सिरत्राण, सिरत्रान—संज्ञा पुं. [सं. शिरस्त्राण] **युद्ध में सिर की रक्षा के लिए पहना जानेवाला टोप, कूँड** ।

सिरदार—संज्ञा पुं. [फ़ा. सरदार] (१) **नायक, मुखिया** । उ.—जग सिरदार सूर के स्वामी देखि-देखि सुख पावै —८७६ । (ख) गाउँ दसक सिरदार कन्हाई— १००२ । (२) **शासक** ।

सिरदारी—संज्ञा स्त्री.[हिं. सरदारी] **सरदार का पद, भाव या कार्य** ।

सिरधर, सिरधरा, सिरधरू—वि. [हिं. सिर+धरना] (१) **संरक्षक** । (२) **जिसे सिर पर धारण किया जाय** ।

सिरनामा—संज्ञा पुं. [हिं. सिर+नाम] (१) **पत्र पर लिखा जानेवाला पता** । (२) **पत्र के आदि में लिखा जानेवाला संबोधन आदि** । (३) **लेख आदि का शीर्षक** ।

सिरनेत—संज्ञा पुं. [हिं. सिर+सं. नेत्री=धज्जी या डोरी] (१) **पगड़ी, पटा, चीरा** । (२) **क्षत्रियों का एक प्रसिद्ध वर्ग** ।

सिर पच्ची—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिर+पचाना] **सिर खपाना।**

सिरपाँव, सिरपाव—संज्ञा पुं. [हिं. सिरोपाव] **वह पूरी पोशाक जो राज दरबार से किसी को सम्मान-रूप में दी जाती है, खिलअत।** उ.—(क) नंद कौं सिरपाव दीन्हो, गोप सब पहिराइ—५८६। (ख) कहि खवास को सैन दै सिर-पाँव मँगायौ—२४७६।

सिरपेच—संज्ञा पुं. [हिं. सिर+फ़ा. पेच] (१) **पगड़ी।** (२) **पगड़ी के ऊपर का छोटा कपड़ा।** (३) **पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण।**

सिरफूल—संज्ञा पुं. [हिं. सिर+फूल] **सिर पर पहना जानेवाला, स्त्रियों का एक आभूषण।**

सिरफेंटा—संज्ञा पुं. [हिं. सिर+फेंटा] **मुरेठा, पगड़ी।**

सिरबंद—संज्ञा पुं. [हिं. सिर+फ़ा. बंद] **साफा, पगड़ी।**

सिरबंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिर+फ़ा. बंदी] **माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।**

सिरमनि—संज्ञा पुं. [सं. शिरोमणि] **सिर पर पहनने का एक रत्न।**

वि. सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ।

सिरमौर-संज्ञा पुं. [हिं. सिर+मौर] (१) **सिर का मुकुट।** (२) **प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति, शिरोमणि।** उ.—गोप-सिरमौर नृप ओर कर जोरि कै, पुहुप के काज प्रभु पत्र दीन्हौ—५८४।

वि. सबसे श्रेष्ठ। उ.—(क) तिनमैं अजामील गनिकादिक, उनमें मैं सिरमौर—१-१४५। (ख) दस सुत मनु के उपजे और। भयौ इच्छवाकु सबनि सिर-मौर—९-२।

सिररुह—संज्ञा पुं. [सं. शिरोरुह] **सिर के बाल।**

सिरस—संज्ञा पुं. [सं. शिरीष] **एक वृक्ष।**

सिरहाना—संज्ञा पुं. [सं. शिरस+आधान] **सोने के स्थान पर सिर की ओर का भाग या सिरा।**

सिरा—संज्ञा पुं. [हिं. सार] (१) **लंबाई में किसी ओर का छोर या अंत।** (२) **ऊपरी या शीर्ष भाग।** (३) **आरंभ या अंत का भाग।** (४) **नोक, अनी।**

संज्ञा स्त्री. [सं. शिरा] (१) **शरीर में रक्त-नाड़ी।** (२) **खेत में सिंचाई की नाली।**

सिराइ—क्रि. अ. [हिं. सिराना] (१) **शीतल या सुखी होता है।** उ.—तुम ही हौ ब्रज के जीवन-धन देखत नैन सिराइ—१०-७९। (२) **बीते, व्यतीत हो।** उ.—ऐसैं ही जौ जनम सिराइ, बिन हरि-भजन नरक महँ जाइ—७-२। (३) **मिटाकर, दूर करके।** उ.—अब रघुनाथ मिलाऊँ तुमको सुन्दरि सोग सिराइ (निवारि) —९-८३।

सिराए—क्रि. अ. [हिं. सिराना] **शीतल या सुखी हुए।** उ.—सिया-राम-लछिमन निरखत सूरदास के नैन सिराए—९-१६८।

सिरात—क्रि. अ. [हिं. सिराना] (१) **ठंढा होता है, गरम नहीं रह जाता है।** उ.—(क) भात सिरात तात दुख पावत, बेगि चलौ मेरे लाल—१०-२२३। (ख) सिद्ध जेंवन सिरात, नंद बैठे, ल्याबहु बोलि कान्ह तत्कालहिं —१०-२३६। (२) **शीतल या सुखी होता है।** उ.—(क) सब कोउ कहत गुलाम स्याम कौ, सुनत सिरात हिए—१-१७१। (ख) सूरदास प्रभु की ऐसी अधीनता देखत मेरे नैन सिरात—२०६८। (३) **बीतते या व्यतीत होते हैं।** उ.—गोपी-ग्वालबाल सँग खेलत सब दिन हँसत सिरात—३४९३।

सिराति—क्रि. अ. [हिं. सिराना] (१) **बीतती या व्यतीत होती है।** उ.—जाति सिराति राति बातनि मैं, सुनी भरत चित लाइ—९-१५५। (२) **शीतल या सुखी होती है।** उ.—अधिक पिराति सिराति न कबहूँ अनेक जतन करि हारी—३०३९।

सिरान—क्रि. अ. [हिं. सिराना] (१) **मंद, धीमा या निष्क्रिय हो गया है।** उ.—धनुष बान सिरान कैधौं गरुड़ बाहन खोर—१-२५३। (२) **शीतल या सुखी होने (दो)।** उ.—बैन सुनौं, बिहरत बन देखौं, इहिं सुख हृदय सिरान दै—८०५।

सिराना—क्रि. अ. [हिं.सीरा=ठंढा+ना](१) **ठंढा होना, गरम न रहना।** (२) **शीतल या सुखी होना।** (३) **मंद या धीमा होना, निराश या हतोत्साह होना।** (४) **पूरा या समाप्त होना** (५) **मिटना, दूर होना।** (६) **बीतना, व्यतीत होना।** (७) **बंद होना।** (८) **फुरसत पाना।** (९) **निभना।**

क्रि. स. (१) ठंढा करना। (२) शीतल या सुखी करना। (३) पूरा या समाप्त करना। (४) बिताना।

सिराने—क्रि. अ. [हिं. सिराना] **निराश या हतोत्साह हो गए।** उ.—(क) सात दिवस जल बर्षि सिराने हारि मान्यि मुख फेरो—९५९। (ख) बज्रायुध जल बरषि सिराने परचो चरन तब प्रभु करि जाने—१०७०।

सिरानो—क्रि. अ., क्रि. स. [हिं. सिराना] **सिराना।**

सिरानौ—क्रि. अ. [हिं. सिराना] **बीता जाता है।** उ.—भक्ति कब करिहौ जनम सिरानौ—१-३२९। (२) **व्यतीत हो गया।** उ.—(क) जनम सिरानौ ऐसैं ऐसैं। कै घर-घर भरमत जदुपति बिनु कै सोवत कै बैसैं—१-२९३। (ख) ब्रजहिं बसत सब जनम सिरानौ, ऐसी करी न आरति—५२६।

सिरानौई—क्रि. अ. [हिं. सिराना] **बीता ही (जाता है)।**

प्र.—सिरानौई लाग्यौ—**बीता ही जाता या जा रहा है।** उ.—जनम सिरानौई सो लाग्यौ—१-७३।

सिरान्यो, सिरान्यौ—क्रि. अ. [हिं. सिराना] **निराश या हतोत्साह हो गया।** उ.—सात दिवस जल बरसि सिरान्यो आवत चल्यो ब्रजहिं अत्रावत—९७८।

सिरायो, सिरायौ—क्रि. अ. [हिं. सिराना] (१) **शीतल या सुखी हुआ।** उ.—अब कुबिजा पाइ हियो सिरायो—३४४२। (२) **(गरम पदार्थ) ठंढा हुआ।** उ.—रिषि मग जोवत बर्ष बितायौ। पै भोजन तौहूँ न सिरायौ—९-५।

सिरावन—संज्ञा पुं. [हिं. सिराना] (१) **'सिराने' की क्रिया या भाव।** उ.—है कह्यौ सिरावन सीरा—१०-१८३। (२) **ठंढा करने के लिए।** उ.—एक दुहनी दूध जामन को सिरावन जाहिं—पृ. ३३९ (८४)।

वि. (१) **ठंढा या शीतल करनेवाला।** (२) **क्लेश या संताप दूर करनेवाला।**

सिरावना, सिरावनो—क्रि. स. [हिं. सिराना] (१) **ठंढा करना।** (२) **शीतल या सुखी करना।** (३) **पूरा या समाप्त करना।** (४) **बिताना, व्यतीत करना।**

सिरावै—क्रि. स. [हिं. सिराना] **ठंढा या शीतल करे।** उ.—कोटि बेर जल औटि सिरावै—२७४७।

सिरी—संज्ञा स्त्री. [सं. श्री] (१) **लक्ष्मी।** (२) **शोभा,** (३) **रोली, रोचना।** (४) **माथे का एक गहना।**

सिरीखंड—संज्ञा पुं. [सं श्रीखंड] **हरिचंदन।**

सिरीपंचमी—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रीपंचमी] **वसंतपंचमी।**

सिरोपाँव, सिरोपाव—संज्ञा पुं. [हिं. सिर+पाँव] **सिर से पैर तक के वस्त्र (अंगा, पगड़ी, पाजामा, पटुका और दुपट्टा) जो राज-दरबार से किसी को सम्मान-रूप में दिये जाते हैं।**

सिरोमनि—वि. [सं. शिरोमणि] **सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ।** उ.—(क) चतुर-सिरोमनि नंद-सुत—१-४४। (ख) हैं पतित-सिरोमनि—१-१९२। (ग) सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि—१०-२९८। (घ) इतने महिं सब तात समुझिबी चतुर-सिरोमनि नाह—२८६८।

संज्ञा पुं. **सिर पर पहनने का एक रत्न।**

सिरोरुह—संज्ञा पुं. [सं. शिरोरुह] **सिर के बाल।**

सिरोही—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की चिड़िया जिसकी चोंच और पैर लाल तथा शरीर काला होता है।**

संज्ञा पुं. **राजपूताने का एक स्थान।**

संज्ञा स्त्री. **सिरोही की बनी बढ़िया तलवार।**

सिर्फ—वि. [अ. सिर्फ़] (१) **अकेला।** (२) **शुद्ध।**

क्रि. वि. **केवल, मात्र।**

सिल—संज्ञा स्त्री. [सं. शिला] (१) **पत्थर, चट्टान।** (२) **पत्थर की बटिया जिस पर बट्टे से कुछ पीसा जाता है।**

संज्ञा पुं. [सं. शिल] **कटे हुए खेत में गिरे हुए अनाज के दाने बीनकर निर्वाह करने की वृत्ति।**

सिलक—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिलक] (१) **लड़ी।** (२) **पंक्ति।**

संज्ञा पुं. **तागा, धागा, डोरा।**

सिलखड़िया, सिलखड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिल+खड़िया] (१) **एक तरह का मुलायम पत्थर।** (२) **खड़िया मिट्टी।**

सिलगना, सिलगनो—क्रि. अ. [हिं. सुलगना] **सुलगना।**

सिलप—संज्ञा पुं. [सं. शिल्प] **कौशल, शिल्प।** उ.—बिस्वकर्मा सुतिहार स्तुति धरि सुलभ सिलप दिखावनो—२१८०।

सिलपर—वि. [सं. शिला पर] (१) **बराबर, चौरस।** (२) **घिसा हुआ।** (३) **चौपट, नष्ट।**

सिलपोहनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिल + पोहना] विवाह की एक रीति जिसमें वर-वधू सिल पर कुछ पीसते हैं।

सिलबिल, सिलबिल्ला—वि. [देश.] लपझप काम करनेवाला, क्रम या व्यवस्था का ध्यान न रखनेवाला।

सिलवट—संज्ञा स्त्री. [देश.] सिकुड़न, शिकन।

सिलवाना, सिलवानो—क्रि. स. [हिं. सीना] सिलाना।

सिलसिला—संज्ञा पुं. [अ.] (१) क्रम, बँधा हुआ तार या क्रम। (२) श्रेणी, पंक्ति। (३) लेड़ी, शृंखला। (४) व्यवस्था।

वि. [सं. सिल] (१) गीला, भीगा हुआ। (२) रपटनेवाला। (३) चिकना।

सिलसिलेवार—क्रि. वि. [अ. सिलसिला + फ़ा. वार] (१) सिलसिले या क्रम से, क्रमबद्ध। (२) व्यवस्थित रूप से।

सिलह—संज्ञा पुं. [अ. सिलाह] हथियार, शस्त्र।

सिलहखाना—संज्ञा पुं. [हिं. सिलह + फा. खाना] हथियार रखने का स्थान, शस्त्रागार।

सिलहला, सिलहला—वि. [हिं. सील + हिला = कीचड़] (स्थान) जहाँ काई से पैर फिसले।

सिलहार, सिलहारा—वि. [सं शिला + हिं. हार] खेत में गिरा हुआ अनाज बीन कर निर्वाह करनेवाला।

सिला—संज्ञा स्त्री. [सं. शिला] (१) चट्टान, शिला। उ.—(क) सिला तरी जल माँहि सेत बँधि—१-३४। (ख) सैल-सिला-द्रुम बरषि ब्योम चढ़ि सत्रु-समूह सँहारौं—९-१०६। (ग) आपुहिं गिरचौ सिला पर आई—३९१। (२) शालग्राम की बटिया। उ.—बदन पखारि सिला जब दीन्ही, तीनौं लोक दिखाए—१०-२६२।

संज्ञा पुं. [सं. शिल] (१) खेत में कटी हुई फसल उठा ले जाने पर गिरा हुआ अनाज। (२) फटकने-पछोरने के लिए रखा गया अनाज का ढेर। (३) खेत में गिरे हुए अनाज बीनकर निर्वाह करने की वृत्ति।

सिलाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीना + आई] (१) सुई से सीने का काम, ढंग या मजदूरी। (२) टाँका, सीवन।

सिलाजीत—संज्ञा पुं. [सं. शिलाजतु] शिलाओं का एक लसदार पसेव जो बड़ी पुष्टई माना जाता है।

सिलाना, सिलानो—क्रि. स. [हिं. सीना] सीने का काम दूसरे से कराना, सिलवाना।

सिलावट—संज्ञा. पुं. [सं. शिला + पट्ट] पत्थर काटने-गढ़नेवाला कारीगर।

सिलासार—संज्ञा पुं. [सं. शिलासार] लोहा।

सिलाह—संज्ञा पुं. [अ.] (१) जिरह-बख्तर, कवच। (२) हथियार, अस्त्र-शस्त्र।

सिलाहबंद—वि. [अ. सिलाह + फ़ा. बंद] सशस्त्र।

सिलाहर, सिलाहरा, सिलाहार, सिलाहारा—वि. [सं. शिल + हिं. हारा.] (१) कटे हुए खेत में बिखरे हुए अनाज के दाने बीनकर जीवन निर्वाह करनेवाला। (२) बहुत दरिद्र, अकिंचन।

सिलाही—वि. [अ. सिलाह + ई] (१) कवचधारी। (२) सशस्त्र।

संज्ञा पुं. सिपाही, सैनिक।

सिलिप—संज्ञा पुं. [सं. शिल्प] कौशल, शिल्प।

सिलिमुख—संज्ञा. पुं. [सं. शिलीमुख] भौंरा।

सिलियार, सिलियारा—वि. [हिं. सिलहारा] सिलाहारा।

सिलीमुख—संज्ञा पुं. [सं. शिलीमुख] भौंरा। उ.—कुंचित अलक सिलीमुख मानो लै मकरंद निदाने—१३३४।

सिलोच्च संज्ञा पुं. [सं. शिलोच्च] एक पर्वत जो रामचंद्र को विश्वामित्र के साथ जाते समय गंगा तट पर मिला था।

सिलौट, सिलौटा—संज्ञा पुं. [हिं. सिल + बट्टा] (१) बड़ी सिल। (२) सिल और बट्टा।

सिलौटिया, सिलौटी—वि. [हिं. सिलौटा] छोटी सिल।

सिल्प—संज्ञा पुं. [सं. शिल्प] कारीगरी, कला-कौशल।

सिल्ला—संज्ञा पुं. [सं. शिल] (१) फसल कट जाने पर खेत में बिखरा हुआ अनाज। (२) खलियान में भूसे का ढेर जिसमें अनाज के कुछ दाने रह जाते हैं।

मुहा. सिल्ला चुनना या बीनना—खेत या भूसे में बिखरे हुए अनाज के दाने बीनना।

सिल्ली—संज्ञा स्त्री. [सं. शिला] (१) धार तेज करने का छोटा पत्थर। (२) आरे से चीरा हुआ तख्ता। (३) छोटी सिल। (४) पत्थर की छोटी पटिया।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सिल्ला] फटकने-पछोरने के लिए लगाया गया अनाज का ढेर।

संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक जल-पक्षी।**

सिव—संज्ञा पुं. [सं. शिव] (१) **मंगल, कल्याण**। (२) **महादेव** उ.—(क) ब्रह्म-सिव-सेस-सुक सनक ध्यायौ—१-११९। (ख) सिव न, अवध सुन्दरी, बधो जिन—१६८७।

सिवई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सेंवईं] **गुंधी हुई मैदा के बटकर बनाए गए सूत के से लच्छे जो सुखाकर दूध में पकाकर या घी में भूनकर और चाशनी में पागकर खाए जाते हैं।**

मुहा. सिवई तोड़ना, पूरना या बटना—**गुँधी हुई मदा के सूत कातना या बनाना।**

सिवकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सेवकाई] **सेवा, सेवक का कार्य**। उ.—सन्मुख रहत टरत नहिं कबहूँ, सदा करत सिवकाई—पृ. ३३६ (५६)।

सिवता—संज्ञा स्त्री. [सं. शिवता] **शिवत्व**। उ.—सिव सिवता इन्हीं तैं लई—३-१३।

सिवपुरी—संज्ञा स्त्री. [सं. शिवपुरी] **काशीनगरी।**

सिवरात्रि—संज्ञा स्त्री. [सं. शिवरात्रि] **फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी जो शिवजी के विवाह की तिथि होने से एक पर्व के रूप में मान्य है और शैव इस दिन व्रत करते हैं।**

सिवरानि, सिवरानी—संज्ञा स्त्री. [सं. शिव + हिं. रानी] **पार्वती।**

सिव-रिपु—संज्ञा पुं. [सं. शिव + रिपु] **कामदेव**। उ.—ता दिन तें उर-भौन भयो सखि सिव-रिपु को संचार—२८८८।

सिव-लिंग संज्ञा पुं. [सं. शिवलिंग] **शिवजी की पिंडी जिसकी पूजा होती है।**

सिव-लोक—संज्ञा पुं. [सं. शिव + लोक] **कैलास।**

सिवा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दुर्गा**। (२) **पार्वती**। (३) **सियारिन, शृगाली**। (४) **मुक्ति, मोक्ष।**

अव्य. [अं.] **अलावा, अतिरिक्त।**

वि. **ज्यादा, अधिक।**

सिवान—संज्ञा पुं. [सं. सीमांत] **हद, सीमा।**

सिवाय—अव्य. [अ. सिवा] **अतिरिक्त।**

वि. **ज्यादा, अधिक।**

सिवार, सिवाल—संज्ञा स्त्री. [सं. शैवाल] **पानी में होने-वाली एक तरह की लम्बी और लच्छेदार घास**। उ.—(क) पग न इत-उत धरन पावत उरझि मोह-सिवार १-९९। (ख) बिरह-सरोवर बूड़ई अंधकार-सिवार—१५३८।

सिवालय, सिवाला—संज्ञा पुं. [सं. शिवालय] **शिव-मंदिर।**

सिवि—संज्ञा पुं. [सं. शिवि] **एक प्रसिद्ध राजा।**

सिविका—संज्ञा स्त्री. [सं. शिविका] **डोली, पालकी।**

सिविर—संज्ञा पुं. [सं. शिविर] (१) **सेना के ठहरने का स्थान, पड़ाव**। (२) **वह स्थान जहाँ लोग उद्देश्य विशेष से ठहरें या रहें**। (३) **डेरा, खेमा**। (४) **किला, दुर्ग, कोट।**

सिवैंयाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिवईं] **सिवईं।**

सिष—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीख] **उपदेश, शिक्षा।**

संज्ञा पुं. [सं. शिष्य] **चेला, शिष्य।**

सिष्ट—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शिश्त] **बंसी की डोरी।**

सिष्ट, सिष्ठ—वि. [सं. शिष्ट] (१) **भला आदमी**। (२) **साधु-महात्मा**। उ.—भृगु मरीचि-अंगिरा बसिष्ठ। अत्रि पुलह पुलस्त अति सिष्ठ—३-८।

सिष्य—संज्ञा पुं. [सं. शिष्य] **चेला, शिष्य।**

सिष्यहिं—संज्ञा पुं. सवि. [सं. शिष्य] **शिष्यों को**। उ. रिषि सिष्यहिं भेज्यौ समुझाइ। नृप सौं कहि तू ऐसी जाइ—१-२९०।

सिसकत—क्रि. अ. [हिं. सिसकना] **बहुत भय लगता है, धकधकी होती है, जी धड़कता है**। उ.—तबहीं तें इकटक चितवत और सिसकत डर तें—१८६९।

सिसकना, सिसकनो—क्रि. अ. [अनु.] (१) **भीतर ही भीतर या बहुत धीरे-धीरे रोने में निकलती हुई साँस छोड़ना**। (२) **लंबी साँस रोक-रोककर छोड़ते हुए रोना**। (३) **बहुत भय लगना, जी धड़कना**। (४) **मरने के निकट होने से उलटी साँस या हिचकियाँ लेना**। (५) **(पाने या प्राप्त करने के लिए) रोना या तरसना।**

सिसकती—वि. स्त्री. [हिं. सिसकना] **रोनी, रोती हुई।**

मुहा.—सिसकती-भिनकती—**मैली-कुचैली और रोनी सूरत।**

सिसकारना, सिसकारनो—क्रि. अ. [अनु. सी सी + हिं.

करना] (१) मुंह से सोटी का सा हल्का शब्द निकालना। (२) (अत्यन्त पीड़ा या आनन्द से) मुँह से साँस खींचना या शीत्कार करना।

सिसकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिसकारना (१) सिसकारने का शब्द। (२) शीत्कार।

सिसकी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) धीरे-धीरे रोने का शब्द। (२) शीतकार।

सिसिर—संज्ञा पुं. [सं. शिशिर] (१) माघ और फाल्गुन मास की ऋतु। (२) जाड़ा, शीतकाल।

सिसु—संज्ञा पुं. [सं. शिशु] छोटा बच्चा। उ.—(क) यह कहिकै सिसु-भेष धरयौ—१०-८। (ख) उपजि परयौ सिसु-कर्म-पुन्य फल—१०-१३८। (ग) कोउ आयौ सिसु-रूप रच्यौ री—६०६।

सिसुता—संज्ञा स्त्री. [सं. शिशुता] (१) बचपन, बाल्यावस्था। उ.—(क) सूरदास सिसुता-सुख जलनिधि कहँ लौं कहौं, नाहिं कोउ समसरि—१०-१२०। (ख) सूरदास प्रभु सिसुता कौ सुख सकै न हृदय समाइ—१०-१७८। (ग) अति सिसुता मैं ताहि संहारयौ परयौ सिला पर आइ—९८६। (२) बालकों का-सा आचरण, लड़कपना। उ.—अखिल ब्रह्मंड-खंड की महिमा सिसुता माहिं दुरावत—१०-१०२।

सिसुताइ सिसुताई—संज्ञा स्त्री. [सं. शिशुता] (१) बचपन। (२) बालकों जैसा आचरण। उ.—मुख-मुख जोरि बत्यावई सिसुताई ठानै—१०-७२।

सिसुपाल—संज्ञा पुं. [सं. शिशुपाल] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। उ.—दंत बक्र सिसुपाल जे भए। बासुदेव ह्वै सो पुनि हए—१०-२।

सिसृक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] रचने की इच्छा।

सिसृक्षु—वि. [सं.] रचना करने का अभिलाषी।

सिसोदिया—संज्ञा पुं. [सिसोद (स्थान)] गुहलौत राजपूतों की एक शाखा जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड़ थी और आधुनिक उदयपुर है।

सिस्न—संज्ञा पुं. [सं. शिश्न] पुरुष का लिंग।

सिस्य—संज्ञा पुं. [सं. शिष्य] चेला, शिष्य।

सिस्टि, सिस्टी—संज्ञा स्त्री. [सं. सृष्टि] (१) रचकर तयार करने की क्रिया या भाव। (२) जन्म, उत्पत्ति। (३) रचना, निर्माण। (४) जगत, संसार।

सिहरन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिहरना] सिहरने की क्रिया या भाव।

सिहरना, सिहरनो—क्रि. स. [सं. शीत + ना] (१) काँपना। (२) ठंढ से काँपना। (३) भय से काँपना। (४) रोंगटे खड़े होना।

सिहरा—संज्ञा पुं. [हिं. सेहरा] सेहरा।

सिहराना, सिहरानो—क्रि. स. [हिं. सिहरना] (१) कँपाना। (२) सरदी से कँपाना। (३) भय से कँपाना। (४) रोंगटें खड़े करना।

क्रि. स. [हिं. सहलाना] सहलाना।

सिहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिहरना] (१) कँपकँपी। (२) शीत की कँपकँपी। (३) भय। (४) रोंगटे खड़े होना।

सिहलाना—क्रि. अ. [सं. शीतल] (१) ठंढा होना, सिराना। (२) सरदी खा जाना। (३) सरदी पड़ना।

सिहलावन—संज्ञा पुं. [हिं. सिहलाना] ठंढ, सरदी।

सिहात—क्रि. अ. [हिं. सिहाना] (१) मुदित, मोहित या मुग्ध होता है। उ.—(क) मनौ मधुर मराल छौना बोलि बैन सिहात—१०-१८४। (ख) हरि प्यारी के मुख तन चितवत मनही मनहु सिहात—१५२१। (ग) परस्पर दोउ करत क्रीड़ा मनहिं मनहिं सिहात—पृ. ३५१ (७६)। (घ) श्रीमुख स्याम कहत यह बानी ऊधौ सुनत सिहात-२९२५। (२) स्पर्द्धा करता है। उ.—द्वारिका की देखि छबि सुर-असुर सकल सिहात।

सिहाति—क्रि. अ. [हिं. सिहाना] लुभाती है, ललचती है। उ.—सूर प्रभु को निरखि गोपी मनहि मनहि सिहाति।

सिहाना—क्रि. अ. [सं. ईर्ष्या] (१) डाह या ईर्ष्या करना। (२) किसी अच्छी वस्तु देखकर इसलिए दुखी होना कि वह या वैसी वस्तु हमारे पास नहीं हैं, स्पर्द्धा करना। (३) लोभ होना, ललचना। (४) मुग्ध, मोहित या मुदित होता। (५) संतुष्ट होना।

क्रि. स. (१) ईर्ष्या या डाह से देखना (२) पाने की अभिलाषा करना, ललचना।

सिहानी—क्रि. अ. [हिं. सिहाना] **मुग्ध या मोहित हुई।** उ.—(क) सूर स्याम मुख निरखि जसोदा मनहीं मन जु सिहानी—१०-२०८। (ख) अति पुलकित गदगद मुख बानी मन-मन महरि सिहानी—१०-२५३। (ग) भोर भए ब्रजधाम चले दोउ मन-मन नारि सिहानी—२०८१। (घ) बीरा खात देखि दोउ बीरा दोउ जननी मुख देखि सिहानी—२३७९।

सिहानो—क्रि. अ., स. [हिं. सिहाना] **सिहाना।**

सिहारना, सिहारनो—क्रि. अ. [देश.] (१) **तलाश करना, ढूँढ़ना।** (२) **जुटाना, एकत्र करना।**

सिहाहिं—क्रि. अ. [हिं. सिहाना] **मुग्ध होते हैं।** उ.—पियहिं के गुन गुनत उर में दरस देखि सिहाहिं—पृ. ३३२ (१२)।

सिहिकना, सिहिकनो—क्रि. अ. [देश.] **(फसल) सूखना।**

सिहुँड, सिहोड़, सिहोर—संज्ञा पुं. [सं. सिहुंड] **'थूहर' या सेंहुँड़ का पौधा।**

सींक—संज्ञा स्त्री. [सं. इषीका] (१) **मूँज या सरपत, नारियल आदि के बीच की पतली तीली; ऐसी बहुत सी तीलियों से झाड़ू बनाते हैं।** (२) **किसी घास या तृण का महीन डंठल या उसका तिनका।** उ.—रोचन भरि लै देत सीक सौं स्रवन निकट अति ह्वीं आतुर की—१०-१८०।

मुहा. सात सींक बनाइ—**शिशु के जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींके रखी जाती हैं।** उ.—**द्वार** सथिया देति स्यामा सात सींक बनाइ—१०-२६।

(३) **नाक का एक गहना, लौंग, कील।**

सींका—संज्ञा पुं. [हिं. सींक] **पेड़-पौधों की बहुत पतली टहनी, डाँड़ी।**

संज्ञा पुं. [हिं. छींका] **डोरी या धातु की तीलियों का, कुछ रखने के लिए बना छींका।**

सींके, सींकैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. सींका = छींका] (१) **छींके पर।** उ.—कब सींकैं चढ़ि माखन खायौ—१०-२९३। (२) **छींके को।** उ.—सींके छोरि.......... माखन-दधि सब खायौ—१०-३२८।

सींकिया—वि. [हिं. सींक] **सींक जैसा पतला।**

मुहा. सींकिया पहलवान—**बहुत दुबला-पतला आदमी जिसे अपने बल का घमंड हो।**

सींग—संज्ञा पुं. [सं. शृंग] (१) **खुर वाले कुछ पशुओं के सिर के दोनों ओर निकले हुए वे कड़े और नुकीले अवयव जिनसे वे रक्षा या आक्रमण करते हैं, विषाण।** उ.—(क) माधौ, नैंकु हटकौ गाइ।........। नील खुर अरु अरुन लोचन, सेत सींग सुहाइ—१-५६। (ख) खुर ताँबै, रूपैं पीठि, सोनैं सींग मढ़ीं—१०-२४।

मुहा.—(किसी के) सिर पर सींग होना—**किसी में) दूसरों से बढ़कर कोई बात या विशेषता होना (व्यंग्य)।** सींग कटाकर बछड़ों में मिलना—**किसी सयाने का बच्चों में मिलना या उनके साथ खेलना (व्यंग्य)।** सींग जमना—**लड़ने की इच्छा होना।** सींग दिखाना या देना—**कोई वस्तु न देना और चिढ़ाना, अँगूठा दिखाना।** सींग निकलना—(१) **चौपाये का जवान होना।** (२) **किसी किशोर-किशोरी का इतराने लगना।** कहीं सींग समाना—**कहीं गुजारा या निर्वाह होना, कहीं आश्रय या शरण मिलना।** सींग पर मारना—**बहुत तुच्छ या नगण्य समझना, कुछ परवाह न करना।**

(२) **सींग का बना बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है, सिंगी।**

सींगड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. सींग] **सिंगी बाजा।**

सींगड़ी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की फली जिसकी तरकारी बनती है।**

सींगना, सींगनो—क्रि. स. [हिं. सींग] **सींग देखकर पशु की जाँच-पड़ताल या पहचान करना।**

सींगर, सींगरी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की फली जिसकी तरकारी बनती है, मोगरे की फली।** उ.—सेमि सींगरी छमकि झोरईं—२३२१।

सींगी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सींग] (१) **हिरन के सींग का बना बाजा जो मुँह से (फूँककर) बजाया जाता है।** उ.—हृदय सींगी टेर मुरली नैन खप्पर हाथ—३१२६। (२) **वह पोला सींग जिससे शरीर का दूषित रक्त खींचा जाता है।**

मुहा. सींगी तोड़ना या लगाना—**सींगी से दूषित**

एक जीवना।

(३) एक तरह की सींगदार मछली।

सींच—संज्ञा स्त्री. [हिं. सींचना] (१) सींचने की क्रिया या भाव। (२) छिड़काव।

सींचत—क्रि. स. [हिं. सींचना] (खेतों या पेड़ों में) पानी देता है। उ.—अति अनुराग सुधाकर सींचत दाड़िम बीज समान।

सींचना, सींचनो—क्रि. स. [सं. सेचन] (१) (खेतों या पेड़ों में) पानी देना। (२) पानी छिड़ककर तर करना या भिगोना। (३) (पानी आदि) छिड़कना।

सींचिये—क्रि. स. [हिं. सीचना] (पानी आदि) डालिए या छिड़किए। उ.—सूर सुजल सींचिये कृपानिधि निज जन चरन-तटी—९-९८।

सींच्यो, सींच्यौ—क्रि. स. [हिं. सींचना] (पानी आदि) डाला या छिड़का। उ.—भूभृत सीस नमित जो गर्व-गत पावक सींच्यौ नीर—९-२६।

सींव, सींवा—संज्ञा स्त्री. [सं. सीमा] हद, सीमा, मर्यादा। उ.—(क) सकल सुख की सींव कोटि मनोज-सोभा हरनि—१०-१०९। (ख) मध्य नायक गोपाल बिराजत सुंदरता की सींवा हो—२४००।

सी—वि. स्त्री. [हिं. सा] सम, समान, सदृश।

मुहा. अपनी सी—(१) अपनी शक्ति भर। उ.—अपनी सी मैं बहुत करी री। (२) अपनी इच्छा के अनुसार।

संज्ञा स्त्री. [अनु.] सिसकारी, शीत्कार।

सीअ—वि. [सं. शीतल] ठंढा, शीतल।

सीउ, सीऊ—संज्ञा पुं. [सं. शीत] ठंढ, जाड़ा।

सीक—संज्ञा पुं. [अनु.] शीत्कार।

सीकचा—संज्ञा पुं. [फ़ा. सीख] लोहे की छड़।

सीकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जल-कण। (२) पसीना, स्वेद-कण। उ.—स्नम स्वेद सीकर गुंड मंडित रूप अंबुज कोर।

संज्ञा स्त्री. [सं. शृंखला] जंजीर, सिकड़ी।

सीकल—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिकली] हथियारों की सफाई।

सीकस—संज्ञा पुं. [हिं. सिकता] (१) रेतीली या बलुई भूमि। (२) ऊसर या बंजर भूमि।

सीका—संज्ञा पुं. [सं. शीर्ष] सिर का एक गहना।

संज्ञा पुं. [सं. शिक्या] छींका, सिकहर।

सीकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीका] छोटा छींका।

संज्ञा पुं. [देश] (१) छेद। (२) मुंह, मुंहरा।

सीकुर—संज्ञा पुं. [सं. शूक] अनाज की बाल के ऊपर निकले हुए बाल जैसे कड़े सूत।

सीको—संज्ञा पुं. [हिं. सीका] छींका, सिकहर।

संज्ञा पुं. सिर का एक आभूषण।

सीख—संज्ञा स्त्री. [सं. शिक्षा, प्रा. सिक्खा] (१) सिखाने की क्रिया या भाव, शिक्षा। (२) वह बात जो सिखायी जाय। उ.—अहो नँदरानि, सीख कौन पै लही री—३४८। (३) सलाह, मंत्रणा। उ.—याकी सीख सुनै ब्रज को रे। (४) उपदेश।

संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सीख] पतली छड़।

सीखचा—संज्ञा पुं. [हिं. सीख] पतली छड़।

सीखत—क्रि. स. [हिं. सीखना] अभ्यास करते (हैं), सीख रहे (हैं)। उ.—मुरली अधर धरन सीखत हैं—५०७।

सीखन—संज्ञा पुं. [हिं. सीखना] (१) सीखने या सिखाने की क्रिया या भाव। उ.—तात दुहन सीखन कह्यौ मोहिं धौरी गैया—४०९। (२) हित के लिए बतायी गयी बात, उपदेश, शिक्षा।

सीखनहार, सीखनहारा, सीखनहारो—वि. [हिं. सीखना+हार] सीखनेवाला।

सीखनहारि, सीखनहारी—हि. स्त्री. [हिं. सीखना+हारी] सीखने की इच्छा रखनेवाली, सीखने को तत्पर। उ.—तुमही कहौ इहाँ इतननि महिं सीखनहारी को है—३२३०।

सीखना, सीखनो—क्रि. स. [सं. शिक्षण, प्रा. सिक्खण] (१) जानकारी या ज्ञान प्राप्त करना। (२) काम करने का ढंग आदि जानना-समझना। (३) कला, विद्या आदि की शिक्षा पाना।

सीखी—क्रि. स. [हिं. सीखना] जानती है। उ.—तू मोही को मारन सीखी, दाउहिं कबहुँ न खीझै—१०-२१५।

सीखे—क्रि. स. [हिं. सीखना] जान या समझ पाए (है)। उ.—अबहिं नैंकु खेलन सीखे हैं—७७४।

सीख्यो, सीख्यौ—क्रि. स. [हिं. सीखना] जाना या समझा

है । उ.—सूरदास प्रभु अगरौ सीझ्यौ—७३४ ।

सीगा—संज्ञा पुं. [अ. सीग़ा] (१) साँचा, ढाँचा । (२) पेशा, व्यापार । (३) महकमा, विभाग ।

सीझ, सीझ—संज्ञा स्त्री. [सं. सिद्ध, प्रा. सिज्झि, हिं, सीझना] आग या गरमी से पकने की क्रिया या भाव ।

सीजना, सीजनो, सीझना, सीझनो—क्रि. अ. [सं. सिद्धि, प्रा. सिज्झि, हिं. सीझना] (१) आँच या गरमी से पकना, गलना या चुरना । (२) आँच या गरमी का ताव खाकर नरम पड़ना । (३) भस्म होना, जलना । (४) सूखे हुए चमड़े का किसी घोल में भीगकर मुलायम होना । (५) कष्ट या क्लेश सहना । (६) तप या तपस्या करना ।

सीझी—क्रि. अ. [हिं. सीझना] पक गयी, चुर गयी ।

सीटना, सीटनो—क्रि. अ. [अनु.] बढ़-बढ़कर बातें करना, डींग हाँकना, शेखी मारना ।

सीटी—संज्ञा स्त्री. [सं. शीतृ] (१) ओठों को गोलाई में सिकोड़ कर आघात के साथ वायु निकलने से होने-वाला महीन, पर तेज शब्द ।

मुहा. सीटी देना—सीटी देकर कोई संकेत करना ।

(२) इसी प्रकार का तेज शब्द जो किसी यंत्र या बाजे से निकलता हो ।

मुहा. सीटी देना—सीटी देकर समय आदि सूचित करना या सावधान करना ।

(३) वह बाजा जिससे वैसा शब्द निकले ।

सीठ—वि. [हिं. सीठ] बिना स्वाद का, फीका ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सीठी] (१) सारहीन वस्तु । (२) फीकी चीज ।

सीठना—संज्ञा पुं. [सं. अशिष्ट, प्रा. असिट्ठ+ना] विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर गायी गयी गाली ।

सीठनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीठना] विवाह आदि के अवसर पर गायी जानेवाली गाली ।

सीठा—वि. [सं. शिष्ट, प्रा. सिट्ठ] फीका, नीरस ।

सीठापन—संज्ञा पुं. [हिं. सीठा+पन] फीकापन ।

सीठी—संज्ञा स्त्री. [सं. शिष्ट, प्रा. सिट्ठ] (१) किसी वस्तु का, रस या साररहित अंश । (२) निस्सार या तत्व-हीन वस्तु । (३) फीकी या नीरस वस्तु ।

सीड़—संज्ञा स्त्री. [सं. शीत] तरी, नमी, सील ।

सीढ़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रेणी] (१) निसेनी । (२) जीना ।

मुहा. सीढ़ी सीढ़ी चढ़ना—क्रमशः उन्नति करना ।

(३) क्रमशः उन्नति का क्रम ।

सीत—वि. [सं. शीतल] (१) ठंढा । (२) सुस्त, धीमा ।

संज्ञा पुं. [सं. शीत] (१) सरदी, जाड़ा । उ.—(क) सहि सन्मुख तउ सीत-उष्न कौं सोई सुफल करै—१-११७ । (ख) सीत-बात-कफ कंठ बिरोधै रसना टूटै बात—१-३१३ । (ग) सीत-भीति नहिं करति छहौं रितु—७८२ । (घ) कत हौ सीत सहति ब्रज-सुंदरि – ७८७ । (ङ) सीत तैं तन कँपत थर-थर—७८९ । (२) पाला । उ.—सकुचत सीत-भीत जलरुह ज्यौं—३५७ । (३) जाड़े के दिन, जाड़े की ऋतु ।

सीतकर—संज्ञा पुं. [सं. शीत+कर] चंद्रमा ।

सीतल—वि. [सं. शीतल] (१) ठंढा, शीतल । उ.—(क) जनु सीतल सौं तप्त सलिल दै सुखित समोइ करै—९-१७१ । (ख) अब मोकौं सीतल जल आनौ—३९६ । (ग) सीतल सलिल सुगंध पवन—५८९ । (२) सुस्त, धीमा । (३) शांत । उ.—(क) तऊ सुझाव न सीतल छाँड़ै—१-११७ । (ख) चक्र सुदरसन सीतल भयौ – ९-५ । (४) सुखी, संतुष्ट । उ.—सीतल भयौ मातु कौ हियौ—४-९ । (५) सुखद, सुखदायी । उ.—सेव चरन सरोज सीतल—१-३०७ ।

सीतलपाटी—संज्ञा स्त्री. [सं. शीतल+हिं. पट] एक तरह की बढ़िया चिकनी चटाई ।

सीतला—संज्ञा स्त्री. [सं. शीतला] (१) चेचक रोग । (२) इस रोग की अधिष्ठात्री देवी ।

सीता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) भूमि जोतते समय हल की फाल से पड़ जाने वाली रेखा, कूँड़ । (२) मिथिला के राजा जनक की पुत्री जो श्री रामचन्द्र को ब्याही थी । उ. श्रीरघुनाथ-प्रताप पतिब्रत सीता-सत नहिं टरई—९-७८ । (३) एक वर्णवृत्त ।

सीतानाथ, सीतापति—संज्ञा पुं. [सं.] श्री रामचन्द्र । उ.—चितत चित्त सूर सीतापति मोह-मेरु-दुख टरत न टारत ९-६२ ।

सीताफल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शरीफा । (२) कुम्हड़ा ।

सीतारमण, सीतारवन, सीतारौन—संज्ञा पुं. [सं. सीता-

रमण] श्रीरामचन्द्र।
सीत्कार—संज्ञा स्त्री. [सं. शीत्कार] सी सी शब्द।
सीथ—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. सिक्थ] (१) अन्न का दाना। (२) पके हुए अन्न का दाना। (३) जूठन।
सीथिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीथ] जूठन से। उ.—ऐसैं बसिए ब्रज की बीथिनि। ग्वारनि के पनवारे चुनि-चुनि उदर भरीजै सीथिन—४९०।
सीद—संज्ञा पुं. [सं. शीद्] कष्ट, दुख, पीड़ा।
सीदना, सीदनो—क्रि. अ. [सं. सीदति] (१) दुख या कष्ट पाना। (२) नष्ट होना।
क्रि. स. (१) दुख देना। (२) नष्ट करना।
सीध—संज्ञा स्त्री. [हिं. सीधा] (१) ठीक सामने की स्थिति या भाव, सीधापन। (२) सीधी रेखा या दिशा। (३) निशाना, लक्ष्य।
मुहा. सीध बाँधना—निशाना साधना।
सीधा—वि. [सं. शुद्ध] (१) जिसमें फेर, घुमाव या टेढ़ापन न हो। (२) जो ठीक लक्ष्य की ओर हो।
मुहा. सीधा करना—(तीर, बन्दूक आदि का) निशाना साधना। सीधा आना—भिड़ जाना।
(३) जो कुटिल या कपटी न हो, भोला। (४) शांत, सुशील, शिष्ट।
यौ. सीधा-सादा—(१) भोला-भाला। (२) जिसमें ज्यादा तड़क-भड़क न हो।
मुहा. (किसी को) सीधा करना—(१) दंड देकर ठीक करना। (२) अपने अनुकूल करना। सीधा दिन—शुभ दिन या मुहूर्त।
(५) आसान, सहज, सुगम, सुकर।
यौ. सीधा-साधा—सुगम और प्रत्यक्ष।
(६) जो सरलता से समझ में आ सके। (७) दाहिना, दक्षिण।
क्रि. वि. ठीक सामने की ओर, सम्मुख।
संज्ञा पुं. सामने का भाग।
संज्ञा पुं. [सं. असिद्ध] (१) बिना पका हुआ अन्न। (२) बिना पका हुआ वह अन्न जो दान दिया जाय।
सीधापन, सीधापना—संज्ञा पुं. [हिं. सीधा+पन] सिधाई, सरलता, भोलापन।
सीधि—संज्ञा स्त्री. [सं. सिद्धि] सफलता।
सीधी—वि. स्त्री. [हिं. सीधा] सीधा।
मुहा सीधी राह—सुमार्ग, अच्छा आचरण। सीधी-सीधी सुनाना—(१) साफ-साफ या खरी बात करना। (२) भला-बुरा कहना। सीधी तरह—नरमी या सज्जनता से।
सीधे—क्रि. वि. [हिं. सीधा] (१) सामने की ओर। (२) बिना कहीं रुके या मुड़े। (३) बिना और कहीं जाय। (४) नरमी या सज्जनता से। (५) शांति से।
सीना—क्रि. स. [सं. सीवन] कपड़े, चमड़े आदि के टुकड़ें को सुई में तागा पिरोकर जोड़ना, टाँका मारना।
यौ. सीना-पिरोना—सिलाई-कढ़ाई का काम।
संज्ञा पुं. [फ़ा. सीनः] छाती, वक्षस्थल।
सीप—संज्ञा पुं. [सं. शुक्ति, प्रा. सुत्ति] (१) शंख, घोंघे आदि की तरह कड़े आवरण में रहनेवाला एक जल-जंतु, सीपी। उ.—उपजि परयौ सिसु कर्म-पुन्य फल समुद्र सीप ज्यों लाल—१०-१३८। (२) सीप नामक जल-जंतु का सफेद, कड़ा और चमकीला आवरण जिससे बटन आदि बनते हैं। (३) ताल के सीप का संपुट जो चम्मच आदि के काम आता है। (४) वह लम्बोतरा पात्र जिसमें देव-पूजा या तर्पण आदि के लिए जल रखा जाता है।
सीपज—संज्ञा पुं. [हिं. सीप+सं. ज] (सीप से उत्पन्न) मोती। उ. (क) दमकति दूध दँतुलियाँ, मनु सीपज घर कियौ बारिज पर—१०-९३। (ख) सीपज-माल स्याम-उर सोहै—१०-१३९। (ग) की सूक सीपज की बग-पंगति, की मयूर की पीड़ पखी री—१६२७।
सी-पति—संज्ञा पुं. [सं. श्रीपति] विष्णु।
सीपर—संज्ञा पुं. [फ़ा. सिपर] ढाल।
सीप-सुत—संज्ञा पुं. [हिं. सीप+सं. सुत] मोती। उ.—परसत आनन मनु रबि कुंडल, अंबुज स्रवत सीप-सुत जोटी—१०-१८७।
सीपिज—संज्ञा पुं. [हिं. सीपी+सं. ज] मोती। उ.—दमकति द्वै द्वै दँतुलियाँ बिहँसत, मानो सीपिज (सीपज) घरु कियो बारिज पर—१०-९३।
सीपी—संज्ञा स्त्री [हिं. सीप] 'सीप' नामक जल-जन्तु का

आवरण या संपुट ।

सीवी—संज्ञा स्त्री. [अनु. सी सी] अत्यन्त पीड़ा या आनंद के समय मुँह से निकलनेवाली शीत्कार ।

सीमंत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्त्रियों के सिर की माँग । उ.—सीस सचिक्कन केस हो बिच सीमंत सँवारि—२०६५ । (२) सीमंतोन्नयन संस्कार ।

सीमंतक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) स्त्रियों की माँग निकालने की क्रिया । (२) सिंदूर जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपनी माँग भरती हैं ।

सीमंतिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] स्त्री, नारी ।

सीमंतोन्नयन—संज्ञा पुं. [सं.] हिन्दुओं के दस संस्कारों में तीसरा जिसमें गर्भस्थिति के चौथे, छठे या आठवें महीने में गर्भवती की माँग निकाली जाती है ।

सीम—संज्ञा स्त्री. [सं. सीमा] हद, सीमा ।

मुहा. सीम काँड़ना या चरना—दूसरे के क्षेत्र में अधिकार जताना ।

सीमांत—संज्ञा पुं. [सं.] वह स्थान जहां सीमा का अंत होता हो ।

सीमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) किसी प्रदेश या स्थान के विस्तार का अंतिम स्थान, हद ।

मुहा. सीमा बंद करना—ऐसा प्रबन्ध करना कि देश की सीमा पर से बाहरी आदमियों का और माल का आना-जाना न हो सके ।

(२) (नियम या मर्यादा की) वह हद जहाँ तक कोई बात या काम करना उचित हो ।

मुहा. सीमा से बाहर जाना—औचित्य या मर्यादा का उल्लंघन करके कोई काम करना ।

सीमाबद्ध—वि. [सं.] हद (की रेखा) से घिरा या घेरा हुआ ।

सीमोल्लंघन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हद या सीमा को लाँघना या पार करना । (२) नियम, मार्यदा का औचित्य से बाहर काम करना ।

सीय—संज्ञा स्त्री. [सं. सीता] सीता, जानकी । उ.—तोरि धनुष, मुख मोरि नृपति कौ, सीय स्वयंबर कीनौ—९-११५ ।

संज्ञा पुं. [सं. शीत] (१) जाड़ा । (२) जाड़े की ऋतु ।

वि. [सं. शीतल] (१) ठंडा । (२) शांत ।

सीयरा—वि. [सं. शीतल] (१) ठंडा । (२) अपरिपक्व ।

सीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) हल (२) सूर्य ।

संज्ञा स्त्री. [सं. सीर=हल] (१) साझा । (२) साझे में जमीन जोतने-बोने की रीति । (३) वह जमीन जो साझे में जोती-बोयी जाय । (४) वह जमीन जो जमींदार स्वयं जोतता-बोता हो । (५) लगाव, संबंध ।

मुहा. सीर में रहना—मिल-जुलकर रहना ।

संज्ञा पुं. [सं. शिरा] रक्त की नाड़ी ।

मुहा. सीर खुलवाना—फसद खुलवाना ।

संज्ञा पुं. [हिं. सिर] (१) सिर (२) ऊपरी भाग ।

वि. [सं. शीतल या हिं. सीरा] ठंढा ।

सीरक—वि. [हिं. सीरा] ठंढा करनेवाला ।

संज्ञा स्त्री. ठंढक । उ.—सोइ करौ जो मिटै हृदय को दाहु परै उर सीरक ।

सीरख—संज्ञा पुं. [सं. शीर्ष] (१) चोटी । (२) कपाल । (३) माथा, मस्तक । (४) सामने का भाग ।

सीरध्वज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) राजाजनक । (२) बलराम ।

सीरनी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. शीरनी] मिठाई ।

सीरष—संज्ञा पुं. [सं. शीर्ष] (१) सिरा । (२) सिर । (३) माथा, मस्तक । (४) आगे का भाग ।

सीरा—संज्ञा पुं. [फ़ा. शीर:] (१) पका कर गाढ़ा किया हुआ शक्कर का घोल या किसी प्रकार का रस, चाशनी । (२) गेहूँ के आटे की गुड़ की बनी लपसी, हलुआ, मोहनभोग । उ.—(क) है कहधौ सिरावन सीरा—१०-१८३ । (ख) सीरा साजौ लेहु ब्रजपती—३९६ ।

संज्ञा पुं. [हिं. सिर] सिरहाना ।

वि. [सं. शीतल, प्रा. सीअड़] (१) ठंढा, शीतल । (२) शांत । (४) चुप, मौन ।

सीरी—वि. स्त्री. [हिं. सीरा] (१) ठंडी, शीतल । उ.—सीरी पौन अगिनि सी दाहति । (२) ठंढा या शांत करनेवाली, सुखद । उ.—कछु सीरी कछु ताती बानी कान्हहिं देति दोहाई—२२७५ ।

सीरे—वि. [हिं. सीरा] ठंढा, शीतल । उ.—नख-सिख

लौं तनु जरत निसा-दिन निकसि करत किन सीरे—३११९८। (२) ठंढा या शांत करनेवाले, सुखद। उ.—समाचार ताते अरु सीरे पाछे जाइ लहै—२७१३।

सील—संज्ञा स्त्री. [सं. शीतल] **नमी, तरी।**

संज्ञा पुं. [सं. शील] **उत्तम स्वभाव या आचरण।** उ.—(क) कहा कूबरी सील-रूप गुन बस भए स्याम त्रिभंगी—१-२१। (ख) सत्य-सील-संपन्न समूरति—१-६९। (ग) सील संतोष सखा दोउ मेरे—१-१७३।

सीला—संज्ञा. पुं. [सं. शिल] (१) **फसल कटने पर खेत में पड़े रह जानेवाले अनाज के दाने, सिल्ला।** (२) **खेत में इस प्रकार पड़े रह जानेवाले दाने बीनकर निर्वाह करने की वृत्ति।**

संज्ञा स्त्री. [सं. शीला] **राधा की एक सखी का नाम।** उ.—सुखमा सीला अवधा नंदा वृन्दा जमुना सारि—१५८०।

वि. [हिं. सील] **गीला, तर, नम।**

सीव—संज्ञा स्त्री. [सं. सीमा] **हद, सीमा।** उ.—निरखि सखि, सुंदरता की सीव—१३४४।

संज्ञा पुं. [सं. शिव] **महादेव, शंकर।** उ.—प्रभु तुम्हरे इक रोम-रोम प्रति कोटिक ब्रह्मा सीव—४९२।

सीवक—संज्ञा पुं. [सं.] **सिलाई करनेवाला।**

सीवड़ो—संज्ञा पुं. [सं. सीमांत] **(गाँव का) सिवाना।**

सीवन—संज्ञा पुं. [हिं. सोना] (१) **सीने का काम।** (२) **सिलाई का जोड़ या उसके टाँके।** (३) **दरार, संधि।**

सीवना, सीवनो—क्रि. स. [हिं. सीना] **(कपड़े आदि) सीना।**

सीवाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. सीमा] **हद, सीमा।** उ.—सुन्दर त्रयगुन रस की सीवाँ सूर राधिका स्याम—पृ. ३४४ (३१)

सीष—संज्ञा पुं. [सं. शिष्य] **चेला, शिष्य।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. सीख] **उपदेश, शिक्षा।**

संज्ञा पुं. [सं. शीर्ष] (१) **चोटी।** (२) **सिर, कपाल।** (३) **मस्तक।** (४) **सामने का भाग।**

सीस—संज्ञा पुं. [सं. शीर्ष] **सिर, माथा, मस्तक।** उ.—**खकर-काटत सीस**—१०६।

मुहा.—सीस उतारना—**मार डालना।** सीस उतारौं—**सिर काट कर मार डालूँ।** उ.—तबै सूर संधान सफल हौं, रिपु कौ सीस उतारौं—९-१३७। सीस डुलाना—**सिर हिलाकर आश्चर्य आदि प्रकट करना।** सीस डोलाए—**आश्चर्य आदि प्रकट किया।** उ.—जम सुनि सीस डोलाए—१-१२५। सिर ढोरना—**अत्यंत मुग्ध या चकित होकर सिर हिलाना।** सीस ढोरैं—**अत्यंत मुग्ध या चकित होकर सिर हिलाती हैं।** उ.—सुनत मुरली की घोरैं, सुर-बधू सीस ढोरैं—२२८७। चरन पर सीस धरना—**अत्यंत विनय, नम्रता या दीनता दिखाना।** चरन सीस धरि—**अत्यंत विनय, नम्रता या दीनता दिखाकर।** उ.—सूर स्याम के चरन सीस धरि, अस्तुति करि निज धाम सिधारे—३८५। सीस धुनना—**सिर पीटना, सिरपीट कर पछताना या दुखी होना।** सीस धुनै—**सिर पीट कर पछताता या दुखी होता है।** उ.—नगन न होति चकित भयौ राजा, सीस धुनै, कर मारै—१-२५७। नमित सीस—**विनय, नम्रता या दीनता से झुका हुआ सिर (या व्यक्ति)।** उ.—भूभृत सीस नमित जो गर्बगत पावक सींच्यौ नीर—९-२६। सीस फोड़ना या फोरना—**कपाल-क्रिया करना।** सीस फोरि—**कपाल-क्रिया करके।** उ.—तेई लै खोपरी, बाँस दै सीस फोरि बिखरैहैं—१-८६। चरन तर सीस लुटना या लोटना—**अत्यंत विनय, नम्रता या दीनता से चरण पर सिर झुकना।** लुटत सीस चरन तर—**अत्यंत विनय, नम्रता या दीनता से चरणों पर सीस झुकता है।** उ.—लुटत सक्र को सीस चरनतर युग गुन गत समए—९८४।

सीसक—संज्ञा पुं. [सं.] **सीसा (धातु)।**

सीसज—संज्ञा पुं. [सं.] **सिंदूर।**

सीस-ताज—संज्ञा पुं. [हिं. सीस + फ़ा. ताज] **वह टोपी जो शिकारी जानवरों के नेत्र, मुँह आदि बन्द रखने के लिए चढ़ायी जाती और शिकार के समय खोली जाती है।**

सीसत्रान—संज्ञा पुं. [सं. शिरस्त्राण] **टोप।**

सीसफूल—संज्ञा पुं. [हिं. सीस + फूल] **सिर पर पहनने**

का फूल के आकार का एक गहना।

सीसमहल—संज्ञा पुं. [हिं. शीशा+अ. महल] वह मकान जिसमें सब ओर शीशे जड़े हों।

सीसा—संज्ञा पुं. [सं. सीसक] एक धातु।

संज्ञा पुं. [हिं. शीशा] (१) काँच। (२) दर्पण।

सीसी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) बहुत पीड़ा या आनंद के समय की गयी शीत्कार। (२) जाड़े के कष्ट के कारण निकली हुई ध्वनि।

संज्ञा स्त्री. [हिं. शीशी] शीशी।

सीह—संज्ञा स्त्री. [सं. सीधु] महक, गंध।

संज्ञा पुं. [देश.] साही जंतु, सेही।

संज्ञा पुं. [सं. सिंह] सिंह।

सीहगोस, सीहगोसा—संज्ञा पुं. [फ़ा. सियहगोस] एक जंतु जिसके कान काले होते हैं।

सीँुड़—संज्ञा पुं. [सं.] थूहर (वृक्ष)।

सुँ—प्रत्य. [पुं. हिं. सों] से।

सुँघनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूँघना] तंबाकू की बुकनी।

सुँघाना, सुँघानो—क्रि. स. [हिं. सूँघना] किसी को सूँघने को प्रवृत्त करना।

सुंड—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूँड़] (हाथी की) सूँड़।

सुंडभुसुंड—संज्ञा पुं. [सं. शुंडभुशुंडि] (सूँड़ ही जिसका अस्त्र है वह) हाथी।

सुंडा—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूँड़] (हाथी की) सूँड़।

सुंडाल—संज्ञा पुं. [हिं. सूँड़] हाथी।

सुंद—संज्ञा पुं. [सं.] एक असुर जो निसुंद का पुत्र और उपसुंद का भाई था। तिलोत्तमा अप्सरा के लिए सुंद और उपसुंद परस्पर लड़ मरे थे। उ.—असुर द्वै हुते बलवंत भारी। सुंदउपसुंद स्वेच्छाबिहारी—८-११।

सुंदर—वि. [सं.] (१) रूपवान, मनोहर। उ.—(क) सुंदर स्याम—१-९४। (ख) परम सुंदर नैन—१-३०७। (२) अच्छा, बढ़िया। (३) शुभ।

सुंदरई—संज्ञा स्त्री. [सं. सुंदर+ई] सुंदरता। उ.—रीझे स्याम देखि वा छबि पर रिस मुख सुंदरई—१९७९।

सुंदर-कांड—संज्ञा पुं. [सं.] रामायण का पाँचवाँ कांड जिसका नाम लंका के 'सुंदर' पर्वत के नाम पर है।

सुंदरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] 'सुंदर' होने का भाव या अवस्था, सौंदर्य। उ.—(क) देखौ माई सुंदरता कौ सागर—६२८। (ख) मध्य नायक गोपाल बिराजत सुंदरता की सींवा हो—२४००।

सुंदरताई—संज्ञा स्त्री. [सं. सुंदरता+ई] सुंदरता। उ.—(क) कहाँ लौं बरनौं सुंदरताई—१०-१०८। (ख) स्याम भुजनि की सुंदरताई—६४१। (ग) सूरदास कहि कहा बखानै यह निसि यह अँग सुंदरताई—पृ. ३४२-११।

सुंदराई—संज्ञा स्त्री. [सं. सुंदर+हिं. आई] सुंदरता।

सुंदरापा—संज्ञा पुं. [सं. सुंदर+हिं. आपा] सौंदर्य।

सुंदरि, सुंदरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुंदरी] (१) रूपवती स्त्री। उ.—(क) जा जल सुद्ध निरखि सन्मुख ह्वै, सुंदरि सरसिज-नैनी—९-११। (ख) ज्यौं सहगमन सुंदरी कैं सँग बहु बाजन हैं बाजत—९-१३२। (ग) इत सुंदरी बिचित्र उतहिं घनस्याम सलोना—११३२। (२) सवैया छंद का एक भेद (३) एक वर्णवृत्त।

सुंबा—संज्ञा पुं. [देश.] छेद करने का औजार।

सुंभ—संज्ञा पुं. [सं. शुंभ] एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था।

सु—उप. [सं.] 'सुंदर या श्रेष्ठ' का वाचक एक उपसर्ग।

वि. (१) अच्छा। (२) श्रेष्ठ। (३) शुभ।

सर्व. [सं. स] सो, वह। उ.—(क) भरि सोवै सुख-नींद मैं तँह सु जाइ जगावै—१-४४। (ख) ज्यौ मृगा कस्तूरि भूलै सु तौ ताके पास—१-७०। (ग) पटपटात टूटत अँग जान्यो, सरन-सरन सु पुकारयो—५५५।

अव्य. [सं. सह] तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्तियों का चिह्न।

सुअंग—वि. [सं. सु+अंग] सुंदर अंगवाला।

सुअटा—संज्ञा पुं. [हिं. सूआ] तोता, शुक।

सुअनजर्द—संज्ञा पुं. [हिं. सोनजर्द] पीली जूही।

सुअना—संज्ञा पुं. [सं. सुत, प्रा. सुअ] बेटा, पुत्र।

सुअना, सुअनो—क्रि. अ. [हिं. सुअन ?] (१) उत्पन्न या उदय होना। (२) उगना।

संज्ञा पुं. [हिं. सूआ] तोता, शुक।

सुअर—संज्ञा पुं. [सं. शूकर] एक प्रसिद्ध जंतु।

सुअरदंता—वि. [हिं. सुअर+दंता] **सुअर जैसे दाँत वाला।**

सुअवसर—संज्ञा पुं. [सं.] **अच्छा समय या मौका।**

सुआ—संज्ञा पुं. [हिं. सूआ] (१) **तोता, शुक।** (२) **बड़ी और मोटी सुई, सूजा।**

सुआद—संज्ञा पुं. [सं. स्वाद] **स्वाद।**

संज्ञा पुं [ङि] **याद, स्मरण करना।**

सुआन—संज्ञा पुं. [सं. श्वान] **कुत्ता।**

सुआना, सुआनो—क्रि. स. [हिं. सुलाना] **सुलाना।**

क्रि. स. [हिं. सूना] **उत्पन्न करना।**

सुआमी—संज्ञा पुं. [सं. स्वामी] (१) **प्रभु।** (२) **पति।**

सुआर—संज्ञा पुं. [सं. सूपकार] **रसोइया।**

सुआरव—वि. [सं.] (१) **मीठी वाणी बोलनेवाला।** (२) **मीठे स्वर से बजानेवाला।**

सुआसन—संज्ञा पुं. [सं.] **(बैठने का) सुन्दर आसन।**

सुआसिन, सुआसिनि, सुआसिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुआसिनी] (१) **(आस-पास या साथ रहनेवाली) सहचरी।** (२) **सुहागिन या सधवा स्त्री।**

सुआहित—संज्ञा पुं. [सं. सु+आहत ?] **तलवार चलाने के बत्तीस ढंगों में एक।**

सुई—संज्ञा स्त्री. [सं. सूची] (१) **तागा पिरो कर कपड़ा सीने का बहुत छोटा उपकरण, सूची।** (२) **सूई की तरह का तार या काँटा।**

मुहा.—सुई का फावड़ा या भाला बनाना—**जरा सी बात को बहुत बड़ा कर देना, बात का बतंगड़ कर देना।** आँख की सुई (या सुइयाँ) निकलना—**किसी कठिन काम को समाप्तप्राय देखकर और शेषांश पूरा करके सारा श्रेय प्राप्त करने का प्रयत्न करना।**

(३) **पौधे का छोटा, पतला अंकुर।**

सुकंठ—वि. [सं.] (१) **जिसकी गरदन या कंठ सुंदर हो।** (२) **जिसका स्वर मधुर हो।** उ.—चारी बेद पढ़त मुख आगर अति सुकंठ सुर गावन—८-११।

संज्ञा पुं. [सं.] **सुग्रीव।**

सुक—संज्ञा पुं. [सं. शुक] (१) **तोता, कीर।** उ.—(क) गनिका किए कौन व्रत संजम सुक-हित नाम पढ़ावै—१-१२२। (ख) ज्यौं सुक सेमर आस लगि—१-३२६। (ग) नासिका सुक नयन खंजन—१२९४। (२) **शुकदेव मुनि।** उ.—ब्रह्म-सिव सेस-सुक-सनक ध्यायौ—१-११९। (३) **एक राक्षस जो रावण का दूत था।** उ. सुक-सारन द्वै दूत पठाए—१-१२०।

सुकचाना, सुकचानो—क्रि. अ. [हिं. सकुचाना] (१) **संकोच करना, हिचकिचाना।** (२) **लजाना।**

सुकटि—वि. [सं.] **जिसकी कमर सुंदर हो।**

सुकड़ना, सुकड़नो—क्रि. अ. [हिं. सिकुड़ना] **सिकुड़ना।**

सुकदेव—संज्ञा पुं. [सं. शुकदेव] **व्यासपुत्र शुकदेव मुनि।** उ.—सुकदेव हरि-चरननि सिर नाइ, राजा सौं बोल्यौ या भाइ—३-१।

सुकनासा—वि. [सं. शुक+नासिका] **जिस स्त्री की नाक तोते की चोंच जैसी सुंदर हो।**

सुकन्या—संज्ञा स्त्री. [सं.] **राजा शर्याति की पुत्री जो च्यवन ऋषि को ब्याही थी।**

सुकबि—संज्ञा पुं. [सं. सुकवि] **श्रेष्ठ कवि।** उ.—या छवि की पटतर दीबे कौं सुकवि कहा टकटोहै—१०-१५८।

सुकर—वि. [सं.] **सहज में या अनायास किया जानेवाला (कार्य), सुगम।**

संज्ञा पुं. [सं. सु+कर] **सुंदर हाथ।** उ.—अंसु सलिल बूड़त सब गोकुल सूर सुकर गहि लीजै—३४५४।

सुकरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **'सुकर' या सहज में होने का भाव, सुगमता, सुभीता।** (२) **सुंदरता।**

सुकराना—संज्ञा पुं. [हिं. शुकराना] (१) **धन्यवाद।** (२) **काम करनेवाले को धन्यवाद रूप में दिया जानेवाला धन।**

सुकरित—वि. [हिं. सुकृत] (१) **भला, शुभ।** (२) **भला या शुभ कार्य करनेवाला।** (३) **भाग्यवान।** (४) **धर्मशील।**

संज्ञा पुं. (१) **पुण्य।** (२) **सत्कर्म।**

सुकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **अच्छा काम।**

सुकर्मा—वि. [सं. सुकर्म्मन्] **अच्छा काम करनेवाला।** उ.—आपुन भए सुकर्मा भारि।

सुकर्मी—वि. [सं. सुकर्म्मिन्] **अच्छा काम करनेवाला।** (२) **पुण्यात्मा।** (३) **सदाचारी।**

सुकल—संज्ञा पुं. [सं. शुक्ल] **शुक्ल (पक्ष)।**

सुकचना, सुकचनो—क्रि. अ. [देश.] **चकित होना।**

सुकचाना, सुकचानो—क्रि. स. [देश.] **चकित करना।**

क्रि. अ. **चकित होना, अचंभे में होना।**

क्रि. स. [हिं. सुखवाना] **सुखाने को प्रवृत्त करना।**

सुकवि—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रेष्ठ कवि।**

सुकांड - वि. [सं.] **जिसकी डाल या शाखा सुंदर हो।**

सुकांडी—संज्ञा पुं. [सं. सुकांडिन्] **भौंरा, भ्रमर।**

सुकाग—संज्ञा पुं. [सं. सु + हिं. काग] **कौवा जिसने सगुन सूचित करके सत्कार्य किया हो।** उ.—इतनी कहत सुकाग उहाँ तैं हरी डार उड़ि बैठ्यौ—९-१६४।

सुकाज—संज्ञा पुं. [सं. सु + हिं. काज] **उत्तम कार्य।**

सुकातिज - संज्ञा पुं. [सं. शुक्तिज] **मोती।**

सुकाना, सुकानो—क्रि. स. [हिं. सुखाना] (१) **(धूप या गरमी से) गीलापन दूर करना।** (२) **गीलापन दूर करने के लिए धूप आदि में डालना।** (३) **दुर्बल बनाना।**

क्रि. अ. **दुर्बल होना, सूख जाना।**

सुकाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अच्छा या सुख का समय।** (२) **अन्न की उपज के विचार से सस्ती का समय।**

सुकावना, सुकावनो—क्रि. स. [हिं. सुखाना] **सुखाना।**

सुकिज—संज्ञा पुं. [सं. सुकृत] **उत्तम या शुभ कार्य।**

सुकिया—संज्ञा स्त्री. [सं. स्वकीया] **वह स्त्री जो केवल अपने पति से ही प्रेम करती हो।**

सुकी—संज्ञा स्त्री. [सं. शुक] **तोते की मादा।**

सुकीउ—संज्ञा स्त्री. [सं. स्वकीया] **वह स्त्री जो केवल अपने पति से ही प्रेम करती हो।**

सुकुआर - वि. [सं. सुकुमार] **जिसके अंग बहुत कोमल हों।** उ.—उन दिननि सुकुआर हते हरि।

सुकुति—संज्ञा स्त्री. [सं. शुक्ति] **सीप।**

सुकुमार—वि. [सं.] **जिसके अंग बहुत कोमल हों।** उ.—भयौ सुरुचि तैं उत्तम क्वार, अरु सुनीति कैं ध्रुव सुकुमार—४-९।

संज्ञा पुं. (१) **कोमल अंग का बालक।** (२) **कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त काव्य।**

सुकुमारता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कोमलता।**

सुकुमारि, सुकुमारी—वि. [सं. सुकुमारी] **कोमल अंगोंवाली (स्त्री)।** उ.—(क) सत्यवती मच्छोदरि नारी। गंगा तट ठाढ़ी सुकुमारी—१-२२९। (ख) प्रातहीं उठि चलीं सब मिलि जमुन-तट सुकुमारि—७७७।

सुकुरना, सुकुरनो – क्रि. अ. [हिं. सिकुड़ना] **संकुचित होना।**

सुकुल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उत्तम कुल या वंश।** (२) **उत्तम कुल या वंश में जन्मा व्यक्ति।**

संज्ञा पुं. [सं. शुक्ल] **शुक्ल पक्ष।**

वि. **सफेद, उजला, उज्ज्वल।**

सुकुलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कुलीनता।**

सुकुवाँर, सुकुवार – वि. [सं. सुकुमार] **कोमल।**

सुकृत—वि. [सं. सुकृत्] (१) **उत्तम और शुभ कार्य करने वाला।** (२) **धार्मिक, पुण्यवान।**

संज्ञा पुं. [सं.] **सत्कार्य, पुण्य।** उ.—(क) जिहिं सर सुभग मुक्ति-मुक्ताफल सुकृत-अमृत रस पीजै—१-३३७। (ख) इक मन अरु ज्ञानेंद्री पाँच........।ज्यौं मग चलत चोर धन हरैं। त्यौं ये सुकृत-धनहिं परिहरैं—५-४। (ग) बदत बिरंचि बिसेष सुकृत ब्रज-बासिन के—४८७।

मुहा. सुकृत मनाना—**अपने पुण्यों का मन ही मन स्मरण करना जिससे संकट से रक्षा हो।**

वि. **भाग्यवान, भाग्यशाली।**

सुकृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पुण्य, सत्कर्म।**

वि. [हिं. सुकृती] **पुण्यात्मा, सत्कर्मी।** उ.—सुनहु सूर नृप पास जाति हैं बीच सुकृति अति दरस दियो—२६३३।

सुकृती—वि. [सं. सुकृतिन्] (१) **सत्कर्मी, पुण्यात्मा।** उ.—सुकृती सुचि सेवकजन काहि न जिय भावै—१-१२४। (२) **भाग्यवान।**

सुकृत्य—संज्ञा पुं. [सं.] **सत्कर्म, पुण्य।**

सुकेतु - संज्ञा पुं. [सं.] **ताड़का के पिता का नाम।**

सुकेश—वि. [सं.] **जिसके बाल सुन्दर हों।**

सुकेशि—संज्ञा पुं. [सं.] **एक प्रसिद्ध राक्षस जो माल्यवान, सुमाली और माली का पिता था।**

सुकेशी—वि. स्त्री. [सं.] **उत्तम केशोंवाली।**

सुकोमल—वि. [सं. सु + कोमल] **बहुत मुलायम या सुकु-**

मार । उ.—माखन सहित देहि मेरी मैया सुपक सुकोमल रोटी—१०-१६३ ।

सुक्की—वि. [सं. स्वकीय] **अपना, निज** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. शुक] **तोते की मादा, तोती** ।

सुक्ख—संज्ञा पुं. [सं. सुख] **आराम, आनंद** ।

सुक्र—संज्ञा पुं. [सं. शुक] (१) **सौर गृह का एक प्रसिद्ध गृह जो दैत्यों का गुरु माना गया है** । उ.—(क) छठऐं सुक्र तुला के सनि जुत सत्रु रहन नहिं पैहैं—१०-८६ । (ख) मानहुँ गुरु-सनि-सुक्र एक ह्वै लाल-भाल पर सोहै री—१०-१३९ । (ग) सुक्र उदय होन लाग्यौ—२०४६ ।

सुक्रतु—वि. [सं.] **सत्कर्म करनेवाला** ।

सुक्रित—संज्ञा पुं. [सं. सुकृत] **सत्कर्म, पुण्य** । उ.—(क) परम भाग्य सुक्रित के फल तैं सुंदर देह धरी—१-७१ । (ख) तस्कर ज्यौं सुक्रित-धन लेहिं—५-४ ।

सुक्ल—वि. [सं. शुक्ल] **उजला, सफेद** ।

संज्ञा पुं. **शुक्ल पक्ष** ।

सुक्षम—वि. [सं. सूक्ष्म] **बहुत छोटा, थोड़ा या पतला** ।

सुखंडी—वि. [हिं. सूखना] **बहुत दुबला-पतला** ।

सुखंद, सुखंदा—वि. [सं. सुखद] **आनंददायक** ।

सुख—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह अनुकूल और प्रिय अनुभूति जिसकी सबको अभिलाषा रहती है, आराम** ।

मुहा. सुख मानना—(१) **हरी-भरी अवस्था में रहना** । (२) **संतुष्ट या प्रसन्न रहना** । सुख में—**सुख-सौभाग्य के दिनों से** । उ.—सुख में आइ सबै मिलि बैठत रहत चहूँ दिसि घेरे—१-७९ । सुख भोगना या लूटना—**खूब मौज करना** । सुख की नींद सोना—**सब तरह से निश्चित रहना** ।

(२) **स्वस्थता, आरोग्य** । (३) **स्वर्ग** । (४) **पानी** । (५) **सवैया छंद का एक भेद** ।

सुख-आसन—संज्ञा पुं. [सं. सुख+आसन] **पालकी, सुख-पाल** । उ.—चढ़ि सुख-आसन नृपति सिधायौ—५,४ ।

सुखकंद, सुखकंदन—वि. [सं. सुख+हिं. कंद] **सुख या आनंद देनेवाला** ।

सुखकंदर—वि. [सं. सुख+कंदरा] **सुख का घर** ।

सुखक—वि. [हिं. सूखा] **सूखा, शुष्क** ।

सुखकर—वि. [सं.] (१) **सुख देनेवाला** । (२) **जो सुख से या सहज ही किया जा सके** । (३) **जिसका हाथ हलका हो** ।

सुखकरण, सुखकरन—वि. [सं. सुखकरण] **सुख देने-वाला** । उ.—दुहूँ लोक सुखकरन हरन-दुख बेद-पुरा-ननि साखि—१-९० ।

सुखकारक—वि. [सं.] **सुख देनेवाला** ।

सुखकारी—वि. [सं. सुखकारिन्] **सुख देनेवाला** । उ.—(क) सूर स्याम सेवक-सुखकारी—१-३० । (ख) माता-हेत जनहिं सुखकारी ।......। ऐसे हरि जनक सुख-कारी—३९१ ।

सुखकारो—वि. [सं. सुखकर] **सुख देनेवाला** । उ.—बंसी-बट तट रास रच्यौ है सब गोपिनि सुखकारी—पृ. ३५१ (७०) ।

सुखजनक—वि. [सं.] **सुखदायक** ।

सुखजननि, सुखजननी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुखजननी] **सुख देने या उपजानेवाली** ।

सुखजीवी—वि. [सं. सुख+जीविन्] **सुख-सुविधा से जीवन बिताने की चेष्टा करने या इच्छा रखनेवाला** ।

सुखज्ञ—वि. [सं. सुख+ज्ञ] **सुख का अनुभवी** ।

सुखढरन—वि. [सं. सुख+हिं. ढलना] **सुखदायक** ।

सुख-थर—संज्ञा पुं. [सं सुख+स्थल] **सुखदायी स्थान** ।

सुखद—वि. [सं.] **सुख देनेवाला, सुखदायी** ।

क्रि. वि. **सुख के साथ** । उ.—इहिं वृन्दावन इहिं जमुना-तट ये सुरभी अति सुखद चरावत—४४९ ।

सुखदनियाँ—वि. [सं. सुख+हिं. देना] **सुख देनेवाला** । उ.—अंग-अंग सुभग सकल सुखदनियाँ—१०-१०६ ।

सुखदा—वि. स्त्री. [सं.] **सुख देनेवाली** ।

सुखदाइ—वि. [हिं. सुखदायी] **सुख देनेवाला** । उ.—(क) सब के ईस परम करुनामय सबहीं कौं सुखदाइ—९-१३४ । (ख) सूरस्याम ब्रज-लोग कौं जहँ तहँ सुख-दाइ—५८९ ।

सुखदाइन, सुखदाइनि, सुखदाइनी—वि. स्त्री. [सं. सुखदायिनी] **सुख देनेवाली** ।

सुखदाई—वि. [हिं. सुखदायी] **सुख देनेवाली (वाला)** । उ. (क) कर जोरे बिनती करौं दुरबल-सुखदाइ—

१-२३८। (ख) दारा-सुत-देह-गेह-संपति सुखदाइ—१-३३०।

सुखदात, सुखदाता—वि. [सं. सुखदातृ, हिं. सुखदाता] **सुख या आनंद देनेवाला।**

सुखदान, सुखदानि—वि. [सं. सुख+हिं. देना] **सुख देनेवाला, सुखद।**

संज्ञा पुं. **प्रियतम, पति।**

सुखदानी—वि. स्त्री. पुं. [सं. सुख+हिं. देना] **सुख देनेवाला (वाली)।** उ.—(क) ऐसे प्रभु सुखदानी—१-११२। (ख) धनि त्रिय तुमको जो सुखदानी संगम जागत रैनि बिहानी—१९६७।

सुखदायक—वि. [सं.] **सुख देनेवाला।** उ.—(क) सुमिरन कथा सदा सुखदायक—१-८३। (ख) सकल लोक-नायक सुखदायक—१०-४। (ग) सूर स्याम संतनि सुखदायक—६०७।

सुखदायिनि, सुखदायिनी—वि. स्त्री. [सं. सुखदायिनी] **सुख देनेवाली, सुखदा।**

सुखदायी—वि. [सं. सुखदायिन्] **सुखद।**

सुखदायो, सुखदायौ—वि. [हिं. सुखदायी] **सुख देनेवाला।** उ.—तैसी हंस-सुता पवित्र तट तैसोई कल्प-वृच्छ सुखदायो।

सुखदाव—वि. [हिं. सुखदायी] **सुखद।**

सुखदेन, सुखदैनी—वि. [सं. सुख+देना] **सुखद।**

सुखदेनी, सुखदैनी—वि. स्त्री. [हिं. सुख+देना] **सुख या आनंद देनेवाली, सुखदायिनी।**

सुख-धाम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सुख का स्थान या भवन।** (२) **वह जो बहुत सुख देनेवाला या सुखदायी हो।** (३) **बैकुंठ, स्वर्ग।** उ.—(क) छाँड़ि सुख-धाम अरु गरुन तजि साँवरो पवन के गवन तैं अधिक धायौ—१-५। (ख) सुनियत है तुम बहुपतितनि कौं दीन्हौ है सुखधाम—१-१७९।

सुखनिधान—वि. [सं. सुख+निधान] (१) **अत्यंत सुखदायिनी।** उ.—जद्दपि सुख-निधान द्वारावति तौउ मन कहुँ न रहाहीं—१०-उ.-१०३। (२) **समस्त सुखों के आकर।** उ.—मनसा नाथ मनोरथ पूरन सुख-निधान जाकी मौज घनी—१-३९।

सुख-पाल—संज्ञा पुं. [सं. सुख+पाल] **ऐसी पालकी जिसका ऊपरी भाग शिवालय के शिखर-सा हो।** उ.—तजि सुख-पाल रह्यौ गहि पाइ—५-४।

सुख-पुरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुख+पुरी] **स्वर्ग, बैकुंठ।**

सुखपूर्वक—क्रि. वि. [सं.] **सुख से।**

सुखप्रद—वि. [सं.] **सुख देनेवाला।**

सुखमन—संज्ञा स्त्री. [सं. सुषुम्ना] **'सुषुम्ना' नाड़ी।**

सुखमा—संज्ञा स्त्री. [सं. सुषमा] (१) **शोभा, छवि।** (२) **राधा की सखी एक गोपी।** उ.—(क) कहि राधा किन हार चुरायो।''' ''''। सुखमा सीला अवधा नंदा बृन्दा जमुना सारि—१५८०। (ख) सुखमा पदुल द्वार ही ठाढ़ी—२०८१।

सुखमानी—वि. [सं. सुखमानिन्] **हर अवस्था या स्थिति में सुखी रहनेवाला।**

सुख-मुख—वि. [सं.] **सुंदर बातें करनेवाला।**

सुख-रात्रि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दिवाली की रात।**

सुखरास, सुखरासि, सुखरासी—वि. [सं. सुख+राशि] **जो सर्वथा सुखमय हो।** उ.—(क) सो बारिज सुख-रास—१-३३९। (ख) मीत हमारे परम मनोहर कमलनयन सुखरासी—३३१४।

सुखलाना, सुखलानो—क्रि. स. [हिं. सुखीन] **सुखाना।**

सुखवंत, सुखवंता—वि. [सं. सुखवत्] (१) **सुखी, प्रसन्न।** (२) **सुख देनेवाला, सुखद।**

सुखवत—क्रि. स. [हिं. सुखवना, सुखाना] **सुखाता है।** उ.—(क) सोभित सिथिल बसन मनमोहन सुखवत स्रम के पागे—६८६। (ख) मुख के पवन परस्पर सुखवत गहे पानि पिय जारो—२२७५।

सुखवन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूखना] **किसी चीज के सूखने पर हो जानेवाली छीज या कमी।**

संज्ञा पुं. **स्याही सुखाने की बालू।**

सुखवना, सुखवनो—क्रि. स. [हिं. सुखाना] **सुखाना।**

सुखवा—संज्ञा पुं. [हिं. सुख] **सुख, आनंद।**

सुखवादी—वि. [सं. सुख+वादिन्] **भोग विलास में ही जीवन का सुख समझनेवाला, विलासी।**

सुखवार—वि. [सं. सुख+हिं. वार] (१) **सुखी, प्रसन्न।** (२) **सुख से ही रहने का अभ्यस्त।**

सुखबास—संज्ञा पुं. [सं.] सुख का स्थान।

सुख-सार—संज्ञा पुं. [सं. सुख+सागर] सुख निधान।
उ.—सूरदास स्वामी सुख-सागर—१०-१०२।

सुखसाध्य—वि. [सं.] जो सुख से किया जा सके।

सुख-सार—संज्ञा पुं. [सं.] मोक्ष, मुक्ति।

सुख-सेज, सुख-सेज्या—संज्ञा स्त्री. [सं. सुख+शैय्या] वह शैया जो बहुत सुखदायिनी हो। उ.—कमल-नैन पोढ़े सुख-सेज्या—२-२६८।

सुख-स्वप्न—संज्ञा पुं. [सं.] भावी सुख या सिद्धि संबंधी कोई सुखद योजना या कल्पना।

सुखांत—वि. [सं.] (१) जिसका अंत या परिणाम सुखकर हो। (२) जिस (काव्य, नाटक या कथा) के अंत में सुखपूर्ण घटना, जैसे संयोग, अभीष्ट सिद्धि, आदि हो।

सुखाधार—वि. [सं.] जिस पर सुख निर्भर हो।
संज्ञा पुं. स्वर्ग।

सुखाना—क्रि. स. [हिं. सूखना] (१) किसी गीली चीज को धूप या हवा में अथवा आग के पास इस प्रकार रखना कि उसकी नमी या आर्द्रता दूर हो जाय। (२) नमी या आर्द्रता दूर करना। (३) दुर्बल बनाना।
क्रि. अ. [हिं. सूखना] (१) नमी या आर्द्रता न रह जाना। (२) जल न रहना या कम हो जाना। (३) रोग, चिंता आदि से दुर्बल हो जाना। (४) भय से सन्न होना।
क्रि. अ. [हिं. सुख] (१) अच्छा या भला लगना। (२) अनुकूल या सहज होना।

सुखानी—क्रि. अ. [हिं. सूखना] रोग, चिंता आदि से दुर्बल हो गयी। उ.—तज्यौ मूल साखा से पत्रनि सोच सुखानी देहु—२३४३।

सुखानो—क्रि. स., अ. [हिं. सुखाना] सुखाना।

सुखान्यो, सुखान्यौ—क्रि. अ. हिं. सूखना] दुर्बल हो गया। उ.—तनु तप तेज सुखान्यौ—३१२७।

सुखारा—वि. [सं. सुख+हिं. आरा] (१) सुखी, प्रसन्न। (२) सुख देनेवाला, सुखद। (३) सुख से होनेवाला।

सुखारि, सुखारी—वि. [हिं. सुखारा] सुखी, प्रसन्न। उ. मुयौ असुर सुर भये सुखारी—७-२।

सुखारो—वि. [हिं. सुखारा] (१) सुखी, प्रसन्न। (२) सुखद। (३) सहज, सुगम।

सुखार्थी—वि. [सं. सुखार्थिन्] (१) सुख चाहनेवाला। (२) सुख में ही रमा रहनेवाला, विलासी।

सुखाला, सुखाली—वि. [सं. सुख+हिं. आला] (१) सुख या आनंददायक। (२) सहज, सुगम।

सुखावह—वि. [सं.] (१) सुखद। (२) सहज।

सुखाश—वि. [सं.] जिसे सुख की आशा हो।

सुखाशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] आनंद की आशा।

सुखाश्रय—वि. [सं.] जिस पर सुख निर्भर हो।

सुखासन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आसन जिस पर बैठने में सुख मिले। (२) पालकी।

सुखिआ—वि. [हिं. सुखी] प्रसन्न, आनंदित।

सुखिरा—वि. [हिं. सुखी] (१) सुखी, प्रसन्न। (२) सुख देनेवाला, सुखद। उ.—जनु सीतल सौं तप्त सलिल दै सुखित समोइ करे—९-१७१।
वि. [हिं. सूखना] सूखा हुआ, शुष्क।

सुखिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सुखी होने का भाव। (२) सुख, आनंद।

सुखिया—वि. [हिं. सुखी] प्रसन्न, आनंदित।

सुखिर—संज्ञा पुं [देश.] साँप का बिल, बाँबी।

सुखी—वि. [सं. सुखिन्] (१) जिसे सब सुख प्राप्त हों। (२) प्रसन्न, आनंदित।

सुखेन—अव्य. [सं.] सुख से, सुखपूर्वक।
संज्ञा. पुं. [सं. सुषेण] एक बानर जो वरुण का पुत्र, बाली का ससुर और सुग्रीव का राजवैद्य था। उ.—(क) दौनागिरि पर आहि संजीवन बैद सुखेन (सुषेन) बताई—९-१४९। (ख) सुग्रीव बिभीषन जामवंत। आनंद सुखेन (सुषेन) केदार संत—९-१६६।

सुखैन, सुखैना—वि. [सं. सुख+अयन] सुख देनेवाला।

सुखैहै—क्रि. अ. [हिं. सूखना] (चिंता आदि से) दुर्बल हो जायगा। उ.—तुम बिनु मोकों देखि सुखैहै—२६४९।

सुख्याति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्रसिद्धि। (२) यश।

सुगंध—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) अच्छी महक या गंध, सुवास, सौरभ। (२) वह वस्तु जिसकी गंध सुन्दर हो। उ.—(क) याकैं अंग सुगन्ध लगावहु—५-३।

(ख) चंदन अगर सुगंध और घृत बिधि करि चिता बनायौ—९-५० ।

वि. **जिसमें सुंदर गंध हो ।** उ.—सीतल सलिल सुगन्ध पवन सुख-तरु बंसीबट—५८६ ।

सुगंधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सौरभ ।**

वि. **सुगंधयुक्त, सुगंधित ।**

सुगंधित—वि. [सं. सुगंधि] **जिसमें सुंदर गंध हो ।**

सुगंधी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुगंधि] **सौरभ ।**

वि. [सं. सुगंधिन्] **जिसमें सुंदर गंध हो ।**

सुगत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **महात्मा बुद्ध का एक नाम ।** (२) **बुद्ध धर्मानुयायी, बौद्ध ।**

सुगति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मुक्ति, मोक्ष ।**

सुगना—संज्ञा पुं. [हिं. सुग्गा] **तोता, कीर ।**

सुगम—वि. [सं.] (१) **जहाँ या जिसमें जाना या पहुँचना सरल हो ।** (२) **जो सहज में जाना, किया या पाया जा सके ।** उ.—भक्त जमुने सुगम, अगम औरै—१-२२२ । (३) **जो सरलता से हो सके, सहज ।** उ.—जब जब दीननि कठिन परी । जानत हौं करुनामय जन कौं तब तब सुगम करी—१-१६ ।

सुगमता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आसानी, सरलता ।**

सुगम्य—वि. [सं.] **जिसमें सरलता से प्रवेश हो सके ।**

सुगर, सुगल—संज्ञा पुं. [सं. सु+हिं. गला] **सुग्रीव ।**

सुगात—संज्ञा पुं. [सं. सु+गात] **सुंदर शरीर ।** उ.—आपु जबहिं द्वारे ह्वै निकसत देखत सबै सुगात—१२२२ ।

सुगान—संज्ञा पुं. [सं. सु+गान] **सुंदर गीत ।** उ.—गावहिं मंगल सुगान, नीके सुर नीकी तान—१०-९६ ।

सुगाना—क्रि. अ. [सं. शोक] (१) **दुखी होना ।** (२) **बिगड़ना, अप्रसन्न होना ।**

क्रि. अ. [देश.] **संदेह करना ।**

सुगानी—क्रि. अ. [हिं. सुगाना] **बिगड़ी, अप्रसन्न या रुष्ट हुई ।** उ.—सूर स्याम के संग न जैहौं जा कारन तू मोहिं सुगानी—१२५५ ।

सुगुरा—वि. [सं. सुगुरु] **जिसे अच्छे गुरु से मंत्र, दीक्षा या शिक्षा मिले ।**

सुगैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुग्गा] **अँगिया, चोली ।**

सुग्गा—संज्ञा पुं. [सं. शुक] **तोता, कीर ।**

सुग्रिव, सुग्रीव—वि. [सं. सुग्रीव] **सुंदर ग्रीवावाला ।**

संज्ञा पुं. (१) **वानरराज बालि का भाई जो उसके बाद राजा बना और जिसने श्रीराम को रावण के जीतने में सहायता दी थी ।** उ.—पहुँचे आइ निकट रघुबर कैं सुग्रिव आयौ धाई—९-१०२ । (२) **इंद्र ।** (३) **शंख ।**

सुघट—वि. [सं.] (१) **सुडौल, सुंदर ।** (२) **जो सहज में बन या होसके ।**

सुघटित—वि. [सं. सुघट] **जो सुडौल या सुंदर रूप में बनाया गया या निर्मित हो ।**

सुघड़, सुघर—वि. [सं. सुघट] (१) **सुडौल, सुंदर ।** (२) **(हाथ के काम में) निपुण, कुशल ।** उ.—सब्द संग मृदंग मिलवत सुघर नंदकुमार—पृ० ३४६ (४५) ।

सुघड़ई, सुघरई—संज्ञा स्त्री. [हिं० सुघड़+ई] (१) **अच्छी बनावट, सुडौलता ।** (२) **कुशलता, निपुणता ।**

सुघड़ता, सुघरता, संज्ञा स्त्री [हिं. सुघड़+ता] (१) **अच्छी बनावट, सुडौलता ।** (२) **दक्षता, कुशलता ।**

सुघड़पन, सुघरपन—संज्ञा पुं. [हिं. सुघड़+पन] (१) **अच्छी बनावट, सुंदरता ।** (२) **निपुणता, दक्षता ।**

सुघड़ाई, सुघराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुघड़+आई] (१) **अच्छी बनावट, सुडौलता ।** उ.—अंग दिखाइ गई हँसि प्यारी, सुरति-चिन्हनि की सुघराई—२१८४ । (२) **कुशलता, निपुणता ।**

सुघड़ाया, सुघराया—संज्ञा पुं. [हिं. सुघड़+आया] (१) **अच्छी बनावट, सुंदरता ।** (२) **दक्षता, कौशल ।**

सघड़ी, सुघरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+हिं. घड़ी] **शुभ समय या साइत ।**

वि. स्त्री. [हिं. सुघड़] **सुडौल, सुंदर ।**

सुघड़ी, सुघरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सु+घड़ी] **अच्छी या शुभ घड़ी, साइत या समय ।**

वि. स्त्री. [हिं. सुघड़] **सुडौल, सुंदर ।**

सुघोष—वि. [सं.] **सुंदर स्वर या कंठवाला ।**

सुचंग—संज्ञा पुं. [डिं.] **घोड़ा, अश्व ।**

सुचंद, सुचंद्र—वि. [सं. सु+चंद्र] **उत्तम श्रेष्ठ ।**

संज्ञा पुं. **पूर्णिमा का चाँद ।**

सुच—वि. [सं. शुचि] (१) **पवित्र ।** (२) **स्वच्छ ।**

सुचना—क्रि. स. [सं. संचय] इकट्ठा करना।
क्रि. अ. एकत्र या संचित होना।
सुचरित, सुचरित्र—वि. [सं.] उत्तम आचरण वाला।
सुचरिता—वि. [सं.] सती, साध्वी।
सुचा—वि. [सं. शुचि] (१) पवित्र। (२) स्वच्छ।
संज्ञा स्त्री. [सं. सूचना] (१) सूचना। (२) चेतना।
सुचान—संज्ञा स्त्री. [हिं. सोचना] (१) सोचने की क्रिया या भाव (२) सूझ, विचार। (३) सुझाव, सूचना।
सुचाना, सुचानो—क्रि. स. [हिं. सोचना] (१) सोचने को प्रवृत्त करना। (२) दिखना। (३) ध्यान आकृष्ट करना।
सुचार—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+हिं. चाल] (१) अच्छी चाल। (२) उत्तम आचरण।
वि. [सं. सुचारु] सुंदर, मनोहर। उ.—सांख्यायन से बहुत महामुनि सेवत चरन सुचार - सारा. ५७।
सुचारु—वि. [सं.] बहुत सुंदर।
सुचाल—संज्ञा स्त्री. [सं.सु+हिं. चाल] (१)अच्छी चाल। (२) उत्तम आचरण।
सुचाली—वि. [हिं. सुचाली] (१) अच्छी चाल वाला। (२) अच्छे आचरण वाला।
सुचि—वि. [सं. शुचि] (१) पवित्र। उ.—दिन दस लौं जलकुंभ साजि सुचि दीप-दान करवायौ—९-५०। (२) स्वच्छ। उ.—बृन्दा बिपिन बिसद जमुना-तट सुचि ज्यौनार बनाई—४१६।
सुचिकरमा—वि. [सं. शुचिकर्म] पुण्य कार्य या पवित्र आचरण करनेवाला।
सुचित—वि. [सं. सुचित्त] (१) जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। (२) निश्चिंत। उ.—अबहिं निबछरो समय सुचित ह्वै हम तो निधरक कीजै—१-१९१। (३) एकाग्र, स्थिर, सावधान। उ.—तब पहिचानि जानि प्रभु को भृगु परम सुचित मन कीन्हौं—२९७१।
सुचितई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुचित] (१) फुरसत, छुट्टी। (२) निश्चिंतता। (३) एकाग्रता, स्थिरता।
सुचिती—वि. [हिं. सुचित] जिसका चित्त दुविधा में न होकर, स्थिर हो। (२) निश्चिंत।
सुचित्त—वि. [सं.] (१) (किसी कार्य से) निवृत्त। (२) निश्चिंत। (३) एकाग्र, स्थिर (४) स्थिर चित्तवाला।
सुचिमंत, सुचिमत—वि. [सं. शुचि+मत] शुद्ध या पवित्र आचरणवाला, सदाचारी।
सुचिमन—वि. [सं. शुचि+मन] पवित्र मन वाला।
सुचिर—वि. [सं.] (१) पुराना। (२) स्थायी।
सुची—संज्ञा स्त्री. [सं. शची] इंद्र-पत्नी शची।
वि. [सं. शुचि] पवित्र। उ.—जमुना, तोहिं बहुयौ क्यौं भावै।........। तेरौ नीर सुची जो अब लौं खार-पनार कहावै - ५६१।
सुचेत—वि. [सं. सुचेतस्] चौकन्ना, सावधान।
संज्ञा पुं. [सं. सु+हिं. चेत] चेतना, ध्यान। उ.—बुद्धि सोचति त्रिया ठाढ़ी नेक नहीं सुचेत—२१८७।
सुचेता—वि. [हिं. सुचेत] चौकन्ना, सतर्क।
सुच्चा, सुच्चो—वि. [सं. शुचि] (१) पवित्र, शुद्ध। (२) जो जूठा न किया गया हो। (३) ठीक, निर्दोष। (४) असली, सच्चा।
सुच्छंद—वि. [सं. स्वच्छंद] (१) स्वतंत्र। (२) निरंकुश।
सुच्छ—वि. [सं. स्वच्छ] (१) निर्मल। (२) पवित्र।
सुच्छम—वि. [सं. सूक्ष्म] बहुत छोटा, पतला या थोड़ा।
सुछंद—वि. [सं. स्वच्छंद] (१) स्वाधीन, स्वतंत्र। उ.—सब सखि-सखा सुछंद—१०-२०३। (२) निरंकुश।
सुजक्का—वि. [?] सुंदर, मनोहर।
सुजघन संज्ञा स्त्री. [सं. सु+हिं. जघन] सुंदर जाँघ। उ.— जानु सुजघन करभ-कर आकृति १-६९।
सुजन—संज्ञा पुं. [सं.] भला या सज्जन पुरुष। उ.—(क) सुजन-बेष रचना अति जनमनि आयौ पर धन हरतौ—१-२०३। (ख) बिप्र सुजन चारन-बंदीजन सकल नंद-गृह आये—१०-८७।
संज्ञा पुं. [सं. स्वजन] परिवार के लोग, आत्मीय-जन। उ.—हरषित सुजन सखा त्रिय बालक कृष्ण मिलन जिय भाए।
सुजनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] भलमंसी, सौजन्य।
सुजन्मा—वि. [सं. सुजन्मन्] अच्छे कुल में जन्मा हुआ।
सुजल—संज्ञा पुं. [सं. सु+जल] अच्छा या पवित्र जल। उ.

—सूर सुजल सींचियै कृपानिधि निज जन चरन-तटी १-९८।

सुजस—संज्ञा पुं. [सं. सुयश] सुंदर कीर्ति। उ.—(क) जाकौ सुजस सुनत अरु गावत जैहैं पाप-वृन्द भजि भरहरि—१-३१२। (ख) निगम जाकौ सुजस गावत —१-३३५।

सुजागर—वि· [सं. सु+जागर=प्रकाशित होना] (१) प्रकाशमान। (२) सुंदर, सुशोभित।

सुजात—वि. [सं.] (१) उत्तम कुल में उत्पन्न, कुलीन। (२) सुंदर, मनोहर।

सुजाति, सुजाती—संज्ञा स्त्री. [सं. सुजाति] उत्तम जाति या कुल।

वि. उत्तम जाति या कुल का। उ.–यह पाती लै जाहु मधुपुरी जहाँ बसैं स्याम सुजाती—२९८१।

सुजातिया—वि. [सं. सुजाति]उत्तम कुल का।

वि. [सं. स्व+जाति] अपनी जाति का।

सुजान—वि. [सं. सज्ञान] (१) चतुर, समझदार। उ.—(क) दीनानाथ कृपाल परम सुजान जादौराइ—३-३। (ख) सुक कह्यो, सुनि यह नृपति सुजान—५-४। (२) निपुण, कुशल, प्रवीण। (३) विज्ञ, पंडित। उ.—निगम जाकौ सुजस गावत सुनत संत सुजान—१-२३५। (४) सज्जन।

संज्ञा पुं. (१) पति। (२) प्रेमी। (३) ईश्वर।

सुजानता—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुजान+ता] (१) चतुरता, समझदारी। (२) निपुणता (३) विज्ञता। (४) सज्जनता।

सुजानी—वि. [हिं. सुजान] विज्ञ, पंडित, ज्ञानी।

सुजोग—संज्ञा पुं. [सं. सु+योग] (१) अच्छा या उपयुक्त अवसर। (२) अच्छा मेल या सुयोग।

सुजोधन—संज्ञा पुं. [सं. सुयोधन] 'दुर्योधन' का एक नाम।

सुजोधा—वि. [सं. सु+योद्धा] बहुत वीर, बड़ा योद्धा। उ.—जग्य समय सिसुपाल सुजोधा अनायास लै जोति समोयौ—१-४४।

सुजोर—वि. [सं. सु+फ़ा. जोर] (१) मजबूत, दृढ़। (२) बलवान, बली।

सुज्ञ—वि. [सं.] पंडित, विद्वान।

सुज्ञान—संज्ञा पुं. [सं.] उत्तम या श्रेष्ठ ज्ञान। उ.—जो कछु हरि सौं सुन्यौ सुज्ञान, कह्यौ मयत्रेय ताहि बखान—४-३।

सुज्ञानवान–वि. [सं. सुज्ञान+हिं. वान] बहुत ज्ञानी। उ.—पुत्र सुज्ञानवान मोहिं दीजै—४-३।

सुझाइ—क्रि. स. [हिं. सूझना] दिखायी देता है।

मुहा. कछु न सुझाइ—(१) कुछ दिखायी नहीं देता है। (२) कुछ समझ में नहीं आता, कोई उपाय नहीं सूझता। उ.—तब तैं अब गाढ़ी परी मोकौं कछु न सुझाइ—५८९।

सुझाना, सुझानो—क्रि. स· [हिं. सूझना] (१) दिखाना, देखने को प्रवृत्त करना। (२) दूसरे की समझ या ध्यान में लाना।

सुझाव—संज्ञा पुं. [हिं. सुझाना+आव] (१) सुझाने की क्रिया या भाव। (२) किसी नयी या विशेष बात, पक्ष या अंग की ओर ध्यान दिलाना। (३) इस प्रकार ध्यान दिलाने के लिए कही गयी बात।

सुटुकना, सुटुकनो—क्रि. अ. [अनु.] (१) चुपचाप चले या खिसक जाना। (२) सिकुड़ना।

क्रि. स. सुटका या चाबुक मारना।

सुठ—वि. [हिं. सुठि] (१) सुंदर। (२) उत्तम। (३) बहुत।

सुठहर—संज्ञा पुं. [सं. सु+हिं. ठहर=स्थान] अच्छा या बढ़िया स्थान।

सुठान—वि. [सं. सु+हिं. उठान] (१) जिसकी उठान अच्छी हो। (२) सुडौल, सुंदर।

सुठार—वि. [सं. सुष्ठु, प्र. सुट्ठ] सुडौल, सुंदर। उ.—चपल नैन नासा बिच सोभा अधर सुरंग सुठार—१६८४।

सुठि—वि. [सं. सुष्ठु, प्रा. सुट्ठ] (१) बढ़िया, अच्छा। उ.—(क) बहुत प्रकार किये सब व्यंजन अनेक बरन मिष्ठान। अति उज्ज्वल कोमल सुठि सुंदर देखि महरि मन मान—१०-८९। (२) सुडौल, सुंदर। (३) बहुत, अत्यंत। उ.—(क)केहरि नख उर पर रुरै सुठि सोभाकारी—१०-१३४। (ख) स्रवन सुनत सुठि मीठे बोल—६३०। (ग) सुठि सुठान ठोड़ी अति सुन्दर सुन्दरता को सार—२०६२।

सुठैना, सुठौन—वि. [हिं. सुठि] (१) अच्छा, बढ़िया। (२) सुडौल, सुंदर। (३) बहुत, अत्यंत।

सुड़कना—क्रि. अ. [अनु.] नाक या मुँह से 'सुड़'-'सुड़' शब्द करके ऊपर खींचना।

सुड़सुड़ाना—क्रि. स. [अनु.] 'सुड़-सुड़' शब्द करना।

सुडौल—वि. [सं. सु+हिं. ढंग] सुंदर बनावट या आकारवाला, जिसके सब अंग ठीक हों।

सुढंग—संज्ञा पुं. [सं. सु+हिं. ढंग] (१) उत्तम रीति या ढंगवाला। (२) सुघड़ता, सुंदरता।

सुढंगी—वि. [हिं. सुढंग] (१) उत्तम रीति या ढंगवाला। (२) सुघड़, सुंदर। (३) उच्च कोटि का।

सुढर—वि. [सं. सु+हिं. ढलना] दयालु, कृपालु।

वि. [सं. सु+हिं. ढार] सुडौल, सुंदर।

सुढार, सुढारु—वि. [सं. सु+हिं. ढलना] (१) सुंदर ढला या बना हुआ। उ.—(क) (पालनौ अति सुन्दर) .... आनि धरयौ नंद-द्वार अतिहीं सुंदर सुढार—१०-४१। (ख) डाँडी खचि पचि-पचि मर्कत मय पाँति सुढार—२२८९। (२) सुडौल, सुंदर। उ.—(क) कर ऊपर लै राखि रहे हरि, देत न मुक्ता परम सुढार—१०-१७३। (ख) कनक बरन सुढार सुन्दरि सकुचि बदन दुराइ—६७६।

सुतंत, सुतंतर—वि. [सं. स्वतंत्र] स्वाधीन।

सुतंत्र—वि. [सं.] अच्छा तंत्र या शासन।

वि. [सं. स्वतंत्र] स्वच्छंद, स्वाधीन।

सुतंत्रि—वि. [सं.] (वीणा आदि) तंत्र (=तार)-वाद्य बजाने में निपुण या प्रवीण।

सुत—संज्ञा पुं. [सं.] बेटा, पुत्र। उ.—धनसुत-दारा काम न आवैं—१-८०।

वि. (१) पार्थिव। (२) उत्पन्न, जात।

सुतधार—संज्ञा पुं. [सं. सूत्रधार] (१) नाट्यशाला का प्रधान जो नाटक के अभिनय का सारा प्रबंध करता है। (२)(किसी कार्य या योजना का) संचालक या प्रबंधक।

सुतना—क्रि. अ. [हिं. सूतना] (१) ऊपर से नीचे की ओर हाथ फिरना। (२) डोरे आदि पर माँझ चढ़ना। (३) नुचना, खसोटा जाना। (४) साफ होना। (५) सूख जाना, चुस जाना।

सुतनु—वि. [सं.] सुंदर शरीरवाला (वाली)।

सुतप्त—वि. [सं.] गरम, गुनगुना। उ.—देखत सुतप्त जल तरसैं—१०-१८३।

सुत-याग—संज्ञा पुं. [सं.] वह यज्ञ जो पुत्र की कामना से किया जाय।

सुतर—संज्ञा पुं. [अ. शुतुर] ऊँट।

वि. [सं.] जो सरलता से तैर कर पार की या किया जा सके।

सुतरनाल—संज्ञा स्त्री. [अ. शुतुर+फ़ा. नाल] तोप जो ऊँट पर रखकर चलायी जाय।

सुतरां—अव्य. [सं. सुतराम्] (१) इसलिए, अत:। (२) और भी, अपितु।

सुतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. तुरही] तूर, तुरही (बाजा)।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सुतली] सुतली।

सुतल—संज्ञा पुं. [सं.] सात पाताल लोकों में से एक। उ.—(क) अतल बितल अरु सुतल, तलातल और महातल जान—सारा. ३१। (ख) सुतल लोक में थिर करि थाप्यो—सारा. ३४३।

सुतली—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूत] सूत या सन की बटी हुई पतली डोरी।

सुतवाँ—वि. [हिं. सूतवाँ] सुडौल।

सुतहर, सुतहार—संज्ञा पुं. [सं. सूत्रकार] (१) बढ़ई। उ.—(क) कनक-रतन-मनि पालनौ गढ़्यौ काम सुतहार—१०-४२। (ख) मोतिनि झालरि नाना भाँति खिलौना रचे बिस्वकर्मा सुतहार—१०-८४। (२) कारीगर, शिल्पकार, शिल्पी।

सुतहा—वि. [हिं. सूत] सूत का, सूत-संबंधी।

सुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] बेटी, पुत्री। उ.—द्रुपद-सुताहिं दुष्ट दुरजोधन सभा माहिं पकरावै—१-१२२।

सुता-सिंधु—संज्ञा स्त्री. [सं. सिंधु+सुता] लक्ष्मी। उ. चक्रत होइ नीर में बहुरि बुड़की दई सहित सुता-सिंधु तहँ दरस पाए—२५७०।

सुताना—क्रि. स. [हिं. सूतना] 'सूतने' को प्रवृत्त करना, 'सूतने' का काम दूसरे से कराना।

सुतार—संज्ञा पुं. [सं. सूत्रकार] (१) बढ़ई। (२) कारीगर, शिल्पकार, शिल्पी।

वि. [सं. सु+तार] **अच्छा, उत्तम।**

संज्ञा पुं. **सुभीता, सुविधा का समय।**

सुतारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुतार] (१) **बढ़ईगीरी।** (२) **कारीगरी, शिल्प-कौशल या कला।**

संज्ञा पुं. (१) **बढ़ई।** (२) **शिल्पकार, शिल्पी।**

सुतिन—वि. [सं. सुतनु] **सुन्दरी, रूपवती।**

सुतिनी—वि. [सं.] **पुत्रवती (स्त्री)।**

सुतिया—संज्ञा. स्त्री. [देश.] **गले का एक गहना, हँसली।**

सुतिहर, सुतिहार—संज्ञा पु. [सं. सूत्रकार] (१) **बढ़ई।** उ.—(क) मोतिनि झालरि नाना भाँति खिलौना रचे बिस्वकर्मा सुतिहार (सुतहार)—१०-८४। (ख) बिस्वकर्मा सुतिहार स्रुतिधार सुलभ सिलप दिखावनो —२२८०। (२) **शिल्पकार, शिल्पी।**

सुती—वि. [सं. सुतिन] **जिसके पुत्र हो।**

सुतीक्षण, सुतीच्छन, सुतीखन, सुतीछन—संज्ञा. पुं. [सं. सुतीक्ष्ण] **अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवासकाल में श्री रामचन्द्र से मिले थे।** उ.—दरसन दियौ सुतीछन गौतम पंचवटी पग धारे—सारा. २५६।

वि. (१) **बहुत तीखा।** (२) **बहुत तेज धारवाला।**

सुतीछा—[सं. सुतीक्ष्ण] (१) **बहुत तीखा।** (१) **बहुत तेज धारवाला।**

सुतुही—संज्ञा स्त्री. [सं. शुक्ति] **सीपी।**

सुतोष—वि. [सं.] **जिसे संतोष हो गया हो।**

सुत्ता—वि. [हिं. सोना] **सोया हुआ, निद्रित।**

सुथना—संज्ञा. पुं. [हिं. सूथन] **एक तरह का पायजामा।**

सथनिया, सुथनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूथन] **स्त्रियों के पहनने की सूथन।**

सुथरा—वि. [सं. स्वच्छ] **साफ, स्वच्छ।**

सुथरी—वि. स्त्री. [हिं. सुथरा] **स्वच्छ।** उ.—सौइ रही सुथरी सेजरिया—१०-२४६।

सुथराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुथरा] **स्वच्छता।**

सुथरापन—संज्ञा पुं. [हिं. सुथरा+पन] **सफाई।**

सुथराशाह—संज्ञा पुं. **एक महात्मा जो गुरु नानक के शिष्य थे।**

सुथरेशाही—संज्ञा स्त्री. [सुथराशाह] (१) **सुथराशाह का संप्रदाय।** (२) **इस संप्रदाय का अनुयायी।**

सुथल—संज्ञा पुं. [सं. सु+स्थल] **सुंदर स्थान।** उ.—हंस मानो मानसर अरुन अंबुज सुथल निरखि आनंद करि हरषि गाजै—२६१४।

सुथिर—वि. [सं. सु+स्थिर] **अत्यंत स्थिर या दृढ़।** उ.—अति पूरन पूरे पुन्य रोपी सुथिर थुनी—१०-२४।

सुदंत—वि. [सं. सुदन्त] **सुंदर दाँतोंवाला।**

सुदक्षिण, सुदच्छिन—संज्ञा पुं. [सं. सुदक्षिण] **एक राजा।** उ.—नृप सुदक्षिण जरचौ जरी बाराणसी —१०-३४५।

सुदक्षिणा, सुदच्छिना—संज्ञा स्त्री. [सं. सुदक्षिणा] (१) **राजा दिलीप की पत्नी का नाम।** (२) **श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।**

सुदत, सुदत्—वि. [सं. सुदत्] **सुंदर दाँतोंवाला।**

सुदती—वि. स्त्री. [सं.] **सुंदर दाँतोंवाली।**

सुदरसन, सुदर्शन—संज्ञा पुं. [सं. सुदर्शन] (१) **विष्णु के चक्र का नाम।** उ.—(क) जब जब भीर परी संतनि कौं चक्र सुदरसन तहाँ सँभारचौ—१-१४। (ख) चक्र सुदरसन रच्छा करै—९-५। (२) **शिव।** (३) **एक प्रकार का चूर्ण जिसका प्रयोग विषम ज्वर में होता है।**

वि. **जो देखने में सुंदर हो, प्रिय दर्शन।**

सुदरसनपानि, सुदर्शनपाणि—संज्ञा पुं. [सं. सुदर्शन-पाणि] **(सुदर्शनचक्रधारी) विष्णु।**

सुदरसना, सुदर्शना—वि. स्त्री. [सं. सुदर्शन] **जो देखने में सुंदरी हो, प्रियदर्शनी।**

सुदल—वि. [सं.] **अच्छे दल या पत्तोंवाला।**

सुदामा—संज्ञा पुं. [सं. सुदामन्] (१) **एक निर्धन ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सहपाठी था और जिसे उन्होंने इंद्र-जैसा वैभव प्रदान किया था।** उ.—(क) रंक सुदामा कियौ इंद्र-सम—१-९५। (ख) चारि पदारथ दिए सुदामा तंदुल भेंट धरचौ—१-१३३। (२) **श्रीकृष्ण का एक गोप सखा।** उ.—(क) सुबल, श्रीदामा, सुदामा वै भए इक ओर—१०-२४४। (ख) बछरा चारन चले गुपाल। सुबल सुदामा अरु श्रीदामा संग लिए सब ग्वाल—४१०। (३) **कंस का एक माली जो श्रीकृष्ण को मथुरा में मिला था।** उ.—धनुषसाला चले नंदलाला।.........। पुनि सुदामा कह्यौ, गेह मम अति

निकट कृपा करि तहाँ हरि चरन धारे—ना. ३६६५।

सुदास—वि. [सं.] **अपने आराध्य की भली-भाँति पूजा-उपासना करनेवाला।**

सुदि—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुदी.] **शुक्ल पक्ष।**

सुदिन—संज्ञा पुं. [सं. सु+दिन] (१) **अच्छा या शुभ दिन।** उ.—बिप्र बुलाइ नाम लै बूझ्यौ, रासि सोधि इक सुदिन धरयौ—१०-८८। (२) **सुख-सौभाग्य के दिन।**

सुदिव—वि. [सं.] **चमकीला, दीप्तिमान।**

सुदी—संज्ञा स्त्री. [सं. शुक्ल या शुद्ध] **शुक्ल पक्ष।**

सुदीपति, सुदीप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. सुदीप्ति] **खूब उजाला, अत्यंत प्रकाश।**

सुदूर—वि. [सं.] **बहुत दूर।**

सुदृढ़—वि. [सं.] **बहुत मजबूत।**

सुदृष्टि—संज्ञा पुं. [सं.] **गिद्ध।**

संज्ञा स्त्री. (१) **उत्तम दृष्टि।** (२) **कृपापूर्ण दृष्टि।** उ.—(क) कृपानिधान, सुदृष्टि हेरियै, जिहिं पतितनि अपनायौ—१-२०५। (ख) वहौ बिरद की लाज दीनपति करि सुदृष्टि देखौ—३४०१।

वि. (१) **दूरदर्शी।** (२) **दूरदृष्टिवाला।**

सुदेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सुंदर या उत्तम देश।** (२) **उचित या उपयुक्त स्थान।**

वि. (१) **सुंदर, मनोहर।** (२) **उत्तम, श्रेष्ठ।**

सुदेष्ण—संज्ञा पुं. [सं.] **रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।**

सुदेस—संज्ञा पुं. [सं. सुदेश] (१) **सुंदर या उत्तम देश।** (२) **उचित या उपयुक्त स्थान।**

वि. **सुंदर।** उ.—(क) कटि तट पीत बसन सुदेस—६३३। (ख) अति सुदेस मृदु चिकुर हरत मन—१०-१०८। (ग) घन तन स्याम सुदेस पीत पट—२५६६।

संज्ञा पुं. [सं. स्वदेश] **अपना देश।**

सुदेसी—वि. [सं. स्वदेशी] **अपने देश का।**

सुदेह—संज्ञा पुं. [सं.] **सुंदर शरीर।**

वि. **सुंदर, मनोहर।**

सुदैव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सौभाग्य।** (२) **सुसंयोग।**

सुद्ध—वि. [सं. शुद्ध] (१) **पवित्र** (२) **स्वच्छ, निर्मल।** उ.—जा जल सुद्ध निरखि सन्मुख ह्वै सुंदर सरसिज नैनी—९-११। (३) **उत्तम, श्रेष्ठ।** उ.—मुख मृदु बचन जानि मति जानहु, सुद्ध पंथ पग धरतौ—१-२०३। (४) **ठीक, सही।** (५) **खालिस, जिसमें मिलावट न हो।** (६) **निर्दोष।**

सुद्धाँ—अव्य. [सं. सह] **मिलाकर, समेत।**

सुद्धा—संज्ञा स्त्री. [सं. शुद्धा] **एक प्रकार की भक्ति।** उ.—माता भक्ति चारि परकार। सत रज तम गुन सुद्धा सार—३-१३।

वि. **जिसमें 'शुद्धा' भक्ति हो।** उ.—सुद्धा भक्त मोहि कौं चाहै। भक्तिहुँ कौं सो नहिं अवगाहै—३१३।

सुद्धि—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुध] (१) **याद, स्मृति।** उ.—देह-गेह की सुद्धि बिसारी—११६१। (२) **खबर, पता।** उ.—गोपी हुतीं प्रेमरस माती तिन ताकौं कछु सुद्धि न पायौ—२३१६।

संज्ञा स्त्री. [सं. शुद्धि] (१) **'शुद्ध' होने या करने का कार्य या भाव।** (२) **स्वच्छता।**

सुद्युम्न—संज्ञा पुं. [सं.] **वैवस्वत मनु का पुत्र जो शिव जी के शाप से स्त्री हो गया था और बुध की आराधना से शापमुक्त हुआ था।** उ.—हरि ता पुत्री कौं सुत करयौ। नाम सुद्युम्न ताहि रिषि धरयौ—९-२।

सुद्रष्ट—वि. [सं. सुदृष्ट] **दयालु, कृपालु।**

सुधंग—संज्ञा पुं. [हिं. सुढंग] **उत्तम ढंग या रीत।**

वि. **सुंदर, मनोहर।** उ.—(क) गति सुधंग सों भाव दिखावत—पृ. ३४६ (४४)। (ख) गति सुधंग नृत्यत ब्रजनारी—पृ. ३४६ (४३)। (ग) कबहुँ चलत सुधंग गति सौं—पृ. ३५२ (८०)।

सुध—संज्ञा स्त्री. [सं. शुद्ध] (१) **याद, स्मृति।**

मुहा. सुध दिलाना—**स्मरण कराना।** सुध न रहना—**भूल जाना।** सुध बिसरना, बिसराना, बिसारना, भुलाना या भूलना—**(किसी को) भूल जाना।**

(२) **होश, चेतना।**

मुहा. सुध बिसरना—**होश में न रहना, अचेत होना।** सुध बिसराना—**बेहोश या अचेत करना।**

सुध न रहना—**बेहोश या अचेत हो जाना।** सुध सँभालना—**होश में आना।**

(३) **खबर, हाल, पता।**

मुहा. सुध लेना—**पता या हाल-चाल जानना।** सुध रखना—**खोज-खबर, पता या चौकसी रखना।** सुध लीन्हीं—**खोज-खबर की, पता लगाया।** उ.—प्रद्युमन को बिलंब भयो तँब सत्राजित सुध लीन्ही।

वि. [सं. शुद्ध] (१) **पवित्र।** (२) **स्वच्छ।** (३) **ठीक, सही।** (४) **खालिस।** (५) **निर्दोष।**

संज्ञा स्त्री. [सं. सुधा] **अमृत।**

सुधनक—वि. [सं.] **बड़ा अमीर या धनी।**

सुधना, सुधनो—क्रि. अ. [सं. शुद्ध] **ठीक या शुद्ध किया जाना या होना।**

सुधनु—संज्ञा पुं. [सं.] **उत्तम या श्रेष्ठ धन।** उ.—धर्म-सुधन लुटयौ—१-६४।

सुधन्वा—वि. [सं.] **अच्छा धनुर्धर।**

सुध-बुध—संज्ञा स्त्री. [सं. शुद्ध+बुद्धि] **होश-हवास, चेत, ज्ञान, चेतना।**

मुहा० सुध-बुध खोना (जाती रहना, ठिकाने न होना या मारी जाना)—**होश-हवास जाते रहना, बुद्धि ठिकाने न रह जाना।**

सुधमना—वि. [हिं. सुध=होश+मन] (१) **जो होश में हो, सचेत।** (२) **सावधान, सतर्क।**

सुधरतौ—क्रि. अ. [हिं. सुधरना] **बन जाता, ठीक हो जाता।** उ.—अबकौ जन्म, आगिलौ तेरौ, दोऊ जन्म सुधरतौ—**१-२९७।**

सुधरना, सुधरनो—क्रि. अ. [हिं. शोधन या हिं. सु+ढरना] (१) **बिगड़ी या सदोष वस्तु का ठीक होना।** (२) **बिगड़ी आदतों वाले का ठीक या भला होना।**

सुधराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुधरना] **सुधरने, सुधारने या सुधरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।**

सुधर्म—वि. [सं.] (१) **पुण्य कर्म करनेवाला, धर्मपरायण।** (२) **अच्छा, बढ़िया।**

संज्ञा पुं. **पुण्य कर्तव्य, उत्तम धर्म।**

सुधर्मनिष्ठ—वि. [सं.] **अपने धर्म पर दृढ़ रहनेवाला।**

सुधर्मा—वि. [सं. सुधर्म्मन्] **धर्मनिष्ठ, धर्मपरायण।** उ.—(क) बात कहन कों यों आवत है बड़े सुधर्मा धर्मंहिपाल—१११२। (ख) फँसिहारिनि, बटपारिनि हम भईं, आपुन भए सुधर्मा भारी—११६०।

सुधर्मी—वि. [सं. सुधर्मिन्] **धर्मनिष्ठ, धर्मपरायण।**

सुधवाना, सुधवानो—क्रि. स. [हिं. सुधरना] **दोष-त्रुटि दूर करना, ठीक या शोधन कराना।**

क्रि. स. [हिं. सुध+दिलाना] **सुध दिलाना, याद या स्मरण कराना।**

क्रि. अ. **सुध आना, याद या स्मरण होना।**

सुधाँ—अव्य. [हिं. सुद्धाँ] **मिलाकर, समेत।**

सुधांग—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

सुधांशु, सुधांसु—संज्ञा पुं. [सं. सुधांशु] **चंद्रमा।**

सुधा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अमृत।** उ.—(क) मनु उभै अंभोज-भाजन लेत सुधा भराइ—६२७। (ख) अधर-सुधा उपदंस सीक सुचि बिधु पूरन सुखवास सचारे—२२७१। (२) **जल।** (३) **दूध।** (४) **मकरंद।** (५) **धरती, पृथ्वी।** (६) **शहद, मधु।** (७) **चूना।**

सुधाइ—क्रि. स. [हिं. सुधवाना] **(लग्न, कुंडली आदि) ठीक या निश्चित कराना।** उ.—नीकौ सुभ दिन सुधाइ झूलौ हो झुलैया—१०-४१।

सुधाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूधा=सीधा] **सीधापन।**

सुधाकंठ—संज्ञा पुं. [सं.] **कोयल, कोकिल।**

सुधाकर—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

सुधाघट—संज्ञा पुं. [सं. सुधा+घट] **चंद्रमा।** उ.—मुक्ता-माल नंदनंदन उर अर्ध सुधाघर कान्ति।

सुधातु—संज्ञा पुं. [सं.] **सोना, स्वर्ण।**

सुधादीधिति—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

सुधाधर—संज्ञा पुं. [सं. सुधा+धर] **चंद्रमा।**

वि. [सं. सुधा+अधर] **जिसके अधरों में अमृत जैसा स्वाद हो।**

सुधाधरण—संज्ञा. पुं. [सं. सुधा+धरण] **चंद्रमा।**

सुधाधवल—वि. [सं.] **चूने जैसा सफेद।**

सुधा-धाम—संज्ञा. पुं. [सं. सुधा+धाम] **चंद्रमा।**

सुधाधार—संज्ञा. पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

सुधाधी—वि. [सं. सुधा] **सुधा के समान।**

सुधाधौत—वि. [सं.] **चूने से पुता हुआ।**

सुधाना—क्रि. स. [हिं. सुध] **याद दिलाना।**

क्रि. अ. **याद या स्मरण आना।**

क्रि. अ. (१) **ठीक करने या शोधने का काम दूसरे से कराना।** (२) **(लग्न, कुंडली आदि) ठीक या निश्चित कराना।**

सुधानिधि—संज्ञा. पुं. [सं.] **चंद्रमा।** उ.—मनहुँ सुधा-निधि बर्षत घन पर अमृत धाइ चहुँ ओर। (२) **सागर, समुद्र।**

वि. **अत्यंत मधुर।**

सुधामयूख—संज्ञा. पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

सुधार—संज्ञा पु. [हिं. सुधरना] (१) **सुधरने या सुधारने की क्रिया या भाव, संस्कार, संशोधन।** (२) **बिगड़ी हुई बात बनाना या ठीक करना।** (३) **अधिक अच्छा और उपयोगी बनाना।**

सुधारक—संज्ञा पुं. [हिं. सुधार+क] (१) **त्रुटि या दोषों को दूर करनेवाला, संशोधक।** (२) **धार्मिक या सामाजिक उन्नति या सुधार के लिए प्रयत्न या आंदोलन करनेवाला।**

सुधारना, सुधारनो—क्रि. स. [हिं. सुधरना] (१) **त्रुटि, दोष आदि दूर करना।** (२) **अधिक अच्छा या उपयोगी बनाना।**

सुधारनी—वि. [हिं. सुधार] **सुधारनेवाली।**

सुधारवादी—वि. [हिं. सुधार+वादी] **जो सुधार करने के पक्ष में हो।**

सुधारश्मि—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

सुधारा—वि. [हिं. सूध=सीधा+आरा] **भोला-भाला, सरल प्रकृति का, निष्कपट।**

सुधासुर—संज्ञा पुं. [सं.] **राहु ग्रह।**

सुधारि—क्रि स. [हिं. सुधारना] **सुधारकर।**

प्र. लीजै सुधारि—**(बिगड़ी दशा या स्थिति को) ठीककर या बना लीजिए।** उ.—लीजै जनम सुधारि—७-३।

सुधारी—वि. [हिं. सूधा=सीधा+आरी] **भोला-भाला, सरल प्रकृति का।** उ.—फाटक दै कै हाटक माँगत भोरो निपट सुधारी—३३४०।

क्रि. स. [हिं. सुधारना] **(बिगड़ी दशा या स्थिति को) ठीक किया या बनाया।** उ.—ब्रह्मा महादेव तैं को बड़, तिनकी सेवा कछु न सुधारी—१-३४।

सुधारू—वि. [हिं. सुधारना] **सुधारक, संशोधक।**

सुधाश्रवा—संज्ञा पुं. [सं. सुधा+श्रवण] (१) **अमृत बरसानेवाला।** (२) **चंद्रमा।**

सुधासदन—संज्ञा पुं. [सं. सुधा+सदन] **चंद्रमा।**

सुधासुर—संज्ञा पुं. [सं.] **राहु नामक ग्रह।**

सुधि—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुध] (१) **याद, स्मृति।** उ.—(क) गरभ-बास अति त्रास अधोमुख तहाँ न मेरी सुधि बिसरी—१-११६। (ख) कोटिक कला काछि दिखराई जल-थल सुधि नहिं काल—१-१५३। (ग) तब जग्न्या-र्जुन की सुधि आई—३९१। (घ) जबहीं आवति सुधि सखिनि की रहत अति सरमाइ—१६१५। (२) **होश, चेत, ज्ञान, चेतना।** उ.—(क) प्रेम-बिबस कछु सुधि न अपनियाँ—१०-१०६। (ख) मुरछि परी तन-सुधि गई—५८९। (ग) मैमत भए जीव जल-थल के तनु की सुधि न सँभार—पृ० ३४७ (५२)। (घ) मन सुधि गई सँभारति नाहिंन—२५४५।

मुहा. सुधि बिसराई—**होश में नहीं रही।** उ.—जसुमति तब अकुलाइ परी धर तनु की सुधि बिसराई—६०४। सुधि भुलाई—**होश-हवास भुला दिये, बहुत बिकल कर दिया।** उ.—स्याम तब सांग को काटि करि साल्व की सुधि भुलाई—१० उ.-५६।

(३) **खोज-खबर, पता।** उ.—(क) पाइ सुधि मोहिनी की सदासिव चले—८-१०। (ख) ल्यावहु जाइ जनक-तनया-सुधि रघुपति कौं सुख देहु—९-७४।

सुधि-बुधि—संज्ञा. स्त्री. [सं. शुद्धि-बुद्धि] **होश-हवास, चेत।** उ.—स्रवन सुतत सुधि-बुधि सब बिसरी—७४२।

सुधियाना, सुधियानो—क्रि. अ. [हिं. सुधि+आना] **याद आना, स्मरण हो आना।**

क्रि. स. **याद दिलाना, स्मरण कराना।**

सुधी—वि. [सं.] (१) **चतुर, समझदार, बुद्धिमान।** उ.—सुधी निपट देखियत तुमकौं तातैं करियत साथ—६७४। (१) **विद्वान, पंडित।** (३) **धार्मिक।**

संज्ञा स्त्री. **अच्छी और तीव्र बुद्धि।**

सुधीर—वि. [सं.] **जो बहुत धैर्यवान हो।**

सुधौटी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुधा] **सुधा-पात्र।**
सुध्यो, सुध्यौ—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुध] **सुध, याद या स्मृति भी।** उ.—(क) बैननि हू सुध्यौ भूली—१४७४। (ख) कबहुँक स्याम करत इहाँ को मन कैधौं चित्त सुध्यौ बिसराई—३११८।
सुनंद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रीकृष्ण का एक पार्षद।** (२) **बलराम का मूसल।**
सुनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रीकृष्ण का एक पुत्र।**
सुनंदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **श्रीकृष्ण की एक पत्नी।**
सुनइये—क्रि. स. [हिं. सुनाना] **सुनाइए, सुनने को प्रवृत्त कीजिए।** उ.—बिना नाद संगीत सुधानिधि मूढ़हिं कहा सुनइयै—३३१७।
सुन-किरवा—संज्ञा पुं. [हिं. सोना+किरवा=कीड़ा] **हरे पंखवाला एक कीड़ा।**
सुनगुन—वि. [हिं. सुन्न+गुन्न] **उदास और मौन।**
संज्ञा स्त्री. (१) **बहुत धीरे-धीरे की गयी बात, फुसफुसाहट, कानाफूसी।** (२) **वह भेद जो इधर-उधर की बातें सुनने से ज्ञात हो।**
सुनत—क्रि. स. [हिं. सुनना] (१) **सुनता है, सुनते हैं।** उ.—(क) निगम जाको सुजस गावत सुनत संत सुजान—१-२३५। (ख) जाको सुजस सुनत अरु गावत—१-३१२। (२) **सुनकर, सुनते (ही)।** उ.—घूम रहीं जित-जित दधि मथनी, सुनत मेघ-धुनि लाजै—१०-१३९। (ख) सुनत-सुनत सुधि-बुधि सब बिसरी—७४२।
सुनति—क्रि. स. [हिं. सुनना] **सुनती है।**
सुनन—संज्ञा पुं. [हिं. सुनना] **'सुनने' की क्रिया या भाव।**
यौ. कहन-सुनन—**जो केवल कहने-सुनने के लिए हो, वस्तुतः न हो।** उ.—सतजुग लाख बरस की आइ।'''''''। कलिजुग सत संबत रहि गई। सोऊ कहन-सुनन कौं रही—१-२३०।
सुनना, सुननो—क्रि. स. [सं. श्रवण] (१) **कही हुई बात या शब्द का ज्ञान कानों से प्राप्त करना, श्रवण करना।** (२) **किसी के कथन पर ध्यान देना।** (३) **भली-बुरी बातें श्रवण करना।**
सुनय—संज्ञा पुं. [सं.] **उत्तम नीति।**
सुनयन—वि. [सं.] **सुंदर नत्रोंवाला।**
संज्ञा पुं. **हिरन, मृग।**
सुनरिया, सुनरी [सं. सुंदरी] **सुंदरी नारी।**
सुनवाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुनना+वाई] (१) **सुनने की क्रिया या भाव।** (२) **आरोप, अभियोग आदि का विचार के लिए सुना जाना।**
सुनवैया—वि. [हिं. सुनना+वैया] (१) **सुननेवाला।** (२) **सुनकर ध्यान देनेवाला।**
सुनसान—वि. [सं. शून्य+स्थान] (१) **निर्जन, एकांत, जनहीन।** (२) **वीरान, उजाड़।**
संज्ञा पुं. सन्नाटा।
सुनहरा, सुनहला—वि. [हिं. सोना] **सोने के रंग का।**
सुनहा—संज्ञा पुं [सं. श्वान] **कुत्ता।**
सुनहु—क्रि. स. [हिं. सुनना] **श्रवण करो।** उ.—(क) हमारी जन्मभूमि यह गाउँ। सुनहु सखा सुग्रीव बिभीषन अवनि अजोध्या नाउँ—९-१६५। (ख) सुनहु सखी सतरात इते पर हम पर भौंहैं तानत—पृ. ३२८ (७७)।
सुना—वि. [हिं. सुनना] **जो (कथन आदि) श्रवण किया गया हो।**
मुहा. सुना-अनसुना कर देना (करना)—**कोई बात सुनकर भी उस पर ध्यान न देना या टाल जाना।** कहा-सुना—**पारस्परिक वार्तालाप में प्रसंगवश जो कुछ उचित-अनुचित कह-सुन दिया गया हो।**
सुनाइ—क्रि. स. [हिं. सुनाना] (१) **सुनाकर।** (२) **सुनायी देता है।**
क्रि. अ. [सं. सु+हिं. नवाना] **अच्छी तरह झुकाकर।**
सुनाई—क्रि. स. [हिं. सुनाना] **(कहकर) श्रवण करायी।** उ.—ग्वालनि हरि की बात सुनाई—५८५।
संज्ञा स्त्री. (१) **सुनने की क्रिया या भाव।** (२) **आरोप, अभियोग आदि का विचार या निर्णय करने के लिए सुना जाना।**
सुनाए—क्रि. स. [हिं. सुनाना] **श्रवण कराये।** उ.—ताहि या बिधि बचन कहि सुनाए—१-२७१।
सुनाद—संज्ञा पुं. [सं.] **शंख।**

वि. **सुन्दर शब्द या ध्वनिवाला।**

सुनाना—क्रि. स. [हिं. सुनना] (१) **किसी को सुनने को प्रवृत्त करना।** (२) **खरी-खोटी कहना।**

सुनाभ, सुनाभी—वि. [सं. सुनाभि] **सुन्दर नाभिवाला।**

सुनाम—संज्ञा पुं. [सं.] **यश, कीर्ति, ख्याति।**

सुनामा—वि. [सं.] **यशस्वी, विख्यात।**

सुनायो, सुनायौ—क्रि. स. [हिं. सुनाना] **श्रवण कराया।** उ.—(क) सूरदास सो बरनि सुनायो—१-२२७। (ख) नृपति बचन यह सबनि सुनायौ—१०-६१।

सुनार—संज्ञा पुं. [सं. स्वर्णकार] **सोने-चाँदी के गहने बनानेवाला कारीगर।** उ.—बिसकर्मा सुतहार रच्यौ काम ह्वै सुनार—१०४१।

सुनारिनि, सुनारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुनार] **सुनार की स्त्री।** उ.—सुनारिनि ह्वै जाउँ निरखि नैननि सुख देऊँ—पृ. ३४९ (६१)।

सुनारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुनार] **सुनार का काम।**

सुनावत—क्रि. स. [हिं. सुनाना] **सुनाता है, श्रवण कराता है।** उ.—(क) क्यों न सुनावत निज दुख मोहिं—१-२९०। (ख) सूर-स्याम के कृत्य जसोमति, ग्वाल-बाल कहि प्रगट सुनावत—४८०।

सुनावन—संज्ञा पुं. [हिं. सुनाना] **सुनाने की क्रिया या भाव।** उ.—सूर सो दिन कबहुँ तौ ह्वैहै मुरली सब्द सुनावन—२७५२।

सुनावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुनाना] (१) **दूरस्थ प्रदेश से किसी संबंधी की मृत्यु का आया हुआ समाचार।** (२) **ऐसा समाचार आने पर किया जाने वाला शोक, स्नान आदि।**

सुनावै—क्रि. स. [हिं. सुनाना] **दूसरे को श्रवण कराये।** उ.—यह लीला जो सुनै सुनावै—४-१२।

सुनासिक—वि. [सं.] **जिसकी नाक सुन्दर हो।**

सुनि—क्रि. स. [हिं. सुनना] **सुनकर।** उ.—नरकौ भज्यौ नाम सुनि मेरौ—१-९६।

प्र. सुनि न जात—**सुना नहीं जाता, सुनना सहन नहीं होता।** उ.—सुनि न जात घर-घर को घेरा काहू मुख न समाऊँ—१२२२।

सुनियत—क्रि. स. [हिं. सुनना] **सुना जाता है, सुनते हैं।** उ.—(क) सुनियत हैं, तुम बहु पतितनि कौं दीन्हौ है सुखधाम—१-१७९। (ख) जाकी चरन-रेनु की महि मैं सुनियत बहुत बड़ाई—९-४०। (ग) मुष्टिक अरु चानूर सैल सम सुनियत हैं अति भारे—२५६०। (घ) श्रीकंत सिधारौ मधुसूदन पै, सुनियत है वै भीत तुम्हारे—१० उ.-६०।

सुनियन—संज्ञा पुं. [हिं. सुनना] **सुनने की क्रिया या भाव।**

प्र. सुनियन लागे—**सुनने लगे, सुनायी देने लगा।** उ.—संख कुलाहल सुनियन लागे—९-१२५।

सुनिहौं—क्रि. स. [हिं. सुनना] **सुनूँगा, श्रवण करूँगा।** उ.—कबहिं कमल-मुख सुनिहौं उन बोलनि—१०७८।

सुनिश्चित—वि. [सं.] **भली-भाँति या दृढ़ता से निश्चित किया हुआ।**

सुनी—क्रि. स. [हिं. सुनना] **श्रवण की।** उ.—श्री भागवत सुनी नाहिं स्रवननि—१-६५।

सुनीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **उत्तम नीति।** (२) **राजा उत्तानपाद की पत्नी जो ध्रुव की माता थी।** उ.—उत्तानपाद पृथ्वीपति भयौ।........। नाम सुनीति बड़ी तिहिं दार।........। अरु सुनीति कैं ध्रुव सुकुमार—४-९।

सुनीथ—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रीकृष्ण का एक पुत्र।**

सुनील—वि. [सं.] **बहुत गहरा नीला।**

सुनु—क्रि. स. [हिं. सुनना] **(ध्यान से) श्रवण करो।** उ.—सुनु सिख कंत, दंत तृन धरि कैं स्यौं परिवार सिधारौ—९-११४।

सुनेत्र—वि. [सं.] **सुन्दर नत्रवाला।**

सुनै—क्रि. स. [हिं. सुनना] **श्रवण करो।** उ.—यह लीला जौ सुनै-सुनावै—४-१२।

सुनैया—वि. [हिं. सुनना] **सुननेवाला।**

सुनैहैं—क्रि. स. [हिं. सुनना] **सुनायँगे, श्रवण करायँगे।** उ.—खेलत तैं तब आइ भूख कहि मोहिं सुनैहैं—५८९।

सुनोची—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का घोड़ा।**

सुनौ—क्रि. स. [हिं. सुनना] **श्रवण करो।** उ. थक्यौ बीच बिहाल बिहवल सुनौ करुनामूल—१-९९।

सुन्न—वि. [सं. शून्य] **निर्जीव, जड़वत्, स्पंदनहीन।** उ.—महा कठोर सुन्न हिरदै कौ—१-१८६।

संज्ञा पुं. **सिफर, शून्य ।**

सुन्नत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **खतना ।**

सुन्नसान—वि. [हिं. सूनसान] (१) **निर्जन,** । (२) **वीरान ।**

सुन्ना—संज्ञा पुं. [सं. शून्य] **सिफर, बिंदी ।**

सुन्नी—संज्ञा पुं. [अ.] **मुसलमानों का एक वर्ग ।**

सुन्यो, सुन्यौ—क्रि. स. [हिं. सुनना] **सुना, श्रवण किया ।** उ.—(क) सूर पतित जब सुन्यौ बिरद यह तब धीरज मन आयौ—९-१९५ । (ख) नाहीं सूर सुन्यौ दुख कबहूँ प्रभु करुनामय कंत—९-९२ ।

सुपंथ—संज्ञा पुं. [सं.] **सत्पंथ, सन्मार्ग ,**

सुपक, सुपक्क—वि. [सं. सुपक्व] (१) **खूब पका-पकाया (फल) ।** उ.—(क) दसमुख छेदि सुपक नव फल ज्यौं संकर-उर दससीस चढ़ावन—९-१३१ । (ख) सुपक बिंब सुक-खंडित मंडित अधर-सुधा-मधु लाल लई री—२११५ । (२) **खूब पकाया हुआ (व्यंजन या खाद्य-पदार्थ) ।** उ.—माखन सहित देहि मेरी मैया सुपक सुकोमल रोटी—१०-१६३ ।

सुपक्ष—वि. [सं.] **जिसके पंख सुन्दर हों ।**

सुपक्ष्मा—वि. [सं. सुपक्ष्मन्] **सुन्दर पलकोंवाला ।**

सुपच—संज्ञा पुं. [सं. श्वपच] **चांडाल, डोम ।**

सुपट—वि. [सं.] **सुंदर वस्त्रों से युक्त ।**

संज्ञा. पुं. **सुन्दर वस्त्र ।**

सुपटु—वि. [सं.] **विषय-विशेष में पारंगत ।**

सुपत—वि. [सं. सु+हिं. पत=प्रतिष्ठा] **प्रतिष्ठित, माननीय ।** उ.—वह जूठो ससि जानि बदन बिधु रच्यौ बिरंचि इहै री । सौंप्यौ सुपत बिचारि स्याम हित सु तूँ रही लटि लै री—२२७० ।

सुपत्थ—संज्ञा. पुं. [सं. सुपथ] **सन्मार्ग ।**

सुपत्र—वि. [सं.] (१) **जिसके पत्त सुंदर हों ।** (२) **जिसके पंख सुन्दर हों ।**

सुपथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सुमार्ग, सत्पथ ।** (२) **समतल मार्ग ।**

वि. [सं. सु+पथ] **समतल ।**

सुपद—वि. [सं.] (१) **सुंदर पैरोंवाला ।** (२) **तेज चलने वाला ।**

संज्ञा पुं. [सं. सु+पद] **सुंदर पैर ।**

सुपन—संज्ञा पुं. [सं. स्वप्न] **स्वप्न ।** उ.—मै कह्यौ निसि सुपन तौसौं, प्रगट भयौ सु आइ—५८० ।

सुपनक—वि. [सं. स्वप्न] **स्वप्न देखनेवाला ।**

सुपना—संज्ञा. पुं. [सं. स्वप्न] **स्वप्न ।**

सुपनाना, सुपनानौ—क्रि. स. [हिं. सपना] **स्वप्न दिखाना या देना ।**

सुपनैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. सुपना] **स्वप्न में ।** उ.—(क) लोभ-मोह तैं चेत्यौ नाहीं, सुपनैं ज्यौं डहकानौं—१-३२९ । (ख) जैसे सुपनैं सोइ देखियत तैसे यह संसार—२-३१ । (ग) सोवत महा मनो सुपने सखि अवधि निधन निधि पाई—२७८४ ।

सुपरस—संज्ञा पुं. [सं. स्पर्श] **स्पर्श ।** उ.—राम सुपरस मय कौतुक निरखि सखी सुख लूटैं—९-३२ ।

सुपर्ण—वि. [सं.] (१) **जिसके पत्ते सुंदर हों ।** (२) **जिसके पर या पंख सुंदर हों ।**

संज्ञा पुं. (१) **गरुड़ ।** (२) **पक्षी ।** (३) **किरण ।** (४) **सुन्दर पत्ता ।** (५) **सुंदर पंख ।**

सुपर्णी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **गरुड़ की माता ।**

सुपर्व—संज्ञा. पुं. [सं. सुपर्व्वन्] (१) **देवता ।** (२) **शुभ मुहूर्त या काल ।**

सुपाग—संज्ञा पुं. [सं. सु+हिं. पाग] **अच्छी पगड़ी ।** उ.—कुंचित केस मयूर चंद्रिका मंडल सुमन सुपाग—१२१४ ।

सुपात्र—संज्ञा पुं. [सं] (१) **योग्य और उपयुक्त व्यक्ति ।** (२) **सुंदर और पवित्र बर्तन ।**

सुपारी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुप्रिय] **एक वृक्ष जिसके फल के छोटे-छोटे टुकड़े पान में डालकर खाये जाते हैं ।** उ.—लौंग नारियर दाख सुपारी कहा लादे हम आवैं—११०८ ।

सुपास—संज्ञा पुं. [देश.] **आराम, सुख, सुभीता ।**

सुपासी—वि. [हिं. सुपास] **सुख देनेवाला ।**

सुपीत—वि. [सं.] **गहरे पीले रंग का ।**

सुपीन—वि. [सं.] **बहुत मोटा या बड़ा ।**

सुपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **अच्छा और योग्य पुत्र ।** उ.—धन्य सुपुत्र पिता पन राख्यौ—९-१५१ ।

सुपुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सुंदर पुरुष ।** (२) **सत्पुरुष, सज्जन पुरुष ।**

सुपुर्द—वि. [हिं. सपुर्द] किसी को सौंपा हुआ।

सुपूत—वि. [सं. सु+हिं. पूत] अच्छा पुत्र, सुपुत्र।

सुपूती—संज्ञा स्त्री. [हिं. सपूत] (१) 'सुपुत्र' होने का भाव। (२) अच्छे पुत्रों की माता।

सुपेत, सुपेद, सुफेद—वि. [हिं. सफेद] सफेद।

सुपेती, सुपेदी, सुफेदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सफेद] (१) सफेदी। (२) बिछौना। (३) गद्दा, तोशक। (४) रजाई, लिहाफ।

सुप्त—वि. [सं.] (१) सोया हुआ। (२) ठिठुरा हुआ। (३) मुँदा हुआ (जैसे फूल)। (४) सुस्त। (५) जिसकी क्रिया या चेष्टा रुकी हुई हो, निष्क्रिय, अकर्मण्य।

सुप्तता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सुप्त होने का भाव। (२) नींद, निद्रा।

सुप्ति—संज्ञा स्त्री.[सं.] (१) नींद, निद्रा। (२) औंघाई। (३) अंग की निश्चेष्टा।

सुप्रज्ञ—वि. [सं.] बहुत बुद्धिमान।

सुप्रतिष्ठ—वि. [सं.] (१) जिसका खूब आदर-सम्मान हो। (२) सुप्रसिद्ध।

सुप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) अच्छा मान-सम्मान। (२) सुप्रसिद्ध।

सुप्रभ—वि. [सं.] (१) विशेष प्रभा या प्रकाशयुक्त। (२) सुंदर, सुरूप।

सुप्रभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सुन्दर प्रकाश। (२) अग्नि की सात जिह्वाओं में एक।

सुप्रभात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सुन्दर प्रातःकाल। (२) मंगलसूचक प्रभात।

सुप्रसन्न—वि. [सं.] (१) बहुत प्रसन्न। (२) अत्यंत विकसित। (३) बहुत निर्मल।

सुप्रसाद—वि. [सं.] अत्यंत प्रसन्न या कृपालु।

सुप्रसिद्ध—वि. [सं.] अत्यंत विख्यात।

सुप्रिय—वि. [सं.] अत्यंत प्रिय।

सुप्रीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] सच्ची प्रीति या भक्ति। उ.—औरौ सकल सुकृत श्रीपति-हित प्रतिफल-रहित सुप्रीति—२-१२।

सुप्रेम—संज्ञा पुं. [सं.] बहुत अधिक प्रेम। उ.—बाल-केलि गावति मल्हावति सुप्रेम भर—१०-१५१।

सुफल—संज्ञा पुं. [सं.] सुंदर फल। उ.—धर बिधंसि नर करत किरषि हल बारि बीज बिथरै। सहि सन्मुख तउ सीत उष्न कौं सोई सुफल करै—१-११७।

वि. (१) सुंदर फल। उ.—अंब सुफल छाँड़ि, कहा सेमर कौं धाऊँ—१-१६६। (२) सुंदर फल या फाल वाला (अस्त्र)। (३) सफल, कृतकार्य। उ.—(क) सबनि कौं अँग परसि कीन्हों सुफल ब्रत-व्यवहार—७९६। (ख) नैन सुफल भए सबके—१८१९।

सुफलक—संज्ञा पुं. [सं.] एक यादव जो अक्रूर का पिता था।

सुफलकसुत—संज्ञा पुं. [सं. सुफलक+सुत] अक्रूर जो सुफलक नामक यादव का पुत्र था और जो कंस की आज्ञा से श्रीकृष्ण, बलराम आदि को मथुरा ले गया था। उ.—सुफलकसुत मिलि ढंग ठान्यौ है, साधै बिषमन घात—३३५१।

सुफला—वि. [सं.] (१) सुंदर या बहुत फल उपजानेवाली। (२) सुंदर फल या फालवाली।

सुफेद—वि. [हिं. सफेद] सफेद।

सुबंध—वि. [सं.] अच्छी तरह बँधा हुआ।

सुबंधु—वि. [सं.] जिसके अच्छे बंधु या मित्र हों।

संज्ञा पुं. अच्छा या उत्तम भाई।

सुबचन—संज्ञा पुं. [सं. सु+वचन] श्रेष्ठ वचन। उ.—(क) हरिजू कह्यौ, सुनौ दुरजोधन सत्य सुबचन हमारे—१-२४२। (ख) सूर सुबचन मनोहर कहि कहि अनुज सूल बिसरायौ—३७४।

सुबधू—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+हिं. बधू] सुंदर या श्रेष्ठ आचरण या संस्कारवाली बधू। उ.—धन्य सुपुत्र पिताप्रन राख्यौ, धनि सुबधू कुल-लाज—९-१५१।

सुबरन—वि. [सं. सु+वर्ण] सुंदर रंगवाला।

संज्ञा पुं. [सं स्वर्ण] सोना, स्वर्ण। उ.—सुबरन थार रहे हाथनि लसि—१०-३२।

वि. सोने के। उ.—सुबरन लंक-कलस-आभूषण—९-३०।

सुबरनियाँ—वि. [सं. सु+वर्ण] सुंदर रंग की। उ.—रुचिर-चिबुक द्विज-अधर, नासिका अति सुंदर राजति सुबरनियाँ—१०-१०६।

सुबल—संज्ञा पुं. [सं.] श्रीकृष्ण का सखा एक गोप। उ.—

(क) सुबल हलधर अरु श्रीदामा करत नाना रंग—१०-२१३। (ख) सुबल श्रीदामा सुदामा वै भए इक ओर—१०-२४४।

वि. **बहुत बली या बलशाली**। उ.—सुभट अनेक सुबल दल साजे परे सिंधु के पार—९-८३।

सुबस—वि.[सं.स्व+वस] **जो अपने वश या अधिकार में हो।**

क्रि. वि. **अपने वश या अधिकार में**। उ.—(क) सुबस बसौं इहिं गाउँ—१-१८५। (ख) नैन सुबस नाहीं अलि मेरे—३४४२। (ग) तुमरे सुबस सदा अलि खेलैं—सारा. ५७६।

सुबह—संज्ञा स्त्री. [अ.] **सबेरा, प्रातःकाल।**

सुबहान अल्ला—पद [अ.] **ईश्वर धन्य है।**

सुबात—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+हिं. बात] **सुंदर बात।**

सुबास—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+हिं. बास] **सुगंध।**

संज्ञा पुं. [सं. सु+हिं. वास] **सुंदर निवासस्थान।**

संज्ञा पुं. [सं. स्व+हिं. बास] **ईश्वर या ब्रह्म का निवास स्थान, ब्रह्मलोक।**

सुबासत—क्रि. अ. [हिं. सुबासना] **महकता है।** उ.—सालन सकल कपूर सुबासत—३९६।

सुबासना—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+हिं. बास] **सुगंध।**

क्रि. स. **महकाना, सुबासित या सुगंधित करना।**

क्रि. अ. **महकना, सुगंध देना या फैलना।**

सुबासिक—वि. [सं. सु+वास] **सुगंधयुक्त।**

सुबासित—वि. [सं. सुवासित] **सुगंधित।**

सुबाहु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।** (२) **एक राक्षस का नाम।** उ.—मारिच और सुबाहु महासुर बिघन करत दिन जाम—सारा.१७९।

वि. (१) **सुंदर बाहोंवाला।** (२) **मजबूत या बलशाली बाहुओंवाला।**

सुबीता—संज्ञा पुं. [हिं. सुभीता] (१) **सुगमता।** (२) **सुअवसर।** (३) **आराम।**

सुबुक—वि. [फ़ा.] (१) **जो भारी न हो, हलका।** (२) **मनोहर, सुंदर।**

संज्ञा. पुं. **एक तरह का मजबूत घोड़ा।**

सुबुद्धि—वि. [सं.] (१) **बुद्धिमान।** (२) **श्रेष्ठ बुद्धि वाला।**

संज्ञा स्त्री. **अच्छी या उत्तम बुद्धि।**

सुबुध—वि. [सं. बुद्धि] (१) **बुद्धिमान।** (२) **सतर्क, सावधान।**

सुबू—संज्ञा पुं. [हिं. सुबह] **प्रातःकाल।**

सुबूत—संज्ञा [अ. सबूत] **प्रमाण।**

सुबेद—वि. [सं. सुवेद्य] **अच्छी तरह जानने योग्य।**

सुबोध—वि. [सं.] (१) **समझदार, बुद्धिमान।** (२) **जो सबकी समझ में आ सके।**

सुब्रह्मण्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शिव।** (२) **विष्णु।** (३) **दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रदेश।**

सुबेस—संज्ञा पुं. [सं. सु+वेश] **सुंदर वेश।** उ.—मनौ नव घन दामिनी तजि रही सहज सुबेस—६३३।

सुभ—वि. [सं. शुभ] (१) **अच्छा।** उ.—बहुरि हिमाचल कैं सुभ घरी। पारवती ह्वै सो अवतरी—४-७। (२) **मंगलप्रद, कल्याणकारी।** उ.—(क) द्वादस स्कंध परम सुभ प्रेम-भक्ति की खानि—१०-१। (ख) आछौ दिन सुनि महरि जसोदा सखिनि बोलि सुभ गान करयौ—१०-८८।

संज्ञा पुं. **मंगल, कल्याण।** उ.—संतत सुभ चाहत प्रिय जन जानि—१-७७।

सुभग—वि. [सं.] (१) **सुंदर, मनोहर।** उ.—(क) उरग-इंद्र उनमान सुभग भुज—१-६९। (ख) मेरौ सुभग साँवरौ ललना—१०-५४। (ग) इंदु बदन नव जलद सुभग तनु दोउ खग नैन कह्यौ—२५६४। (२) **सौभाग्यवती।** उ.—सोभित सुभग नंद जू की रानी—१०-७८। (३) **प्रिय लगनेवाला, रुचिकर।** (४) **सुखद, सुखदायी।**

सुभगता—संज्ञा स्त्री. [सं.](१) **सुंदरता।** (२) **सौभाग्य।** (३) **प्रेम।** (४) **(स्त्री का) सुख।**

सुभगा—वि. स्त्री. [सं.] (१) **सुंदरी।** (२) **सौभाग्यवती।** (३) **(स्त्री) जो पति को प्रिय हो।**

सुभगी—वि. स्त्री. [सं. सुभग] **सुभग।**

सुभट—संज्ञा पुं. [सं.] **अच्छा या श्रेष्ठ योद्धा।** उ.—रथ तैं उतरि चक्र कर लीन्हौ सुभट सामुहैं आए—१-२७४। (ख) सुभट अनेक सबल दल साजे परे सिंधु के

पार—९-८३। (ग) ऐसौ सुभट नहीं महिमंडल देख्यौ बालि समान—९-१३४।

वि. **वीर, बली**। उ.—संकट परैं तुरत उठि धावत, परम सुभट निज पन कौं—१-९।

सुभटवंत—वि. [सं. सुभट+वत्] **वीर, बली**। उ.—लख्यौ बलराम यह सुभटवंत है कोऊ हल मुसल सस्त्र अपनो संभारयौ—१० उ.-४५।

सुभद्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम**। (२) **सौभाग्य**। (३) **मंगल, कल्याण**।

सुभद्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **श्रीकृष्ण की बहन जिसका विवाह अर्जुन से हुआ था**।

सुभर—वि. [सं. शुभ] (१) **भला, अच्छा**। (२) **मंगलप्रद, कल्याणकारी**।

वि. [सं. सु+हिं. भरना] **अच्छी तरह भरा हुआ**।

सुभा—संज्ञा स्त्री. [सं. शुभा] (१) **सुधा**। (२) **शोभा**। (३) **हड़, हरीतकी**।

सुभाइ—संज्ञा पुं. [सं. स्वभाव] (१) **बान, आदत**। उ.—ज्यौं गयंद अन्हाइ सरिता बहुरि बहै सुभाइ—१-४५। (२) **प्रकृति, सहज गुण**। उ.—(क) सूर जो द्वै रंग त्यागै यहै भक्त सुभाइ—१-७०। (ख) संपति बिपति, बिपति तैं संपति, देह कौ यहै सुभाइ—१२६५। (ग) बिकसति लता सुभाइ आपने छाया सघन भई—२७७३।

क्रि. वि. (१) **बड़ी लगन या आत्मीयता से**। उ.—कंटक सों कंटक लै काढ़यौ अपने हाथ सुभाइ—३२२७। (२) **सहज भाव से, स्वभावतः**। (३) **बहुत सहज में**।

सुभाई—क्रि. वि. [सं. सु+भाव] **सहज भाव से**। उ.—चारिहूँ जुग करी कृपा परकार जेहि, सूरहू पर करौ तेहि सुभाई—८-९।

सुभाउ—क्रि. वि. [सं. सु+भाव] **सहज भाव से**। उ.—कछुक जनाऊँ अपुनपौ अब लौं रह्यौं सुभाउ—४३२।

संज्ञा पुं. [सं. स्वभाव] **प्रकृति, सहज गुण**। उ.—मुख प्रसन्न सीतल सुभाउ निस देखत नैंन सिराइ।

सुभाए—वि. [सं. सु+हिं. भाना] **प्रिय लगनेवाले**। उ.—इन माहिं गुन हैं सुभाए—८-८।

संज्ञा पुं. [सं. स्वभाव] **सहज गुण, स्वभाव, प्रकृति**। उ.—मुरली कौन सुकृत फल पाए।....। अंतर सून्य सदा देखियत है, निज कुल बंस सुभाए—६६१।

सुभाग—संज्ञा पुं. [सं. सौभाग्य] (१) **अच्छा भाग्य**। (२) **स्त्री की सधवा होने की दशा, सुहाग**।

वि. (१) **भाग्यवान**। (२) **सुखी**।

सुभागा—वि. [सं. सु+भाग्य] **भाग्यशाली**।

सुभागिन—वि. स्त्री. [सं. सु+भाग्य] (१) **भाग्यवती**। (२) **सुहागिन**।

सुभागी, सुभागीन—वि. [सं. सु+भाग्य] (१) **भाग्यशालिनी**। (२) **सुहागिन, सौभाग्यवती**।

सुभाग्य—संज्ञा पुं. [सं.] **परम भाग्य, सौभाग्य**। उ.—तिनके कपिलदेव सुत भए। परम सुभाग्य मानि तिन लए—३-१३।

सुभान—अव्य. [अ. सुबहान] **धन्य-धन्य**।

यौ. सुभान अल्ला—**ईश्वर धन्य है**।

सुभाना, सुभानो—क्रि. अ. [हिं. शोभना] **देखने में सुन्दर या भला जान पड़ना**।

सुभानु—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रीकृष्ण का एक पुत्र**।

वि. **सुंदर या उत्तम प्रकाश से युक्त**।

सुभाय—संज्ञा पुं. [सं. स्वभाव] (१) **बान, आदत**। (२) **सहज गुण, प्रकृति**। उ.—प्रभु कौ देखौं एक सुभाय—१-८।

संज्ञा पुं. [सं. सु+भाव] **सद्भाव**।

सुभायक—वि. [सं. स्वाभाविक] **स्वाभाविक**।

सुभाव—संज्ञा पुं. [सं. स्वभाव] (१) **बान, आदत**। उ.—जिन तन-धन मोहिं प्रान समरपे सील-सुभाव बढ़ाई—९-७। (२) **सहज गुण, प्रकृति**। उ.—(क) यहै सुभाव सूर के प्रभु कौ भक्त-बछल प्रन पारत—१-१२। (ख) तऊ सुभाव न सीतल छाँड़ै—१-११७। (ग) नील जलद पर उडुगन निरखत तजि सुभाव मनु तड़ित छपाए—१०-१०४।

क्रि. वि. **सहज भाव से**। उ.—नाभि-ह्रद रोमावली अलि चले सहज सुभाव—१-३०७।

सुभाषित—वि. [सं.] **अच्छे ढंग से कहा हुआ**।

संज्ञा पुं. **सुंदर और सत्य उक्ति**।

क्रि. वि. **सुंदर स्वर या ढंग से**। उ.—जिहिं

गीत सुभाषित गावत कहति परस्पर गासक—३२२१।

सुभाषी—वि. [सं. सुभाषिन्] **सुंदर और प्रिय बोलनेवाला, मिष्टभाषी, प्रियंवद ।**

सुभाष—वि. [सं.] **खूब चमकीला या प्रकाशवान ।**

सुभिक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **ऐसा समय जब अन्न खूब सस्ता हो, सुकाल ।**

सुभी—वि. स्त्री. [सं. शुभ] **मंगलकारिणी** । उ.—है जलधार हार मुकुता मनो बगपंगति कुमुदमाल सुभी—१४४८ ।

सुभीता—संज्ञा पुं. [देश.] (१) **आसानी, सुगमता** । (२) **सुअवसर, सुयोग** । (३) **आराम, सुख** ।

सुभीमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **श्रीकृष्ण की एक पत्नी ।**

सुभुज—वि. [सं.] **सुंदर भुजाओंवाला, सुबाहु ।**

सुभूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कौशल** । (२) **उन्नति** ।

सुभूषित—वि. [सं.] **भली-भाँति अलंकृत ।**

सुभेषज—संज्ञा पुं. [सं. सु+भेषज] **गुणकारी औषध** । उ.—सूर मिटै अज्ञान-मूरछा ज्ञान सुभेषज खाएँ—२-३२ ।

सुभोग्य—वि. [सं.] **सुख से भोगने योग्य ।**

सुभोरे—वि. [सं. सु+हिं. भोला] **सरल और सीधे स्वभाव का, निष्कपट** । उ.—सुनियत हुते तैंसे देखे सुंदर सुमति सुभोरे—२९७१ ।

सुभौटी—संज्ञा स्त्री. [सं. शोभा] **शोभा** ।

सुभ्र—वि. [सं. शुभ्र] **उजला, श्वेत ।**

सुभ्रु—वि. [सं.] **जिसकी भवें सुंदर हों ।**

सुमंगल—वि. [सं.] **अत्यंत शुभ ।**

सुमंगली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह दक्षिणा जो विवाह में सप्तपदी के बाद पुरोहित को दी जाती है ।**

सुमंत, सुमंत्र—संज्ञा पुं. [सं. सुमंत्र] **राजा दशरथ का एक मंत्री जो उनका सारथी भी था ।**

संज्ञा पुं. [सं. सु+मंत्र] **सुंदर मंत्र** । उ.—कृष्ण सुमंत्र जियावनमूरी जिन जन मरत जिवायौ—२-३२ ।

सुमंत्रित—वि. [सं.] (१) **(व्यक्ति) जिसे अच्छा परामर्श मिला हो** । (२) **(कार्य-व्यापार) जिसके संबंध में उचित परामर्श मिला हो ।**

सुमंथन—संज्ञा पुं. [सं. सु+मंथ=पर्वत] **मंदराचल ।**

सुमंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] **'सरसी' छंद का दूसरा नाम (होली के 'कबीर' प्रायः इसी छंद में होते हैं) ।**

सुम—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **चौपायों के खुर, टाप ।**

सुमत—वि. [सं.] **ज्ञानी, बुद्धिमान ।**

संज्ञा स्त्री. [सं. सुमति] (१) **अच्छी या उत्तम बुद्धि** । (२) **पारस्परिक हेल-मेल ।**

सुमति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **राजा सगर की पत्नी का नाम** । (२) **सुंदर मति, सुबुद्धि** । उ.—(क) नहिं कर लकुटि सुमति-सत्संगति जिहिं अधार अनुसरई—१-४८ । (ख) कहु री सुमति कहा तोहिं पलटी, प्रान-जिवन कैसैं बन जात—९-३८ । (३) **पारस्परिक हेल-मेल ।**

वि. **अच्छी बुद्धिवाला, बुद्धिमान** । उ.—(क) अर्जुन भीम जुधिष्ठिर सहदेव सुमति नकुल बलभारे—१-२५७ । (ख) सुनियत हुते तैसेई देखे सुन्दर सुमति सु भोरे—२९७१ ।

सुमद—वि. [सं.] **मतवाला, मदोन्मत्त ।**

सुमदा—वि. [सं.] **राधा की सखी एक गोपी** । उ.—स्यामा कामा चतुरा नवला प्रमदा सुमदा नारि—१५८० ।

सुमधुर—वि. [सं.] **बहुत मीठा या मधुर ।**

सुमन—संज्ञा पुं. [सं. सुमनस्] (१) **देवता** । (२) **पंडित, विद्वान** । (३) **फूल,पुष्प** । उ.—बंधुक सुमन अरुन पद पंकज—१०-१०४ ।

वि. (१) **सहृदय, दयालु** । (२) **मनोहर ।**

सुमनचाप—संज्ञा पुं. [सं.] **कामदेव जिसका धनुष फूलों का माना गया है ।**

सुमनस—संज्ञा पुं. [सं. सुमनस्] (१) **देवता** । (२) **विद्वान** । (३) **फूल, पुष्प ।**

वि. **प्रसन्नचित ।**

सुमना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **चमेली (पुष्प)** । (२) **कैकेयी का वास्तविक नाम** । (३) **राधा की सखी एक गोपी।** उ.—सुमना बहुला चंपा जुहिला ज्ञाना माना भाउ—१५८० ।

वि. स्त्री. (१) **सहृदय या दयालु (नारी)** । (२) **प्रसन्नचित्त (नारी)** । (३) **सुंदरी ।**

सुमनित—वि. [सं. सुमणि] **जिसमें सुंदर मणियाँ जड़ी हों।**
वि. [सं. सुमन] **जिस (पौधे) में खब फूल लगे हों।**

सुमरन—संज्ञा पुं. [सं स्मरण] **स्मरण।**
संज्ञा स्त्री. [हिं. सुमरनी] **जाप की माला।**

सुमरना—क्रि. स. [सं. स्मरण] (१) **ध्यान, चिंतन या स्मरण करना।** (२) **बार-बार नाम लेना, जपना।**

सुमरनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुमरना] **जाप करने की माला जिसमें सत्ताईस दाने होते हैं।**

सुमानस—वि. [सं.] **सहृदय।**

सुमानी—वि. [सं. सुमानिन्] (१) **बहुत घमंडी या अभिमानी।** (२) **स्वाभिमानी।**

सुमान्य—वि. [सं.] **विशेष प्रतिष्ठित।**

सुमारग, सुमार्ग—संज्ञा पुं. [सं. सु+मार्ग] (१) **साफ, चिकना और समतल मार्ग।** (२) **नैतिक दृष्टि से अच्छा मार्ग, सुपथ, सन्मार्ग।** उ.—सूर सुमारग फेरि चलैगो। बेद बचन उर धारौ—१-१९२।

सुमाल—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+हिं. माल] **सुन्दर माला।** उ.—कंठ सुमाल हार मुक्ता के हीरा रत्न अपार—३३२१।

सुमाली—संज्ञा पुं. [सं. सुमालिन्] (१) **एक राक्षस जो रावण, कुम्भकर्ण आदि का नाना था।** (२) **एक बानर का नाम।**

सुमित्र—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।**
वि. **उत्तम मित्रोंवाला।**

सुमित्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **राजा दशरथ की पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थी।**

सुमित्रानंदन—संज्ञा पुं [सं.] **लक्ष्मण और शत्रुघ्न।**

सुमिरण—संज्ञा पुं. [सं. स्मरण] **स्मरण।**

सुमिरत—क्रि. स. [हिं. सुमिरना] **स्मरण करता है या करते (ही)।** उ.—(क) सुमिरत ही तत्काल कृपानिधि बसन प्रवाह बढ़ायौ—१-१०९। (ख) मनसा करि सुमिरत है जब जब मिलते तब तब हीं—१-२८३। (ग) मन बच कर्म और नहिं जानत सुमिरत और सुमिरावत—२-१७।

सुमिरन—संज्ञा पुं. [सं. स्मरण] (१) **याद।** उ.—माया मोह ताहि नहिं गह्यौ। सुन्यौ ज्ञान सो सुमिरन रह्यौ १-२२६। (२) **नौ प्रकार की भक्तियों में एक जिसमें परमाराध्य का निरंतर ध्यान या जाप किया जाता है।** उ.—(क) सो श्रीपति जुग जुग सुमिरन-बस—१-१७। किते दिन हरि सुमिरन बिनु खोये—१-५२। (ग) नर-देही दीनी सुमिरन कौं—१-११६। (घ) सुमिरन-ध्यान कथा हरि जू की—१-३२४।

सुमिरना, सुमिरनो—क्रि. स. [हिं. सुमरना] (१) **याद या स्मरण करना।** (२) **(नाम) जपना।**

सुमिरनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुमरनी] **जाप करने की माला जो सत्ताईस दानों की होती है।**

सुमिराना, सुमिरानो—क्रि. स. [हिं. सुमिरना] (१) **याद या स्मरण कराना।** (२) **(नाम) जपने को प्रवृत्त करना।**

सुमरावत—क्रि. स. [हिं. सुमिराना] **(नाम) जपता या जपने की प्रेरणा देता है।** उ.—मन बच कर्म और नहिं जानत, सुमिरत औ सुमिरावत—२-१७।

सुमिरि—क्रि. स. [हिं. सुमिरना] (१) **याद या स्मरण करके।** उ.—कीजै कृपा सुमिरि अपनौ प्रन—१-१६४। (२) **याद या स्मरण कर या करो।** उ.—सुमिरि सनेह कुरंग कौ—१-३२५।

सुमिरिनिया, सुमिरिनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुमरनी] **नाम जपने की माला जिसमें सत्ताईस दाने होते हैं।**

सुमिरे—क्रि. स. [हिं. सुमिरना] **ध्यान या स्मरण किया।** उ.—(क) जहाँ जहाँ सुमिरे हरि जिहिं बिधि, तहँ तैसे उठि धाए—१-७। (ख) राज-रवनि सुमिरे पति-कारन असुर बंदि तैं दियै छुड़ाई—१-२४।

सुमिरौ—क्रि. स. [हिं. सुमरना] **ध्यान या स्मरण करो।** उ.—(क) सूरदास प्रभु हित कै सुमिरौ तौ आनँद करिकै नाँचौ—१-८३। (ख) हरि हरि हरि सुमिरो सब कोइ—१-२२६।

सुमिर्‍यौ, सुमिर्‍यौ—क्रि. स. [हिं. सुमिरना] **ध्यान या स्मरण किया।** उ.—(क) राम न सुमिर्‍यौ एक घरी—१-७१। (ख) मनसा करि सुमिर्‍यौ गज बपुरैं ग्राह प्रथम गति पावै—१-१२२।

सुमिल—वि. [सं. सु+हिं. मिलना] (१) **जो सहज में मिल सके या मिला हो।** (२) **जिसका ठीक-ठीक मेल बैठ**

जाय, उपयुक्त। (३) मेल-जोल या स्नेह-भाव बनाये रखनेवाला।

सुमीड़—क्रि. स. [हिं. सुमीड़ना] अच्छी तरह मीड़ या मसलकर। उ.—राहु केतु मानो सुमीड़ विधु – ३४८२

सुमीड़ना, सुमीड़नो—क्रि. स. [सं. सु+हिं. मीड़ना] अच्छी तरह मीड़ना, मसलना या मसोसना।

सुमुक्त—वि. [सं. सु+युक्त] पूर्णतया मुक्त। उ.—ऐसौ भक्त सुमुक्त कहावै। सो बहुरयौ भव-जल नहिं आवै —३-१३।

सुमुख—संज्ञा पुं. [सं.] सुन्दर मुख।

वि. (१) सुंदर मुखवाला। (२) सुंदर। (३) प्रसन्न।

सुमुखी—संज्ञा स्त्री. [सं.] सुंदर मुख वाली स्त्री। उ.—पुलकित सुमुखी भई स्याम-रस—१०-१२०।

वि. (१) सुंदर मुखवाली। (२) मनोहर। (३) प्रसन्न।

सुमूरति—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+मूर्ति] सुंदर रूपवाली मूर्ति या स्वरूप। उ.—सत्य-सील-संपन्न सुमूरति सुर-नर-मुनि भक्तनि भावै—१-६९।

सुमृत, सुमृति—संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] (१) याद। (२) किसी पुरानी बात का याद आना जो एक-एक संचारी भाव है। (३) प्रियतम से संबंधित बातों का याद आना जो पूर्व राग की दस दशाओं में एक है। (४) वे धर्म-शास्त्र जो वेदों का चिंतन-मनन करके रचे गए थे। उ.—(क) बेद, पुरान सुमृति संतनि कौं यह अधार—१-२०४। (ख) बेद, पुरान, सुमृति सबै—१-३२५। (ग) स्रुती, सुमृति, सब्र पुरान कहत मुनि बिचारी—३९४।

सुमेध, सुमेधा—वि. [सं. सुमेधस्] बुद्धिमान।

सुमेर, सुमेरु—संज्ञा पुं. [सं. सुमेरु] (१) एक पर्वत जो सोने का माना गया है। उ.—(क) पावक जथा दहत सबहीं दल तूल-सुमेरु समान—१-२६९। (ख) जौ पै राम-भक्ति नहिं जानी कह सुमेरु सम दान दिऐं—१-८९। (ग) सूरदास प्रभु दुरत दुराऐं डुँगरनि ओट सुमेर—४५८। (घ) मनु जुग जलज सुमेर सृंग तें जाई मिले सम ससिहिं सनाल—३४५३। (२) जप-माला के बीच का बड़ा दाना जहाँ से जाप आरम्भ होता है। (३) उत्तरी ध्रुव। (४) एक वृक्ष।

वि. (१) बहुत ऊँचा। (२) बहुत सुंदर।

सुमेरुवृत्त—संज्ञा पुं. [सं.] वह रेखा जो उत्तरी ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुम्रत, सुम्रित, सुम्रिति—संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] वे धर्मशास्त्र जो वेद का चिंतन मनन करके रचे गये थे। उ.—(क) स्रुति सुम्रिति देख्यौ सब जाइ—२-५। (ख) स्रुति-सुम्रिति मुनिजन सब भाषत—२-३१।

सुयश, सुयस—संज्ञा पुं. [सं. सुयश] सुकीति, सुख्याति। उ.—समरारी को सुयस कुयस की प्रगट एक ही काल —२०९७।

सुयोग—संज्ञा पुं. [सं.] सुअवसर।

सुयोग्य – वि. [सं.] बहुत योग्य।

सुयोधन—संज्ञा पुं. [सं.] दुर्योधन का एक नाम।

सुरँग, सुरंग—वि. [सं.] (१) अच्छे या सुंदर रंग का। उ.—(क) तब अंबर और मँगाइ सारी सुरंग चुनी। ………। उर अंचल उड़त न जानि सारी सुरँग सुही—१०-२४। (ख) कुलही लसति सिर स्याम सुँदर कैं बहु बिधि सुरँग बनाई—१०-१०८। (ग) बूँद परत रँग ह्वैहै फीकौ, सुरँग चूनरी भीजै—७३१। (घ) बसन सुरंग—२५६१। (२) सुंदर, सुडौल। उ.–(क) अलकावलि मुक्तावलि गूँथी डोर सुरंग बिराजै। (ख) सब पुर देखि धनुषपुर देख्यौ, देखे महल सुरंग—सारा २१०। (३) लाल रंग का। उ.—सेमर-फूल सुरँग अति निरखत मुदित होत खग-भूप—१-१०२। (४) रसपूर्ण। उ.—गौर अंग सुरंग लोचन—२५८२।

संज्ञा पुं. (१) नारंगी। (२) एक तरह का घोड़ा।

संज्ञा स्त्री. [सं. सुरंगा] (१) जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया गया मार्ग। (२) किले या दीवार को बारूद से उड़ाने के लिए बनाया गया मार्ग। (३) समुद्री चट्टानों को उड़ाने का एक यंत्र। (४) सेंध।

सुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) देवता। उ.—सुर-नर-मुनि भक्तनि भावै—१-६९। (२) सूर्य। (३) विद्वान (४) ऋषि, मुनि।

संज्ञा पुं. [सं. स्वर] आवाज, ध्वनि। उ.—(क) अति सुकंठ-सुर गावन—८-१३। (ख) गदगद सुर—

१-७२। (ग) नीके सुर नीकी तान—१०-९६। (घ) सप्तक सुर बंधान सों—१५३९।

मुहा. किसी के सुर में सुर मिलाना—**हाँ में हाँ मिलाना, चापलूसी करना**। सुर भरना—**गाने-बजाने में सहारा देने के लिए सुर अलापना या बाजे से सुर निकालना**।

सुरकंत—संज्ञा पुं. [सं. सुर+कांत] **इंद्र**।

सुरक—संज्ञा पुं. [सं. सुर] **नाक या माथे पर का वह तिलक जो भाले या बरछी के आकार का होता है**।

सुरकना, सुरकनो—क्रि. स. [अनु.] (१) **किसी तरल पदार्थ को धीरे-धीरे 'सुड़सुड़' करते हुए नाक या मुँह से पीना**। (२) **हवा के साथ धीरे धीरे ऊपर की ओर खींचना**।

सुरकरि, सुरकरी—[सं. सुरकरिन्] **देवताओं का हाथी, दिग्गज**।

सुरकार्मुक—संज्ञा पुं. [सं. सुरकार्म्मुक] **देवधनुष, इंद्रधनुष**।

सुरकुदाउँ, सुरकुदाव—संज्ञा पुं. [सं. स्वर+कु+हिं. दावँ] **स्वर बदलकर बोलने की क्रिया या भाव जिससे लोग धोखा खा जायँ**।

सुरकेतु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवता या इंद्र की ध्वजा**। (२) **इंद्र**।

सुरकोदंड—संज्ञा पुं. [सं. सुर+कोदंड] **इंद्रधनुष**। उ.—पीत बसन दामिनि मनु घन पर, तापर सुर-कोदंड—५६६।

सुरक्त—वि. [सं.] **भली-भाँति रक्षित**।

सुरक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] **उत्तम रीति से की गयी रखवाली या रक्षा**।

सुरक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अच्छी तरह की गयी रखवाली या रक्षा**।

सुरक्षित—वि. [सं.] (१) **जिसकी रक्षा अच्छी तरह की गयी हो**। (२) **जो इस रूप में स्थित हो कि कोई हानि न पहुँच सके**।

सुरक्षी—संज्ञा पुं. [सं. सुरक्षिन्] **विश्वस्त रक्षक**।

सुरख, सुरखा—वि. [हिं. सुर्ख] **लाल रंग का**।

सुरखाब—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुरख़ाब] **चकवा (पक्षी)**।

मुहा. सुरखाब का पर लगना—**अनोखापन या विशेषता होना (व्यंग्य)**।

सुरखी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुर्ख] (१) **ईंटों का महीन चून या चूर्ण**। (२) **लाली, लालिमा**। (३) **लेख आदि का शीर्षक**।

सुरखुरू—वि. [हिं. सुर्ख़ुरू] (१) **जिसके मुँह पर स्वास्थ्य की लाली या कांति हो**। (२) **सफलता से जिसके मुँह पर लाली आ जाय**। (३) **मान्य, प्रतिष्ठित**।

सुरग—संज्ञा पुं. [सं. स्वर्ग] **स्वर्ग**।

सुरगज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवताओं का या इंद्र का हाथी, ऐरावत**।

सुरगति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दैवी गति, भावी**।

सुरगबेसाँ—संज्ञा स्त्री. [सं. स्वर्ग+वेश्या] **अप्सरा**।

सुरगा—वि. [सं. सुरंग] **सुंदर**।

सुरगाय—संज्ञा स्त्री. [सं. सुर+हिं. गाय] **कामधेनु**।

सुरगायक—संज्ञा पुं. [सं.] **गंधर्व**।

सुरगिरि—संज्ञा पुं. [सं.] **सुमेरु (पर्वत)**।

सुरगी—संज्ञा पुं. [सं. स्वर्गीय] **देवता**।

सुरगुरु—संज्ञा पुं. [सं.] **देवताओं के गुरु, बृहस्पति**। उ.—गान नारद करै, बार गुरु कहै, बेद ब्रह्मा पढ़ै पौरि टेरै—९-१८९।

सुरगैया—संज्ञा स्त्री. [सं सुर+हिं. गैया] **कामधेनु**।

सुरचाप—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्रधनुष**।

सुरच्छन—संज्ञा पुं. [सं सुरक्षण] **रखवाली, रक्षा**।

सुरज—वि. [सं. सुरजस्] (फूल) **जिसमें उत्तम और प्रचुर पराग हो**।

संज्ञा पुं. [सं. सूर्य] **सूरज**।

सुरजन—वि. [सं.] **देववर्ग**।

वि. (१) **सुजन, सज्जन**। (२) **चालाक, चतुर**।

सुरझन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुलझन] **सुलझने की क्रिया या भाव**।

सुरझना, सुरझनो—क्रि. अ. [हिं. सुलझना] **सुलझना**।

सुरझाऊँ—क्रि. स. [हिं. सुलझाना] **अलग करूँ, सुलझाऊँ**। उ.—क्यों सुरझाऊँ री नंदलाल सों अरुझि रह्यौ मन मेरौ—१४७०।

सुरझाना, सुरझानो—क्रि. स.[हिं. सुलझाना] **सुलझाना।**
सुरझावति—क्रि. स. [हिं. सुरझावना] **सुलझाता है।**
उ.—बंध अबंध अमित निसि-बासर को सुरझावति आन—२८११।
सुरझावना, सुरझावनो—क्रि. स. [हिं. सुलझाना] **सुलझाना।**
सुरटीप–संज्ञा स्त्री.[सं. स्वर + हिं. टीप] **स्वर का आलाप।**
सुरत—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रति-क्रीड़ा, काम-केलि, संभोग।** उ.—(क) सुरत ही सब रैन बीती कोक पूरन रंग। (ख) सुरत समै के चिन्ह राधिका राजत रंग भरे—२११४।
संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] (१) **सुध, ज्ञान।**
मुहा. सुरत बिसारना—**सुध न रहना, विस्मृत होना।** सुरत सँभालना—**होश या सुध सँभालना।**
(२) **लौ, लगन, ध्यान।** (३) **समाधि।**
सुरतरंगिणी, सुरतंगिनि, सुरतरंगिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **आकाश गंगा।** (२) **गंगानदी।**
सुरतरु—संज्ञा पुं. [सं.] **कल्पवृक्ष।** उ.—जौ गिरिपति मसि घोरि उदधि मैं लै सुरतरु बिधि हाथ–१-१११।
सुरतरुवर—संज्ञा पुं. [सं.] **श्रेष्ठ देवतरु, कल्पवृक्ष।** उ.—सुरतरुवर की साख लेखिनी लिखत सारदा हारैं—१-१८३।
सुरतांत—संज्ञा पुं. [सं.] **रति या संभोग का अंत।**
सुरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सुर या देवता होने का भाव, देवत्व।** (२) **संभोग का सुख।**
संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति, हिं सुरत] (१) **चेतना, सुध, ज्ञान।** (२) **लौ, लगन, ध्यान।** (३) **याद।**
सुर-तात—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवताओं के पिता कश्यप।** उ.—कस्यप रिषि सुर-तात, सु लगन गनावन रे—१०-२८। (२) **देवराज इंद्र।**
सुरति—संज्ञा स्त्री. [सं. सु + रति] (१) **भोग-विलास, काम-केलि।** उ.– (क) सुरति-अंत गोपाल रीझे जानि अति सुखदाइ –६९०। (ख) अंग दिखाइ गई हँसि प्यारी सुरति चिन्हनि की सुघराई—२१६८। (२) **अत्यन्त लगन या प्रीति।** उ.—सूरदास संगति करि तिनकी जे हरि सुरति करावति—२-१७।
संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] (१) **चेत, चेतना, ज्ञान।**
मुहा. सुरति बिसारना—**चेत न रहना।** सुरति बिसारे—**होश-हवास खोये हुए।** उ.– उड़त ध्वजा तन सुरति बिसारे अंचल नहीं सँभारति-२५६१। सुरति सँभालना—**सचेत होना।** सुरति सँभारी—**होश में आयी, सचेत हुई।** उ.—पुनि रानी जब सुरति सँभारी। रुदन करन लागी अति भारी—६-५।
(२) **याद, स्मृति, सुधि।** उ.—(क) सूर स्याम की मिलनि सुरति करि मनु निरधन धन पाइ बिमोह्यौ—२४७८। (ख) नाना कुसुम लै लै अपने कर दिए मोहिं वह सुरति न जाई—२८८५। (ग) कबहुँ सुरति करत माइन की कीधौं रहे बिसराई—३४४४। (घ) छिन छिन सुरति करत जदुपति की परत न मन समुझायौ—१० उ.-७८। (३) **ध्यान।** उ.—व्रज करि अवाँ जोग ईंधन सम, सुरति आगि सुलगाए —३१९१।
संज्ञा स्त्री. [हिं. सूरत] **मूर्ति, स्वरूप।**
सुरति-कमल—संज्ञा पुं. [सं.] **शरीर के आठ कमलों या चक्रों में अंतिम जिसका स्थान मस्तिष्क में सहस्रार के ऊपर माना गया है।**
सुरति-गोपना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह नायिका जो रति-क्रीड़ा की बात अपनी सखियों से छिपाती हो।**
सुरति-रव—संज्ञा पुं. [सं.] **संभोग-काल में होनेवाली, आभूषणों की ध्वनि।**
सुरतिवंत—वि. [सं. सुरति + वान्] **कामातुर।** उ.—हरि हँसि भामिनी उर लाइ। सुरतिवंत (पाठा.सुरति-अंत) गोपाल रीझे जानि अति सुखदाइ—६९०।
सुरतिविचित्रा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह मध्या नायिका जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।**
सुरती—संज्ञा स्त्री. [सूरत (नगर)] **तंबाकू।**
सुरत्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्वर्ण।** (२) **माणिक्य।**
वि. (१) **सर्वश्रेष्ठ।** (२) **श्रेष्ठ रत्नों से युक्त।**
सुरत्यौ—संज्ञा स्त्री. [सं. सुरति] **याद या स्मृति भी।** उ.—जमुना तोहिं बहधौ क्यौं भावै। तोमैं कृष्न हेलुवा खेलै, सो सुरत्यौ नाहिं आवै—५६१।

सुरत्राता—संज्ञा पुं. [सं. सुर+त्रातृ] **विष्णु।**
सुरद—वि. [सं.] **सुंदर दाँतोंवाला।**
सुरदार—वि. [हिं. सुर+फ़ा. दार] **सुरीला।**
सुरदेवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **देवताओं की पूजनीया देवी।** उ.—आदि ब्रह्म-जननी सुरदेवी नाम देवकी बाला—१०-४। (२) **योगमाया जिसने यशोदा के गर्भ से अवतार लिया था और कंस के पटकने पर जो छूटकर आकाश में चली गयी थी।** उ.—गगन गई बोली सुरदेवी, कंस मृत्यु नियराई—१०-४।
सुरदेश—संज्ञा पुं. [सं. सुर+देश] **देवलोक, स्वर्ग।**
सुरद्रुम—संज्ञा पुं. [सं.] **कल्पवृक्ष।**
सुरद्विप—संज्ञा पुं. [सं.] **ऐरावत।**
सुरधनु, सुरधनुष—संज्ञा पुं. [सुरधनुस्] **इंद्रधनुष।**
सुरधाम—संज्ञा पुं. [सं. सुरधामन्] **स्वर्ग।**
मुहा. सुरधाम सिधारना—**मर जाना।**
सुरधामिनि, सुरधामिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **गंगा।**
सुरधामी—वि. [सं. सुरधामिन्] (१) **जो स्वर्ग में रहता हो।** (२) **स्वर्गीय।**
सुरधुनि, सुरधुनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **गंगा।**
सुरधेनु, सुरधैनु—संज्ञा स्त्री. [सं. सुर+धेनु] **कामधेनु।** उ.—सूरदास हयाँ की सरवरि नहिं कल्पबृच्छ सुर-धैनु—४६१।
सुरनदी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गंगा।** (२) **आकाशगंगा।**
सुरनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र।**
सुरनायक—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र।**
सुरनारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **देवबाला।**
सुरनाह—संज्ञा पुं. [सं. सुरनाथ] **इंद्र।**
सुरनि—संज्ञा पुं. सवि. [सं. सुर+नि] (१) **अनेक देवता।** उ.—बहुरौ ब्रह्मा सुरनि समेत। नरहरि जू कैं जाइ निकेत—७-२। (२) **स्वरों में।** उ.—सारेगम पध-निसा संसप्त सुरनि गाई—पृ. ३५२-८३।
सुरप, सुरपति, सुरपती—संज्ञा पुं. [सं. सुरपति] **इंद्र।** उ.—(क) सुरपति कौं सँताप जब भयौ। सो सुरपुर भय तैं नहिं गयौ—६-७। (ख) सुरपति पूजा करौ सवारी—१००७। सूर सुनत सुरपती उदासी—१०६।
सुर-पथ—संज्ञा पुं. [सं.] **आकाश।**
सुर-पर्वत—संज्ञा पुं. [सं.] **सुमेरु।**
सुर-पादप—संज्ञा पुं. [सं.] **कल्पवृक्ष।**
सुरपाल, सुरपालक—संज्ञा पुं. [सं. सुर+पालक] **देव-राज इंद्र।**
सुरपुर—संज्ञा पुं. [सं.] **देवलोक, स्वर्ग, अमरावती।** उ.—(क) सुरपति कौं सँताप जब भयौ। सो सुरपुर भय तैं नहिं गयौ—६-७। (ख) सुरपुर तैं आयौ रथ सजि कै रघुपति भए सवार—९-१५८।
मुहा. सुरपुर पठाना—**मार डालना।** सुरपुर पठाये—**मार डाले।** उ.—दुष्ट ये मारि सुरपुर पठाए—२६१८। सुरपुर सिधारना—**मर जाना, गत हो जाना।**
सुरपुर-केतु—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र।**
सुरपुरोधा—संज्ञा पुं. [सं. सुरपुरोधस्] **वृहस्पति।**
सुरबहार—संज्ञा पुं. [हिं. सुर+फ़ा. बहार] **एक बाजा।**
सुरबाला—संज्ञा स्त्री [सं.] **देवांगना।**
सुरबृच्छ, सुरबृच्छ—संज्ञा पुं. [सं. सुरवृक्ष] **कल्पतरु।**
सुरबेल, सुरबेली—संज्ञा स्त्री. [सं. सुर+वल्ली] **कल्पलता**
सुरभंग—संज्ञा पुं. [सं. स्वर+भंग] **प्रेम, भय, आनंद आदि से स्वर में होनेवाला कंप या परिवर्तन जो सात्विक भावों के अंतर्गत है।**
सुर-भान, सुरभानु—संज्ञा पुं. [सं. सुर+भानु] (१) **इंद्र।** उ.—राधे सो रस बरनि न जाई। जा रस कौं सुरभानु (पाठा. स्वरभानु) सीस दियौ, सु तैं पियौ अकुलाइ—ना. ३३९१। (२) **सूर्य।**
सुरभि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पृथ्वी।** (२) **गाय।** उ.—कोउ टेरत कोउ हाँकि सुरभिगन जोरि चलावत—४३१। (२) **खुशबू, सुगंध।**
वि. (१) **सुगंधित, सुवासित।** (२) **सुंदर, मनोहर।** (३) **उत्तम, श्रेष्ठ।** (४) **सदाचारी।**
सुरभित—वि. [सं.] **सुगंधित, सुवासित।**
सुरभिभक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] **हठयोग की वह क्रिया जिसमें साधक जीभ उलटकर ताल के मूलवाले छेद में लगाता और सहस्रार से निकलनेवाला अमृत पीता है।**
सुरभिमान—वि. [सं. सुरभिमत्] **सुगंधित।**
सुरभी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **खुशबू, सुगंध।** (२) **गाय।** उ.—(क) लग्यौ फिरत सुरभी ज्यौं सुत सँग—१-९।

(ख) सूर स्याम सुरभी दुही संतनि हितकारी—४०९।
(ग) इहिं बृंदावन इहिं जमुनातट ये सुरभी अति सुखद चरावत—४४९।

सुरभीपुर—संज्ञा पुं. [सं.] **गो-लोक जो श्रीकृष्ण का निवास-स्थान और सब लोकों से ऊपर माना गया है।**

सुरभूप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **इंद्र**। (२) **विष्णु**।

सुरभूरुह—संज्ञा पुं. [सं.] **कल्पवृक्ष**।

सुरभोग—संज्ञा पुं. [सं.] **अमृत**।

सुरभौन—संज्ञा पुं. [सं.सुर+भवन] (१) **मंदिर, देवालय**। (२) **सुरलोक, अमरावती**।

सुरमंडल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देव-समूह या वर्ग**। (२) **एक बाजा जिसके एक तख्ते में लगे तार मिजराब से बजाये जाते हैं।**

सुरमई—वि. [फ़ा.] **सुरमे-जैसे हल्के नीले रंग का, सफेदी लिये नीले या काले रंग का।**

संज्ञा पुं. **हल्का नीला या सफेदी लिये काला रंग।**

सुरमचू—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुरमः+चू] **आँख में सुरमा लगाने की सलाई।**

सुरमणि—संज्ञा पुं. [सं.] **चिंतामणि**।

सुरमा—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुर्मः] **एक प्रसिद्ध खनिज जो प्रायः नीले रंग का होता है और जिसका महीन चूर्ण आँखों में लगाया जाता है।**

सुरमौर—संज्ञा पुं. [सं. सुर+हिं. मौर] **विष्णु**।

सुरम्य—वि. [सं.] **अत्यंत रमणीय**।

सुरयोषित—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अप्सरा**।

सुरराइ, सुरराई—संज्ञा पुं. [सं. सुरराज] (१) **इंद्र**। (२) (२) **विष्णु**।

सुरराज, सुरराजू—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र**।

सुरराय, सुरराया, सुरराव—संज्ञा पुं. [सं. सुरराज] (१) **इंद्र**। (२) **विष्णु**।

सुररिपु—संज्ञा पुं. [सं.] **राक्षस, असुर**।

सुर-रूख—संज्ञा पुं. [सं. सुर+हिं. रूख] **कल्पवृक्ष**।

सुरल—वि. [हिं. सुरीला] **मधुर स्वरवाला**।

सुरललना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **देवबाला, देवांगना**।

सुरली—संज्ञा स्त्री. [सं.सु+हिं. रली] **सुंदर केलिक्रीड़ा**।

सुरलोक—संज्ञा पुं. [सं.] **देवलोक, स्वर्ग**।

सुरवधू—संज्ञा पुं. [सं.] **देवबाला, देवांगना**।

सुरवाजि—संज्ञा पुं. [सं.] **उच्चैश्रवा घोड़ा**।

सुरवाणी—संज्ञा पुं. [सं.] **देववाणी, संस्कृत भाषा**।

सुरवास—संज्ञा पुं. [सं.] **देवलोक, स्वर्ग**।

सुर-विटप—संज्ञा पुं. [सं.] **कल्पवृक्ष**।

सुरवीर—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र**।

सुरवृक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **कल्पतरु**।

सुरस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पानी, जल**। (२) **सुख, आनंद**। (३) **प्रेम, प्रीति**। (४) **सुस्वादु, श्रेष्ठ रस**। उ.—तेरे ही काजैं गोपाल, सुनहुँ लाड़िले लाल, राखे हैं भाजन भरि सुरस छहूँ—१०-२९५।

वि. (१) **रसीला, सरस**। (२) **सुस्वादु, स्वादिष्ट**। (३) **सुंदर**। उ.—अंग अंग भूषन सुरस ससि पूरन-कला जनु भ्राजई।

सुरसति, सुरसती—संज्ञा स्त्री. [सं. सरस्वती] **सरस्वती**।

सुरसर—संज्ञा पुं. [सं. सुर+सर] **मानसरोवर**।

सुरसरि, सुरसरित, सुरसरिता सुरसरी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुरसरित्] (१) **गंगा**। उ.—(क) जे पद-पदुम-परस जल-पावन सुरसरि-दरस कटत अघ भारे—१-९४। (ख) बसत सुरसरी तीर मंदमति कूप खनावै—२-९। (ग) साठ सहस्र सगर के पुत्र, कीने सुरसरि तुरत पवित्र—९-९। (घ) सूरदास मनो चली सुरसरी श्रीगोपाल सागर सुख संगा—१९०५।

सुरसरि-सुवन, सुरसरी-सुवन—संज्ञा पुं. [हिं. सुरसरी+सुवन] **गंगा के पुत्र, भीष्म पितामह**। उ.—सुरसुरी-सुवन रनभूमि आए—१-२७१।

सुरसाँई—संज्ञा पुं. [सं. सुर+स्वामी] (१) **विष्णु**। उ.-भक्तबछल बपु धरि नरकेहरि दनुज दह्यौ, उर दरि सुरसाँई—१-६ (२) **इंद्र**।

सुरसा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक नागमाता जो समुद्र में रहती थी और जिसने विकराल राक्षसी रूप धरकर हनुमान को समुद्र पार करते समय रोका था।** उ.—तहँ इक अद्भुत देखि निसिचरी सुरसा-मुख-बिस्तार—९-७४।

सुरसाईं—संज्ञा पुं. [सं. सुर+स्वामी] (१) **इंद्र**। (२) **शिव**। (३) **विष्णु**।

सुरसाल, सुरसालु—वि. [सं. सुर+हिं. सालना] (१) देवताओं को सतानेवाला। (२) राक्षस, असुर।

सुरसाहब—संज्ञा पुं. [सं. सुर+फ़ा. साहब] (१) देवताओं के स्वामी। (२) इंद्र। (३) शिव। (४) विष्णु।

सुरसुंदरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) अप्सरा। (२) देवकन्या।

सुर-सुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] यमुना।

सुरसुरभी—संज्ञा स्त्री. [सं.] कामधेनु।

सुरसुराना, सुरसुरानो—क्रि. अ. [अनु.] (१) कीड़ों आदि का रेंगना। (२) कुलबुलाना। (३) हलकी हलकी खुजली होना।

कि. स. हलकी खुजली उत्पन्न करना।

सुरसुराहट—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुरसुराना+आहट] (१) हलकी खुजली। (२) गुदगुदी।

सुरसुरी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) हलकी खुजली। (२) गुदगुदी।

सुरसेनप, सुरसेनपति—संज्ञा पुं. [सं. सुर+सेनापति] देव-सेना के नायक, कार्तिकेय।

सुरसैयाँ—संज्ञा पुं. [सं. सुर+स्वामी] (१) इंद्र। (२) शिव। (३) विष्णु।

सुरस्वामी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) इंद्र। (२) शिव। (३) विष्णु।

सुरहर, सुरहरा—वि. [सं. सरल] सीधा ऊपर की ओर गया हुआ।

वि. [अनु.] जिसमें 'सुर-सुर' शब्द हो।

सुरही—संज्ञा स्त्री. [हिं. सोलह] (१) सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जुआ खेला जाता है। (२) सोलह चित्ती कौड़ियों से खेला जानेवाला जुआ।

सुरांगना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) देवबाला। (२) अप्सरा।

सुरा—संज्ञा स्त्री. [सं.] शराब, मदिरा। उ.—चरनोदक कौं छाँड़ि सुधा-रस सुरा-पान अँचयौ—१-६४।

सुराई—संज्ञा स्त्री. [सं. सुर] देवतापन, देवत्व।

संज्ञा स्त्री. [सं. शूर] शूरता-वीरता।

सुराग—संज्ञा पुं. [सं. सु+राग] (१) अत्यंत प्रेम। (२) श्रेष्ठ और सुंदर राग। उ.—गावत मलारी सुराग रागिनी गिरिधरन लाल छबि सोहनो—२२८०।

संज्ञा पुं. [अ. सुराग़] पता, टोह।

सुरागाय—संज्ञा स्त्री. [सं. सुर+गाय] गाय-विशेष जिसकी पूँछ से चँवर बनता है।

सुरागार—संज्ञा पुं. [सं.सुर, सुरा+आगार] (१) देवालय। (२) मदिरालय।

सुराज—संज्ञा पुं. [सं. सु+राज्य] देश जहाँ का शासन उत्तम हो और प्रजा सुखी हो।

संज्ञा. पुं. [सं. स्व+राज्य] देश जहाँ उसके ही निवासियों का शासन हो।

सुराज्य—संज्ञा पुं. [सं.] वह राज्य जहाँ उत्तम शासन होने से प्रजा सुखी हो।

संज्ञा. पुं. [सं. स्वराज्य] वह राज्य जिस पर उसके ही वासियों का शासन हो।

सुराद्रि—संज्ञा पुं. [सं.] सुमेरु पर्वत।

सुराधिप—संज्ञा पुं. [सं.] देवराज इंद्र।

सुरानक—संज्ञा पुं. [सं.] देवताओं का नगाड़ा।

सुरानीक—संज्ञा स्त्री. [सं.] देव-सेना।

सुरापगा—संज्ञा स्त्री. [सं.] गंगा नदी।

सुरापान—संज्ञा पुं. [सं. सुरा+पान] मदिरा-पान। उ.—कही, हरि-बिमुखऽरु बेस्या जहाँ; सुरापान बधिकनि गृह तहाँ—१-२९०।

सुरापी—वि. [सं. सुरापिन्] शराबी, मद्यप।

सुराब्धि—संज्ञा पुं. [सं.] सुरा का सागर जो सात समुद्रों में तीसरा माना गया है।

सुरारि—संज्ञा पुं. [सं.] असुर, राक्षस।

सुरालय—संज्ञा पुं. [सं. सुर+आलय] (१) देवलोक। (२) देवालय। (३) सुमेरु।

संज्ञा पुं. [सं. सुरा+आलय] मदिरालय।

सुरावट—संज्ञा स्त्री. [सं. सुर] (१) स्वरों का उतार-चढ़ाव। (२) सुरीलापन।

सुरावती—संज्ञा स्त्री. [सं. सुरावनि] कश्यप की पत्नी अदिति जो देवताओं की माता थी।

सुराष्ट्र—वि. [सं.] जिस राष्ट्र का शासन अच्छा हो।

सुरासुर—संज्ञा पुं. [सं.] देवता और राक्षस। उ.—जै गिरि कमठ सुरासुर सर्पहिं धरत न मन मैं नैकु डरे—१०-१४१।

सुराही—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) जल रखने का एक विशेष

प्रकार का पात्र जो प्राय: मिट्टी या किसी धातु का बना होता है।

संज्ञा पुं [सं. सु+हिं. राही] सत्पथ का पथिक।

सुराहीदार—वि. [हिं. सुराही+फ़ा. दार] सुराही की तरह गोल और लंबोतरी बनावट का।

सुरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] देवबाला, देवललना।

सुरीला—वि. [हिं. सुर+ईला] मीठे या मधुर स्वरवाला, सुस्वर, सुकंठ।

सुरुख—वि. [सं. सु+फ़ा. रुख=प्रवृत्ति] (१) सुंदर रूप या आकृतिवाला। (२) प्रसन्न, अनुकूल।

वि. [हिं. सुर्ख] लाल रंग का।

सुरुखुरू—वि. [फ़ा. सुर्खुरू] (१) जिसके मुंह पर तेज या लाली हो। (२) प्रतिष्ठित (३) यशस्वी।

सुरुच—वि. [सं.] (१) सुंदर प्रकाशवाला। (२) सुंदर रुचि या मनोवृत्तिवाला।

सुरुचि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) राजा उत्तानपान की दो पत्नियों में एक जो 'उत्तम' की माता और ध्रुव की विमाता थी। उ—उत्तानपाद पृथ्वीपति भयौ......। सुरुचि दूसरी ताकी नार। भयौ सुरुचि तैं उत्तम क्वार—४—९। (२) श्रेष्ठ या उत्तम रुचि। (३) अत्यंत प्रसन्नता।

वि. जिसकी रुचि उत्तम या परिष्कृत हो।

सुरुचिर—वि. [सं.] (१) सुंदर। (२) उज्ज्वल।

सुरुज—वि. [सं.] बहुत बीमार या अस्वस्थ।

संज्ञा पुं. [हिं. सूर्य] भानु, रवि।

सुरुजमुखी—संज्ञा पुं. [हिं. सूर्यमुखी] एक फूल।

सुरुति—संज्ञा स्त्री. [सं. श्रुति] (१) सुनना। (२) कान, श्रवण। (३) सुनी हुई बात। (४) वेद। (५) चार की संख्या (६) एक प्रकार का अनुप्रास। (७) संगीत के सातों स्वरों के कुछ खंड।

सुरूप—वि. [सं.] सुंदर रूपवाला या वाली। उ.—(क) अधिक सुरूप कौन सीता तैं, जनम बियोग भरै—१-३५। (ख) अति सुरूप बिष अस्तन लाए, राजा कंस पठाई—१०-५२।

संज्ञा पुं. सुंदर रूप। उ.—(क) गुन बिनु गुनी सुरूप रूप बिनु नाम बिना श्री स्याम हरी—१-११५। (ख) सुमति सुरूप सँचै सद्धा-बिधि उर-अंबुज अनुराग—२-१२।

संज्ञा पुं. [सं. स्वरूप] (१) आकृति। (२) मूर्ति।

सुरूपता संज्ञा स्त्री. [सं.] सुंदरता।

सुरूपा—वि. स्त्री. [सं.] सुंदर रूपवाली।

सुरेंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] सुरराज, इंद्र।

सुरेंद्रचाप—संज्ञा पुं. [सं.] इंद्रधनुष।

सुरेखा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सुंदर रेखा। (२) हाथ-पाँव की वे रेखाएँ जिनका रहना शुभ माना जाता है।

सुरेता—वि. [सं. सुरेतस्] बहुत वीर्यवान।

सुरेथ—संज्ञा पुं. [देश.] 'सूस' नामक जलजंतु।

सुरेश—संज्ञा पुं. [सं.] सुरराज, इंद्र।

सुरेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] इंद्र।

सुरेश्वरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) शची। (२) लक्ष्मी। (३) राधा। (४) दुर्गा।

सुरेस, सुरेसा—संज्ञा पुं. [सं. सुरेश] इंद्र। उ.—सेस-सुरेस-दिनेस सारा. ६८४।

सुरैत—संज्ञा स्त्री. [सं. सुरति] रखेली, उपपत्नी।

सुरैतवाल, सुरैतवाल—संज्ञा पुं. [हिं. सुरैत+बाल, वाल] उपपत्नी का पुत्र।

सुरतिन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुरैत] रखेली।

सुरोचि—वि. [सं. सुरुचि] सुंदर।

सुरोत्तम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विष्णु। (२) सूर्य।

सुरोद, सुरोदक—संज्ञा पुं. [सं. सुरोद] सुरा-सिंधु।

सुरोदय—संज्ञा पुं. [सं. स्वरोदय] स्वरों या श्वासों से शुभ-अशुभ फल जानने की विद्या।

सुरोम, सुरोमा—वि. [सं. सुरोमन्] सुंदर रोमवाला।

सुर्ख—वि. [फ़ा. सुर्ख] लाल रंग का।

संज्ञा पुं. गहरा लाल रंग।

सुर्खरू—वि. [फ़ा सुर्खरू] (१) जिसके मुख पर तेज या कांति हो। (२) प्रतिष्ठित। (३) यशस्वी।

सुर्खरूई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुर्खरू] (१) 'सुर्खरू' होने का भाव। (२) तेज। (३) मान। (४) यश।

सुर्खाब—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुरखाब] चकवा (पक्षी)।

मुहा. सुर्खाब का पर लगना—श्रेष्ठतासूचक विशेषता होना।

सुर्खी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सुर्खी] (१) **लाली**। (२) **'सुरखी' चूना**। (३) **रक्त**। (४) **लेखादि का शीर्षक**।

सुर्ता—वि. [हिं. सुरति] **समझदार, बुद्धिमान**।

सुर्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुरती] **तंबाकू**।

सुर्मा—संज्ञा पु. [हिं. सुरमा] **सुरमा**।

सुर्रा—संज्ञा पुं. [सुर्र से अनु.] **तेज हवा**।

सुर्लभ, सुर्ल्लभ—वि. [सं. सुलभ, 'दुर्लभ' के अनु. पर] **सुगमता से प्राप्त हो सकनेवाला**। उ.—(क) मोकौं भयौ सो अतिही सुर्लभ—१-२७७ (ख) हमकौं भयौ सो अति ही सुर्ल्लभ—१० उ.-१२७।

सुलंक—संज्ञा स्त्री. [सं.सु+लंक] **सुंदर कटि**।

वि. **जिसकी कमर या कटि सुंदर हो**।

संज्ञा पुं. [हिं. सोलंकी] **सोलंकी क्षत्रिय**।

सुलंकी—संज्ञा पुं. [?] **क्षत्रियों की एक शाखा जिसने बहुत समय तक गुजरात पर राज्य किया था**।

सुलच्छण—वि. [सं. सु+लक्षण] (१) **अच्छे लक्षणोंवाला**। (२) **भाग्यवान**।

संज्ञा पुं. **अच्छा चिह्न या लक्षण**।

सुलच्छणा, सुलच्छणी—वि. स्त्री. [सं सुलक्षण] (१) **अच्छे लक्षणोंवाली**। (२) **भाग्यवती**।

सुलग—अव्य [हिं. सु+लगना] **पास, समीप**।

संज्ञा स्त्री [हिं सुलगना] **सुलगने या जलने की क्रिया या भाव**।

सुलगन—संज्ञा स्त्री [सं सु+हिं. लगन] **सच्ची प्रीति या भाव**।

संज्ञा. स्त्री. [हिं. सुलगना] **सुलगने या जलने की क्रिया या भाव**।

सुलगना, सुलगनो—क्रि. अ. [सं. सु + हिं. लगना] (**लकड़ी, कोयले आदि का**) **जलना या दहकना**। (२) **बहुत दुखी या संतप्त होना**।

सुलगाए—क्रि. स. [हिं. सुलगाना] **जलाया या प्रज्ज्वलित किया**। उ.—ब्रज करि अवाँ जोग ईंधन सम सुरति आगि सुलगाए—३१९१।

सुलगाना, सुलगानो—क्रि.स. [हिं. सुलगना] (१) **जलाना, दहकाना, प्रज्ज्वलित करना**। (२) **दुखी या संतप्त करना**।

सुलगि—क्रि. अ. [हिं. सुलगना] **जलकर**। उ.—सुलगि सुलगि जरति ही आनि फूँकि दई— ३१५७।

सुलग्न—संज्ञा पुं. [सं.] **शुभ मुहूर्त**।

वि. [सं.] **दृढ़ता से लगा हुआ**।

सुलच्छन—वि. [सं. सुलक्षण] (१) **अच्छे लक्षणोंवाला, सुंदर**। उ.—परम सुसील सुलच्छन जोरी बिधि की रची न होई—९-४५। (२) **भाग्यवान**।

संज्ञा पुं. **अच्छा चिह्न या लक्षण**।

सुलच्छना, सुलच्छनी—वि. स्त्री. [सं सुलक्षणा] (१) **अच्छे लक्षणोंवाली**। (२) **भाग्यवती**।

सुलछ—वि. [सं. सुलक्षण] (१) **अच्छे लक्षणों वाला, सुंदर**। उ.—सुलछ लोचन चारु नासा परम रुचिर बनाइ। (२) **भाग्यवान**।

संज्ञा पुं. **अच्छा चिह्न या लक्षण**।

सुलज—वि. [सं. सु+हिं. लाज] **लाज या मर्यादा का ध्यान रखनेवाला**। उ.—सुंदर सुलज सुबंस देखियत यातैं स्याम पठायौ—२९६३।

सुलझन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुलझना] **सुलझने की क्रिया या भाव, सुलझाव**।

सुलझना, सुलझनो—क्रि. अ. [हिं. उलझना] **उलझन या जटिलता दूर होना या हटना**।

सुलझाना, सुलझानो—क्रि. स. [हिं. सुलझना] **उलझन या जटिलता दूर करना या हटाना**।

सुलझाव—संज्ञा पुं. [हिं. सुलझना+आव] **सुलझने की क्रिया या भाव, सुलझना**।

सुलटा—वि. [हिं. उलटा का अनु.] **सीधा**।

सुलतान—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **बादशाह, महाराज**। उ.—और हैं आज काल के राजा, मैं तिनमें सुलतान—१-१४५।

सुलताना—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सुलतान] **महारानी**।

सुलतानी–वि. [फ़ा. सुलतान] (१) **सुलतान या बादशाह-संबंधी**। (२) **लाल रंग का**।

संज्ञा स्त्री. (१) **बादशाहत, राज्य**। (२) **सुलतान का शासन-काल**। (३) **एक तरह का रेशमी कपड़ा**।

सुलप—वि. [सं० स्वल्प] (१) **थोड़ा**। उ.—सूर स्याम नागर अरु नागरि ललना सुलप मंडली राजति—

पृ. ३५१ (७२)। (२) **मंद**। उ.–चलि सुलप गजहंस मोहति कोक-कला प्रबीना—पृ. ३५१ (७३)।

संज्ञा पुं. [सं.+सु+आलाप] **सुंदर आलाप**।

सुलफ—वि. [सं० सु+हिं. लपना] (१) **लचीला, लचनेवाला**। (२) **नाजुक, मुलायम, कोमल**।

सुलफा—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुल्फ़:] (१) **वह तंबाकू जो चिलम में बिना तवा रखे सुलगाकर पिया जाता है**। (२) **चरस, गाँजा आदि**।

सुलभ—वि. [सं.] (१) **सुगमता से मिलने या प्राप्त होने योग्य**। उ.—सदा सुभाव सुलभ सुमिरन-बस भक्तनि अभै दियो—१-१८१, (२) **सुगम, सरल**। (३) **साधारण**। (४) **उपयोगी**।

सुलभता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सुगमता से प्राप्त होने का भाव**। (२) **सुगमता, सरलता**।

सुलभ्य—वि. [सं.] **जो सहज में मिल सके**।

सुललित—वि. [सं.] **अत्यंत सुंदर**।

सुलह—संज्ञा स्त्री [अ.] (१) **मेल, मिलाप**। (२) **लड़ाई समाप्त होने पर या करने के लिए होनेवाली संधि**।

सुलहनामा—संज्ञा पुं. [अ. सुलह+फ़ा. नामा] **संधिपत्र**।

सुलाक—संज्ञा पुं. [हिं. सूराख] **छेद, सूराख**।

सुलाकत—क्रि. अ. [हिं. सुलाकन] **छेद करने पर**। उ.—अगिनि सुलाकत (पाठा. सुलागत) मोरयौ न अंग-मन बिकट बनावत बेहु—२३४३।

सुलाकना, सुलाकनो—क्रि. अ. [हिं. सुलाक] **छेद या सूराख करना**।

सुलाखना, सुलखानो—क्रि. स. [सं. सु+हिं. लखना] **(सोने-चाँदी को) तपाकर परखना**।

सुलागत—क्रि. स. [हिं सुलगाना] **आग में तपाये जाने पर**। उ.—अगिनि सुलागत (पाठा. सुलाकत) मोरयो न अंग-मन बिकट बनावत बेहु—२३४३।

सुलागना, सुलागनो—क्रि. स. [हिं. सुलगाना] (१) **जलाना, तपाना**। (२) **दुख देना**।

क्रि. अ. (१) **जलना, तपना**। (२) **दुखी होना**।

सुलाज—संज्ञा स्त्री. [सं.सु+हिं. लाज] **लज्जा या मर्यादा (का ध्यान)**। उ.—सखी सुलाज समुझि परस्पर सन्मुख सबै सही—२५४२।

सुलाना, सुलानो—क्रि. स. [हिं. सोना] (१) **सोने के लिए प्रवृत्त करना**। (२) **लिटाना** (३) **मार डालना**।

सुलभ—वि.[सं.सुलभ] (१) **सुगमता से प्राप्त होने योग्य**। (२) **सहज, सुगम**।

संज्ञा पुं. **सुंदर या उत्तम लाभ**।

सुलेख—संज्ञा पुं. [सं. सु+लेख] (१) **सुंदर लिखावट**। (२) **सुंदर रूप से अंकित चिह्न या छाप**। उ.-निरखि सुंदर हृदय पर भृगु-पाग परम सुलेख—६३५।

सुलेखक–संज्ञा पुं. [सं.] **उत्तम लेखक या ग्रंथकार**।

सुलेमाँ, सुलेमान—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुलेमान] (१) **यहूदियों का एक बादशाह जो पैगंबर भी माना जाता है**। (२) **पश्चिमी पंजाब का एक पर्वत**।

सुलेमानी—वि. [फ़ा.] **सुलेमान-संबंधी**।

सुलोक–संज्ञा पुं. [सं.] **स्वर्ग**।

सुलोचन—वि. [सं.] **जिसके नेत्र सुंदर हों**। उ.—अब बिधु-बदन बिलोकि सुलोचन—२५६७।

संज्ञा पुं. (१) **सुंदर नेत्र** (२) **हिरन, मृग**। (३) **रुक्मिणी के पिता का नाम**।

सुलोचना—वि. स्त्री. [सं.] **सुंदर नेत्रवाली**।

संज्ञा स्त्री. **वासुकी नाग की पुत्री जो मेघनाद की पत्नी थी**।

सुलोचनि, सुलोचनी –वि. स्त्री. [सं. सुलोचना] **जिसके नेत्र सुन्दर हों**।

सुलोम—वि. [सं.] **जिसके रोयें सुन्दर हों**।

सुलोमा—वि. स्त्री. [सं.] **सुन्दर रोमवाली**।

सुल्तान—संज्ञा पुं. [फ़ा. सुलतान] **बादशाह**।

सुवंश, सुबंस—वि. [सं. सुवंश] **उत्तम या कुलीन बंश का**। उ.—सुंदर सुलज सुबंस देखियत यातैं स्याम पठायौ—२९६३।

सुव—संज्ञा पुं. [हिं. सुअन] **पुत्र, बेटा**।

सुवक्ता—वि. [सं. सु+वक्तृ] **व्याख्यान-कुशल**।

सुवक्ष—वि. [सं. सुवक्षस्] **विशाल वक्षस्थलवाला**।

संज्ञा पुं. **सुंदर और विशाल वक्षस्थल**।

सुवक्षा–संज्ञा स्त्री. [सं.] **मयदानव की पुत्री जो त्रिजटा और विभीषण की माता थी**।

सुवच—वि. [सं.] **जिसका उच्चारण सुगम हो**।

सुवचन—वि. [सं.] मीठा बोलनेवाला ।
संज्ञा पुं. सुन्दर और मीठे वचन ।
सुवचनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] एक देवी ।
वि. सुन्दर और मीठे वचन बोलनेवाली ।
सुवटा—संज्ञा पुं. [हिं. सुअटा] तोता । उ.—सूरदास नलिनी कौ सुवटा कहि कौनैं पकरयौ—२-२६१ ।
सुवदन—वि. [सं.] जिसका मुख सुन्दर हो ।
संज्ञा पुं. सुन्दर मुख ।
सुवदना—वि. स्त्री. [सं.] सुंदर मुखवाली ।
सुवन—संज्ञा पुं. [हिं. सुअन] पुत्र, बेटा । उ.—(क) अहि-पति-सुता-सुवन सनमुख ह्वै बचन कह्यौ इक हीनौ—१-२९ । (ख) नंद-सुवन-छबि चंद-बदनियाँ—१०-१०६ । (ग)सुवन तन चितै नंद डरत भारी—६८४ । (घ)सूर प्रभु नंद-सुवन दोऊहंस बाल उपाम-२५६५ ।
संज्ञा पुं. [सं. सुमन] फूल, पुष्प ।
सुवनारा—संज्ञा पुं. [हिं. सुवन] पुत्र, बेटा ।
सुवपु—वि. [सं. सुवपुस्] सुंदर शरीरवाला ।
संज्ञा पुं. सुंदर शरीर ।
सुवरण, सुवरन, सुवर्ण—संज्ञा पुं. [सं. सुवर्ण] (१) सोना, स्वर्ण । (२) सुंदर वर्ण । (३) सुंदर रंग ।
वि. (१) सुंदर वर्ण का । (२) सुंदर रंग का ।
सुवर्णक—वि. [सं.] (१) सोने का । (२) सुंदर वर्ण का ।
सुवर्णकरणी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुवर्ण + करण] एक जड़ी जो रोग-जनित विवर्णता दूर करके शरीर को सुंदर वर्ण का बना देती है ।
सुवर्णकार—संज्ञा पुं. [सं.] सुनार ।
सुवर्णता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सुवर्ण का भाव या धर्म । (२) सुंदरता ।
सुवर्णपत्त—संज्ञा पुं. [सं.] गरुड़ ।
वि. जिसके पंख या पर सोने के हों ।
सुवर्णरोमा—वि. [सं. सुवर्णरोमन्] जिसके रोम या रोएँ सुनहरे हों ।
सुवर्णवर्ण—संज्ञा पुं. [सं.] सोने का (सा) रंग ।
वि. सोने के रंग का, सुनहरा ।
सुवर्मा—वि. [सं. सुवर्म्मन्] उत्तम कवच से युक्त ।
सुवस—वि. [सं. स्व + वश] जो अपने वश या अधिकार में हो । उ.—(क) बसन कुबेर अग्नि यम मारुत सुवस कियो छन माँयँ—सारा. । (ख) सूने किये भुवन भूपति के सुवस किए सुरलोक—१० उ.-२ ।
सुवह—वि. [सं.] (१) जो सहज ही वहन किया या उठाया जा सके । (२) धीर, धैर्यवान ।
सुवाँग—संज्ञा पु. [हिं. स्वाँग] (१) बनावटी भेस या रूप । (२) नकल, तमाशा । (३) धोखा देने का आडंबर ।
सुवाँगी—संज्ञा पुं. [हिं. स्वाँगी] बहुरूपिया ।
सुवा—संज्ञा पुं. [हिं. सुआ] तोता । उ.—(क) रसमय जानि सुवा सेमर कौं चोंच घालि पछितायौ—१-५८ । (ख) कत तू सुवा होत सेमर कौ—१-५९ । (ग) मन सुवा तन पींजरा—१-३११ ।
सुवाइ—क्रि. स. [हिं. सुवाना] सुलाकर, सुला दे । उ.—ल्याउ कुँवर कौ बेगि जगाइ । दूध प्याइ कै बहुरि सुवाइ—६-५ ।
सुवाऊँ—क्रि स. [हिं. सुवाना] सुला दूँ । उ.—तुम सोवौ मैं तुम्हैं सुवाऊँ—१०-२३० ।
सुवाक्य—वि. [सं.] सुंदर वचन बोलनेवाला ।
संज्ञा पुं. सुंदर और मधुर वचन ।
सुवाग्मी—वि. [सं. सुवाग्मिन्] सुवक्ता ।
सुवाचा—संज्ञा स्त्री. [सं. सु + वाचा] (मुँह से निकलने-वाली) अच्छी और शुभ बात ।
सुवाजी—वि. [सं. सुवाजिन्] (तीर या बाण) जिसके पंख सुंदर हों ।
सुवाद—संज्ञा पुं. [सं. स्वाद] जायका, स्वाद ।
सुवादी—वि. [सं. स्वाद] अच्छाखाने का आदी, स्वाद का अभ्यस्त । उ.—सूरदास तिल तेल सुवादी, स्वाद कहा जानै घृत ही री १४९९ ।
सुवाना सुवानो—क्रि. स. [हिं. सुलाना] (१) सोने को प्रवृत्त करना । (२) लिटाना । (३) मार डालना ।
सुवार—संज्ञा पुं. [सं. सूपकार] रसोइया ।
संज्ञा पुं. [सं. सु + वार] शुभ दिन या वार ।
सुवार्ता, सुवार्त्ता—संज्ञा स्त्री. [सं. सुवार्त्ता] श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम ।
सुवावैं क्रि. स. [हिं. सुवाना] सुला दें, सोने को प्रवृत्त कर चुकें । उ.—सोवैं तब जब वाहि सुवावैं—५-३ ।

सुवावै—क्रि. स. [हिं. सुवाना] सुलाती है, सुला दे । उ. —मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै १०-४३ ।

सुवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अच्छी महक, सुगंध । (२) उत्तम घर या निवास ।

वि. [सं. सुवासस्] सुंदर वस्त्रों से युक्त ।

संज्ञा पुं. [सं. श्वास] साँस ।

सुवासिका—वि. [हिं. सुवास] सुगंधित करनेवाली ।

सुवासित—वि. [सं.] सुगंध-युक्त ।

सुवासिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] सधवा स्त्री ।

सुविक्रम—वि. [सं.] अत्यंत साहसी ।

सुविख्यात—वि. [सं.] बहुत (ही) प्रसिद्ध ।

सुविग्रह—वि. [सं.] सुंदर शरीर या रूपवाला ।

सुविचार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) उत्तम विचार । (२) सुंदर या ठीक न्याय । (३) रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

सुविचारित—वि. [सं.] अच्छी तरह सोचा हुआ ।

सुविचारी—वि. [सं. सुविचारिन्] (१) अच्छी तरह विचार करनेवाला । (२) उचित न्याय करनेवाला ।

सुविज्ञ—वि. [सं.] बहुत चतुर ।

सुविज्ञेय—वि. [सं.] जो सहज में जाना जा सके ।

सुवित्त—वि. [सं.] बहुत धनी ।

संज्ञा पुं. उत्तम या श्रेष्ठ धन ।

सुविद, सुविद्—संज्ञा पुं. [सं. सुविद्] विद्वान ।

सुविदग्ध—वि. [सं.] बहुत चतुर ।

सुविदित—वि. [सं.] भली-भाँति ज्ञात ।

सुविधा—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुभीता] (१) सुगमता और सुकरता की स्थिति । (२) सुअवसर । (३) आराम ।

सुविधि—संज्ञा स्त्री. [सं.] अच्छी रीति-नीति ।

सुविधिति—क्रि. वि. [सं.] अच्छी तरह से ।

सुवीर—वि. [सं.] महान वीर ।

सुवीर्य—वि. [सं.] बहुत शक्तिशाली ।

सुवृत्त—वि. [सं.](१) सच्चरित्र । (२) अच्छी बात कहने या बतानेवाला ।

वि. [सं. सु+वृत्त] जिसकी गोलाई ठीक हो ।

सुवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) उत्तम वृत्ति या जीविका । (२) सदाचार ।

वि. (१) जिसकी वृत्ति या जीविका उत्तम हो । (२) सदाचारी, सच्चरित्र ।

सुवेल—संज्ञा पुं. [सं] लंका का त्रिकूट पर्वत जहाँ श्रीराम सेना सहित ठहरे थे ।

सुवेश, सुवेष, सुवेस—वि. [सं. सुवेश] (१) जिसकी वेशभूषा सुंदर हो । (२) सुंदर, रूपवान ।

सुवेशता, सुवेषता, सुवेसता—संज्ञा स्त्री. [सं. सुवेशता] सुसज्जित होने का भाव ।

सुवेशित, सुवेषित, सुवेसित—वि. [सं. सुवेश] सुसज्जित ।

सुवेशी, सुवेषी, सुवेसी—वि. [सं. सुवेश](१) सुंदर वेश-भूषा वाला । (२) रूपवान ।

सुवेसल—वि. [सं. सुवेश] सुंदर, मनोहर ।

सुवैया—वि. [हिं. सोना+ऐया] सोनेवाला ।

सुवो—संज्ञा पुं. [हिं. सुवा] तोता ।

सुव्यक्त—वि. [सं] स्पष्ट रूप से व्यक्त ।

सुव्यवस्थित—वि. [सं.] जिसकी व्यवस्था या प्रबंध उत्तम रूप से किया गया हो ।

सुव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सुंदर व्रत या निश्चय । (२) ब्रह्मचारी ।

वि.(१) व्रत का पालन दृढ़ता से करनेवाला । (२) धर्मनिष्ठ ।

सुव्रता—वि. [सं.] पतिव्रता (स्त्री) ।

सुशांत—वि. [सं.] अत्यंत शांत या स्थिर ।

सुशिक्षित—वि. [सं.](१) जिसने अच्छी शिक्षा पायी हो ।

सुशिक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) अच्छी शिक्षा । (२) उपयोगी या उचित शिक्षा ।

सुशील—वि. [सं.] (१) उत्तम शील-स्वभाववाला । (२) सच्चरित्रता, सदाचारी । (३) विनीत,नम्र । (४) सरल, भोला, सीधा ।

सुशीलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) उत्तम स्वभाव । (२) सच्चरित्रता । (३) नम्रता । (४) सरलता ।

सुशीला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) राधा की एक सखी का नाम । (२) श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम । (३) सुदामा की पत्नी का नाम ।

सुशृंग—वि. [सं.] जिसके सींग सुंदर हों।
संज्ञा पुं. शृंगी ऋषि।

सुशोभन—वि. [सं.] (१) अत्यंत शोभायुक्त। (२) जो देखने में बड़ा प्रिय लगे, प्रियदर्शन।

सुशोभित—वि. [सं.] अत्यंत शोभायमान।

सुश्रवा—वि. [सं. सुश्रवस्] प्रसिद्ध, विख्यात।

सुश्राव्य—वि. [सं.] जो सुनने में अच्छा लगे।

सुश्री—वि. [सं.] (१) सुंदर श्री से युक्त। (२) बहुत सुंदर या शोभायुक्त। (३) बहुत धनी।
संज्ञा स्त्री. एक आदरसूचक शब्द जो कुमारी, सधवा और विधवा, सभी स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जा सकता है।

सुश्रुत—संज्ञा पुं. [सं.] आयुर्वेद के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका 'सुश्रुत संहिता नामक' ग्रंथ बहुत मान्य है।
वि. (१) अच्छी तरह सुना हुआ। (२) प्रसिद्ध।

सुश्रूखा, सुश्रूषा—संज्ञा स्त्री. [सं. सुश्रूषा] (१) टहल, सेवा। (२) रोगी की परिचर्या।

सुश्रोणि—वि. [सं.] सुंदर नितंबवाली।

सुश्लोक—वि. [सं.] (१) पुण्यात्मा। (२) सुप्रसिद्ध।

सुष—संज्ञा पुं. [सं. सुख] सुख, हर्ष।

सुषम—वि. [सं.] (१) शोभायुक्त। (२) सम, समान।

सुषमन, सुषमना, सुषमनि—संज्ञा स्त्री. [सं. सुषुम्ना] वह नाड़ी जो नाभि से आरंभ होकर मेरुदंड से होती हुई ब्रह्मरंध्र तक जानेवाली मानी गयी है। इसी के अन्तर्गत वह ब्रह्मनारी कही जाती है जिससे चलकर कुंडलिनी ब्रह्मरंध्र तक पहुँचती है। उ.—(क) इंगला पिंगला सुषमना नारी—३४०८। (ख) इड़ा पिंगला सुषमन नारी—३४४२ (९)।

सुषमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] अत्यंत सुंदरता या शोभा।

सुषमाशाली—वि. [सं.] बहुत सुंदर या शोभायुक्त।

सुषाना—क्रि. स. [हिं. सुखाना] (१) धूप या आग के पास रखकर आर्द्रता दूर करना। (२) दुर्बल बनाना।
क्रि. अ. (१) भला लगना। (२) सह्य होना।

सुषारा—वि. [हिं. सुखारा] (१) सुखद। (२) सुगम।

सुषिर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बाँस। (२) आग, अग्नि। (३) वह बाजा जो वायु के दबाव से बजने लगता हो।
वि. (१) जिसमें छेद हों। (२) पोला, खोखला।

सुषुपु—वि. [सं. सुषुपस्] जो सोने या निद्रा का इच्छुक या उसके लिए आतुर हो।

सुषुप्त—वि. [सं.] गहरी नींद में सोया हुआ।

सुषुप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) गहरी नींद, घोर निद्रा। (२) योग-साधन में चित्त की उस वृत्ति या अनुभूति की अवस्था जब जीव ब्रह्म की प्राप्ति तो नित्यप्रति करता है, परंतु उसे इस बात का ज्ञान नहीं होता।

सुषुप्स—वि. [सं.] जो सोने या निद्रा का इच्छुक और उसके लिए आतुर हो।

सुषुप्सा—संज्ञा स्त्री. [सं.] शयन करने की इच्छा।

सुषुम्ना—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह नाड़ी जो नाभि से आरंभ होकर मेरुदंड में से होती हुई ब्रह्मरंध्र तक जानेवाली मानी गयी है। इसीके अंतर्गत वह ब्रह्मनाड़ी भी कही जाती है जिससे चलकर कुंडलिनी ब्रह्मरंध्र तक पहुँचती है। योग के अनुसार शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों—इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना—में सुषुम्ना मध्य में है। यह त्रिगुणमयी और चंद्र, सूर्य और अग्नि-स्वरूपिणी है। वैद्यक के अनुसार सुषुम्ना शरीर की चौदह प्रधान नाड़ियोंमें है जिससे अन्य सब नाड़ियाँ लिपटी हुई हैं।

सुषेण, सुषेन—संज्ञा पुं. [सं. सुषेण] (१) विष्णु का एक नाम। (२) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (३) एक बानर का नाम जो वरुण का पुत्र, बाली का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था। इसने राम-रावण युद्ध में श्रीराम की विशेष सहायता की थी। उ.—(क) दौनगिरि पर आहि सँजीवनि बैद सुषेन बताई—९-१४। (ख) सुग्रीव विभीषन जामवंत, अँगद सुषेन केदार संत—९-१६६।

सुषोपति, सुषोप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. सुषुप्ति] (१) गहरी नींद। (२) योग-साधना में चित की वह अवस्था जब वह ब्रह्म का साक्षात्कार तो करता है, परंतु उसकी उसे अनुभूति नहीं होती।

सुष्ट—संज्ञा पुं. [सं. दुष्ट का अनु. या सं. सुष्ठु] (१) जो दुष्ट न हो, भला। (२) सुंदर, श्रेष्ठ। उ.—आयसु पाइ सुष्ट रथ कर गहि अनुपम तुरंग साजि धृत जोह्यो—२४७८।

सुष्ठु—वि. [सं.] (१) अच्छा, उत्तम। (२) सुंदर।
अव्य. (१) अत्यंत। (२) अच्छी तरह, भली-भाँति। (३) ठीक ठीक, यथायोग्य।
संज्ञा पुं. (१) तारीफ, प्रशंसा। (२) सत्य।

सुष्ठुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) भलाई, मंगल, कल्याण। (२) सौभाग्य। (३) सुंदरता।

सुष्म—संज्ञा पुं. [सं.] रस्सी, रज्जु।

सुष्मन, सुष्मना, सुष्मंनि, सुष्मनी—संज्ञा स्त्री. [सं. सुषुम्ना] सुषुम्ना नाड़ी।

सुसंग—संज्ञा पुं. [सं. सु + हिं. संग] सत्संग।

सुसंगत—वि. [सं.] बहुत उचित या युक्तियुक्त।

सुसंगति, सुसंगती—संज्ञा स्त्री [सं. सु + हिं. संगति] अच्छी संगति या साथ, सत्संग।

सुस—संज्ञा स्त्री. [सं. स्वसृ] बहन, भगिनी।

सुसकना—क्रि. अ. [हिं. सिसकना] सिसकी भरकर या धीरे-धीरे रोना।

सुसकनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. सिसकना] सिसक-सिसक कर या सिसकी भरकर रोने की क्रिया या भाव। उ.—सुसकनि की बारी हौं बलि-बलि, हठ न करहु तुम नंद-दुलारे—१०-१६०।

सुसकनो—क्रि. अ. [हिं. सिसकना] सिसकी भरकर या धीरे-धीरे रोना।

सुसक्यो, सुसक्यौ—क्रि. अ. [हिं. सिसकना] सिसक-सिसक कर या सिसकी भर कर रोने लगा या रोया। उ.—जानि परचो तहँ कोउ नहीं जिय ही जिय सुसक्यो—२४७०।

सुसज्जित—वि. [सं.] अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ।

सुसताना, सुसतानो—क्रि. अ. [फ़ा सुस्त + आना] थकावट दूर करना, विश्राम करना।

सुसती—संज्ञा स्त्री [हिं. सुस्ती] (१) सुस्त होने का भाव, शिथिलता। (४) आलस्य।

सुसवद—संज्ञा पुं. [सं. सुशब्द] यश, कीर्ति।

सुसमय—संज्ञा पुं. [सं.] वे दिन जिनमें अकाल का कष्ट न हो, सुकाल।

सुसमा—संज्ञा स्त्री. [सं. सुषमा] बहुत अधिक शोभा या सुंदरता।

सुसमुझि—वि. [सं. सु + हिं समझ] अच्छी समझवाला, समझदार, सुबुद्धि।

सुसर, सुसरा—संज्ञा पुं. [हिं ससुर] (१) पति या पत्नी का पिता, श्वसुर। (२) एक गाली।

सुसरार, सुसरारि, सुसराल—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुसराल] पति या पत्नी के पिता का घर।

सुसरित—संज्ञा स्त्री. [सं. सु + सरित] (१) नदियों में श्रेष्ठ। (२) गंगा नदी।

सुसरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. ससुरी] (१) पति या पत्नी की माता, सास। (२) एक गाली।
संज्ञा स्त्री [सं. सु + सरित] (१) श्रेष्ठ नदी। (२) गंगा नदी।

सुसह—वि. [सं.] जो सहज में उठाया या सहन किया जा सके।

सुसांत—वि. [सं. सुशांत] अत्यंत शांत या स्थिर। उ.—बहुत काल लौं जल में बिचरे तब हरि भये सुसांत—सारा ९८।

सुसांति—संज्ञा स्त्री. [सं. सुशांति] पूर्ण शांति या स्थिरता।

सुसा—संज्ञा स्त्री. [सं. स्वसृ] बहन, भगिनी।
संज्ञा पुं. [देश] एक तरह का पक्षी।

सुसाध, सुसाधा—संज्ञा स्त्री [सं. सु + हिं. साध] उत्तम या श्रेष्ठ इच्छा या कामना।

सुसाधन—संज्ञा पुं. [सं. सु + साधन] श्रेष्ठ या उत्तम उपाय, युक्ति या साधन।

सुसाध्य—वि. [सं.] जो सहज में किया जा सके, जिसका साधन सुगम हो, सुखसाध्य।

सुसाना, सुसानो—क्रि. अ. [हिं. साँस] सिसकना।

सुसार—संज्ञा पुं. [सं.] नीलम (मणि)।

सुसारना, सुसारनो—क्रि. स. [सं. सु + सारण] अच्छी तरह समझाकर कहना।

सुसिकता—संज्ञा स्त्री. [सं.] चीनी, शक्कर।

सुसिद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) उत्तम सिद्धि या सफलता। (२) एक काव्यालंकार।

सुसीतल—वि. [सं. सु + शीतल] बहुत ठंढा।

सुसीतलता, सुसीतलताई—संज्ञा स्त्री [सं. सुशीतलता] बहुत ठंढ या शीत।

सुसील—वि. [सं. सुशील] (१) **उत्तम शील-स्वभाववाला।** परम सुसील सुलच्छन जोरी बिधि की रची न होई—९-४५। (२) **सदाचारी।**

सुसीलता—संज्ञा स्त्री [सं. सुशीलता] (१) **अच्छा शील-स्वभाव।** (२) **सच्चरित्रता।** (३) **नम्रता।**

सुसीला—संज्ञा स्त्री. [सं सुशीला] **सुदामा की पत्नी का नाम।** उ.—नाम सुसीला ताकी नार—१०३-५९।

सुसीले—वि.[सं. सुशील] (१) **अच्छे शील-स्वभाव वाले।** (२) **नम्रता भरे, विनययुक्त।** उ.—अति उदार परहित डोलत हैं बोलत बचन सुसीले—३०५५।

सुसकत—क्रि. अ. [हिं. सिसकना] **सिसकी भरते, सिसकते।** उ.—सुसुकत सुनि जसुमति अतुराई, कहा महर भ्रम पायौ—२४७३।

सुसुकना, सुसुकनो—क्रि. अ. [हिं. सिसकना] (१) **सिसक कर रोना।** (२) **सिसकी भरना।**

सुसुकि—क्रि. अ. [हिं. सिसकना] **सिसकी भरकर।** उ.—(क) खसि खसि परत कान्ह कनियाँ तैं सुसुकि-सुसुकि मन खीजैं—१०-१९०। (ख) मूँदि मुख छिन सुसिक रोवत छिनक मौन रहत—३५९।

सुसुपि, सुसुप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं. सुसुप्ति] (१) **गहरी नींद।** (२) **समाधि की अवस्था-विशेष।**

सुसूक्ष्म—वि० [सं.] **अत्यंत सूक्ष्म।**
संज्ञा पुं. **परमाणु।**

सुसेन—संज्ञा पुं. [सं.सुषेण] **एक बानर जो सुग्रीव का वैद्य था।**

सुसो—संज्ञा पुं. [सं. शश] **खरगोश।**

सुसौभग—संज्ञा पुं. [सं.] **दांपत्य-सुख।**

सुस्त—वि. [फ़ा.](१) जो (**चिंता, लज्जा आदि के कारण**) **प्रसन्न या उत्साही न हो, उदास।** (२) **जिसमें वेग, गति आदि की तीव्रता न हो।** (३) **जिसके काम में तत्परता न हो।** (४) **धीमी चालवाला।** (५) **जिसकी बुद्धि तीव्र न हो।**

सुस्तना, सुस्तनी—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+स्तन] **जिसके स्तन सुडौल और सुन्दर हों।**

सुस्ताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुस्ती] **सुस्ती।**

सुस्ताना, सुस्तानो—क्रि. अ. [हिं. सुसताना] **थकावट दूर करने के लिए आराम या विश्राम करना।**

सुस्ती—संज्ञा स्त्री. [फ़ा. सुस्त] (१) **सुस्त होने का भाव, शिथिलता** (२) **आलस्य।**

सुस्तैन—संज्ञा पुं. [सं. स्वस्त्ययन] **वह धार्मिक कृत्य जो अशुभ बातों का नाश करके शुभ की स्थापना के लिए किया जाता है।**

सुस्थ—वि. [सं.] (१) **भला-चंगा, स्वस्थ।** (२) **सुखी, प्रसन्न।** (३) **सुस्थित, सुस्थिर।** (४) **सुंदर।**

सुस्थचित्त—वि. [सं.] **जिसका चित्त प्रसन्न, सुखी और उत्साहपूर्ण हो।**

सुस्थता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नीरोगता, स्वस्थता।** (२) **प्रसन्नता, सुख।** (३) **कुशल-क्षेम।**

सुस्थमानस—वि. [सं.] **जिसका चित्त प्रसन्न, सुखी और उत्साहपूर्ण हो।**

सुस्थल—संज्ञा पुं. [सं.] **सुंदर स्थान।**

सुस्थित—वि. [सं.] (१) **भली-भाँति स्थित, सुदृढ़।** (२) **स्वस्थ।** (३) **भाग्यवान।**

सुस्थिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अच्छी या उत्तम स्थिति।** (२) **आनंद।** (३) **कुशल-क्षेम।**

सुस्थिर—वि. [सं.] **दृढ़, अविचल।**

सुस्मित—वि. [सं.] **हँसमुख, हँसोड़।**

सुस्वधा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कल्याण।** (२) **सौभाग्य।**

सुस्वन—संज्ञा पुं. [सं.] **शंख।**
वि. (१) **उत्तम शब्द या ध्वनि से युक्त।** (२) **बहुत ऊँचा।** (३) **सुंदर, मनोहर।**

सुस्वप्न—संज्ञा पुं. [सं.] **अच्छा या शुभ सपना।**

सुस्वर—वि. [सं.] **जिसका स्वर या कंठ ध्वनि मधुर हो, सुरीला, सुकंठ।**
संज्ञा पुं. (१) **सुरीला स्वर।** (२) **शंख।**

सुस्वरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **सुरीलापन, स्वर की मधुरता।** (२) **बंशी के पाँच गुणों में एक।**

सुस्वाद, सुस्वादु—वि. [सं. सुस्वादु] **बहुत स्वादिष्ट।**

सुहंग, सुहंगम, सुहँगा—वि. [हिं. महँगा का अनु.] **सस्ता।**
वि. [सं. सुगम] **सरल, सहज।**

वि. [हिं. सु+ढंग] सुंदर।

सुहटा—वि. [हिं. सुहावना] सुंदर।

सुहड़—संज्ञा पुं. [सं. सुभट] योद्धा।

वि. [सं. सु+हिं. हाड़] सुंदर शरीरवाला।

सुहथ—संज्ञा पुं. [सं. सु+हिं. हाथ] सुंदर हाथ। उ.—छूटे चिहुर बदन कुभिलानो सुहथ सँवारि बनाइये—१६८८।

सुहनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सोहनी] झाड़ू।

वि. स्त्री. [हिं. सोहना] सुंदर, सुहावनी।

वि. संज्ञा स्त्री. एक प्रकार की रागिनी।

सुहम—वि. [सं. सूक्ष्म] बहुत छोटा या सूक्ष्म।

सुहराना, सुहरानो—क्रि. स. [हिं. सहलाना] (१) धीरे-धीरे हाथ फेरना। (२) मलना।

सुहल—संज्ञा पुं. [अ. सुहेल] एक कल्पित तारा।

सुहव, सुहवि, सुहवी—संज्ञा पुं. [हिं. सूहा] एक राग। उ.—राग रागनी सँचि मिलाई गावै सुघर मलार। सुहवी सारँग टोड़ी भैरवी केदार—२२७६।

सुहस्त—वि. [सं. सु+हस्त] सुंदर हाथोंवाला।

सुहा—वि. [हिं. सूहा] लाल रंग का।

संज्ञा पुं. (१) 'लाल' नामक पक्षी। (२) एक राग।

सुहाइ—क्रि. स. [हिं. सुहाना] (१) अच्छा या भला लगता है। उ.—(क) छहौं रस जौ धरौं आगैं तउ न गंध सुहाइ—१-५६। (ख) बड़ी बेर भई अजहुँ न आए, गृह बन कछु न सुहाइ—५७८। (ग) हम रुचि करी सूर के प्रभु सों दूजो मन न सुहाइ—३२१०।

क्रि. अ. शोभा देता है, सुंदर लगता है। उ.—नील खुर अरु अरुन लोचन सेत सींग सुहाइ—१-५६।

सुहाई—क्रि. अ. [हिं. सुहाना] शोभित हुई। उ.—कुच बिष बाँटि लगाइ कपट करि बाल-घातिनी परम सुहाई—१०-५०।

वि. [हिं. सुहावनी] सुहानेवाली, शोभित होनेवाली, सुंदर। उ.—(क) यमुना पुलिन मल्लिका मनोहर सरद सुहाई यामिनी। (ख) निमिष-निमिष मों बिसरत नाहीं सरद सुहाई राती—२९८१।

सुहाउँ—क्रि. स. [हिं. सुहाना] भला लगूँ। उ.—काकैं द्वार जाइ होउँ ठाढो, देखत काहि सुहाऊँ—१-१२८।

सुहाए—क्रि. अ. [हिं सुहाना] शोभायमान हुए, सुंदर लगे। उ.—बाल-दसा के चिकुर सुहाए—१०-१०४।

वि. [हिं. सुहावना] सुंदर। उ.—साप दग्ध ह्वै सुत कुबेर के आनि भए तरु जुगल सुहाए—३८६।

सुहाग—संज्ञा पुं. [सं. सौभाग्य] (१) स्त्री के सधवा रहने की अवस्था, अहिवात, सौभाग्य। उ.—धनि-धनि महरि की कोख भाग सुहाग भरी—१०-२४।

मुहा. सुहाग भरना—स्त्री को सौभाग्यवती बनाने के लिए उसकी माँग भरना। सुहाग मनाना—पति-सुख के सदा बने रहने की कामना करना। सुहाग माँगना—(देवी देवता या शुभचिंतक गुरुजन से) सौभाग्य अखंड रहने का आशीर्वाद माँगना।

(२) माँगलिक गीत जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की स्त्रियाँ गाती हैं।

मुहा० सुहाग गाना—मांगलिक गीत गाना।

(३) सुख-सौभाग्य उ.—हरि अनुराग सुहाग भरि अमी के गागर रे—३१५०।

सुहागन—वि. [हिं सुहागिन] सौभाग्यवती।

सुहागरात—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुहाग+रात] विवाह के बाद की वह रात जिसमें वर-वधू का पहले-पहल मिलन और समागम होता है।

सुहागा—संज्ञा पुं. [सं सुभग] एक प्रकार का क्षार जो सोना गलाने, छींट छापने तथा कुछ औषधों को बनाने के काम आता है।

सुहागिन, सुहागिनि, सुहागिनी, सुहागिल—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुहाग] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा या सौभाग्यवती स्त्री। उ.—(क) जसुमति भाग सुहागिनी, जायौ हरि सौ पूत—१०-४०। (ख) जसुमति भाग सुहागिनी हरि कौं सुत जानै—१०-७२। (ग) चारि चारि दिन सबै सुहागिनि री ह्वै चुकीं मैं स्वरूप अपनी—१६६२।

सुहात—क्रि. स. [हिं. सुहाना] भला या अच्छा लगता है, रुचता है। उ.—(क) अब न सुहात बिषय-रस-छीलर वा समुद्र की आस—१-३३७। (ख) गोकुल बाजत सुनी बधाई, लोगनि हिएँ सुहात—१०-१२। (ग) सखी-सखा-सुख नहिं त्रिभुवन मैं, नहिं बैकुंठ सुहात

—२९१० । (घ) भयौ उदास, सुहात न कछुवै—सारा. ४३६ ।

सुहाता—वि.[हिं.सहना] (१) **जो सहा जा सके, जो सहन करने के योग्य हो, सह्य ।** (२) **जो प्रिय या रुचिकर हो ।**

सुहाती—क्रि. अ. [हिं. सुहाना] **शोभित होती है ।** उ.—जे जरि मरैं प्रगट पावक परि ते त्रिय अधिक सुहाती—२४९९ ।

वि. [हिं. सुहावनी] **भली लगनेवाली, रुचिकर ।** उ.—(क) सूरदास प्रभु कहा चलत है कोटिक बात सुहाती—२९८१ । (ख) समय पाइ ब्रज बात चलाई सुख ही माँझ सुहाती—३४१८ ।

सुहातौ - वि. [हिं. सुहाता] **जो भला या अच्छा लगे, जो प्रिय या रुचिकर हो ।** उ.—मैं-मेरी कबहूँ नहिं कीजै, कीजै पंच सुहातौ—१-३०२ ।

सुहाना, सुहानो—क्रि. अ. [सं. शोभन] **शोभित होना ।**

क्रि. स. **भला या अच्छा लगना, रुचिकर लगना, रुचिकर या प्रिय होना ।**

वि. [हिं. सुहावना] **देखने में भला और सुंदर लगनेवाला, प्रिय दर्शन ।**

सुहाया, सुहायो, सुहायौ—वि. [हिं. सुहाना] **जो देखने-सुनने में भला जान पड़े, सुहावना, सुंदर ।** उ.—बोलि बोलि सुत-स्वजन मित्र-जन लीन्यौ सुजस सुहायौ—२-३० ।

सुहारी—संज्ञा स्त्री. [सं. सु+आहारी] (१) **हथेली के आकार से भी छोटी-छोटी सादी पूरियाँ जो देवी-देवता की पूजा अथवा अन्य वैसे ही उत्सवों के लिए बनायी जाती हैं ।** उ.—कान कुँवर को कनछेदन है हाथ सुहारी (सोहारी) भेली गुर की—१०-१७९ । (२) **सादी पूरी नामक पकवान ।** उ.—(क) घेबर, फेनी और सुहारी—१०-२११ । (ख) सेव सुहारी घेवर घी के—२३२१ ।

सुहाल - संज्ञा पुं. [सं. सु+आहार] **एक प्रकार का बहुत खस्ता और नमकीन पकवान जो मैदे का बनता है ।**

सुहाली—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुहारी] **सुहारी ।**

सुहाव—वि. [हिं. सुहाना] **सुंदर, भला ।**

संज्ञा पुं. [सं. सु+हाव] **सुंदर हाव (-भाव) ।**

सुहावत—क्रि. स. [हिं. सुहावना] **प्रिय या रुचिकर लगता है ।** उ.—पुनि पुनि कहत स्याम श्रीमुख सौं, तुम मेरे मन अतिहिं सुहावत—४४९ ।

सुहावता, सुहावन—वि. [हिं. सुहाना] (१) **अच्छा या भला लगनेवाला, सुंदर ।** (२) **रुचिकर, प्रिय ।**

सुहावना—क्रि. अ. [हिं. सुहाना] **देखने में अच्छा या भला मालूम होना ।**

क्रि. स. **रुचिकर और प्रिय लगना ।**

वि. (१) **अच्छा या भला लगनेवाला, मनोहर ।** (२) **प्रिय या रुचिकर लगनेवाला ।**

सुहावनापन—संज्ञा पुं. [हिं. सुहावना+पन] **सुहावने का भाव, सुंदरता, मनोहरता ।**

सुहावनो—वि. [हिं. सुहावना] (१) **सुंदर, मनोहर ।** उ.—द्वै खंभ कंचन के मनोहर रत्न जटित सुहावनो—२२८० । (२) **प्रिय, रुचिकर ।**

सुहावला—वि. [हिं. सुहावना] **सुहावना ।**

सुहावै -क्रि. स. [हिं. सुहाना] **प्रिय या रुचिकर लगती है ।** उ.—झूठैं लोग लगावत मोकौं, माटी मोहिं न सुहावै १०-२५३ ।

सुहास –वि. [सं.] (१) **सुंदर या मधुर मुस्कानवाला ।** (२) **जो हर समय हँसता रहे ।**

संज्ञा पुं. **सुंदर या मधुर हास्य ।**

सुहासी—वि. [सं. सुहासिन्] **सुंदर या मधुर मुस्कान-वाला, चारुहासी ।**

सुहाहीं—क्रि. अ. [हिं. सुहाना] **भले या सुंदर लगते हैं, शोभित होते हैं ।** उ.—गोबर्धन परबत के ऊपर बोलत मोर सुहाहीं—सारा. ८६२ ।

सुहित—वि. [सं.] (१) **बहुत लाभकारी या उपयोगी ।** (२) **किया हुआ ।** (३) **संतुष्ट ।** (४) **उपयुक्त ।**

संज्ञा पुं. **विशेष मंगल या कल्याण ।**

सुहिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुहा] **'लाल' पक्षी ।**

सुही—वि. [हिं. सुहा] **लाल रंग की ।** उ.—(क) उर अंचल उड़त न जानि, सारी सुरँग सुही—१०-२४ । (ख) पहिरे चीर सुही सुरंग सारी चुहुचुहु चूनरी बहु रंगनो—२२८०

सुहूँ—वि. [सं. शुद्ध] (१) **पूरा ।** (२) **ठीक, शुद्ध ।**

सुहृत, सुहृत्, सुहृद, सुहृद्—संज्ञा पुं. [सं. सुहृत्] (१) अच्छे और शुद्ध हृदयवाला व्यक्ति। (२) मित्र, सखा, बंधु। उ.—(क) सूर सो सुहृद मानि—१७७। (ख) सानि-सानि दधि-भात लियौ कर सुहृद सखनि कर देत —४१६।

वि. (१) अच्छे, शुद्ध और दयार्द्र हृदयवाला। उ. पंछी एक सुहृद जानत हौं, करचौ निसाचर भंग—९-८३। (२) सहृदय, उदार, जो निष्ठुर न हो। उ.—बिहँसि बृषभानु-तनया कहति, हम निष्ठुर तुम सुहृद बात वह जिनि चलावो—२०७३।

सुहृदय—वि. [सं.] (१) उदार या विशद दृष्टिकोणवाला, उन्नतमना। (२) सदय, सहृदय।

सुहेल—संज्ञा पुं. [अ.] एक कल्पित तारा जिसके उदय पर चमड़े में सुगंध आना और अनेक जीवों का मर जाना माना जाता है।

सुहेलरा, सुहेला—वि. [सं. शुभ, हिं. सुहेला] (१) सुंदर, सुहावना। (२) सुखद, सुखदायक।

संज्ञा पुं. (१) मंगलगीत। (२) स्तुति।

संज्ञा पुं. [सं. सुहृद] मित्र, सखा, साथी।

सुहेस—वि. [सं. शुभ] अच्छा, भला, सुंदर।

सुहोता—संज्ञा पुं. [सं.सुहोतृ] उत्तम रीति या विधि से हवन करनेवाला होता।

सूँ—अव्य.[सं. सह]ब्रजभाषा में करण और अपादान कारक का चिह्न जिसका प्रयोग बोलचाल में अधिक होता है, से। ('सूरसागर' में इसका प्रयोग नहीं है; 'सारावली' में ही है।) उ.—(क) दुर्जोधन सूँ कह्यौ दूत ह्वै—सारा ७७३। (ख) नव निकुंज में मिलौ स्याम सूँ—सारा ९२२।

संज्ञा पुं. [अनु.] किसी चीज से या किसी प्राणी की नाक से निकलने वाला 'सूँ' शब्द।

सूँइस—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूंस] एक जल-जंतु।

सूँघतिं—क्रि. स. [हिं. सूँघना] (सूँघकर) महक या वास का अनुभव करती या पता लगाती हैं। उ.—जहाँ तहाँ गोदोहन कीनो सूँघतिं सोई ठावें—३४२१।

सूँघना, सूँघनो—क्रि. स. [सं. सं+घ्राण] (१) नाक से (सूँघकर) किसी महक या वास का पता लगाना या अनुभव करना।

मुहा. सिर सूँघना—एक रीति जिसके द्वारा गुरुजन मंगलकामना के भाव से छोटों का सिर या मस्तक सूँघते हैं। जमीन सूँघना—(१) ऊँघना। (२) जमीन पर मुँह के बल पटक दिया जाना।

(२) बहुत ही कम भोजन करना (व्यंग्य)। (३) (साँप का) डसना या काटना।

सूँघा—संज्ञा पुं. [हिं. सूँघना] (१) केवल जमीन सूँघकर उसके नीचे पानी या खजाना बता सकनेवाला व्यक्ति। (२) सूँघ-सूँघकर शिकार तक पहुँचा सकनेवाला श्वान। (३) जासूस।

सूँघि—क्रि. स. [हिं. सूँघना] नाक से महक या वास लेकर, सूँघकर। उ.—ज्यौं सौरभ मृग-नाभि बसत है, द्रुम-तृन सूँघि फिरचौ—२-२६।

सूँड, सूँडा—संज्ञा स्त्री. [सं. शुण्ड] हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती है, शुंड।

सूँडी—संज्ञा स्त्री. [सं शुण्डी] एक सफेद कीड़ा।

सूँतना—क्रि. स. [हिं. सूतना] (१) सीधा करना। (२) ऊपर से नीचे की ओर हाथ फेरना। (३) डोरे आदि पर माँझ या कलफ करना। (४) नोचना-खसोटना। (५) चूसना, सोखना।

सूँस—संज्ञा स्त्री. [सं. शिशुमार] एक जलजंतु।

सूँह—अव्य. [सं. सम्मुख, पु. हिं. सौंहें] सामने।

सूअर—संज्ञा पुं. [सं. शूकर] (१) एक प्रसिद्ध पशु जो आकार, वास-स्थान और स्वभाव के विचार से दो प्रकार का होता है—पालतू और जंगली। (२) एक गाली।

सूअरबियान—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूअर+बियाना] (१) हर साल बच्चा जनने की क्रिया। (२) वह स्त्री जो हर साल बच्चा जनती हो।

सूआ—संज्ञा पुं. [सं. शुक, आ. सुअ] तोता, कीर।

संज्ञा पुं. [हिं. सुई] बड़ी और मोटी सुई।

सूई—संज्ञा स्त्री. [सं. सूची] (१) लोहे का वह पतला तार-जैसा उपकरण जिसके महीन छेद में तागा पिरोकर कपड़ा आदि सिया जाता है।

मुहा० आँख की सूई निकालना—किसी विकट काम को समाप्तप्राय देखकर शेषांश को पूरा करके सारे कार्य-संपादन का श्रेय प्राप्त करने का प्रयत्न करना। सुई का फावड़ा या भाला बना देना—जरा सी बात को बहुत बढ़ा देना, बात का बतंगड़ करना।

(२) किसी विशेष अंग, दिशा आदि का सूचक उपकरण। (३) पौधे का पतला अँखुआ या अंकुर। (४) गोदना गोदने का तार।

सूईकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सुई+फ़ा कारी] सुई से काढ़कर कपड़े पर बेल-बूटे बनाने का शिल्प।

सूक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बाण। (२) वायु।

संज्ञा पुं. [सं. शुक] तोता, कीर।

संज्ञा पुं. [सं. शुक्र] सौर-जगत का 'शुक्र' नामक ग्रह जो दैत्यों का गुरु कहा गया है।

सूकना—क्रि. अ. [हिं. सूखना] सूखना।

सूकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सुअर (पशु)। उ.—(क) भजन-बिनु जैसैं सूकर-स्वान सियार—१-४१। (ख) उदर भरचौ कूकर-सूकर लौं—१-६५। (ग) बहुतक जन्म पुरीष-परायन सूकर-स्वान भयौ—१-७८। (२) एक नरक का नाम।

सूकरखेत, सूकरखेत—संज्ञा पुं. [सं. शूकरक्षेत्र] एटा जिले का 'सोरों' नामक स्थान जहाँ वाराह-अवतार की मूर्ति और मंदिर है।

सूकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूकर] (१) 'सुअर' नामक पशु की मादा। (२) वाराही देवी।

सूका—संज्ञा पुं. [सं. सपादक=चतुर्थांश सहित] चार आने का सिक्का, चवन्नी।

सूकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूका=सिक्का] घूस, रिश्वत।

सूक्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वेद-मंत्रों या ऋचाओं का संग्रह या संकलन। (२) उत्तम कथन या भाषण।

वि. भली भाँति कहा हुआ या कथित।

सूक्तदर्शी—वि. [सं. सूक्तदर्शिन्] वेदमंत्रों या ऋचाओं का अर्थ करनेवाला, मंत्रद्रष्टा।

सूक्ता—संज्ञा स्त्री. [सं.] मैना, सारिका।

सूक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] सुंदर उक्ति या वाक्य।

सूच्छम, सूच्छम—वि. [सं. सूक्ष्म] बहुत छोटा, थोड़ा या महीन। उ.—गंड सूक्ष्म—२३०९।

संज्ञा पुं. (१) अणु, परमाणु। (२) लिंग शरीर। (३) एक काव्यालंकर।

सूच्छमता—संज्ञा स्त्री. [सं.] सूक्ष्म होने का भाव।

सूच्छमदर्शिता—संज्ञा स्त्री. [सं.] बारीक या सूक्ष्म बात सोचने-समझने का गुण।

सूच्छमदर्शी—वि. [सं. सूक्ष्मदर्शिन्] बारीक या सूक्ष्म बात सोचने-समझनेवाला।

सूच्छमदृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह दृष्टि जो बहुत ही सूक्ष्म बातें देख-समझ ले।

संज्ञा पुं. वह जो सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें देखने-समझने की दृष्टि रखता हो।

सूच्छमदेही—वि. [सं. सूक्ष्मदेहिन्] जिसका शरीर बहुत ही छोटा या दुबला-पतला हो।

सूच्छममति—वि. [सं.] जिसकी बुद्धि तीव्र हो।

सूच्छम शरीर—संज्ञा पुं. [सं.] पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रिय, पाँच सूक्ष्म भूतों तथा मन और बुद्धि—इन सत्रह तत्वों के समूह से निर्मित वह कल्पित शरीर जिसे 'लिंग शरीर' भी कहते हैं। हिंदुओं का विश्वास है कि सूक्ष्म या लिंग शरीर, प्राणी की मृत्यु और स्थूल शरीर के नाश के उपरांत भी उस समय तक बना रहता है जब तक मुक्ति नहीं होती। स्वर्ग और नरक के भोग भी इसी शरीर को भोगने पड़ते हैं।

सूख—वि. [हिं. सूखा] (१) जिसमें जल न रहा हो। (२) रसहीन। (३) कांतिहीन। (४) कोरा। (५) केवल, निरा, खाली। (६) दुबला, कृश।

मुहा. सूखकर काँटा होना—बहुत दुबला या कृश होना।

सूखति—क्रि. अ. [हिं. सूखना] सूख रही है, दुर्बल या कृश हो रही है। उ.—सूखति सूर धान अंकुर सी बिनु बरषा ज्यों मूल तुई—१४३३।

सूखना, सूखनो—क्रि. अ. [सं. शुष्क, हिं. सूखा] (१) नमी, तरी, गीलापन या आर्द्रता न रहना। (२) जल का बिलकुल न रहना या बहुत कम हो जाना। (३) कांति-तेजहीन, खिन्न या उदास होना। (४) बरबाद

या नष्ट होना। (५) डरना, सन्न रह जाना। (६) रोग, चिंता आदि से दुबला या कृश होना।

सूखा—वि. [सं. शुष्क] (१) जिसकी नमी, तरी या आर्द्रता उड़ या जल गयी हो। (२) जिसका जल उड़ गया या बहुत कम रह गया हो (३) जो कांति या तेजहीन, खिन्न या उदास हो गया हो। (४) बरबाद, नष्ट। (५) कठोर या हृदयहीन। (६) कोरा, निरा, खाली, केवल।

मुहा. सूखा जवाब देना—साफ-साफ इनकार कर देना। सूखा टरकाना या टालना—याचक या आकांक्षी की कोई भी या कुछ भी इच्छा पूरी न करके लौटाना

संज्ञा पुं. (१) पानी न बरसने की दशा या स्थिति, अनावृष्टि। (२) नदी का किनारा जो जल से ऊपर हो। (३) ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। (४) एक तरह की खाँसी जो बच्चों के प्राण तक ले लेती है। (५) एक रोग जिसमें खाना खाने पर भी दुबलापन बना रहता है।

मुहा. सूखा लगना—ऐसा रोग होना कि शरीर बराबर सूखता ही जाय।

सूखे—वि. [हिं. सूखा] (१) जिसमें रस या आर्द्रता न रह गयी हो। उ.—सूखे पात और तृन खाइ—५-३। (२) उदार, खिन्न, तेज या कांतिहीन। उ.—सूखे बदन स्रवत नैनन तें जलधारा उर बाढ़ी—२५३५।

सूखै—क्रि. अ. [हिं. सूखना] पानी उड़ या जल जाय। उ.—सरवर नीर भरै भरि उमड़ै, सूखै, खेह उड़ाइ—१-२६५। (ख) जिनके क्रोध पुहुमि नभ पलटैं, सूखै सकल सिंधु कर पानी—९-११६।

सूख्यो, सूख्यौ—क्रि. अ. [हिं. सूखना] नमी, तरी या आर्द्रताहीन हो गया। उ.—देखौ करनी कमल की, कीन्हौं रवि सौं हेत। प्रान तज्यो प्रन न तज्यो सूख्यौ सरहिं समेत—१-३२५।

सूघर—वि. [हिं. सुघड़] सुडौल, सुंदर।

सूच—वि. [सं. शुचि] निर्मल, पवित्र।

सूचक—वि. [सं.] (१) बताने या सूचना देनेवाला। (२) बोध या ज्ञान करानेवाला (लक्षण या तत्व)।

संज्ञा पुं. (१) दरजी। (२) सूत्रधार।

सूचत—क्रि. स. [हिं. सूचना] बताता या जताता है, प्रकट या सूचित करता है। उ.—(क) नमित मुख इमि अधर सूचत सकुच मैं कछु रोष—३५०। (ख) ताहू मैं अति चारु बिलोकनि गूढ़ भाव सूचत सखि सैन—१३१३।

सूचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बताने की क्रिया। (२) बोध या ज्ञान कराने की क्रिया।

सूचना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (२) बोध या ज्ञान कराने की क्रिया। (१) जताने, बताने या परिचय कराने के लिए कही गयी बात। (२) वह पत्र या विज्ञापन जिस पर किसी विषय का परिचय कराने की बात लिखी हो, परिचायक विज्ञप्ति।

क्रि. स. [सं. सूचन] बताना, सूचित करना।

सूचनापत्र—संज्ञा. पुं. [सं.] विज्ञापन, विज्ञप्ति।

सूचनीय—वि. [सं.] बताये-जताने योग्य।

सूचा—वि. [हिं. सुचित्त] जो सचेत या सावधान हो।

सूचि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) सुई। (२) दृष्टि।

वि. [सं. शुचि] शुद्ध, पवित्र।

सूचिक—संज्ञा पुं. [सं.] दरजी, सौचिक।

सूचिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] सुई।

वि. स्त्री. (१) सूचना देनेवाली। (२) बोधक।

सूचित—वि. [सं.] बताया या जताया हुआ, जिसकी सूचना दी गयी हो, ज्ञापित।

सूची—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) कपड़ा आदि सीने-काढ़ने की सुई। (२) सेना का एक प्रकार का व्यूह। (३) तालिका, नामावली। (४) पिंगल की एक रीति जिसमें नियत वर्णों या मात्राओं से बन सकनेवाले छंदों की संख्या जानी जाती है।

सूचीक—संज्ञा पुं. [सं.] मच्छर जैसे जंतु जिनके डंक सुई की तरह के होते हैं।

सूचीकर्म—संज्ञा पुं. [सं. सूचीकर्म्मन्] सिलाई की कला जो चौंसठ कलाओं में एक है।

सूचीपत्र—संज्ञा पुं. [सं.] प्राप्त वस्तुओं की सूची, तालिका या नामावली।

सूचीभेद, सूचीभेद्य—वि. [सं. सूचिभेद्य] (१) जो सुई से भेदा जाने योग्य हो। (२) बहुत घना।

सूचीमुख—संज्ञा पुं. [सं.](१) सुई का छेद या नाका। (२) एक नरक का नाम।

सूची-शिल्प—संज्ञा पुं. [सं.] सुई का काम जो चौंसठ कलाओं में एक है।

सूच्छम—वि. [सं. सूक्ष्म] (१) बहुत छोटा। उ.—सूच्छम चरन चलावत बल करि–१०-१२०। (२) बहुत पतली या क्षीण। उ.—(क) सूर आगम कियौ नभ तैं जमुन सूच्छम धार—६२४। (ख) राजति रोम-राजी रेख। नील घन मनु धूम धारा रही सूच्छम सेष—६३५।

सूच्य—वि. [सं.] सूचित करने के योग्य।

सूच्यग्र—संज्ञा पुं. [सं.] सुई की नोक।

सूच्यार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से निकलता हो।

सूछम, सूछिम—वि. [सं. सूक्ष्म] बहुत छोटा, पतला या थोड़ा।

सूजन—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूजना] सूजने की क्रिया, भाव या अवस्था, शोथ।

सूजना—क्रि. अ. [फ़ा. सोज़िश] रोग, चोट आदि से शरीर के किसी अंग का (इस प्रकार) फूलना (कि उसमें पीड़ा भी हो), शोथ होना।

सूजा—संज्ञा पुं. [हिं. सूजी] बड़ी मोटी सुई।

सूजी—संज्ञा स्त्री. [सं. शुचि] गेहुँ का कुछ मोटा और दरदरा आटा।

संज्ञा स्त्री. [सं. सूची] सुई।

संज्ञा पुं. [सं. सूची] कपड़ा सीनेवाला।

सूझ—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूझना] (१) सूझने का भाव। (२) नजर, दृष्टि। (३) होने या आनेवाली बातों का पहले ही ध्यान में आ जाने का भाव या गुण। (४) अनूठी उपज या कल्पना, उद्‌भावना।

सूझई—क्रि. अ. [हिं. सूझना] दिखायी देता है। उ.—नैनन कछू न सूझई—३४२६।

सूझत—क्रि. अ. [सं. संज्ञान] (१) दिखायी देता है। उ. —(क) उपजत दोष नैन नहिं सूझत—१-११४। (ख) गरजत क्रोध-लोभ कौ नारौ, सूझत कहुँ न उतारौ—१-२०९। (ग) सूझत नहीं बीसहूँ लोचन—९-१३४। (घ) रवि कौ रथ सूझत नहिं धरनि-गगन छायौ—९-१३९। (२) ध्यान में आता है। उ.—जौलौं सत सरूप नहिं सूझत—२-२५।

सूझना, सूझनो—क्रि. अ. [सं. संज्ञान] (१) दिखायी देना, देख पड़ना। (२) ख्याल या ध्यान में आना। (३) छुट्टी पाना, मुक्त होना।

सूझ-बूझ—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूझना-बूझना] समझ या बुद्धि की बातें ध्यान में आना और समझ-बूझकर उनका उपयोग करना, दूरदर्शिता और बुद्धिमता।

सूझिए—क्रि. अ. [हिं. सूझना] दिखायी देता है। उ.—और अनत न सूझिए—१० उ.-२४।

सूझी—क्रि. अ. [हिं. सूझना] दिखायी दी। उ.—जिह्वा स्वाद मीन ज्यौं उरझ्यौ सूझी नहीं फँदाई—१-१४७।

सूझै—क्रि. अ. [हिं. सूझना] (१) दिखायी देता है। उ.—(क) कान न सुनैं, आँखि नहिं सूझै—३-१३। (ख) अंधधुंध मग कहूँ न सूझै—१०५०। (ग) इत हीं तें जाति उत, उत हीं तें फिरै, इत निकटहु जाति नहिं नैंक सूझै—११८८। (घ) सूर नंदनंदन को देखति और न कोई सूझै—३१५१। (२) ध्यान में आता है। उ.—(क) और सरन सूझै नहिं कोइ—१८०९। (ख) जिनके एक अनन्य ब्रत सूझै क्यौं दूजो उर आनै—३१३६।

सूझ्यो, सूझ्यौ—क्रि. अ. [हिं. सूझना] दिखायी दिया। उ.—(क) धूम बढ्यौ, लोचन खस्यौ, सखा न सूझ्यौ संग—१-३२५। (ख) तब मारग सूझ्यौ नैननि कछु जिय अपने तिय गई लजाई—८८८।

सूत—संज्ञा पुं. [सं. सूत्र] (१) रुई, रेशम आदि का वह पतला बटा हुआ तागा जिससे कपड़ा बुना जाता है। (२) रुई का बटा हुआ तार जिससे कपड़ा आदि सिया जाता है, तागा, धागा, डोरा।

मुहा० सूत-सूत—जरा-जरा, तनिक-तनिक। सूत बराबर—बहुत महीन। सूत सों तोरचो—महीन सूत की तरह बड़ी सरलता से या अनायास तोड़ दिया। उ.—गृह गुरु लाज सूत सों तोरचो, डरी नहीं व्यवहार—पृ. ३३९ (८३)।

(३) कई सूतों को बटकर बनायी गयी डोरी। उ. —(क) सन अरु सूत चीर-पाटंबर लै लंगूर बँधाए—

९-९८। (ख) ग्रंथित सूत धारत तेहिं ग्रीवा जहाँ धरते बनमाल—३३३३। (४) **किसी चीज से निकलनेवाला महीन या पतला तार**। (५) **बच्चों के गले में पहनाने का गंडा**। (६) **करधनी**। (७) **लंबाई नापने का एक मान**। (८) **पत्थर, लकड़ी आदि पर निशान डालने की डोरी**।

मुहा. सूत धरना या बाँधना—(**कोयले, गेरू आदि के रंग में रंगे हुए सूत से पत्थर लकड़ी आदि पर निशान लगाना**।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक वर्ण-संकर जाति जिसका काम रथ हाँकना था**। (२) **रथ हाँकनेवाला, सारथी**। उ.—बाजि मनोरथ, गर्ब मत्त-गज, असत कुमति रथ-सूत—१-१४१। (३) **बंदी, भाट या चारण जिनका काम राजाओं का यश-गान करना था**। उ.—(क) मागध-बंदी-सूत लुटाए, गो-गयंद-हय-चीर-९-१८। (ख) मागध-बंदी-सूत अति करत कुलाहल बार—१०-२७। (ग) आनंदित बिप्र सूत-मागध जाचकगन—१०-३०। (४) **पुराणवक्ता या पौराणिक जिनमें सबसे प्रसिद्ध हैं लोमहर्षण जो वेदव्यास के शिष्य थे और जिन्होंने नैमिषारण्य में ऋषियों को सब पुराण सुनाये थे**। उ.—सूत सौनकनि सौं पुनि कह्यौ—१-२२७। (५) **बढ़ई, सूत्रधार**।

वि. [सं.] (१) **उत्पन्न, प्रसूत**। (२) **प्रेरित**।

वि. [सं. सूत्र] **अच्छा, भला, उत्तम**।

संज्ञा पुं. **थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा गया ऐसा पद या वाक्य जो बहुत अर्थ प्रकाशित करता हो**।

संज्ञा पुं. [सं. सुत] **पुत्र, बेटा**।

सूतक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जन्म**। (२) **संतान के जन्म पर माना जानेवाला अशौच**। (३) **किसी निकट संबंधी की मृत्यु पर परिवार में माना जानेवाला अशौच**।

सूतका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्त्री जिसने हाल ही में बच्चा जना या प्रसव किया हो**।

सूतकी—वि [सं. सूतकिन्] (१) **संतान-जन्म होने से जिसे अशौच हो**। (२) **संबंधी की मृत्यु पर जिसे सूतक लगा हो**।

सूत-तनय—संज्ञा पुं. [सं.] **कर्ण (जिसका पालन-पोषण अधिरथ सारथी ने किया था)**।

सूतधार—संज्ञा पुं. [सं. सूत्रधार] **बढ़ई**। उ.—अगरु चँदन कौ पालनौ (रँगि) ईंगुर ढार-सुढार। लै आयौ गढ़ि डोलना (हो) बिसकर्मा सूतधार (पाठा.—सूतहार) —१०-४०।

सूत-नंदन—संज्ञा पुं. [सं.] **कर्ण (जिसका पोषण और पालन अधिरथ सारथी ने किया था)**।

सूतना, सूतनो—क्रि. स. [हिं. सूत+ना] (१) **सीधा करना, सीध में निशान लगाना**। (२) **ऊपर से नीचे की ओर हाथ फेरना**। (३) **डोरे आदि पर माँझ या [illegible] चढ़ाना**। (४) **नोचना-खसोटना**। (५) **साफ करना**। (६) **सोख लेना, चूस लेना**।

क्रि. अ. [हिं. सोना] **शयन करना**।

सूत-पुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **कर्ण (जिसका पालन अधिरथ सारथी ने किया था)**।

सूतवाँ—वि. [हिं. सूत] **सुडौल**।

सूता—संज्ञा पुं. [हिं. सूत] **तागा, धागा, डोरा**।

संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्त्री जिसने बच्चा जना हो**।

सूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **जन्म**। (२) **जनन, प्रसव**। (३) **उद्गम**। (४) **पैदावार**।

सूतहार—संज्ञा पुं. [सं. सूत्र+धार] **बढ़ई**। उ.—अगरु चँदन कौ पालनौ (रँगि) ईंगुर ढार-सुढार। लै आयौ गढ़ि डोलना (हो) बिसकर्मा सूतहार—१०-४०।

सूतिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **स्त्री जिसने हाल ही में बच्चा जना हो, जच्चा**।

सूतिकागार—संज्ञा पुं. [सं.] **वह स्थान जहाँ बच्चा जना जाय या जना गया हो**।

सूती—वि. [हिं. सूत] **सूत का बना हुआ**।

संज्ञा स्त्री. **सूत या सारथी की पत्नी**।

संज्ञा स्त्री. [सं. शुक्ति] **सीप, सीपी**।

सूते—क्रि. अ. [हिं. सूतना=सोना] **सो गये**। उ.—स्वान सूते पहरुवा सब, नींद उपजी गेह—१०-५।

संज्ञा पुं. सवि. [हिं. सूत] (१) **धागे या डोरी से**। (२) **किसी वस्तु से निकलने वाले महीन तंतु से**। उ.

—किहिं गयंद बाँध्यौ सुन मधुकर पद्मनाल के काचे सूते—३३०५।

सूत्तर—वि. [सं.] बहुत बढ़कर, परमोत्तम।

सूत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तागा, डोरा। (२) जनेऊ, यज्ञोपवीत। (३) करधनी। (४) नियम, व्यवस्था। (५) ऐसा पद या वाक्य जिसमें अक्षर या शब्द तो बहुत थोड़े हों, परन्तु जो बहुत अर्थ प्रकाशित करता हो, सारगर्भित संक्षिप्त पद। (६) कारण, निमित्त। (७) सुराग, पता। (८) वह सांकेतिक पद या वाक्य जिसमें विशिष्ट कार्य, प्रयोग आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो। (९) कार्य आदि की रूपरेखा के अंगों में कोई।

सूत्रकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूत्र का रचनेवाला। (२) बढ़ई। (३) जुलाहा, तंतुवाय। (४) मकड़ी।

सूत्रधर, सूत्रधार—संज्ञा पुं. [सं. सूत्रधर] (१) नाट्यशाला का प्रधान और व्यवस्थापक नट। (२) बढ़ई, सुतार (३) एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति।

सूत्रधारी—संज्ञा स्त्री. [सं.] नटी।

संज्ञा पुं. [सं. सूत्रधारिन्] सूत्र धारण करनेवाला।

सूत्रपात—संज्ञा पुं. [सं.] शुरू, प्रारम्भ, नींव पड़ना।

सूत्रयी – वि. [सं. सूत्र] सूत्र जानने या रचनेवाला।

सूत्रित—वि. [सं.] सूत्र-रूप में लाया, प्रस्तुत किया या बनाया हुआ।

सूत्री—वि. [सं. सूत्र+ई] (१) सूत्र का, सूत्र-संबंधी। (२) जिसमें सूत्र हों, सूत्र-युक्त।

संज्ञा पुं. [सं. सूत्रिन्] नाटक का सूत्रधार।

सूत्रीय—वि. [सं.] (१) सूत्र का। (२) सूत्र-युक्त।

सूथन, सूथनि, सूथनी—संज्ञा स्त्री. [देश.] एक तरह का पायजामा। उ.—(क) सूथन जंघन बाँधि नाराबँद तिरनी पर छवि भारी—पृ. ३४५ (५२७)। (ख) नाराबंदन सूथ जंघन—१८२०।

सूथार—संज्ञा पुं [पु. हिं. सुतार] बढ़ई।

सूद—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) लाभ। (२) ब्याज।

मुहा. सूद दर सूद—ब्याज पर ब्याज। सूद पर देना या लगाना—सूद लेकर रुपया उधार देना।

संज्ञा. पुं. [सं.] (१) रसोइया। (२) सूत या सारथी का काम।

सूदखोर—वि. [फ़ा. सूदखोर] जो बहुत ब्याज लेता हो।

सूदन—वि. [सं.] विनाश करनेवाला। उ.—नमो नमस्ते बारम्बार। मदन-सूदन गोविंद मुरार।

संज्ञा पुं. वध या विनाश करने की क्रिया।

सूदना, सूदनो – क्रि. स. [सं. सूदन] (१) मार डालना, वध करना। (२) नष्ट करना।

सूदित—वि. [सं.] (१) घायल, आहत। (२) जो नष्ट हो गया हो। (३) जो मार डाला गया हो।

सूदी—वि. [फ़ा. सूद] (वह पूँजी या धन) जो ब्याज पर दिया या लिया गया हो।

सूद्र—संज्ञा पुं. [सं. शूद्र] शूद्र वर्ण का व्यक्ति। उ.—नब बिचारि करि राजा देख्यौ। सूद्र नृपति कलिजुग करि लेख्यौ—१-२९०।

सूध—वि. [हिं. सूधा] सीधा।

वि. [सं. शुद्ध] (१) पवित्र। (२) ठीक। (३) खालिस।

क्रि वि. [हिं. सीधे] (१) सामने की ओर। (२) सीधी तरह से, चुपचाप।

सूधना, सूधनो—क्रि. अ. [सं. शुद्ध] (१) सिद्ध होना। (२) ठीक, सही या सत्य होना।

सूधरा, सूधा—वि. [सं. शुद्ध, हिं. सूधा] (१) सरल स्वभाव या व्यवहार का, निष्कपट। (२) जो टेढ़ा न हो, सीधा। (३) चित्त पड़ा हुआ। (४) सामने का। (५) जो उलटा न हो, सीधा। (६) जिसमें टेढ़ापन या वक्रता न हो।

सूधी—वि. स्त्री. [हिं. सूधा] (१) सरल या भोले स्वभाव की, निष्कपट। उ.—(क) सूधी निपट देखियत तुमकौं तातैं करियत साथ—६७४। (ख) छंद-कपट कछु जानत नाहीं, सूधी हैं सब ब्रज की बाल—१३१५। (२) जो या जिसमें टेढ़ापन न हो। उ.—(क) टेढ़ी जेहरि सूधी कीन्हीं—२६४३। (ख) स्वान पूछ को कोटिक लागे सूधी काहु न करी—३०१०।

क्रि. वि. बिना ठहरे या रुके। उ.—नव से नदी चलत मर्यादा सूधी सिंधु समानी—२०४४।

मुहा. सूधी सुनना या सहना—किसी की खरी-

खरी बातें सुनकर सहन करना। सूधी-सूधी सुनाना—खूब खरी-खरी बातें कहना।

सूधे—वि. [हिं. सूधा] (१) जिसमें व्यंग्य या वक्रता न हो। उ.—पूछे तैं तुम बदन दुरावत सूधे बोल न बोलत—१०-२१९। (२) जो टेढ़ा न हो। उ.—सुचि करि सकल बान सूधे करि कटि-तट कस्यौ निषंग—९-१५८।

क्रि. वि. (१) बिना ठहरे या रुके, बिना विलंब किये। उ.—(क) लै बसुदेव धँसे दह सूधे—१०-४। (ख) दधि बेंचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति—११७४। (२) सीधी तरह से, सीधे से। उ.—(क) सूधे दान काहे न लेत। (ख) हौं बड़ हौं बड़ बहुत कहावत सूधे (सूधैं) कहत न बात—२-२२।

मुहा० सूधे-सूधें—कोरा, साफ-साफ।

सूधैं—क्रि. वि. [हिं. सूधे] सीधी तरह से, सीधे से। उ.—(क) हौं बड़, हौं बड़ बहुत कहावत सूधैं कहत न बात—२-१२। (ख) चलत न क्यौं तुम सूधैं राह—५-४।

सूधो—वि. [हिं. सूधा] (१) जो टेढ़ा न हो, सीधा। उ.—रीझि तेहि रूप दियो, अंग सूधो कियो—२५८४। (२) जिसमें व्यंग्य, वक्रता या अस्पष्टता न हो। उ.—त्यों त्रिदोष उपजे जक लागत बोलति बचन न सूधो—३०१३।

सूधौ—वि. [हिं. सूधा] (१) सरल, भोला-भाला। उ.—भली महर सूधौ सुत जायौ चोली-हार बतावत—३४१। (२) सस्ता, सुलभ। उ.—तैं तौ नाम स्याम मेरे कौं सूधौ करि है पायौ—१०-३१५।

क्रि. वि. सीधी तरह से, सीधे से। उ.—सूधौ कहौ तब कैसे जीहैं निज चलिहौं उठि प्रात—२५०२।

सून—संज्ञा पुं. [सं.] (१) जनन, प्रसव। (२) फूल की कली। (३) फूल, पुष्प। (४) पुत्र, बेटा। उ.—मनु मयंकहिं अंक लीन्हौ सिंहिका कै सून—१०-१८४।

वि. [सं.] (१) खिला हुआ या विकसित (पुष्प)। (२) उत्पन्न, जात।

वि. [सं. शून्य] (१) सूना, सुनसान, निर्जन। उ.—निरखत सून भवन जड़ ह्वै रहे, खिन लोटत धर बपु न सँभारत—९-६२। (२) हीन, रहित।

संज्ञा पुं. (१) खाली स्थान। (२) आकाश। (३) बिंदी। (४) अभाव। (५) ईश्वर।

सूनशर—संज्ञा पुं. [सं.] कामदेव।

सूनसान—वि. [हिं. सुनसान] निर्जन, एकांत।

सूना—वि. [सं. शून्य] निर्जन, जनहीन।

मुहा. सूना या सूना-सूना लगना—सुनसान या निर्जन जान पड़ना।

संज्ञा स्त्री. [सं.] पुत्री, बेटी।

सूनापन – संज्ञा पुं. [हिं. सूना+पन] (१) 'सूना' होने का भाव। (२) सन्नाटा, सुनसान।

सूनु, सूनू – संज्ञा पुं. [सं. सून] पुत्र, बेटा।

सूनू—संज्ञा स्त्री. [सं.] पुत्री, बेटी।

सूनृत—वि. [सं.] (१) सत्य और प्रिय। (२) दयालु।

सूनैं—वि. सवि. [हिं. सूना] खाली या निर्जन (घर, स्थान आदि) में। उ.—(क) सूनैं सदन मथनियाँ कैं ढिग, बैठि रहे अरगाइ—१०-२६५। (ख) पैठे सखनि सहित घर सूनैं—१०-२००।

सूनो—वि. [हिं. सूना] खाली, सूनसान, निर्जन। उ.—(क) तुम बिनु सूनो वाको गेहरा—२००१। (ख) बिद्यमान अपने इन नैननि सूनो देखति गेहु—२७३३। (ग) स्याम बिन सब ब्रजहिं सूनो—३४२६।

सूनौ—वि. [हिं. सूना] निर्जन, एकांत। उ.—सूर स्याम हौ बहुत लोभाने बन देख्यौ धौं सूनौ—११२१।

सून्य—वि. [सं. शून्य] जिसके अन्दर कुछ न हो, खाली। उ.—अन्तर सून्य सदा देखियत है निज कुल बंस सुभाए—६६१।

सूप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पकी हुई दाल या उसका पानी। (२) रसेदार तरकारी। (३) रसोइया। (४) तीर, वाण।

संज्ञा पुं. [सं. शूर्प] अनाज फटकने का एक पात्र या 'छाज' जो प्रायः सरई या सींक बनता है। उ.—तीनि लोक जाके उदर-भवन सो सूप कैं कोन परचौ है—१०-१२८।

मुहा. सूप भर—बहुत अधिक।

सूपक—संज्ञा पुं. [सं. सूप] रसोइया।

सूपकार—संज्ञा पुं. [सं.] रसोइया।

सूपकारी—संज्ञा स्त्री. [सं. सूपकार] रसोई बनाने की विद्या, कला या क्रिया ।

संज्ञा पुं. रसोई बनानेवाला, रसोइया ।

सूपच—संज्ञा पुं. [सं. श्वपच] चांडाल ।

सूपनखा—संज्ञा स्त्री. [सं. शूर्पणखा] शूर्पणखा । उ.—सूपनखा ये समाचार सब लंका जाइ सुनाए—९-५७।

सूफ—संज्ञा पुं. [अ. सूफ़] ऊन ।

सूफियाना—वि. [अ. सूफ़ी] (१) सूफी धर्म या वर्ग संबंधी । (२) सादा परन्तु सुन्दर ।

सूफी—संज्ञा पुं. [अ. सूफ़ी] (१) एकेश्वरवादी और उदार दृष्टिकोण वाले मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय । (२) इस संप्रदाय का अनुयायी ।

वि. [हिं. सूफ ऊन] (१) ऊनी वस्त्र पहननेवाला । (२) साफ, पवित्र । (३) निर्दोष, निरपराध ।

सूबा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) किसी देश का भू-भाग, प्रान्त, प्रदेश । (२) सूबेदार ।

सूबेदार—संज्ञा पुं. [फ़ा. सूबा + दार] (१) प्रांत या प्रदेश का शासक । (२) एक छोटा फौजी ओहदा ।

सूबेदारी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) सूबेदार का ओहदा, पद या काम । (२) सूबेदार होने की अवस्था या स्थिति ।

सूभर—वि. [सं. शुभ्र] (१) सफेद । (२) सुन्दर ।

सूम—वि. [अ. शूम = असुभ] कंजस, कृपण । उ.—कृपन सूम, नहिं खाइ खवावै, खाइ मारिकै औरै—१-१८६ ।

सूमति—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूम] कंजूसी, कृपणता ।

सूय—संज्ञा पुं. [सं.] यज्ञ ।

सूर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य, रवि । उ.—ससि अरु सूर उदै भए मानों दोऊ एकहीं बार—२५७२ । (२) मदार, आक या अर्क का वृक्ष । (३) विद्वान, पंडित । (४) महाकवि सूरदास के नाम का संक्षिप्त रूप; महाकवि सूरदास के नाम की छाप जो उनके पदों में मिलती है । उ.—लीला सुभग सूर के प्रभु की ब्रज में गाइ जियौ—४८६ । (५) अंधा व्यक्ति ।

वि. [सं. शूर] वीर, बहादुर । उ.—यह सुनि नृपति हरष मन कीन्हौ तुरतहिं बीरा दीन्हौं । बारंबार सूर कहि ताकौं, आपु प्रसंसा कीन्हौ—१०-६१ । (ख) कायरबकै लोभ तें भागै, लरै सो सूर बखानै-३३३७ ।

संज्ञा पुं. [सं. शूर = शूरसेन] शूरसेन ।

यौ. सूर सामंत या सावंत—(१) वीर और बहादुर । (२) सेना का वीर नायक । (३) राज्य का पदाधिकारी ।

संज्ञा पुं. [सं. शूकर, प्रा. सूअर] सूअर ।

संज्ञा पुं. [सं. शूल] (१) बरछे की तरह का एक प्राचीन अस्त्र । (२) लंबा और नुकीला काँटा । (३) वायु-कोप से पेट में होनेवाली प्रबल पीड़ा । (४) पीड़ा, दर्द ।

संज्ञा पुं. [देश.] पठानों की एक जाति ।

सूरकांत—संज्ञा पुं. [सं. सूर्यकांत] (१) एक तरह का बिल्लौर या स्फटिक, जिसमें से, सूर्य के सामने रखे जाने पर आग निकलती है । (२) आतशी या सूरज-मुखी शीशा ।

सूरकुमार—संज्ञा पुं. [सं. शूर = शूरसेन + कुमार] वसुदेव ।

सूरज—संज्ञा पुं. [सं. सूर्य्य] (१) सूर्य, रवि । उ.—सूरज कोटि प्रकास अंग में कटि मेखला बिराजै—सारा. ३३४ । (ख) आए ब्रह्म सभा में बामन सूरज तेज बिराजै—सारा. ३३६ ।

मुहा. सूरज पर थूका मुँह पर आता है—साधु-सज्जन और लोकोपकारी व्यक्ति पर कलंक या लांछन लगाने से उसका तो कुछ बिगड़ता नहीं, अंततः स्वयं ही लांछित होना पड़ता है । सूरज को दीपक दिखाना—(१) जो स्वयं गुणवान है, उसे कुछ बताने का निरर्थक प्रयत्न करना । (२) जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देने का निरर्थक प्रयत्न करना । सूरज पर धूल फेंकना—साधु, निर्दोष और लोकोपकारी व्यक्ति पर कलंक या लांछन लगाना ।

(२) एक छाप जो 'सूरसागर' के कुछ पदों में मिलती है और जिसे अधिकांश आलोचक महाकवि सूरदास की ही 'छाप' मानते हैं । उ.—संतत दीन, महा अपराधी काहैं सूरज कूर बिसारौ—१-१७२ ।

वि. [सं. शूर + ज] जो वीर की संतान हो ।

संज्ञा पुं. [सं. सूर + ज] (१) शनि । (२) यम । (३) अश्विनीकमार । (४) सुग्रीव । (४) कर्ण ।

सूरजतनय—संज्ञा पुं. [हिं. सूरज+सं. तनय] (१) शनि। (२) यम। (३) सुग्रीव। (४) अश्विनीकुमार। (५) कर्ण।

सूरजतनया, सूरजतनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूरज+सं. तनया] यमुना।

सूरजदास—संज्ञा पुं. [हिं सूरज+सं. दास] 'सूरसागर' के कुछ पदों में मिलनेवाली एक छाप जिसे अधिकांश आलोचक महाकवि सूरदास की ही छाप मानते हैं। उ.-सूरजदास स्याम सेए तैं दुस्तर पार तरै—१-८२।

सूरजमुखी—संज्ञा पुं. [हिं. सूर्यमुखी] (१) एक पौधा जिसके पीले फूल सूर्योदय होने पर खिलते और सूर्यास्त पर मुर्झा जाते हैं। (२) एक शीशा जो सूर्य के सामने रखा जाने पर ताप या अग्नि उत्पन्न करता है। (३) एक प्रकार का राजचिह्न या छत्र। (४) एक तरह की आतिशबाजी।

सूरजबंसी—वि. [हिं. सूरज+सं. वंशी] सूर्यबंशी। उ.—सूरजबंसी सो कहवाए। रामचंद्र ताही कुल आए—९-२।

सूरजसुत—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूरज+सं. सुत] (१) शनि। (२)यम। (३)अश्विनीकुमार। (४)सुग्रीव। (५) कर्ण।

सूरजसुता—संज्ञा पुं. [हिं. सूरज+सं. सुता] यमुना।

सूरजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] सूर्य की पुत्री, यमुना।

सूरण—संज्ञा पुं. [सं.] सूरन, जिमीकंद।

सूरत—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) शक्ल, आकृति।

यौ. सूरत-शक्ल—चेहरा-मोहरा, आकृति।

मुहा० सूरत दिखाना—सामने आना। सूरत बनाना—(१) अच्छा रूप देना या बनाना। (२) रूप बनाने में लापरवाही दिखाना। (३) भेस बदलना। (४) नाक-भौं सिकोड़ना, अरुचि प्रकट करना। (५) चित्र बनाना। सूरत बिगड़ना—(१) चेहरे की रंगत फीकी पड़ना। (२) बदसूरत या कुरूप होना। सूरत बिगाड़ना—(१) बदसूरत या कुरूप करना। (२) अपमानित करके चेहरा फीका कर देना। (३) दंड देकर चेहरा फीका या उदास कर देना।

(२) छवि, शोभा, सौंदर्य। (३) कार्य-सिद्धि का मार्ग,उपाय, ढंग या युक्ति। (४) हालत, दशा,अवस्था।

संज्ञा पुं. [सं. सौराष्ट्र] बंबई प्रदेश का एक नगर।

संज्ञा स्त्री. [सं. स्मृति] याद, सुधि, ध्यान।

वि. [सं. सु+रत] अनुकूल, कृपालु।

सूरता, सूरताई—संज्ञा स्त्री. [सं. शूरता] वीरता।

सूरति—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूरत] (१) आकृति। (२) शोभा। (३) उपाय। (४) दशा।

संज्ञा स्त्री. [सं.+स्मृति] याद, सुध, ध्यान।

सूरती—संज्ञा स्त्री. [हिं. सूरत नगर]एक प्रकार की तलवार जो सूरत नगर में बनती थी।

सूरदास—संज्ञा पुं. [सं.] उत्तर भारत के हिंदी कृष्णभक्त कवियों में सर्वश्रेष्ठ जिनका समय बि. संवत् १५३५ से १५४० तक माना जाता है। इनका 'सूरसागर' हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ गीतकाव्य है। इसके अनेक पदों में 'सूरदास' छाप भी मिलती है। उ.—सूरदास स्वामी करुनामय बार-बार बंदौं तिहिं पाइ—१-१।

सूरन—संज्ञा पुं. [सं. सूरण] जिमींकंद जिसकी तरकारी बनती है। उ.—(क) निबुआ सूरन आम अथानौ—१०-२४१। (ख) सूरन करि तरि सरस तरोई–२३२१।

सूरनखा सूरपनखा–संज्ञा स्त्री [सं. शूर्पणखा] शूर्पणखा।

सूर-पुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शनि (२) सुग्रीव। (३) कर्ण।

सूरबीर—वि. [सं. शूर+वीर] बहादुर, वीर।

सूर-मल्लार—संज्ञा पुं. [हिं. सूरदास+मल्लार] एक संकर राग जो वर्षा में दिन के दूसरे पहर में गाया जाता है।

सूरमा—वि. [सं. शूर] वीर। उ.—सूरदास सिर देत सूरमा—२७१३।

सूरमापन—संज्ञा पुं. [हिं. सूरमा+पन] बहादुरी।

सूरमुखी—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्यमुखी शीशा।

सूरमुखी मनि—संज्ञा स्त्री. [सं. सूर्य्यमुखीमणि] सूर्यकांत मणि।

सूरवाँ—वि. [हिं. सूरमा] बहादुर, वीर।

सूरसागर—संज्ञा पुं. [हिं. सूर=सूरदास+सागर] हिन्दी के महाकवि सूरदास कृत गीतकाव्य का नाम जिसमें श्रीकृष्ण लीला के साथ-साथ अनेक पौराणिक कथाएँ राग-रागिनियों में वर्णित हैं। इसके दो रूप प्राप्त हैं—संग्रहात्मक और स्कंधात्मक। इसके लगभग पाँच हजार पद आज प्राप्त हैं।

सूर-सामंत, सूरसावंत—संज्ञा पुं. [सं. शूर+सामंत] (१) नायक, सरदार। (२) वीर, योद्धा।

सूर-सुत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शनि। (२) यम। (३) अश्विनीकुमार। (४) सुग्रीव। (५) कर्ण।

सूर-सुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] यमुना।

सूर-सूत—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य का सारथी अरुण।

सूरसेन—संज्ञा पुं. [सं शूरसेन] मथुरा प्रदेश का पुराना नाम।

सूरसेनपुर—संज्ञा पुं. [सं. शूरसेन+पुर] मथुरा।

सूराख—संज्ञा पुं. [फ़ा. सूराख़] छेद, छिद्र।

सूरि, सूरी—संज्ञा पुं. [सं. सूरिन्] (१) सूर्य। (२) यज्ञ करानेवाला। (३) बड़ा विद्वान। (४) श्रीकृष्ण का एक नाम।

सूरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) विदुषी, पंडिता। (२) सूर्य की पत्नी।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सूली] सूली।

संज्ञा पुं. [सं. शूल] भाला।

संज्ञा स्त्री. [हिं. सूअरी] सूअर की मादा।

सूरुज—संज्ञा पुं. [हिं. सूर्य] रवि, भानु।

सूरुवाँ—वि. [हिं. सूरमा] बहादुर, वीर।

सूर्पनखा—संज्ञा स्त्री. [सं. शूर्पणखा] सूर्पणखा। उ.—सूर्पनखा ये समाचार सब लंका गाइ सुनाए—९-५७।

सूर्मि, सूर्मी—संज्ञा स्त्री. [सं.] लोहे की बनी हुई स्त्री-मूर्ति (जिसको तपाकर आलिंगन करने से गुरु-पत्नी से व्यभिचार करनेवाले का पाप नष्ट होना कहा गया है)।

सूर्य—संज्ञा पुं. [सं. सूर्य्य] (१) सौर जगत का सबसे ज्वलंत पिंड जिससे सब ग्रहों को गरमी और प्रकाश मिलता है, दिनकर, भानु।

मुहा० सूर्य को दीपक दिखाना—(१) जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देने का (निरर्थक) प्रयत्न करना। (२) जो स्वयं गुणवान है, उसे कुछ बताने का निरर्थक प्रयत्न करना। सूरज पर थूका मुँह पर आता है—साधु-सज्जन और लोकोपकारी व्यक्ति पर कलंक या लांछन लगाने से उसका तो कुछ बिगड़ता नहीं, अंततः स्वयं ही लांछित होना पड़ता है। सूरज पर धूल फेंकना—साधु, निर्दोष और लोकोपकारी व्यक्ति पर कलंक या लांछन लगाना।

(२) बारह की संख्या। (३) आक, मदार।

सूर्य-कर—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य की किरण।

सूर्यकांत, सूर्यकांतमणि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक प्रकार का बिल्लौर या स्फटिक जिसमें से, सूर्य के सामने रखने पर, आँच निकलती है। (२) आतशी या सूरजमुखी शीशा।

सूर्यकांति—संज्ञा स्त्री.[सं.] सूर्य का प्रकाश या दीप्ति।

सूर्यग्रहण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के आ जाने और उसकी छाया पड़ने से होनेवाला ग्रहण जो अमावस्या को होता है। (२) हठयोग में वह अवस्था जब पिंगला नाड़ी से होकर प्राण कुंडलिनी में पहुँचते हैं।

सूर्यज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शनि। (२) यम। (३) अश्विनीकुमार। (४) सुग्रीव (५) कर्ण।

सूर्यजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] यमुना।

सूर्यतनय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शनि। (२) यम। (३) अश्विनीकुमार (४) सुग्रीव। (५) कर्ण।

सूर्यतनया—संज्ञा स्त्री. [सं.] यमुना।

सूर्यनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शनि। (२) यम। (३) सुग्रीव। (४) अश्विनीकुमार। (५) कर्ण।

सूर्यनंदनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] यमुना।

सूर्यपत्नी—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) संज्ञा। (२) छाया।

सूर्यपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शनि। (२) यम। (३) अश्विनीकुमार। (४) सुग्रीव। (५) कर्ण।

सूर्यपुत्री—संज्ञा स्त्री [सं.] यमुना।

सूर्यप्रभ—वि. [सं.] सूर्य के समान दीप्ति या प्रकाशमान।

संज्ञा पुं. श्रीकृष्ण की पत्नी लक्ष्मणा के प्रासाद का नाम।

सूर्यलोक—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य का लोक (जो युद्ध में मरनेवाले वीरों और सूर्य के भक्तों को प्राप्त होता है)।

सूर्यवंश—संज्ञा पुं. [सं.] क्षत्रियों का वह प्रधान कुल जिसकी उत्पत्ति सूर्य से मानी गयी है।

सूर्यवंशी—वि. [सं सूर्यवंशिन्] जो क्षत्रियों के सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ हो।

सूर्यविलोकन—संज्ञा पुं. [सं.] एक मांगलिक कृत्य जिसमें बच्चे को, चार महीने का हो जाने पर सूर्य का प्रथम बार दर्शन कराया जाता है।

सूर्यवेश्म—संज्ञा पुं. [सं. सूर्य्यवेश्मन्] सूर्यमंडल।

सूर्यव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] एक व्रत जो रविवार को किया जाता है।

सूर्यसुत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शनि। (२) यम। (३) अश्विनीकुमार। (४) सुग्रीव। (५) कर्ण।

सूर्यसुता—संज्ञा स्त्री [सं.] यमुना।

सूर्यसूत—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य का सारथी, अरुण।

सूर्या—संज्ञा स्त्री [सं.] सूर्य की पत्नी संज्ञा।

सूर्याणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] सूर्य की पत्नी संज्ञा।

सूर्यातप—संज्ञा पुं. [सं.] धूप, घाम।

सूर्यात्मज—संज्ञा पुं. [सं.] (१) शनि। (२) यम। (३) अश्विनीकुमार। (४) सुग्रीव। (५) कर्ण।

सूर्यालोक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सूर्य का प्रकाश। (२) सूर्य का ताप, धूप।

सूर्यावर्त, सूर्यावर्त्त—संज्ञा पुं. [सं. सूर्य्यावर्त्त] सिर की वह पीड़ा जो सूर्योदय से आरंभ होकर दिन बढ़ने के साथ-साथ बढ़ती और घटने के साथ घटकर सूर्यास्त को शांत हो जाती है।

सूर्यास्त—संज्ञा पु. [सं.] (१) संध्याकाल में सूर्य का छिपना या डूबना। (२) संध्याकाल।

सूर्योदय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रातःकाल सूर्य का निकलना या उदय होना। (२) सूर्य के उदय होने का समय।

सूर्योपासक—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य की पूजा, उपासना और व्रत करनेवाला व्यक्ति या वर्ग।

सर्योपासना—संज्ञा पुं. [सं.] सूर्य की पुजा-उपासना या आराधना करना।

सूल—संज्ञा पुं. [सं. शूल] (१) बरछा, भाला, साँग। उ.—ताहि सूल पर सूली दयौ—३-५। (२) कोई चुभनेवालीनुकीली चीज, काँटा। उ.-पैं तिहिं रिषि-दृग जाने नाहिं। खेलत सूल दए तिन माहिं—९-३। (३) भाला चुभने की सी पीड़ा, कसक, दर्द। उ०-(क) समुझि न चरन गहे गोबिंद के उर अघ सूल सही—१-३२४। (ख) जियत न जैहै सूल तुम्हारौ—९-३६। (ग) मन की सूल हरी—१०-२४। (घ) सूर सुबचन मनोहर कहि-कहि अनुज सूल बिसरायौ—३७४। (ङ) सुनि सुन्दरि यह समौ गए तें सूल नई—२५३७। (छ) बिद्यमान बिरह-सूल उर में जु समात—२५४३। (४) वायु के प्रकोप से पेट में उठनेवाली अत्यधिक पीड़ा। (५) माला के ऊपर का फुलरा।

सूलधर, सूलधारी—संज्ञा पुं. [सं. शूल+हिं. धरना] (त्रिशूलधारी) महादेव।

सूलना, सूलनो—क्रि. स. [हिं. सूल+ना] (१) किसी नुकीली चीज, जैसे काँटे या भाले, से छेदना। (२) कष्ट या पीड़ा देना।

क्रि. अ. (१) किसी नुकीली चीज, जैसे काँटे या भाले, से छिदना। (२) पीड़ित या व्यथित होना।

सूलपानि, सूलपानी—संज्ञा पुं. [सं. शूलपाणि] (त्रिशूलधारी) महादेव।

सूली—संज्ञा स्त्री. [सं. शूल] (१) लोहे का नुकीला डंडा या वैसा ही कोई उपकरण जिस पर बैठाकर या जिससे लटकाकर प्राचीन काल में प्राणदंड दिया जाता था। उ.—ताहि सूल पर सूली दियौ। ताकौ बदलौ तुमसौं लियौ—३-५। (२) फाँसी, प्राणदंड।

संज्ञा पुं. [सं. शूलिन्] शिव, महादेव।

सूवना, सूवनो—क्रि. अ. [सं. स्रवण] बहना, प्रावहित होना।

संज्ञा पुं. [हिं. सूआ] तोता, कीर।

सूवा—संज्ञा पुं. [हिं. सूआ] तोता, शुक।

सूवै—क्रि अ. [हिं. सूवना] बहता या प्रवाहित होता है। उ.—कहा करौं अति सूवै नयना, उमँगि चलत पग पानी।

सूस—संज्ञा पुं. [हिं. सूँस] एक जलजंतु।

सूसमार—संज्ञा पुं. [सं. शिशुमार] सूस नामक जलजंतु।

सूसला—संज्ञा पुं. [सं. शश] खरगोश।

सूसि—संज्ञा पुं. [हिं. सूस] एक जलजंतु।

सूहा—संज्ञा पुं. [हिं. सोहना] (१) एक तरह का लाल रंग। (२) एक संकर राग।

वि. पुं. लाल रंग का।

सूही—वि. स्त्री. [हिं. सूहा] लाल रंग का, लाल

सृंखल—संज्ञा पुं. [सं. शृंखल] **हथकड़ी-बेड़ी।**
वि. **जो क्रम से हो, व्यवस्थित।**

सृंखलता—संज्ञा स्त्री. [सं. शृंखलता] **क्रम के अनुसार और व्यवस्थित होने की दशा या भाव।**

सृंखला—संज्ञा स्त्री. [शृंखला] (१) **पिरोयी हुई कड़ियों का समूह।** (२) **जंजीर, साँकल।** (३) **माला।** (४) **कतार, पंक्ति, श्रेणी।** (५) **एक काव्यालंकार।**

सृंग—संज्ञा पुं. [सं. शृंग] (१) **पहाड़ की चोटी या शिखर।** (२) **सींग।** उ.—(क) पाउँ चारि सिर सृंग गुंग मुख तब कैसैं गुन गैहौ—१-३३१। (ख) सर्प इक आइ बहुरि तुम्हरैं निकट, ताहि सौं नाव मम सृंग बाँधौ—८-१६। (३) **कँगूरा।** (४) **सींग का बना एक तरह का बाजा।** उ.—सृंग-बेनु-नाद करत, मुरली मधु अधर धरत—६१९।

सृंगार—संज्ञा पुं. [सं. शृंगार] (१) **सजावट।** (२) **वह जिससे शोभा बढ़े।** (३) **गहने-कपड़ों से अपने आपको सजाना।** (४) **साहित्य के नौ रसों में एक जो 'रसराज' कहा जाता है।**

सृंगारना, सृंगारनो—क्रि. स. [सं. शृंगारना] **सजाना।**

सृंगारिया—वि. [सं. शृंगारिया] **देव-मूर्ति का शृंगार करनेवाला।**

सृंगी—संज्ञा पुं. [सं. शृंगी] (१) **हाथी।** (२) **पहाड़।** (३) **सींगवाला पशु।** (४) **सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा।** उ.—मुरली बेंत बिषान देखियो सृंगी बेर सबेरो। लै जिनि जाइ चुराइ राधिका कछुक खिलौना मेरो—२९६५। (५) **शिव, महादेव।** (६) **एक प्राचीन ऋषि जिनके शाप से परीक्षित को तक्षक नाग ने काटा था।** उ.—रिषि समाधि महँ त्यौंही रह्यौ। सृंगी रिषि सौं लरिकन कह्यौ।.....। नृपति दोष कहियै किहिं जाइ। दियौ साप तिहिं तच्छक खाइ—१-२९०।

सृक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भाला, शूल।** (२) **तीर, बाण।** (३) **हवा, वायु।** (४) **कमल का फूल।**
संज्ञा पुं. [सं. स्रज, स्रक] **हार, माला।** उ.—(क) सूर परस्पर करत कुलाहल गर सृक (पाठा.—सृग) पहिरावैनी—९-११। (ख) की सृक सीपज की बग-पंगति की मयूर की पीड पखी री—१६२७।

सृकाल—संज्ञा पुं. [सं. शृगाल] **सियार।**

सृक्क, सृक्व—संज्ञा पुं. [सं. सृक्व] **ओठों का छोर, मुँह का कोना।**

सृग—संज्ञा पुं. [सं. सृक] (१) **भाला, बरछा।** (२) **तीर, बाण।** (३) **हवा, वायु।** (४) **कमल का फूल।**
संज्ञा पुं. [सं. स्रज, स्रक] **हार, गजारा, माला।** उ.—गर-सृग पहिरावैनी—९-११।

सृगाल—संज्ञा पुं. [सं. शृगाल] (१) **सियार, गीदड़।** उ.—(क) सिंह कौ भच्छ सृगाल न पावै—९-७९। (ख) आइ सृगाल सिंह बलि चाहत, यह मरजाद जात प्रभु तेरी—९-९३। फिरत सृगाल सज्यौ सव काटत चलत सो सिर लै भागी—९-१५८। (२) **धोखेबाज धूर्त।** (३) **डरपोक, कायर**

सृगालिका—संज्ञा स्त्री. [सं. शृगालिका] (१) **गीदड़ी, सियारिन।** (२) **लोमड़ी।**

सृगालिनी, सृगाली—संज्ञा स्त्री. [सं. शृगाल] **गीदड़ी।**

सृजक—वि. [सं. सृज] **रचना करनेवाला।**

सृजत—क्रि. स. [हिं. सृजना] **रचता है।** उ.—पालत सृजत सँहारत सैंतत अंड अनेक अवधि पल आधे—९-५८।

सृजन—संज्ञा पुं. [सं. सृज्, सर्जन] (१) **सृष्टि या रचना करने की क्रिया, उत्पादन।** (२) **सृष्टि, उत्पत्ति।** (३) **छोड़ने या निकालने की क्रिया।**

सृजनहार, सृजनहारा, सृजनहारो—वि. [हिं. सृजन+हार, हारा] **रचने, बनाने या उत्पन्न करनेवाला।**

सृजना, सृजनो—क्रि. स. [सं. सृज+हिं. ना] **रचना, बनाना, सृष्टि करना।**

सृत—वि. [सं.] (१) **जो खिसक गया हो।** (२) **जो चला गया हो, गत।**

सृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रास्ता, मार्ग।** (२) **जन्म।** (३) **चलना, गमन।** (४) **आवागमन।** (५) **सरकना।** (६) **खिसकना।**

सृष्ट—वि. [सं.] (१) **पैदा, उत्पन्न।** (२) **रचित, निर्मित।** (३) **छोड़ा या निकाला हुआ।** (४) **व्यक्त।**